श्रीराजेन्द्रप्रवचनकार्यालय-सिरीझ-२



श्रीयतीन्द्रविहार-दिग्दर्शन

(द्वितीय-भाग-सचित्र)

संयोजक.

व्याख्यानवाचस्पत्युपाध्याय—

मुनिराज-श्रीयतीन्द्रविजयजी महाराज ।

जिसको—

मुनिविद्याविजयजी और सागरविजयजी

महाराज के सदुपदेश से

हरजी (मारवाड) निवासी—

श्रीसौधर्मबृहत्तपोगच्छीय-श्री श्वेताम्बर-जैनसंघने

छपवा के प्रकाशित किया ।

श्री वीर नि० सं० २४५८ } मूल्य { विक्रम सं० १९८७

राजेन्द्रसूरि संवत् २५ } रु. १॥) { सन् १९३१ इस्वी०

भावनगर-आनंद प्रीन्टींग प्रेसमें शाह गुलाबचंद लल्लुभाइने छापा.

समर्पण-पत्रम् ।

श्रीपूज्यशिथिलाचार-बहुसंसारवर्द्धकम् ।
सर्वोपाधि समुज्झित्य, वीरमार्गमथावहत् ॥ १ ॥
सन्दर्श्य पूर्वजानां हि, वर्त्म शुद्धक्रियादिभिः ।
स्वविहारोपदेशाभ्यां, बोधिता बहवो नरः ॥ २ ॥
समुद्धार यो नित्यं, जैनाभासकपञ्जरे ।
पतितान् कूपदेशेन, सूपदेशमृदूक्तिभिः ॥ ३ ॥
यस्तत्त्वपूर्णसौन्दर्य-सुधासिक्तस्वभाषया ।
जैन-जैनेतरे लोके, स्वकां ख्यातिमप्रथत् ॥ ४ ॥
कोरटाख्यस्वर्णगिर्योस्तथा भाण्डवपुरस्य च ।
तीर्थस्योद्धारकं कुर्वन्, प्रथमोद्धारकोऽभवत् ॥ ५ ॥
सर्वतन्त्रस्वतन्त्रस्य, जगत्पूज्यस्य योगिनः ।
नृकुमुदावोधनेन्दो-राबालब्रह्मचारिणः ॥ ६ ॥
श्रीमद्राजेन्द्रसूरेर्हि, पूज्यपादारविन्दयोः ।
श्रीयतीन्द्रविहारदिग्दर्शनं चार्प्यतेऽधुना ॥ ७ ॥

व्याख्यानवाचस्पत्युपाध्याय—

मुनियतीन्द्रविजयः ।

शासनसम्राट्–जगत्पूज्य–गुरुदेव–



श्रीमद्विजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराज ।

जन्म १८८३, दीक्षा १९०३, निर्वाण १९६३.

विबुधं मे यतीराज–यजनीयं गुरुं परा ।
जेतारं संस्मरेदिन्द्र–सूर्यकल्पं सदाऽनरिः ॥१॥

आनंद प्री. प्रेस—भावनगर.

विषय-निदर्शन ।

(परिशिष्ट नं० ४)



जिन गाँवो के मन्दिर, प्रतिमा और उपाश्रयों के प्रशस्ति-लेख इसमें दर्ज किये हैं, उन के मयलेखसंख्या के नाम—

इस पुस्तक मिलने का पता—

श्री राजेन्द्र प्रवचन कार्यालय।

मंत्री–निहालचंद जैन।

मु० **खुडाला** पो० फालना (मारवाड).

व्याख्यानवाचस्पत्युपाध्याय–



मुनिराज श्रीयतीन्द्रविजयजी महाराज ।

जन्म १९४०, दीक्षा १९५४, उपा० १९८०

मधुराऽतिप्रिया चैव, भारती यस्य शोभते ।
स श्रीयतीन्द्रविजयो जयतान्मुनिसत्तमः ॥१॥

पं० श्यामसुन्दर, काशी ।

आनंद प्री. प्रेस—भावनगर.





स्वल्प-सन्देश ।

सर्वज्ञ सर्वदर्शी श्रीतीर्थङ्कर भगवन्तोंने अविच्छिन्नरूप (विना रुकावट) से जिन शासन का अस्तित्व रहने और उसकी सुरक्षा के लिये साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका रूप चतुर्विध श्रीसंघ की स्थापना की है। संघ जब अपने अपने कर्त्तव्य के अनुसार तन, मन तथा धन से शासन की वास्तविक सेवा बजाता है तभी उसका 'श्रीसंघ' नाम सार्थक होता है, और इसी प्रकार के श्रीसंघ को शास्त्र-कारोंने रत्नाकर की उपमा दी है। जो श्रीसंघ अपने कर्त्तव्य से च्युत (रहित) है, वह श्रीसंघ नहीं किन्तु उसे अस्थि-संघ कहना चाहिये । यथा—

आणा जुत्तो संघो, सेसो पुण अट्ठिसंघाओ ।

संबोधसित्तरी, गाथा ३७.

श्रावक और श्राविका ये पोषक-संघ, और साधु-साध्वी उनके संरक्षक-संघ हैं । संरक्षक-संघ में अगाध शक्ति है, इस लिये उनको वारिश के सिवाय शेष-काल में आठ महिना तक एक गाँव से दूसरे गाँव अप्रतिबद्ध विहार करने की आज्ञा शास्त्रकार महर्षियोंने दी है । संरक्षक-संघ अपने पैदल-भ्रमण (विहार) के दरमियान जनता का बहुत कुछ उपकार करने का सामर्थ्य रखता है । गृहस्थ उपदेशक जिस कार्य को सैंकडों

प्रयत्न से सफल करते हैं, उसको संरक्षक-संघ एक वार के प्रयत्न से ही सफल कर सकता है। इसीसे साधु-संस्था संसार की सभी संस्थाओं से उपयोगी, कर्त्तव्यपरायण और महान् शक्ति-शालिनी मानी गई है।

साधु-संस्था का पैदल भ्रमण करने का नियम वड़े मार्के का है। इससे छोटे से छोटे ग्राम में साधु-साध्वियों (संरक्षक संघ) का पहुंचना हो जाता है। प्रति ग्राम में पहुंचने और प्रभु-महावीर के वाक्य जनता को सुनाने से जैनधर्म का अच्छा खासा प्रचार हो जाता है, सैंकडो शिकारी और हजारों मांस-भक्षी अपने कुकृत्य को छोड देते हैं, और जैनधर्म से विमुख श्राद्ध-मंडली फिर से धर्म-चुस्त वनती है। अतएव संयम-मर्यादा पूर्वक पैदल विहार करने में अनेक लाभ मिलते हैं। कहा भी है कि—

वत्थुविसेसनिरिक्खण-वियक्खणो होइ सो नरो नूणं।
आहिंडिऊण दिट्ठा, वहुरयणा जेणिमा पुहवी ॥ ४१ ॥
अत्थो जसो अ कित्ती, विज्जा विन्नाणयं पुरिसकारो।
पाएणं पाविज्जइ, पुरिसेण य अन्न-देसम्मि ॥ ४२ ॥

—जिस मनुष्यने वहु-रत्नवाली पृथ्वी को मर्यादा पूर्वक घूम करके देखी है, वह वस्तु विशेष के देखने में चतुर होता है। अन्य देशों में परिभ्रमण करने से मनुष्यों को अर्थ, यश, कीर्त्ति विद्या, विज्ञान और पुरुषकार; प्रायः इन छः वातों की प्राप्ति होती है। प्राकृत-सुक्तरत्नमाला, (मुद्रित) पृ. १९-२०

एक कविवरने भी लीखा है कि—

विदेशमां विचर्या विना, मले न मोटुं मान।
समुद्रमां वखणात शुं, छीपतणा सन्तान ॥ १ ॥
पुरुष फरे परदेशमां, तो श्रम व्यर्थ न जाय।
पथरा पण परदेश जइ, मूल्यवानज केवाय ॥ २ ॥
प्रवासथी तन मन खिले, पूरण पेट भराय।
प्रभात उठी पक्षी पण, दाणो चरवा जाय ॥ ३ ॥
सागरपंथ वेपारथी, मले वहुलो मान।
कोटीकला गुण आवडे, प्रगटे आतम ज्ञान ॥ ४ ॥
कदी प्रवास करे नहीं, होय आलसु राय।
जंगलमांनु झाडलुं, ऊगे त्यांज सुकाय ॥ ५ ॥

सुभाषितरत्नाकर में भी लिखा है कि—

यस्तु सञ्चरते देशान्, यस्तु सेवेत पण्डितान्।
तस्य विस्तारिता बुद्धि-स्तैलबिन्दुरिवाम्भसि ॥ १ ॥
यो न सञ्चरते देशान्, यो न सेवेत पण्डितान्।
तस्य संकुचिता बुद्धि-र्घृतबिन्दुरिवाम्भसि ॥ २ ॥

—जो पुरुष देशाटन और विद्वानों की सेवा करता है उसकी बुद्धि, जल में डाले हुए तैलबिन्दु के समान विस्तार को प्राप्त होती है और जो देशाटन, व विद्वानों की सेवा नहीं करते, उनकी बुद्धि, जल में डाले हुए घृत–बिन्दु के समान संकुचित हो जाती है।

नाना सांसारिक उपाधियों के कारण पोषकसंघ (श्रावक–श्राविका) में अनेक शिथिलताओं का हो जाना स्वाभाविक है, परन्तु संरक्षक–संघ में शिथिलताओं का हो जाना महा हानि कारक है। आज पोषक–संघ में पारस्परिक–प्रेम, धर्मोत्साह, धार्मिक–ज्ञान और आत्मबल का अभाव जो दिखाई दे रहा है उसका कारणभूत संरक्षक–संघ ही है। यदि साधु–साध्वी श्रावक, श्राविका, उपाश्रय और मान सन्मान का हार्दिक मोह छोड़ कर छोटे बडे सभी गाँवो में समान रूप से अपनी उपदेश धारा को वर्षाते रहें तो ऊपर की जटिल समस्याओं को कभी अवकाश नहीं मिल सकता।

आधुनिक संरक्षक–संघने गृहस्थों के लडके भगा कर, उनको छुपी दीक्षा देना और कोर्टों में चढ कर धर्म को लजाना १, नोकारसियाँ, उपधान और उद्यापनों के बहाने सेठियाओं के धन–मान को लूटना २, देव–गुरु–ज्ञान–द्रव्य के भक्षक धर्मभ्रष्टों को हजारों रुपया दिला कर झूंठे जीवनचरित्रादि लिखाना ३, गुरुकुल और विद्यालयों को चलाने के बहाने से एक ही स्थान पर वर्षों तक पडे रहकर विषय वासनाओं को पोषना ४, तथा जनता को ठगने में ही रात–दिन लगे रहना ५; बस, इन्हीं कार्यों को अपना संरक्षकबल अथवा खास कर्त्तव्य समझ रक्खा है। समाज में कैसे उपदेश की जरूरत है, समय समाज को किस दिशा तरफ ले जाना चाहता है, समाज और धर्म की वर्त्तमान वस्तु–स्थिति किस प्रकार की है, इन बातों की दाझ तो आज कल का संरक्षक–संघ बिलकुल ही नहीं रखता। इससे

समाज के ह्रास की नौबत दिन पर दिन बजता जा रही है। परन्तु अब समयने पलटा खाया है, इसलिये वड़े नगरों की सगवडों का और सेठीयाओं की खुशामदों का लोभ छोड़े विना धर्म, समाज और जैनजाति का अभ्युदय होना कठिन है।

वहुधा देखा जाता है कि आज कल वडे नगर, या पालीताणा जैसे वडे तीर्थ–स्थानों में साधु–साध्वियों की मोटी संख्या पाई जाती है और छोटे गाँवों में तो चातुर्मास में भी उनका अभाव रहता है। अगर किसी छोटे गाँववाले भावुक मुनिवरों से अर्ज भी करते हैं तो फौरन जवाब मिलता है कि हम एक भारी कार्य में रोकाये हुए हैं, अथवा गामडों के लोगों से माथापची करना पड़ती है, इससे हमारा आना नहीं हो सकता। परन्तु मुनिवरो! अब इन पामर जवाबों से काम नहीं चल सकता और न समाज का उद्धार ही हो सकता है। जब आप लोग गामडों की अनेक मुसीबतों को सहन करके ग्राम्य–जैनों के धार्मिक जीवन को सुधारना सीखोगे और जैनेतरों में जैनसंस्कार भरकर, उन्हें पापकर्मों से पराङ्मुख बनाओगे तभी आपका साधुजीवन सफल बनेगा।

जरा खिस्तीधर्म के पादरी अपने धर्म का प्रचार किस प्रकार करते हैं? इसका अभ्यास करोगे तो मालूम होगा कि वे अपने धर्म का प्रचार–कार्य वड़े नगर, या शहरों में ही करने की लोलुपता नहीं रखते। परन्तु छोटे छोटे गामडों में ही अपने थाणे नियत करके, धर्मनाम को नहीं जाननेवाली ग्राम्य–प्रजा में धर्म-

प्रचार किये जा रहे हैं, जिसके परिणाम से आज हिन्दुस्तान में ख्रिस्तानुयायिओं की संख्या अतिवेग से वढती चली जा रही है। लेकिन इससे उलटी अपने मुनिवर्ग की स्थिति और विहार वडे नगरों में होते हुए भी जिनानुयायिओं की संख्या प्रतिदिन घटती जा रही है। जैनेतरों को जैनी वनाने की वात तो दूर रही, किन्तु परम्परा से जो जैनी हैं वे भी साधु साध्वियों के विहाराऽभाव से जैनधर्म से हटकर जैनेतर धर्म और संप्रदायों को ग्रहण करते जा रहे हैं। इस वस्तुस्थिति का सुधारा तभी होगा, जव जैनमुनि वडे नगरों की मौज-मजाह को छोड कर छोटे छोटे गाँवों में मर्यादा पूर्वक छूट से विहार करेंगे। एक गुजराती साक्षरने क्या अच्छा लिखा है कि—

પૂર્વે જે તીર્થો, ગામો અને નગરો જિન મંદિરોથી અને ઉપાશ્રયોથી શોભતા હતા તેમાંનો એક ભાગ આજે એવો બની ગયો છે કે જેમાં મુનિવિહાર ભાગ્યે જ થતો હોય છે અથવા તો બીલકુલ થતો હોતો નથી અને એવા સ્થાનોની નિસ્તેજ-તાનું એક મોટું કારણ મુનિવિહારનો અભાવજ હોય છે. જૈન-વસતી જૈનેતર ધર્મોમાં કે અન્ય સંપ્રદાયોમાં દાખલ થઈ જાય, ઘર આંગણે આવેલાં જૈનધર્મસ્થાનો અને તીર્થો તરફનો તેમનો ભાવ લોપ પામે અને તે તરફ તેઓ ઉપેક્ષા-દૃષ્ટિથી જોતા થાય તેનું કારણ મુનિઓની ઉપદેશ-ધારાનો દુષ્કાલ જ છે. તીર્થોની અવગણના અને જૈનવસતીનો હ્રાસ એજ દુષ્કાલનાં ઉત્તરોત્તર નીપજેલાં માઠાં પરિણામો છે એમ ઉંડા અભ્યાસીને માલૂમ પડ્યા વિના રહેશે નહીં. મુનિવિહારના અભાવે અને તેમની ઉપદેશધારા પ્રવાહ વહેતી અટકી જવાને લીધે જૈનો અન્યધર્મો

પાળતા થઇ ગયા છે અને જૈનતીર્થોની અવગણના તથા આશાતના થવા લાગી છે. એટલું જ નહિં પણ જે કાંઇ જૈનો રહેલા હોય છે તેઓ કેટલાક સ્થાનોમાં તો જૈનત્વની હેલણા થાય એવું જીવન ગાળી રહ્યા છે. એવા નામના જૈનોને પોતાના અહિંસા ધર્મનો લાંબો ખ્યાલ પણ હોતો નથી અને તેમની ઉપર જૈનેતર સંસ્કારોના પ્રહારો થતા જ રહેવાથી તેઓ પ્રકટરીતે અન્યધર્મી ન થઈ જતા હોય, તો પણ કેવલ નામના જ જૈન રહીને જૈનધર્મને લજવે છે. આ વસ્તુસ્થિતિ આજે એવા પ્રદેશોમાં મુનિવિહાર ન થતો હોવાને જ આભારી છે.

बात है भी ठीक, वस्तुतः विचार किया जाय तो साधुओं के विहाराऽभाव से ही तीर्थों की आशातना, जैनजाति की कमी, धर्मोन्नति का अभाव, और पोषक-संघ में निरंकुशता बढ़ रही है। आज साचोरी परगना और मालानी परगना के गाँवों में जैन बसती का हाल देखा जाय तो मालूम पडेगा कि पचीस-पचास वर्ष पहले वहाँ के सभी जैन मूर्त्तिपूजक थे, और उनमें स्थानकवासी, या तेरहपन्थियों की गंध तक नहीं थी। लेकिन आज उनमें मूर्त्तिपूजकों की गंध तक नहीं दिखाई देती, यह सब प्रभाव बडे नगरों के मोही, शिथिलाचारी और विहार के आलसु साधु-साध्वियों का ही समझना चाहिये।

अब इस विषय को अधिकतर न लंबाते हुए इतना ही लिखना बस होगा कि-एक स्थान पर ठहरने से मोह की वृद्धि होती है और मोह अनेक पाप-कर्मों का बन्धक, एवं निजगुण और साधु धर्म का घातक है। इसलिये बारिश के अतिरिक्त शेषकाल के आठ महिनो में जैन साधु-साध्वियों का मुख्य

कर्त्तव्य है कि वे एक स्थान पर पडे न रहकर, या अधिक समय तक न ठहर कर प्रतिग्रामों में मर्यादा पूर्वक अप्रतिबद्ध विहार करते रहें। इससे वे जनता को लाभ पहुंचाने के साथ साथ संयमधर्म और जैनधर्म की दिव्य पताका को फिर से स्फुरायमान कर सकेंगे। अस्तु.

प्रस्तुत श्रीयतीन्द्रविहार–दिग्दर्शन का यह दूसरा भाग भी अप्रतिबद्ध विहार का फल–स्वरूप, या दर्शक ही समझना चाहिये। इसका सङ्कलन ऐतिहासिक और भौगोलिक दृष्टि से हुआ है। इसका विषय जानने के लिये इसके आरम्भ में विषय–निदर्शन संयोजित है, अतएव उसके विषय में यहाँ उल्लेख करना पिष्ट–पेषण ही है। तथापि उसकी संक्षिप्त नोंध उद्धृत कर देना भी अस्थान नहीं है। इसमें प्रथम विहार–गत गाँवों की कोशादि सह तालिका, पोस्ट पते सहित आगेवानों के नाम, और जिनप्रतिमा तथा शिलाओं के प्रशस्ति–लेख सहित प्रतिगाँवों का ऐतिहासिक, प्राचीन अर्वाचीन वर्णन आलेखित है। अन्त में चार परिशिष्ट सन्दर्भित हैं–परिशिष्ट नम्बर १ में संस्कृत प्रशस्तिलेखों का हिन्दी अनुवाद है। परिशिष्ट नं० २ में संडेरक गच्छीय श्रीयशोभद्रसूरिजी का संक्षिप्त जीवनचरित्र है, जो मननीय और चमत्कार पूर्ण है। परिशिष्ट नं० ३ में मारवाडदेशस्थ गुडावालोतरा से सेठ जीवाजी लखाजी के निकाले हुए जैसलमेरयात्रा–संघ का वर्णन है और परिशिष्ट नं० ४ में हमारे चातुर्मास दरमियान जुदे

जुदे गाँवों के भावुकों के तरफ से आये हुए विज्ञप्ति-पत्र हैं, जो हार्दिक गुरुभक्ति के दर्शक और गद्य-पद्य हिन्दी-मय हैं।

इस लम्बे विहार की शुरुआत बनासकांठा एजन्सी के थिरपुर (थराद) कसबे से होती है, जो विक्रम सं० १९८५ फागुण सुदि २ से १९८६ के आषाढ सुदि ६ तक, और सं० १९८६ मगसिर वदि ५ से १९८७ के ज्येष्ठ सुदि ५ तक के दरमियान हुआ था। इसको इतिहास सामग्री का साधन और पैदल-विहारी साधु-साध्वियों के लिये तो मार्ग-दर्शक (भोमिया के समान) समझना चाहिये।

इसका पहला भाग, विक्रम सं० १९८६ के चातुर्मास में फतापुरा (मारवाड) के श्रीसौधर्मबृहत्तपोगच्छीय श्वेताम्बर जैनसंघ के तरफ से छप कर प्रकाशित हुआ था और वह 'जैन' के मंगानेवाले आचार्य, उपाध्याय, पंन्यास, प्रवर्त्तक, गणि, लायब्रेरी, ज्ञानभंडार, पत्रसंपादक और कतिपय विद्वानों के पास जैनऑफिस-भावनगर के मार्फत रजिस्टर से पहुंचाया गया था, जिसको स्वीकार करके उन्होंने इसकी उपयोगिता के दर्शक अनेक अभिप्राय-पत्र भेजे थे।

प्रस्तुत पुस्तक के द्वितीय भाग को प्रकाशित करने के लिये मुनिश्रीविद्याविजयजी और सागरानन्दविजयजी के सदुपदेश से हरजी (मारवाड) के निवासी श्रीसौधर्मबृहत्तपोगच्छीय-श्वेताम्बर जैनसंघने ५०० पांचसौ रुपये अर्पण किये हैं। अतएव उनको हार्दिक धन्यवाद दिया जाता है और सूचना दी

जाती है कि इसी प्रकार दूसरे गाँव-नगरों के जैन-संघों को साहित्य प्रकाशन का उत्साह दिखा कर, निजोपार्जित लक्ष्मी का लाभ लेना चाहिये। संसार में साहित्यप्रचार ही समाज, धर्म और आत्म उन्नति का एक मुख्य साधन है।

सर्व साधारण को समान रूपसे लाभ मिलने, और ज्ञाना-शातना मिटाने के कारण, इस द्वितीय भाग का मूल्य १॥) रुपया रक्खा गया है, जो इसके छपाने का खर्च देखते बहुत ही कम है। इसकी उपज का जो रुपया इकट्ठा होगा वह इसी प्रकार की ऐतिहासिक-पुस्तकों के प्रचार कार्य में लगाया जायगा, अन्यत्र नहीं। इसलिये सभी महानुभाव इसकी एक एक कोपी (पुस्तक) खरीद करके साहित्यप्रचार का अमूल्य-लाभ प्राप्त करें यही अन्तिम भावना है। ॐ शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!

यत्पादपद्ममनिशं स्मरतां नराणां,
धर्मे मतिः क्षितितले विपुला च कीर्त्तिः।
गेहे सुमङ्गलमनारतसम्पदाप्ती,
राजेन्द्रसूरिरिह शन्तनुतां ससङ्घे ॥ १ ॥

श्रीवीरनिर्वाण २४५८
पोष सुदि ७ शनि
ता. २७-१२-३०

व्याख्यानवाचस्पत्युपाध्याय-
मुनि-यतीन्द्रविजय।





आस्ट्रिया के हंगरी प्रान्त में बुडापेस्त नगर के निकट एक अंग्रेज खेड़त को बगीचे का खोद-काम करते हुए प्राप्त—श्री महावीर प्रतिमा।

' श्रीयतीन्द्रविहार–दिग्दर्शन ' प्रथम भाग विषयक गुणानुरागी महानुभावों के तरफ से मिले हुए

' अभिप्राय–पत्र '

(१) यतीन्द्रविहारदिग्दर्शन का पहला भाग वांचने से लिखना पडता है कि इसका संकलन वडा ही सुन्दर और ग्रन्थ के रूप में हुआ है, अतः यह सर्व प्रकार से उपादेय है और जैनों में ऐसी पुस्तकों की पूरी आवश्यकता है.

मुनिजयंत, कालन्द्री (मारवाड) ता० १६–६–३१

(२) અતીવોપયોગી અને સુન્દર ટાઈપોથી શોભિત 'યતીન્દ્રવિહારદિગ્દર્શન' બુકનો પહેલો ભાગ વાંચવામાં આવ્યું. આની અંદર નીમાર, માલવા, ગુજરાત, કાઠીયાવાડ અને મારવાડમાં રહેલાં નાનાં મોટાં શહેરોનો અને શંખેશ્વર, શત્રુંજય વગેરે પ્રાચીન તીર્થોનો જાણવા યોગ્ય ઇતિહાસ અને પ્રશસ્તિલેખોનો સમાવેશ કરવામાં આવેલ છે. એકંદર આ પુસ્તક વિહારાકાંક્ષી મુનિવરો અને ઇતિહાસના શોખીનો માટે બહુ ઉપયોગી, તથા માર્ગદર્શક ભોમિયારૂપ છે. આના નિર્માતા પ્રસિદ્ધવક્તા વ્યા. વા. ઉ. મુનિરાજ **શ્રીયતીન્દ્રવિજયજી** મહારાજ સાહેબ છે કે જેઓ સારા લેખક અને પુસ્તક પ્રકાશનના શોખીન છે. માટે તેઓશ્રીની કૃતિ સર્વત્ર ઉપાદેયદૃષ્ટિથી જોવાય તેમાં લગાર માત્ર સન્દેહ નથી.

મુ૦ જોધપુર, તા. ૭–૧૦–૩૧. મુનિ હંસવિજય.

" (૧) **શ્રી યતીન્દ્રવિહાર દિગ્દર્શન**—પ્રથમ ભાગ, સંયોજક ઉપાધ્યાયજી મુનિરાજ શ્રીયતીન્દ્રવિજયજી મહા-

રાજ, પ્રકાશક-સૌધર્મબૃહત્તપાગચ્છીયજૈનસંઘ-રતાપુરા (માર વાડ) સન્ ૧૯૨૫ નવેમ્બર તા. ૭ મીએ કુકસી (માલવા)થી કાઠીયાવાડ, ગુજરાત અને મારવાડ સુધી લાંબો વિહાર કરતા રસ્તામાં જે જે ગામો, તીર્થો વિગેરે આવ્યા તે ગામ, તેમાં આવેલ જૈનોના ઘર, દેરાસરો, સંસ્થા, ધર્મશાલા વિગેરેનું ટુંક વર્ણન કે જેનાથી સાધુ-સાધ્વી મહારાજને વિહાર દરમ્યાન ઉપયોગી થઈ પડે તેમ તથા ડીરેકટરીના રૂપમાં આ બુકમાં સંયોજક મુનિ મહારાજે આપેલ છે. સાથે કેટલાક મંદિરજીના શિલાલેખો આપી ઐતિહાસિક અને ભૌગોલિક સાહિત્યની વૃદ્ધિ થઇ છે જે જાણવા તથા પાસે રાખવા જેવી છે.

આત્માનંદ-પ્રકાશ, પૃ ૨૭, અંક ૫, માગશીર્ષ ૧૯૮૬.

---

(२) × × × × × × संयोजक महोदयने मारवाड, मालवा, काठीयावाड के कतिपय तीर्थों की यात्रा करते ग्रामानुग्राम किये हुए विहार का वर्णन, रास्ते में आते मन्दिरों के शिलालेख आदि सहित लिखा है, जो इतिहास प्रेमी, एवं पाद-विहारियों के लिये अति उपयुक्त है।"

जैनजीवन वर्ष ४, अंक, ६, ता. २१-११-१९२९.

"(३) × × × × × × यह पुस्तक ऐतिहासिक और पैदल विहार करनेवाले साधु साध्वियों के लिये भोमिया के सदृश है। इसमें अन्दाजन २०७ छोटे वडे गाँवों में जैनवस्ती, धर्मशाला, उपाश्रय, जैनमन्दिर जिनप्रतिमा और कतिपय जैन-तीर्थों का प्राचीन अर्वाचीन ऐतिहासिक तथा भौगोलिक वर्णन अति सरल और ओजस्विनी हिन्दी भाषा में लिखा गया है।

साथ में एक गाँव से दूसरे गाँव का अंतर, प्रशस्तिलेख और जिन-प्रतिमाओं के लेख देकर पुस्तक को इतिहास का एक अंग बना दिया गया है। पुस्तक सर्व प्रकार से उपादेय है, अतएव इसकी एक एक कोपी मंगा कर सभी को अपने पास रखना चाहिये।"

श्रीराजेन्द्रप्रवचन–कार्यालय, खुडाला–मारवाड.

---

(४) × × × × × × यह पुस्तक, इतिहास का खजाना, मार्ग का भोमिया और वर्त्तमान वस्तुस्थिति का द्योतक समझना चाहिये। इसमें मालवा, गुजरात, काठीयावाड और मारवाडदेश के कईएक पवित्र जैनतीर्थों का तथा प्राचीन (जालोर, भीनमाल, रतनपुर, अर्बुद, भीलडीया, थिरपुर आदि) नगरियों का ऐतिहासिक वर्णन, बडा ही चित्ताकर्षक और सरस हिन्दी भाषा में आलेखित है। हमे निःसन्देह कहना पडता है कि संयोजक मुनिवरने यह पुस्तक लिखकर (रचके) जैनइतिहास की एक प्रकार की भारी त्रुटि को पूर्ण की है। इसके लिये उनको जितना धन्यवाद दिया जाय, उतना ही कम है। यदि सभी जैन मुनिवर अपने विहार के दरमियान इसी प्रकार परीश्रम करके पुस्तक प्रकाशित करने का साहस कर लेवें तो जैनों का शृंखलाबद्ध इतिहास तैयार हो जाने में कुछ भी देर न लग सकेगी।"

पं० व्रजनाथ मिश्र	}	वि० सं० १९८६
धमन्तरी (दरभंगा)		आषाढ सुदि ९

" (૫) જૈન-શ્રેયસ્કર-મંડલ મહેસાણા તરફથી ચાલતા કેળવણીખાતાના પરીક્ષક તરીકે હાલમાં હું મારવાડ દેશના કેટલાક ગામોમાં જૈનપાઠશાલાઓની પરીક્ષા લઈ, હરજી નગરમાં આવ્યો અને શ્રી મહાવીર-જૈન-સ્કૂલના વિદ્યાર્થીઓની પરીક્ષા લીધી. અત્રે એક અગત્યની નોંધ લેતાં જણાવવું પડે છે કે હરજીમાં ચાતુર્માસ વિરાજેલ વ્યાખ્યાન વાચસ્પત્યુપાધ્યાય મુનિરાજ શ્રી **યતીન્દ્રવિજયજી મહારાજ** સાહેબનો બનાવેલ '**યતીન્દ્રવિહાર-દિગ્દર્શન**' બુકનો પ્રથમ ભાગ વાંચતાં બહુ જ આનંદ થયો.

મહારાજ સાહેબે પોતાના લાંબા વિહારમાં જનતાને વ્યાખ્યાનલાભ આપવા સાથે દરેક છોટા મોટા ગામોનો ઝીણવટથી જૈન તથા જૈનેતરોને ઉપકારક થાય તેવો ઇતિહાસ લખી અને જૈનોની પ્રાચીન અર્વાચીન સ્થિતિનું દિગ્દર્શન કરી સારો પ્રકાશ પાડેલ છે. વળી બનાસકાંઠા એજન્સીમાં આવેલ ભોરોલ ગામમાં દેવીના દેવલ આગલ દરસાલ સેંકડો ઘેટા-બકરાઓનો વધ થતો હતો તે અટકાવી અને ભોરોલ ઠાકુર સાહેબને સમજાવીને તેમના બાર ગામોમાં દેવી દેવલાને નામે કે વગડામાં કોઇપણ અવાચ્ય પ્રાણિઓનો વધ ન કરવા માટે હુકમ જારી કરાવ્યો છે તે પુસ્તકમાં આપેલ નકલ વાંચવાથી જણાઇ આવે છે. આ મહાન્ ઉપકાર માટે તેઓશ્રીને પૂર્ણ ધન્યવાદ દેવો ઘટે છે.

આખીરમાં નમ્રતાપૂર્વક જણાવું છું કે આ પુસ્તક એક વાર આદ્યન્ત-પૂર્ણ વાંચી, દરેક મુનિ પોતાના વિહારમાં આવી ઉપયોગી નોંધ લઈ દરેક ગામનો પ્રાચીન અર્વાચીન ઇતિહાસ લખવા પ્રયત્ન કરશે તો પોતાને લાભ થવા સાથે જૈન ઇતિહાસનું ગૌરવ વધશે. તારીખ ૧૯-૧૦-૩૦

ક્ષેમચંદ ભૂધરદાસ, જૈનપરીક્ષક-મહેસાણા.

विहारगत गाँवों की कोशादिसह तालिका ।

थराद से आबू और बीजापुर तक के गाँव—

नम्बर	गाँवों के नाम	कोश	जैनों के घर	जिन मंदिर	संवत् १९८९ मिति
१	थराद	०	०	०	फाल्गुन सुदि
२	वडगामडो	३	३	०	२
३	भोरड़ु	३	३	०	४
४	ऊन्दराणा	१॥	११	०	५
५	खेंगारपुरा	१॥	१	०	०
६	राह	३	५	०	६
७	डुआ	४	४०	१	७—८
८	धारवा	३	२१	१	९—१०
९	धानेरा	३	१५०	२	११से चै.व.९
१०	वोड़ा	४।	३	०	१०
११	खीमत	३	१०८	२	११
१२	भाटराम	४	४	०	१२
१३	भांडोवरा	३	२०	१	०
१४	मढार	३	२५०	२	१३—१४
१५	मगरीवाडा	३	३	०	०
१६	वरमाण	२	१	१	०

१७	जीरावला	२॥	१५	१	३० चे. सु. १ सं. १९८६
१८	मवालो	१॥	०	०	०
१९	जोलपुर	१	०	०	०
२०	सेलवाडो	१॥	२६	१	२
२१	अनादरा	२	३०	१	३
२२	देलवाडा } आबू	४	०	५	४—९
२३	ओरिया } आबू	२	०	१	०
२४	अचलगढ } आबू	१	०	३	१०—११
२५	कायद्रां	४	२०	१	१२
२६	काचोली	२	४०	१	१३
२७	नीतोरा	१	५०	१	१४
२८	दयाणा (तीर्थ)	२	०	१	१५
२९	लोटाणा (,,)	१॥	०	१	वे. व. १
३०	नांदिया (,,)	२	३०	२	२—३
३१	रींछी	१	०	१	०
३२	अजारी (तीर्थ)	३	४०	१	०
३३	पिंडवाडा	२	२००	२	०
३४	झाडोली	१	४५	१	०
३५	वामनवाड (तीर्थ)	१॥	०	१	४—५
३६	ऊन्दरा	१	०	१	०

३७	सींवेरा	१	०	१	०
३८	मालनुं	२	०	१	०
३९	नाणा (तीर्थ)	२॥	९०	२	६
४०	चांवडेरी	१॥	६०	१	७
४१	भन्दर	१॥	२०	१	०
४२	वेडा (तीर्थ)	१॥	१२५	१	८
४३	भादून	३	७	०	०
४४	राता महावीर(तीर्थ)	२	०	१	०
४५	बीजापुर	१	१००		९–१०

बीजापुर से गोडवाड–पंचतीर्थी और कोरटाजी तीर्थ तक के गाँव.

नम्बर	गाँवों के नाम	कोश	श्रावकों के घर	जिन मंदिर	सं. १९८६ मिति वैशाख वद
४६	सेवाड़ी	२	२२५	२	११
४७	लुणावा	१॥	२१०	२	०
४८	लाठारा	२	३०	१	१२
४९	राणकपुर (तीर्थ)	४	०	३	१३–१४
५०	सादड़ी	३	७००	२	३०
५१	घाणेराव	२	४००		वै. सु. २–३

५२	मुछालामहावीर	२	०	१	०
५३	देसूरी	२	२००	१	०
५४	सोमेश्वर (तीर्थ)	२	०	१	०
५५	नाडलाई (,,)	२	६०	१२	४–५
५६	नाडोल (,,)	३	२००	६	६
५७	वरकाणा (,,)	३	०	१	७
५८	धणी	३	२०	१	०
५९	खुडाला	२	२५०	१	८–१५
६०	फालना	।	०	१	०
					जेठ वदि
६१	वाली	२	४९०	३	१–५
६२	सेसली (तीर्थ)	१	०	१	०
६३	पेरवा	४	२१	१	६
६४	कोलीवाडा	३	२५	१	०
६५	नयासुमेरपुर	१	२२	१	७–१२
६६	सुमेरपुर }	।	२	१	१३–१४
६७	ऊन्दरी }		१५	१	३०
					जेठ शुदि
६८	शिवगंज	॥	६००		१–८
६९	वडगाम	१	४०	१	०
७०	पोमावा	२॥	४९	१	९–१०

७१	खिवाणदी	२	२९०	२	११–१२
७२	वांकली	१	१२१	१	१३
७३	सेदरिया	३	५०	१	१४–१५
					आषाढ वद
७४	गुडाबालोतरा	३॥	३२५	३	१–५
७५	हरजी	१॥	३००	२	०
७६	रोवाड़ा	३॥	२५	१	६–८
७७	नोवी	१	१००	२	०
७८	भारूंदा	२	१००	२	९–११
७९	जोयला	२	६०	१	०
८०	झालपा	२	३०	१	१३–३०
					आ० सु०
८१	कोरटाजी (तीर्थ)	२	६७	४	१–५
८२	फतापुरा	१॥	१५	१	६

प्रति गाँव वार आगेवान जैनों के नाम
पोस्ट पते सहित—

अवचल देवजी वारिया नागर जेचंद वारिया	मु० वडगामडो, पो० थराद वाया डीसा.
छगन कानजी अदाणी नागर मला अदाणी	मु० भोरडु, पो० थराद (डीसा.)
मेता ऊजम रामजी कमल सीतला दोसी	मु० ऊन्दराणा, पो० थराद (डीसा).
संगवी मानचंद मगन	मु० खेंगारपुरा, पो० थराद (डीसा).
नथा जेताजी चुन्नीलाल नवलाजी	मु० राह, पो० थराद (डीसा).
सेठ वकता चतुर मोरखिया ऊमा मलूक	मु० डुआ, पो० धानेरा (डीसा).
संगवी कसन रवचंद मंछा डुंगर	मु० धारवा, पो० धानेरा (डीसा).
जोगाणी केवल भीखा	मु० वोडा, पो० धानेरा (डीसा).
जोगाणी उमेद वगता मोदी धरमा दलछा	मु० खीमत, पालनपुर (डीसा).
तलका कस्तुर तलका जवेरा	मु० भाटराम, पो० मढार (आबूरोड)

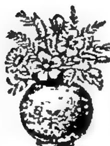
कसना जेताणी कस्तूर जगाजी	मु० भांडोतरा, पो० मढार (आबूरोड).
उमेदा सामजी नाया पानाजी	मु० पो० मढार, सिरोही-(आबूरोड)
चतरा राजाजी	मु० जीरावला, पो० रेवदर (आबूरोड).
जेचंद खूवाजी राजमल प्रागाजी	मु० सेलवाडा, पो० अनादरा (आबूरोड).
जेसा धना चतराजी शा० गोमा वदाजी	मु० पो० अनादरा, (आबू-माउन्ट).
जैन श्वेताम्बर कारखाना	मु० पो० देलवाडा, (आबूरोड).
अचलसिंह अमरसी जैन कारखाना अचलगढ़	मु० अचलगढ, पो० देलवाडा (आबूरोड).
जैन पंच महाजन	मु० कायद्रां, पो० कीवरली स्टेशन.
शा. हरचंद मालाजी (श्राविकाचमनी)	मु० कासोली, पो० रोहिडा (सिरोही).
जैन पंच महाजन	मु० नीतोरा, पो० रोहिडा स्टेशन.
जैन पंच महाजन	मु० नांदिया, पो० पिंडवाडा (सिरोही).
जैन पंच महाजन	मु० अजारी, पो० पिंडवाडा (सिरोही).

जैन पंच महाजन	मु० पिंडवाडा, (सिरोही).
जैन पंच महाजन	मु० झाडोली, पो० पिंडवाडा (सिरोही).
जैन श्वेताम्बर कारखाना	मु० वामनवाड, पो० पिंडवाडा (सिरोही).
नेणमल हीराजी गुलवा भूताजी वीसाजी नरिंगजी	मु० चांनडेरी, पो० नाणा स्टेशन (मारवाड).
रायचंद जवेरचंद गोपाजी खुमाजी	मु० पो० नाणा, (मारवाड).
गुलवाजी पेमचंद मानमल रखवाजी कस्तूरचंद हांसाजी	मु० वेड़ा० पो० मोरीवाडा (मारवाड).
वीरचंद ऊमाजी पूनमचंद नथुजी	मु० भन्दर, पो० मोरीवाडा (मारवाड).
ताराचंद कूपाजी भूताजी तिलोकचंद वजाजी धूलाजी	मु० वीजापुर, पो० सेवाडी व्हाया फालना.
सरदारमल जेठाजी उमेदमल रखवाजी हिम्मतमल जीताजी	मु० पो० सेवाड़ी, (मारवाड) व्हाया फालना.
केसरीमलजी मगन रखवदास दोलाजी	मु० लुणावा पो० फालना (मारवाड).

भूताजी चेनाजी	मु० लाठारा, पो० वाली (मारवाड).
धर्मचंद दयालचंद पेढी आणंदजी कल्याणजी	मु० पो० सादड़ी, (मारवाड)
महावीर स्वामी जैन पेढी जावंतराजजी खीचिया	मु० पो० घाणेराव, (मारवाड).
जैन पंच महाजन	मु० पो० देसूरी, (मारवाड).
श्री सोमेश्वर तीर्थ कारखाना	मु० सोमेश्वर, पो० देसूरी (मारवाड).
जैन पंच महाजन कारखाना पेमचंद तिलोकचंद अनराजजी देवीचंद	मु० नाडलाई, पो० घाणेराव (मारवाड).
पद्मप्रभ जैन कारखाना	मु० पो० नाडोल, (मारवाड)
जैन श्वेताम्बर कारखाना पार्श्वनाथ जैन विद्यालय	मु० वरकाणा, पो० राणी स्टेशन (मारवाड)
फोजमल ताराचंदजी श्री जैन धर्म-सभा	मु० खुडाला, पो० फालना (मारवाड).
पेमचंद गोमाजी देवीचंद नवलाजी	मु० पो० वाली, (मारवाड).
ऊमा रायचंदजी हेमाजी सूमाजी	मु० पेरवा, पो० वाली (मारवाड).

हजारीमल चेनाजी	मु० कोलीवाडा, पो० सुमेरपुर.
नथमल मोतीलाल कानाजी टेकचंद वृद्धिचंद चौथमल सांकलचंद तेजराज	मु० पो० सुमेरपुर, (मारवाड) एरनपुरा रोड.
चुन्नीलाल सेसमल	मु० सुमेरपुर, (मारवाड).
केसा पन्नाजी समरथमल रूपाजी	मु० ऊन्दरी, पो० सुमेरपुर (मारवाड).
जैन पंच महाजन	मु० वडगाम पो० शिवगंज (एरनपुरा रोड).
हेमराज रतनाजी नवलाजी डूंगाजी	मु० पोमावा, पो० सुमेरपुर (मारवाड).
भीमाजी हकमाजी अदेचंद ऊमाजी हंसराज फताजी अनोपचंद गुलावचंद	मु० पो० खिवाणदी, (मारवाड) एरनपुरा रोड.
हिन्दु हकमाजी कोठारी	मु० पो० वांकली, (मारवाड).
सूरजमल उमेदमल रामाजी पदमाजी	मु० भगरूंदा, पो० एरनपुरा की छावनी (मारवाड).

घूपाजी भूताजी टेकचंद केवदाजी	मु० आलपा, पो० एरनपुरा की छावनी (सिरोही).
हांसाजी दीपाजी धूलचंद खेमराज गलवाजी टेकाजी गलवाजी कस्तूरजी	मु० कोरटाजी, पो० एरनपुरा की छावनी (मारवाड).
चेनाजी पन्नाजी नथा दलाजी जीवा चेनाजी	मु० फतापुरा, पो० एरनपुरा छावनी (मारवाड).



जगत्पूज्य प्रभु श्री विजयराजेन्द्रसूरीभ्यो नमः ।

श्रीयतीन्द्रविहार-दिग्दर्शन ।



(द्वितीय-भाग)



तृणावली जैसे अनल की लपट से रहती नहीं,
त्यों शोक, मन्मथ, मान को रहने दिया जिसने नहीं ।
भय, मोह, नींद, विषाद, चिन्ता भी न जिसको व्याप्त है,
उसकी शरण में हूं गिरा, जो देववर है, आप्त है ॥ १ ॥

× × ×

श्री जैनागमनन्दनाख्यविपिने लीलाविहारी प्रभु-
र्निर्बाधं विहरन्नजस्रमनघः सत्तत्त्वपूर्णोचितैः ।
व्याख्यानैः समजीवतापहरणं कुर्वञ्जगत्पूजितः,
सोऽयं नः श्रियमातनोतु सततं राजेन्द्रसूरीश्वरः ॥१॥

विक्रम संवत् १९८५ फाल्गुनशुक्ला २ बुधवार ता० १३-३-२९ के दिन उत्तरगुजरात वनासकांठा-एजन्सी में आये हुए थराद (थिरपुर) कसबे से हमारा विहार, खास

---

१ इस कसबे में हमारा वि० सं० १९८५ (सन् १९२८) का चौमासा हुआ था। उसके दरमियान चारों महिने तक श्रीउत्तराध्ययनसूत्र-सटीक

आबुराज और गोड़वाड़ के प्राचीन जैन–तीर्थों की यात्रा के लिये हुआ। उसी विहार के दरमियान रास्ते में आये हुए प्रति गाँवों का हाल उनमें जैनघरों की संख्या, जिन–मन्दिर, जिन-प्रतिमा, धर्मशाला, और उपासरा आदि के शिला–प्रशास्ति लेख प्रस्तुत (इस द्वितीय) भाग में आलेखित हैं।

१ वड़गामड़ो—

थराद–स्टेट का यह छोटा गाँव है, इसमें वीसाश्रीमाली जैनों के तीन ही घर हैं जो अच्छे श्रद्धालु, विवेकी साधु–भक्ति करनेवाले हैं। इस गाँव के जैनेतर भी अच्छे सत्संगी हैं और जैन मुनिवरों के व्याख्यान हार्दिक–प्रेम से सुनते हैं। यहाँ जिन मन्दिर, या साधुओं के उतरने लायक कोई स्थान नहीं है। साधु साध्वीयों को गृहस्थों के मकान में ठहरना पड़ता है।

२ भोरड़ु—

यहाँ वीसाश्रीमाली जैनों के अच्छे भावुक और श्रद्धावाले ४ घर हैं। गाँव में जिनमन्दिर, उपासरा या धर्मशाला नहीं है। जैन पर्वदिवसो में यहाँ के जैन थराद जाकर पर्वाराधन करते हैं। यहाँ के ठाकुर वीरमजी (विक्रमसिंहजी) अच्छे सत्संगी और गुणानुरागी हैं। हमारा जाना जब भोरड़ु में हुआ था,

---

और भावनाधिकार में कुमारपालचरित महाकाव्य वांचा गया था। व्याख्यान में राजमंडली के सिवाय जैन और जैनेतर श्रोताओं की अच्छी संख्या होती थी और यहाँ धर्मकार्यों की अच्छी अभिवृद्धि हुई थी।

तब ठाकुरसाहबने अपने मकान में हमको बुलाकर व्याख्यान वंचवाया था और इस प्रसंग की यादी के लिये हमारे उपदेश से अपने तीन गाँवों और उनकी सीमा में अवाच्य प्राणियों को न मारने का हुक्म जारी किया था, जिसका पालन अच्छी तरह हो रहा है।

३ ऊन्दराणा—

इस छोटे गाँव में वीसा श्रीमाली जैनों के सुसाधुओंकी योग्य भक्ति करनेवाले ११ घर हैं। यहाँ उपासरा, धर्मशाला और जिनमन्दिर नहीं है। पर्युषण जैसे उत्तम पर्व में भी यहाँ के जैनों को प्रतिक्रमणादि क्रिया करने का कोई साधन नहीं है। यहाँ के जैनेतर लोग सत्संगी न होने के वजह से पशु-प्राय ही हैं।

४ राह—

यहाँ व्यापार के निमित्त आये हुए मारवाडी वीसा ओसवाल जैनों के ४ घर हैं जो स्थानकवासी संप्रदाय के हैं। लेकिन मन्दिरमार्गी साधुओं के द्वेषी नहीं हैं, दिलोजान से उनकी भक्ति करनेवाले हैं।

५ डुआ—

थराद–स्टेट का यह छोटा कसवा है, इसमें वीसा श्रीमाली जैनों के अच्छे भावुक ३६ घर हैं जो सभी सनातन त्रिस्तुतिक शुद्ध संप्रदाय के हैं। गाँव में एक तिमंजिला जीर्ण उपासरा और

एक छोटी धर्मशाला है। जीर्ण उपाश्रय से लगते ही एक सुन्दर शिखरवाला जिन मन्दिर है, जिसमें श्री अमीझरापार्श्वनाथ की वादामीरंग की एक हाथ बडी अति प्रभावशालिनी प्रतिमा मूलनायक तरीके विराजमान है। इस मन्दिर के मंडप में दहिने हाथ के एक स्तम्भे पर लिखा है कि—

१–श्रीगणेशाय नमः। संवत् १८४१ वर्षे वैशाखसुदि ७ दिने वार बुधे श्रीअमीझरा–पार्श्वनाथनुं देराशर पूरण थयुं छे. पंन्यास विनयविजय महाराज समस्त संघ मलीने द्रव्य खरच्यो छे वाघेला रंगजी कुमरजी जेठाजी वगताजीनी वारमां कराव्युं छे. सं० १८०८ कार्त्तिकवदि ८ वार सोमे पायो नांख्यो छे. सलावट वडनगरना सोमपुरा उदेराम खुसालजीये कर्युं छे.

मन्दिर के दहिने भाग पर लगते ही एक पक्का भूमिगृह (तलघर–भोंयरा) है। इसमें मूलनायक श्रीपद्मप्रभस्वामी की सफेदवर्ण पौन हाथ बड़ी भव्य प्रतिमा स्थापित है जो अर्वाचीन है। इस प्रान्त में यह स्थान तीर्थस्वरूप माना जाता है और कई जैन साधु साध्वी यहाँ दर्शनार्थ आते हैं।

६ धाखा—

पालनपुर-स्टेट के धानेरा जागीर का यह छोटा गाँव है। इसमें वीसा श्रीमाली जैनो के २० घर हैं जो सभी गच्छवाले साधु साध्वियों को समानरूप से मानते हैं। गाँव के बीच एक छोटा सुन्दर उपासरा है, जो जैनाचार्य महाराज श्रीमदविजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी के सदुपदेश बना है। इसके लगते ही दहिने

तरफ एक छोटा गृह-मन्दिर है जिसमें मूलनायक श्रीशान्तिनाथ की सफेदवर्ण एक हाथ वड़ी प्रतिमा स्थापित है, जो सं० १९६७ आषाढ शुदि १० के दिन अष्टाह्निका-महोत्सव के साथ आचार्य श्रीमद्विजयधनचन्द्रसूरिजी के कर-कमलों से प्रतिष्ठित है।

७ थोड़ा—

इस छोटे गाँव में जैनों के तीन घर हैं, जो स्थानकवासी संप्रदाय के हैं। लेकिन यहाँ के जैन लकीर के फकीर नहीं है किन्तु, गुणी और क्रियापात्र साधु साध्वियों की अच्छी कदर करने वाले हैं।

८ खीमत—

यह पालनपुर रियासत का सुन्दर कसवा है। इसमें ओसवाल जैनों के ७५ और पोरवाड जैनों के २५ एवं १०० घर हैं, जो हैं तो भावुक, पर विवेक हीन हैं। इसीसे यहाँ जैनों के इतने घर होने पर भी किसी अच्छे विद्वान् मुनिवर का चोमासा न कभी हुआ और न कभी होता है। जिन साधु साध्वियों का आचार-विचार पतित है और जो अकेले रहना ही पसन्द करते हैं उन्हीं एकल विहारी साधु साध्वीयों का कभी कभी यहाँ चोमासा हो जाया करता है।

गाँव में एक दो मंजिला उपासरा और दो छोटी धर्मशाला हैं। एक भव्य शिखरवाला मंदिर है जिसमें मूलनायक श्रीऋषभदेव की सफेदवर्ण एक वेंत वडी प्रतिमा विराजमान है। इसके

जडात्मज शाह्केवलसुत देसल भार्या सराली पुत्राः सा०सहज, सा०साहण, सा०समर, साहणभार्या साध्वी वलदे पुत्रौ धनासा० कडुआसा० जीवा भगीनी वाई सुकुलसाध्वी भावलदेवीभिरात्म-श्रेयसे श्रीपार्श्वनाथचैत्ये देवकुलिका कारिता उपकेशगच्छे श्री ककुदाचार्यशिष्य श्रीकक्कसूरीणामुपदेशाच्छुभं भवतु। (३)

इस भव्य जिन मन्दिर की सभी देहरियाँ विक्रम सं० १४११ और १५३३ के वीच की वनी हुई हैं। देहरियों के स्तम्भों और भींत पर के अनेक लेखों से जान पड़ता है कि विक्रम की १४ वीं सीकी से १८ वीं सीकी तक यहाँ यात्रा करने के लिये कई संघ आते थे। इसके समर्थक यहाँ अनेकाऽ-नेक लेख पाये जाते हैं। उनमें से एक लेख इस प्रकार है—

६–संवत् १४९२ पौषवदी१०बुधे श्रीचन्द्रगच्छे तपाभट्टा-रक श्रीविजयशेखरसूरिपट्टे श्रीवयरसेनसूरिपट्टे श्रीहेमतिलक-सूरिपट्टे श्रीरत्नशेखरसूरिपट्टे श्रीपूर्णचन्द्रसूरिपट्टे प्रकटप्रभुकुटाः श्रीहेमहंससूरयः श्रीपार्श्वप्रणेतुं भक्त्या नित्यं श्रीरत्नसागर-सूरिप्रभृतिपरिकरयुताः प्रणमंति पुण्यप्रभगणि वज्रमेरुगणि लक्ष्मीसागरमुनिपतिप्र० रत्नसुंदरगणिन्यादियतिवराभ्यां पु-न्यवि० ठाकुरसिंह संघे समायाता। (४)

इस समय इस रमणीय तीर्थस्वरूप मन्दिर में मूलनायक श्रीनेमनाथस्वामी की दो हाथ बडी श्वेत वर्ण की मूर्त्ति विराज-मान है और इसकी देवकुलिकाएँ सभी मूर्त्ति रहित हैं। कहा जाता है कि बादशाही हमलों के भय से मन्दिर की सभी

मूर्त्तियाँ कहीं भंडार दी गई थीं। बहुत अरसा बीतने के बाद उनका पता न लगने से शिर्फ मूलनायक के स्थानपर वर्त्तमान मूर्त्ति बैठाई गई है। यहाँ अब भी हरसाल पौषवदि १० का मेला भराता है जिसमें २ हजार से ६ हजार तक यात्री दर्शनार्थ आते हैं। जीरावला गाँव में ओसवाल पोरवाड़ जैनों के १५ घर हैं, जो पक्के तीर्थमूडिये और यात्रियों को ठगनेवाले हैं। यात्रियों के आराम के लिये यहाँ एक छोटी धर्मशाला है जिसमें पूरा कचरा भी नहीं निकाला जाता।

१५ सेलवाडा—

यहाँ ओसवाल पोरवाड जैनों के १६ घर, एक उपासरा और एक गृहमन्दिर है। मन्दिर में मूलनायक श्रीऋषभदेवजी की श्वेत पाषाणमय चोवीस अंगुल बडी प्रतिमा स्थापित है, जो विक्रम की १८ वीं सदी की प्रतिष्ठित है। यहाँ पेश्तर बावन जिनालय और विशाल कोरणी घोरणीवाला जिन मन्दिर था। वह इस समय भूमिशायी है, उसका खंडहर पडा है। इस विशाल मन्दिर के कई पत्थर महादेव के छोटे देवल और चौरे में लगे हुए और कितने ही पत्थर योंही बेकार पड़े हुए हैं।

गाँव से दक्षिण-पश्चिम आधा माइल की दूरी पर एक छोटी पहाडी है उसमें से जिन-मंन्दिरों के योग्य सफेद और मजबूत पत्थर निकलता है। आबु, कुंभारिया और मीरपुर (हमीरगढ) के प्राचीन जिनालयों में प्रायः यहीं का पत्थर लगाया गया है। अब भी मारवाड आदि में मंदिरों के लिये यहाँ से हजारों रुपयों का पत्थर जाता है।

जडात्मज शाहकेवलसुत देसल भार्या सराली पुत्राः सा०सहज, सा०साहण, सा०समर, साहणभार्या साध्वी वलदे पुत्रौ धनासा० कडुआसा० जीवा भगीनी वाई सुकुलसाध्वी भावलदेवीभिरात्म-श्रेयसे श्रीपार्श्वनाथचैत्ये देवकुलिका कारिता उपकेशगच्छे श्री ककुदाचार्यशिष्य श्रीककसूरीणामुपदेशाच्छुभं भवतु । (३)

इस भव्य जिन मन्दिर की समी देहरियाँ विक्रम सं० १४११ और १५३३ के वीच की वनी हुई हैं। देहरियों के स्तम्भों और भींत पर के अनेक लेखों से जान पड़ता है कि विक्रम की १४ वीं सीकी से १८ वीं सीकी तक यहाँ यात्रा करने के लिये कई संघ आते थे। इसके समर्थक यहाँ अनेकाड-नेक लेख पाये जाते हैं। उनमें से एक लेख इस प्रकार है—

६—संवत् १४९२ पौषवदी१०वुधे श्रीचन्द्रगच्छे तपाभट्टा-रक श्रीविजयशेखरसूरिपट्टे श्रीवयरसेनसूरिपट्टे श्रीहेमतिलक-सूरिपट्टे श्रीरत्नशेखरसूरिपट्टे श्रीपूर्णचन्द्रसूरिपट्टे प्रकटमुकुटाः श्रीहेमहंससूरयः श्रीपार्श्वप्रणोतुं भक्त्या नित्यं श्रीरत्नसागर-सूरिप्रभृतिपरिकरयुताः प्रणमंति पुण्यप्रभगणि वज्रमेरुगणि लक्ष्मीसागरमुनिपतिप्र० रत्नसुंदरगणिन्यादियतिवराभ्यां पु-न्यवि० ठाकुरसिंह संघे समायाता । (४)

इस समय इस रमणीय तीर्थस्वरूप मन्दिर में मूलनायक श्रीनेमनाथस्वामी की दो हाथ वडी श्वेत वर्ण की मूर्त्ति विराज-मान है और इसकी देवकुलिकाएँ समी मूर्त्ति रहित हैं। कहा जाता है कि बादशाही हमलों के भय से मन्दिर की समी

मूर्त्तियाँ कहीं भंडार दी गई थीं। बहुत अरसा बीतने के बाद उनका पता न लगने से शिर्फ मूलनायक के स्थानपर वर्त्तमान मूर्त्ति बैठाई गई है। यहाँ अब भी हरसाल पौषवदि १० का मेला भराता है जिसमें २ हजार से ६ हजार तक यात्री दर्शनार्थ आते हैं। जीरावला गाँव में ओसवाल पोरवाड़ जैनों के १५ घर हैं, जो पक्के तीर्थमूडिये और यात्रियों को ठगनेवाले हैं। यात्रियों के आराम के लिये यहाँ एक छोटी धर्मशाला है जिसमें पूरा कचरा भी नहीं निकाला जाता।

१५ सेलवाडा—

यहाँ ओसवाल पोरवाड जैनों के १६ घर, एक उपासरा और एक गृहमन्दिर है। मन्दिर में मूलनायक श्रीऋषभदेवजी की श्वेत पाषाणमय चोवीस अंगुल बडी प्रतिमा स्थापित है, जो विक्रम की १८ वीं सदी की प्रतिष्ठित है। यहाँ पेश्तर बावन जिनालय और विशाल कोरणी धोरणीवाला जिन मन्दिर था। वह इस समय भूमिशायी है, उसका खंडहर पडा है। इस विशाल मन्दिर के कई पत्थर महादेव के छोटे देवल और चौरे में लगे हुए और कितने ही पत्थर योंही बेकार पड़े हुए हैं।

गाँव से दक्षिण-पश्चिम आधा माइल की दूरी पर एक छोटी पहाडी है उसमें से जिन-मंन्दिरों के योग्य सफेद और मजबूत पत्थर निकलता है। आबु, कुंभारिया और मीरपुर (हमीरगढ) के प्राचीन जिनालयों में प्रायः यहीं का पत्थर लगाया गया है। अब भी मारवाड आदि में मंदिरों के लिये यहाँ से हजारों रुपयों का पत्थर जाता है।

१६ कायद्रां—

आर. एम्. आर. रेल्वे के कीवरली स्टेशन से ४ माइल उत्तर में आबू के समीप यह पुराना गाँव है। प्राचीन लेखों में इसका नाम 'कासह्रद' मिलता है। इस नगर की जाहोजलाली के समय में इसके नाम से कासह्रद नामक गच्छ भी प्रसिद्धी में आया था, जिसमें कि उद्योतनसूरि, सिंहसूरि आदि समर्थ आचार्य हुए हैं। प्राचीन काल में जिस प्रकार यहाँ जैनों की प्रबलता थी, उसी प्रकार कासेश्वर, अरुणेश्वर, त्रिमूर्त्ति आदि की विशेषता से अनुमान है कि यहाँ जैनतरों की भी प्रबलता होगी।

प्राचीन समय में यहाँ हजारों जैन घर आबाद थे, लेकिन वर्त्तमान में नाम मात्र के लिये जैनों के २० ही घर हैं जिन में न विवेक है और न धार्मिक श्रद्धा। गाँव में एक सुन्दर देवकुलिकाओं सहित शिखर बद्ध जिन मंदिर है, जो विक्रम की ११ वीं सीकी के आस पास का बना हुआ है। इसकी देककुलिका के बारसाख वाली भींत पर नीचे मुताबिक शिला लेख लगा हुआ है—

७—श्रीभिल्लमाल निर्यातः, प्राग्वाटः वणिजां वरः।
श्रीपतिरिवलक्ष्मीयुग्, गोलंच्छी राजपूजितः ॥१॥
आकरो गुणरत्नानां, वंधुपद्मदिवाकरः।
जज्जुकस्तस्य पुत्रः स्यान्मम्मरामौ ततोऽपरौ ॥ २ ॥
जज्जुसुतगुणाढ्येन, वामनेन भवाद् भयम्।
दृष्ट्वा चक्रे गृहं जैनं, मुक्त्यै विश्वमनोहरम् ॥ ३ ॥
संवत् १०९१

इस शिलालेख से साफ जाहिर होता है कि विक्रम संवत् १०९१ में भीनमाल के रहेनेवाले सेठ जज्जुक के पुत्र वामननें इस भव्य मन्दिर को वनवाया है। यहाँ एक और भी भूमिशायी जैनमन्दिर था, जिसके पत्थर लेजा कर रोहेड़ा के नूतन जैन मंन्दिर में लगा दिये गये हैं।

१७ काचोली—

कायद्रां से ४ माइल उत्तर में आब्रूराज के समीपवर्ती यह गाँव वसा हुआ है। यहाँ एक उपासरा, एक धर्मशाला और एक जिनमन्दिर है, जो नवीन है। मन्दिर में मूलनायक श्री-पार्श्वनाथस्वामी की सफेदवर्ण १ हाथ वड़ी प्रतिमा विराजमान है। यहां जैनों के ४५ घर हैं जिनमें तीर्थ की छाया में रहने के कारण तीर्थमूंडिया पन प्रविष्ट है।

१८ नीतोरा—

रोहडा के स्टेशन से ४ माइल उत्तर–पश्चिम में यह गांव वसा हुआ है। यहां नदी–तट के ऊपर केदारनाथ, बद्रीनाथ और सूर्यमन्दिर एक ही अहाते में स्थित हैं, जो ईसा की १२ वीं शताब्दी के आसपास के वने हुए हैं। यहां ओसवाल पोरवाड जैनों के ५० घर हैं, जो निर्विवेकी और धर्मभावना से रहित हैं। गाँव में सुन्दर शिखरवाला एक नूतन जिनमन्दिर हैं, जिसमें मूलनायक श्री वर्द्धमान स्वामी की सफेद वर्ण सुन्दर प्रतिमा स्थापित है जो प्राचीन और दर्शनीय है।

यहाँ से ४ माइल पश्चिम में तीर्थ दयाणां, दयाणा से ३

माइल उत्तर में तीर्थ लोटाणा, और लोटाणा से ४ माइल उत्तर में नांदिया तीर्थ है, जिनमें भगवान् श्रीमहावीर स्वामी की चमत्कारिणी प्रतिमाएँ तख्ते नशीन हैं, जो जीवितस्वामी के नाम से प्रसिद्ध हैं। इनका ऐतिहासिक संक्षिप्त वृत्तान्त जानने के लिये इस पुस्तक का प्रथम भाग वांचना चाहिये।

१९ रींछी—

नाँदिया तीर्थ से २ माइल पूर्व में रींछी नामक छोटी पहाडी की ढालू जमीन पर यह एक तीर्थ स्थान है। यहाँ वस्ती विलकुल नहीं है, चारों तरफ सघन झाडी है। झाडी के वीच के मैदान में एक छोटा रमणीय शिखर बद्ध जिन-मन्दिर है जिसमें मूलनायक श्रीशान्तिनाथ की एक वेंत बडी सफेद वर्ण प्रतिमा विराजमान है, जो नवीन और पीछे से बैठाई गई है। यह मन्दिर विक्रम की १२ वीं शताब्दी का बना मालूम होता है और इसकी प्राचीन प्रतिमा लापता हैं।

२० अजारी—

पिंडवाडा स्टेशन से ४ माइल दक्षिण में यह गांव है।

---

१ नांदियातीर्थ से २ माइल उत्तर में आरासणी नामक छोटा गाँव है इस से पश्चिम थोडी दूरी पर आरासणीदेवी का देवल है। यह नेमनाथ भगवान् की अधिष्ठायि का है। आरासण तीर्थ में जो अंबिकाजी की मूर्त्ति है, कहा जाता है कि वह यहीं से रिसा कर चली गई है। उस के स्थान पर दूसरी मूर्त्ति बैठानी चाही, पर बैठ सकी नहीं ऐसी किं वदन्ती इधर प्रसिद्ध है।

यहां जैनों के अन्दाजन ४० घर, एक छोटी धर्मशाला और एक उपासरा है। गांव में एक विशाल वावन जिनालय पुराना सौध-शिखरी जिन-मन्दिर है जिसमें मूलनायक श्रीमहावीर स्वामी की सर्वाङ्ग सुन्दर प्रतिमा विराजमान है, जो सफेद वर्ण और १॥ हाथ वडी है। देवकुलिकाओं में भी प्रतिमाएँ स्थापित हैं जो सभी प्राचीन हैं। इस मन्दिर में एक देवरी में सरस्वती माता की मूर्त्ति है, जिस पर वि० सं० १२६९ का लेख है। यहाँ कतिपय जैनेतर स्थान भी हैं जो विक्रम की १२ वीं सीकी के बने हुए हैं।

२१ पिंडवाडा—

यह पिंडवाडा तहसील का मुख्य कसबा है, जो पुराना है। यहाँ के उपलब्ध लेखों में इस का नाम 'पिंडरवाटक' पाया जाता है। इसके नजदीक ही पिंडवाडा नामक आर. एम् आर. रेल्वे का स्टेशन भी है, जो ता. ३० दिसंबर सन् १८८० ईस्वी को खुला है। कसबे में जैनेतरों के सिवाय ओसवाल पोरवाड जैनों के अन्दाजन २०० घर आवाद हैं। गाँव में दो धर्मशाला, एक उपासरा और एक पुराना सौधशिखरी जिन मन्दिर है। मंदिर की दीवार में लगे हुए एक शिलालेख से मालूम पडता है कि यह जिनालय विक्रम सं १४६९ में बना है। इस में मूलनायक श्रीमहावीरस्वामी की सर्वाङ्ग सुन्दर सफेद वर्ण की मूर्त्ति विराजमान है, जो प्राचीन है। इस के चारों तरफ सुन्दर देवकुलिकाएँ बनी हुई हैं जिनमें प्राचीन अर्वाचीन जिनमूर्त्तियाँ स्थापित हैं।

२२ झाडोली--

पिंडवाडा-स्टेशन से २ माइल वायव्य कोण में यह पुराना गाँव है जो सिरोही (शिवपुरी) से १४ माइल पूर्व में वसा हुआ है। गाँव में जैनों के अन्दाजन ४५ घर, और एक उपासरा है। यहाँ एक जैन मन्दिर है, जो चारों तरफ से देवकुलिकाओं और परसालों से शोभित है। इस का अन्दर का भाग वडा ही सुन्दर वना हुआ है और इसके स्तम्भ तथा कमानें आवु देलवाडे के विमलवसही के समान हैं। मन्दिर के द्वार के वाहर चार चार थंभों की तीन पंक्तियाँ और उसके आगे दो स्तम्भ खडे हैं जिन पर सुन्दर खुदाई का काम है। आगे के भाग में स्थित देवगृह में एक वडी शिला जडी हुई है। इस पर एक शिला- लेख इस प्रकार खुदा हुआ है—

८—ॐ श्रीवर्द्धमानविभुरद्भुतशारदेन्दु—

दोषानुषंगविमुखः सुभगः शुभाभिः।
आढ्यं भविष्णुरमलाभिरसौ कलाभिः,
संतापमन्तयतु कौमुदमातनोतु ॥ १ ॥
श्रीमति धारावर्षे, विक्रमतर्षे प्रमारकुलहर्षे।
अष्टादशशतदेशोत्तंसे चन्द्रावती हंसे ॥ २ ॥
श्रीमत्केल्हणमंडलपतितनयायां नयैकशालिन्याम्।
तत्पट्टप्रणयिन्यां शृंगारपदोपपददेव्याम् ॥ ३ ॥
एतद् ग्रामप्राभवत्रैभवभृति तत्प्रदत्तसाचिव्ये।
सकलकलाकुलकुशले, गृहमेधिनि नागडे सचिवे ॥४॥

द्विस्मरशरदिनकरमितवर्षे शुचिशस्यसंपदुत्कर्षे ।
दुन्दुभिनामनि धामनि विटपपल्लवितव्रमेधियाम् ॥ ५ ॥

एतत्पट्टचतुष्किका विरचित श्रीमंडपोद्धारतः,
पुण्यं पण्यमगण्यमाकलयति श्रीवीरगोष्ठीजनः ।
मन्ये ! किंतु चतुष्किकाद्वयमिदं द्वाभिमुख्यास्थिति-
स्थेयस्तत्कलिमोहभूपयुगलीं जित्वात्त पत्रद्वयीम् ॥ ६ ॥

इन्दुः कुंदसितैः करैः पुलकयत्याकाशवल्लीं मुहु-
र्यावद्भानुरसौ तनोति परितोऽप्याशाः प्रकाशोज्ज्वलाः ।
तावद्धार्मिक धर्मकर्मरभसमारब्धकल्याणिक-
स्तोत्राद्युत्सवगीतवाद्यविधिभिः जीयात्त्रिकं सर्वतः ॥७॥

राज्ञा शृंगारदेव्याऽत्र, वाटिका भूमिरद्भुता ।
दत्ता श्रीवीरपूजार्थं, शास्वतः श्रेयसः श्रिये ॥ ८ ॥

साचिता दाणिकः साद्यात्मेता दाद्यबृहस्पतिः ।
अत्राऽभूश्रीरडो वर्म्मा सौत्रधारेषु कर्म्मसु ॥ ९ ॥

पूज्य परमाराध्यतम श्रीतिलकप्रभसूरीणां कृतिरियं संवत् १२५५ आसोजसुदि ७ बुधवारे सकलगोष्ठिकलोकस्त्रिकोद्धारं स्वश्रेयसे कारितवानिति ।

इस प्रशस्ति लेख में इस मन्दिर को महावीर स्वामी का मन्दिर लिखा है और यह बताया है कि राजा धारावर्ष की राणी शृंगारदेवीने सं. १२५५ में महावीरप्रभु की पूजा के निमित्त एक वाडी की जमीन भेट की और दुन्दुभीनगर

(झाडोली) के सब श्रावकोंने मिल कर इस मन्दिर में छः चोकी सहित मंडप तथा त्रिगड़े का उद्धार कराया। वर्तमान में यहाँ महावीरप्रभु की प्रतिमा नहीं है, किन्तु मूलनायक श्री शान्तिनाथ की सर्वाङ्गसुन्दर प्रतिमा विराजमान है।

२३ ऊन्दरा—

वामनवाड तीर्थ से २ माइल उतर में और पिंडवाडा स्टेशन से ५ माइल पश्चिमोत्तर यह गाँव वसा हुआ है। इस में जैनो का एक भी घर नहीं है, परन्तु गाँव के वाहर एक शिखरबद्ध जिनमन्दिर है, जिसमें मूलनायक श्री वीरप्रभु की सुन्दर मूर्त्ति स्थापित है। यह मन्दिर विक्रम की बारहवीं सीकी का बना मालूम होता है।

२४ सीवेरा—

सिरोही से १२ माइल पूर्व और पिंडवाडा स्टेशन से ६ माइल पश्चिमोत्तर कोण में यह गाँव आवाद है। इसमें जैनों का एक भी घर नहीं है, सभी खेती करनेवाले लोग वसते हैं। गाँव में एक सौधशिखरी छोटा, पर रमणीय जिन-मन्दिर है जिस में मूलनायक श्री शान्तिनाथजी की सफेद वर्ण सुंदर प्रतिमा स्थापित है और इसके मंडप में दो कायोत्सर्गस्थ तथा १२ पद्मासनस्थ पाषाणमय प्रतिमाएँ विराजमान हैं। जिन प्रतिमाओं के लेखों पर से जान पडता है कि यह मन्दिर वि० सं० ११९८ में प्रतिष्ठित हुआ है। मन्दिर के प्रवेश-द्वार की वांये तरफ की भींतपर के दो पंक्ति के लेख में

लिखा है कि–सं० १२६९ में देवडा विजयसिंह सत्क महं० आरासन, आभा, देवडा सत्क जयकर्माने देव श्री शान्तिनाथ की यात्रा की।

गाँव से दक्षिण यहाँ 'सीवेरा' नाम का तालाव है जिसका मजबूत बांध बांधा हुआ है। इसमें कोई १२ हाथ गहरा जल भरा है और वारिश के समय वर्षा होने से २० हाथ ऊंचा जल रहता है। यह तालाव बारहो मास भरा रहता है और इसकी नहरों से खेतों का पाक होता है।

२५ मालनुं—

नाणा स्टेशन से १ कोश पश्चिम में यह गाँव है, जो जोधपुर स्टेट का है। किसी समय यहाँ जैनों के सैंकडों घर आबाद थे, लेकिन इस समय यहाँ जैनों का एक भी घर नहीं है, शिर्फ रवारी, कुंभार आदि खेती करनेवाले किसानों के ३० घर हैं। गाँव के बाहर विक्रम की १२ वीं शताब्दी का बना हुआ चोवीस जिनालय शिखरबद्ध एक जिन–मन्दिर है, जिसका जीर्णोद्धार थोडे वर्ष पहले चांवडेरी के जैन संघने कराया है। इसमें मूलनायक श्री महावीरप्रभु की सफेद पाषाणमय एक हाथ बडी प्रतिमा विराजमान है, जो जीवितस्वामी के नाम से पहचानी जाती है। इसके मंडप में भी छोटी बडी १४ जिनप्रतिमा स्थापित हैं। ये सभी प्रतिमाएँ विक्रम की १२ वीं सीकी की प्रतिष्ठित हैं।

२६ नाणा—

यह नाणा स्टेशन से १ माइल पूर्वोत्तर कोण में अच्छा आबाद कसबा है। इसमें ओसवाल जैनों के १० और पोरवाड जैनों के ९०, एवं १०० घर हैं। गाँव में एक जैन पाठशाला भी है जिसमें जैन और जैनेतर बालकों को धार्मिक तथा व्यावहारिक अभ्यास कराया जाता है। इसके अलावा दो उपासरे, एक जैन लायब्रेरी, और एक बड़ी धर्मशाला भी है।

गाँव से पश्चिम लगते ही एक बावन जिनालय अति विशाल सौधशिखरी जिनमन्दिर है। मन्दिर की कारीगिरी, रंगाइ, और सफाई प्रशंसा के लायक है। इसके मंडप और देवकुलिकाओं में छोटी बड़ी सब मिलाकर पाषाणमय ८० और धातुमय ७, एवं ८७ जिनप्रतिमा विराजमान हैं, जिनमें प्राचीन अर्वाचीन दोनों शामिल हैं। इसमें मूलनायक श्री महावीरप्रभु की बादामी रंग की २॥ हाथ बड़ी अतिसुन्दर प्रतिमा स्थापित है। इस की पलांठी के नीचे लिखा है कि—

९—संवत् १५०५ वर्षे माघवदि ९ शनौ श्री नाणकीय गच्छे श्री महावीर बिंबं, प्र० श्री शांतिसूरिभिः (?)

मूलनायक महावीर प्रतिमा के चारो तरफ सुन्दर परिकर सहित तोरण बना हुआ है। जिसमें अच्छा खोद काम किया हुआ है। इस परिकर में लिखा है कि—

१० संवत् १५०६ माघवदि १० गुरौ गोत्रवेलहरा

उ० ज्ञातीय सा० रतन भार्या रतनादे पुत्र दूदा–वीरम–महपा देवा–लूणा–देवराजादि कुटुंबयुतेन श्री वीरपरिकरः कारितः, प्रतिष्ठितः श्रीशांतिसूरिभिः (२)

गोडवाड परगने में छोटी और वडी दो पंचतीर्थि याँ मानी जाती हैं। उनमें से यह स्थान छोटी पंचतीर्थि में का एक है। किसी समय यह अच्छा जाहोजलाली वाला शहर था। जैनों में जो 'नाणकीयगच्छ' प्रसिद्ध है, वह इसी गाँव के नाम पर से कायम किया गया है।

२७ चांवडेरी—

नाणास्टेशन से १ माइल उत्तर में यह गाँव वसा हुआ है, इसका दूसरा नाम सांवलेरी भी है। इसमें पोरवाड जैनों के अंदाजन ६० घर, और एक उपासरा है। गाँव में एक शिखरवद्ध जिनमन्दिर है जिसमें मूलनायक श्री रिषभदेवजी की सफेदवर्ण एक हाथ वडी प्रतिमा स्थापित है, जो विक्रम की १२ वीं सदी की प्रतिष्ठित और माळनुं गाँव के मंदिर से लाई हुई है। इस के अलावा इस मंदिर में छोटी वडी ९ जिन प्रतिमा और भी विराजमान हैं।

यहाँ से २ माइल पश्चिमोत्तर में 'वेलाग' नामका छोटा गाँव है जिसमें विक्रम की ११ वीं शताब्दी का वना हुआ एक शिखरवद्ध जिनालय है। इसमें उसी समय के प्रतिष्ठित श्रीऋषभदेवजी की १ हाथ वड़ी सफेदवर्ण प्रतिमा

विराजमान है। इस की पूजा वगैरह का सभी प्रबंध चांदेडरी के जैनसंघ के तरफ से नियत है।

२८ भन्दर—

इस छोटे गाँव में पोरवाड जैनों के २० घर हैं, जो विवेक विहीन हैं। गाँव में एक उपासरा और एक गृह-मन्दिर है जिसमें मूलनायक तरीके धातुमय एक चोवीसी स्थापित है, जो प्राचीन है। यहाँ एक ही अहाते में वैष्णवों के पांच छोटे छोटे शिखरवाले देवालय हैं, जिनमें हिन्दुओं के देव देवी स्थापित हैं। यहाँ के जैन प्रायः इन्हीं मिथ्यात्वी देव देवियों के उपासक (पूजक) हैं।

२९ बेडा—

जोधपुर रियासत के वाली परगने का यह अच्छा आबाद कसबा है, जो मोरीवाडा स्टेशन से ४ माइल पूर्व में वसा हुआ है। गोड़वाड की छोटी पंचतीर्थी में से यह एक है। यह नया वेडा के नाम से पहचाना जाता है। यहाँ एक बडी धर्मशाला दो उपासरे और एक जैनपाठशाला है। पाठशाला में जैन जैनेतर बालकों को व्यावहारिक अभ्यास कराया जाता है। धार्मिक अभ्यास के लिये यहाँ कुछ भी प्रबन्ध नहीं है। इस में पोरवाड जैनों के १२५ घर हैं। गाँव में एक वावन जिनालय सौधशिखरी विशाल जिनमंदिर है। मन्दिर की शिल्पकारी प्रशंसा के लायक और चित्ताकर्षक है। इसमें मूलनायक श्री सम्भवनाथस्वामी की सफेदवर्ण एक हाथ बडी प्रतिमा विराज-

मान है, जो संवत् १६४५ की प्रतिष्ठित है। इसकी देवकुलिकाओं में भी जिनमूर्त्तियाँ स्थापित हैं, जो सभी विक्रम की १७ वीं सदी की प्रतिष्ठित हैं। इसमें सभी जिनप्रतिमा पाषाणमय ७० और धातुमय चोवीसियाँ २१ हैं। यहाँ से २ माइल पूर्व में जूना वेडा नामक स्थान है जो प्राचीन समय में नारदपुरी के नाम से पहचाना, और जैनों का केन्द्र माना जाता था। परन्तु आज यहाँ एक भी घर नहीं है। इस स्थान पर एक सौधाशिखरी जिनमन्दिर बना हुआ है जिसमें मूलनायक श्रीपार्श्वनाथजी की सुंदर प्रतिमा विराजमान है, जो दादाजी के नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ के दोनों मन्दिर विक्रम की ११ वीं सदी के आसपास के बने हुए हैं।

२० भाटून—

इस के चारों तरफ के खंडेहर और जमीन से निकलते हुए पत्थर ईंटों से जान पड़ता है कि यह गाँव भी पुराना है। वर्त्तमान में यहाँ जैनों के ७ घर हैं, जो जैनसाधु साध्वियों के नाम से भडकने वाले और भोपा भवानियों के उपासक हैं। यहाँ पेस्तर एक अच्छा जैन मन्दिर था, जिसका खंडेहर पडा है और उसकी प्रतिमाओं का पता नहीं है।

२१ श्रीराता-महावीर—

आर. एम्. आर रल्वे के एरनपुरा-स्टेशन से १४ माइल पूर्व विकट पहाडियों के बीच में यह एक तीर्थ स्थान है, जो गोडवाड परगने की छोटी पंचतीर्थी में से एक है। यहाँ एक

२४ जिनालय सौधशिखरी जिनमन्दिर है जिसमें मूलनायक श्रीमहावीरस्वामी की रक्तवर्ण २॥ हाथ बडी प्रतिमा विराजमान है, जो अति प्रभाव शालिनी है। यहाँ फाल्गुनसुदि १ को अच्छा मेला भराता है जिसमें तीन हजार यात्री तक आते हैं। यात्रियों के सुभीते के लिये यहाँ एक छोटी धर्मशाला और जूनी बावडी बनी हुई है। बावडी में बारहों मास सुमधुर जल भरा रहता है, वारिश न होने पर भी कभी सूखता नहीं है।

पं० शीलविजयजीने अपनी तीर्थमाला में 'रातो वीर पूरी मन आस' इन शब्दों (कडियों) से इतर तीर्थों के साथ साथ इस तीर्थ का भी स्मरण किया है। लावण्यसमयने भी बलभिद्र (वासुदेवसूरि) रास में लिखा है कि—

हस्तिकुंड एहवुं अभिधान. स्थापिउं गच्छपति प्रगट प्रदान।
महावीरकेरइं प्रासादि, वाजइं भुंगल भेरी नादि॥

इन उल्लेखों से जान पडता है कि चौदहवीं सदी में भी यह स्थान तीर्थस्वरूप माना जाता था। जिनतिलकसूरिने इस पवित्र स्थान का नाम 'हथुंडी' लावण्यसमयने 'हस्तिकुंड' और यहाँ के उपलब्ध शिलालेखों में 'हस्तिकुंडी' लिखा है, जो प्राचीन काल में समृद्ध और अच्छा आवाद नगर माना जाता था। विदग्धराज के गुरु बलिभद्र को आचार्य पद इसी नगर में मिला था, जो वसुदेवसूरि के नाम से प्रसिद्ध हुए हैं।

हथुंडी में पहले राठोड राजपूतों का राज्य था और उन में

कई राजपूत जैनधर्म पालते थे। जो जैनी थे वे हथुंडिया कहलाये। मारवाड के वाली, सादडी, सांडेराव और मालवे के राजगढ में हथुंडिया श्रावक बसते हैं, जो इन्हीं हथुंडिया राजपूतों के वंशज हैं। इसी नगर के नाम पर से 'हस्तिकुंडी' नाम का गच्छ भी प्रसिद्धी में आया है। राता–महावीर के मंदिर के मंडप में हस्तिकुंडीगच्छ के एक आचार्य की मूर्त्ति भी स्थापित है। राता महावीर के उक्त मंदिर में चार शिला–लेख नीचे मुताबिक मिलते हैं।

पूर्व तरफ की परसाल के नीचे—

११–ॐ सं० १२९९ वर्षे चैत्रसुदि ११ शुक्रे श्रीरत्नप्रभोपाध्याय शिष्यैः श्रीपूर्णचन्द्रोपाध्यायैरालकद्वयं शिखराणि च कारितानि सर्वाणि (१)

सभामंडप के एक स्तंभे पर—

१२–ॐनमो वीतरागाय संवत् १३४५ वर्षे प्रथम भाद्रवा वदि ९ शुक्रदिनेऽद्येह श्रीनड्डूलमंडले महाराजकुल श्रीसामंतसिंह देवराज्येऽत्र नियुक्त श्री श्रीकरणमहं ललनादि पंचकुलप्रभृति भक्षराणि प्रयच्छत्, समीतलपदेत्य मंडपिकायां साधु० हेमाकेन हथिउंडीग्रामे श्रीमहावीरदेवनेचार्य वर्षं प्रति वार्षिक द्र०२४ चतुर्विंशतिद्रम्मा प्रदत्ता, शुभं भवतु,

बहुभिर्वसुधा भुक्ता, राजभिः सगरादिभिः।
यस्य यस्य यदा भूमिः, तस्य तस्य तदा फलम् ॥१॥

कृष्णविजयलिखितम् (२)

३-४ मंडपके द्वितीय स्तम्भ पर—

१३—ॐ संवत् १३३५ वर्षे श्रावणवदि १ सोमेऽद्येह समीपाटी मंडपिकायां भांपा—हटउं—भांवा कचरा मह सज्जनउ, मह० घीणा, ठ० धणसीहउ, ठ० देवसीहप्रभृति पंचकुलेन श्री राताभिधानः श्रीमहावीरदेवस्य नेचा प्रचयं वर्षस्थितके कृत द्र० २४ चतुर्विंशति द्रम्माः वर्षे वर्षे प्रति समीमंडपिकापंचकुलेन दातव्याः पालनीयाश्च—

वहुभिर्वसुधा भुक्ता, राजभिः सगरादिभिः ।
यस्य यस्य यदा भूमिः, तस्य तस्य तदा फलम् ॥शुभं भवतु ॥

१४—संवत् १३३६ वर्षे श्रेष्ठिको नागश्रेयसे अरसिंहेन भटा० पच्चे दत्तद्र० १२ उभयं द्र० ३६ समीपाटी मंडपिकायां व्याप्रियमाणपंचकुलेन वर्षे वर्षे प्रति आचंद्राकार्कं यावद्दातव्याः । शुभं भवतु ।

इस तीर्थस्वरूप मन्दिर के अन्दर के दरवाजे पर एक शिला—लेख लगा हुवा था, जो लगभग २ फुट् २॥ इंच पहोला, तथा १ फुट्, ४ इंच ऊंचा था । दरवाजे का उद्धार करते समय वह निकाल कर वीजापुर की धर्मशाला में रख दिया गया । वाद में वह ऐतिहासिक शोधखोल के करनेवाले अधिकार विभाग को सोंपा गया और फिर उस को जोधपुर महाराजा की आज्ञा से अजमेर संग्रहस्थान (म्युझीयम) में

भेजा गया जो वहीं पर सुरक्षित है। इस शिला में दो प्रशस्ति-लेख खुदे हुए हैं—प्रथम कुछ गद्य सहित ४० श्लोकों में है और इस के रचनेवाले सूराचार्य हैं, जिन्होंने इस प्रशस्ति को सं० १०५३ में रची है। द्वितीय प्रशस्ति थोडे गद्य भाग सहित २१ श्लोकों में है और यह सं० ९९६ में बनी है। इस में बनानेवाले का नाम ज्ञात नहीं होता। दोनों प्रशस्ति लेखों की नकल जिनविजयजी रचित 'प्राचीन जैन लेखसंग्रह' के द्वितीय भाग में दर्ज है। पहली प्रशस्ति में लिखा है कि—

हस्तिकुंडी नगरी में अपने गुरु वासुदेवसूरिजी के उपदेश से विदग्धराज (विग्रहराज) भूपतिने अपनी सुनिर्मल यशः कीर्त्ति के समान हिमाचल की शोभा को जीतने वाला सुन्दर सौधशिखरी जिन-मन्दिर बनवाया।

विदग्धराज भूपति का बनवाया जिन-मन्दिर जीर्ण हो

१ स्वाचार्यैर्योरुचिरवचनैर्वासुदेवाभिधानै-
र्बोधं नीतो दिनकरकरैर्नीरजन्माकरो व ।
पूर्वं जैनं निजमिवयशोऽकारयद्धस्तिकुंड्यां,
रम्यं हर्म्यं गुरुहिमगिरेः शृंगशृंगारहारि ॥ ६ ॥

२ विदग्धनृपकारिते जिनगृहेऽतिजीर्णे पुनः,
समं कृतसमुद्धृताविह भवाम्बुधेरात्मनः ।
अतीष्टपत गोऽष्ठिका प्रथमतीर्थनाथाकृतिं,
स्वकीर्तिमिव मूर्तिमानुपमतां सितांशुद्युतिम् ॥ २६ ॥
शान्त्याचार्यैस्त्रिपञ्चाशत्सहस्रे शारदामियम् ।
माघशुक्लत्रयोदश्यां, सुप्रतिष्ठैः प्रतिष्ठिता ॥ २७ ॥

जाने पर उसका उद्धार कराया और उसमें चन्द्र के समान उज्ज्वल मूर्त्तिमती निज कीर्त्ति के सदृश भगवान् ऋषभदेव-स्वामी की प्रतिमा विराजमान की । इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा श्री शान्त्याचार्यने संवत् १०५३ माघ सुदि १३ के दिन की ।

इस प्रशस्तिलेख से मालूम होता है कि हथुंडी में भगवान् श्री ऋषभदेवस्वामी का भी भव्य मन्दिर था, जो राठोड राजा विदग्धराज का बनवाया हुआ था। परन्तु वर्त्तमान में इस मन्दिर का नाम निशान भी नहीं रहा । राता महावीर–मन्दिर से पूर्व १ माइल दूर विकट पहाडियों के बीच हथुंडी गाँव है जिसमें कास्तकारों के २० घरों के सिवाय उत्तम जाति की बिलकुल वस्ती नहीं है।

३२ बीजापुर—

बाली परगने के फालना स्टेशन से अन्दाजन ७ माइल पूर्व–दक्षिण कोण में यह गाँव आबाद है । यहाँ पोरवाड जैनों के १०० घर हैं परन्तु उनमें धार्मिक लागणी बिलकुल नहीं है । इस कारण इस गाँव में कोई अच्छा साधु नहीं ठहरता । पांच सात घर सनातन त्रिस्तुतिक संप्रदाय के भी हैं । गांव में किसी भी मजहब (गच्छ) का साधु आवे, उनकी सेवा भक्ति और आहार–पानी की टेमोटेम जोगवाई प्रायः त्रिस्तुतिक श्रावक ही करते हैं ।

यहाँ एक बड़ी धर्मशाला, दो उपासरे और एक शिखर-वाला जिनमन्दिर है।मंदिर में मूलनायक श्री संभवनाथस्वामीजी

की एक हाथ बड़ी सफेदवर्ण प्रतिमा स्थापित है, जो सुन्दर और प्राचीन है। इसी के सामने के मैदान में एक चोमुख देवालय है, इस में चारों दिशा में एक एक प्रतिमा विराजमान है। ये चारों मूर्त्तियाँ संवत् १९५९ वैशाख सुदि पूर्णिमा के दिन कोरटाजी तीर्थ में जैनाचार्य श्रीमद्विजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराज के हाथ से प्रतिष्ठित हुई हैं।

३२ सेवाडी—

यह वाली परगने के गोढवाड प्रान्त में अच्छा आबाद कसबा है, जो गोडवाड की छोटी पंचतीर्थी में का एक है। यहाँ ओसवाल जैनों के २०० घर, दो बडी धर्मशाला और दो उपासरे हैं। प्राचीन लेखों में इसका नाम 'समीपाटी' समीवाडी या 'श्वेतपाटी' मिलता है। गाँव के बीच बाजार में एक विशाल और भव्य बावन जिनालय सौधशिखरी जिनमन्दिर है जिसमें मूलनायक श्री महावीरप्रभु की १॥ हाथ बड़ी पाषाणमय सफेदवर्ण प्रतिमा विराजमान है, जो अतिसुन्दर और दर्शनीय है। इसकी देवकुलिकाओं में भी पाषाणमय जिनप्रतिमाएँ स्थापित हैं, जो सभी प्राचीन हैं। इस मन्दिर में पाषाण की छोटी बड़ी ५४ और धातुकी २, सब मिलाकर ५६ जिन प्रतिमाएँ बैठी हुई हैं जो प्रायः विक्रम की १३ वीं सीकी के आसपास की प्रतिष्ठित हैं। इनके अलावा सं० १२४४ माघसुदि १ रविवार की प्रतिष्ठित संडेरकगच्छीय यशोभद्रसूरि की परम्परा के आचार्य गुणरत्नसूरिजी की मूर्त्ति भी स्थापित है। इस

भव्य जिनालय में पांच लेख नीचे मुजबिक लगे हुए हैं जो उपयोगी हैं।

१ तलघर के द्वार की बारसाख ऊपर—

२५-(ॐ) स्वजन्मनिजनतायां, जाता परितोषकारिणी शांतिः।
विबुधपतिविनुतचरणः, स शांति नामा जिनो जयति ॥१॥

आसीदुग्रप्रतापाढ्यः, श्रीमदणहिल्ल-भूपतिः।
येन प्रचंडदोर्दण्ड-पराक्रमजिता मही ॥ २ ॥

तत्पुत्रश्चाहमानानामन्वये नीतिमुद्वहन् सः।
जिंदराजाभिधो राजा, सत्यशौर्यसमाश्रयः ॥ ३ ॥

तत्तनुजस्ततो जातः, प्रतापाक्रान्तभूतलः।
अश्वराजः श्रियाऽऽधारो, भूपतिर्भूभृतां वरः ॥ ४ ॥

ततः कटुकराजेति, तत्पुत्रो धरणीतले।
जज्ञे स त्यागसौभाग्यविख्यातः पुण्यविस्मितः ॥ ५ ॥

तद्भुक्तौ पत्तनं रम्यं, शमीपाटीति नामकम्।
तत्रास्ति वीरनाथस्य, चैत्यं स्वर्णसमोपमम् ॥ ६ ॥

इतश्चासीद्विशुद्धात्मा, यशोदेवो बलाधिपः।
राज्ञां महाजनस्यापि, सभायामग्रणी स्थितः ॥ ७ ॥

श्रीषंडेरकसद्गच्छे, बंधूनां सुहृदां सताम्।
नित्योपकुर्वता येन, न श्रान्तं शमचेतसा ॥ ८ ॥

तत्सुतो वाहडो जातो, नराधिपजनप्रियः।
विश्वकर्मेव सर्वत्र, प्रसिद्धो विदुषां मतः ॥ ९ ॥

तत्पुत्रः प्रथितो लोके, जैनधर्मपरायणः ।
उत्पन्नस्थल्लको राज्ञः, प्रसादगुणमंदिरम् ॥ १० ॥
दयादाक्षिण्यगांभीर्यबुद्धिचिद्ध्यानसंयुतः ।
श्रीमत्कटुकराजेन, तस्य दानं कृतं शुभम् ॥ ११ ॥
माघे त्र्यंबकसंप्राप्तौ, वितीर्णं प्रतिवर्षकम् ।
द्रम्माष्टकं प्रमाणेन, थल्लकाय प्रमोदतः ॥ १२ ॥
पूजार्थं शांतिनाथस्य, यशोदेवस्य स्वच्चके ।
प्रवर्द्धयतु चंद्रार्के, यावदादानमुज्ज्वलम् ॥ १३ ॥
पितामहेन तस्येदं, शमीपाट्यां जिनालये ।
कारितं शांतिनाथस्य, बिंबं जनमनोहरम् ॥ १४ ॥
धर्मेण लिप्यते राजा, पृथ्वीं भुनक्ति यो यदा ।
ब्रह्महत्या सहस्रेण, पातकेन विलोपयन् ॥ १५ ॥

२ अग्रभाग की देहरी की भींत पर—

१६–ॐ संवत् १२१३ चैत्र वदि ८ सोमे अद्येह श्री नड्ले दंडश्रीवड़जा प्रतिपत्तौ महं० श्रीजसदेव प्रभृति पंचकुल-प्रतिपत्तौ वला० श्रीचांडदेवजसणागयोर्हस्ताक्षराणि प्रयच्छति, यथा सीम्वाडीवास्तव्य वणिग्महणा पुत्र जिणदाकेन देवश्री-महावीरजगत्यां कारितदेवश्रीपार्श्वनाथदेवाय नेचयनिमित्तं समी-पाट्यां तले संजातमंडपिकायां मासं प्रति धर्मेण उदकपूर्वं दत्त द्वादशक रु. १ एकः ' बहुभिर्वसुधा भुक्ता, राजभिः सगरा-दिभिः । यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ।

कालं कालान्तरेण्वपि केनापि राज्ञैर्वलाधिपैश्च लुंपद्भिश्च परिपंथना कारापयितव्या । अत्र साक्षि पो० पाल्हा, गां० माळानिणि कुमारपालराजजोयण आंवड हरिश्चंद्र मध्यक कांहल प्रभृतयः मासं प्रति रूपको दत्तः ।

३ अग्रभागगत देहरी के द्वार की बारसाख पर—

१७–ॐ सं० ११६७ चैत्र सु० १ महाराजाधिराज श्री अश्वराजराज्ये श्रीकटुकराजयौवराज्ये समीपाटीयचैत्ये जगत्यां श्रीधर्मनाथदेवस्य नित्यपूजार्थं महासाहणि–वपूअविपौत्रेण उत्तिमराजपुत्रेण उप्पलराकेन मांगट आंवल वि० सलखण जोगरादि कुटुंवसमं पद्राडाग्रामे तथा मेद्रंचा ग्रामे तथा छेछडिया मद्दडीग्रामे अरहटं अरहटं प्रति दत्तः जवाहरक एकः यः कोपि लोपयिष्यति स गोस्त्रीब्राह्मणपापेनात्मानं एतत् । ये प्रतिपालयिष्यंति तेऽस्मदीयधर्मभग्याः सदा भविष्यंति, इति मत्वा प्रतिपालनीयम् ।

यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ।
वहुभिर्वसुधा भुक्ता, राजभिः सगरादिभिः ॥ १ ॥

४–एक देहरी के भींती स्तंभ पर—

१८–ॐ सं० १२५१ कार्तिक सुदि १ रवौ अत्रत्याधिवासिना नालिकेर–ध्वजा–खासटी मूल्यं निजगुरु श्री शालिभद्रसूरिमूर्त्तिपूजाहेतोः श्रीसुमतिसूरिभिः प्रदत्तम् । तत्र वला० ५ समीपाटके नेचके व्ययनीयाः ।

५ मंदिर की कोठरी की भींत पर—

१६-संवत् ११६८ आसोजसुदि १२ रवौ अरिष्टनेमि पूर्वदिशायां अपवरिकाऽग्रे भित्ति द्वारपत्रं च न लभ्यते कर्त्तु, समस्तगोष्ठ्या मिलित्वा निषेधः कृतः, लिखितं पं० अश्वदेवेन।

इनके अलावा देवकुलिकाओं की भींत, स्तंभ और बारसाखों पर खुदे हुए चार पांच लेख और भी देख पडते हैं, जो बराबर बांचे नहीं जाते। इनमें कोई लेख तो भेट सम्बन्धी और कोई देवकुलिकाओं को बनाने सम्बन्धी जान पडते हैं। कुछ भी हो, पर उपलब्ध लेखों से भी यह महावीर भगवान का मन्दिर पुराना है।

इस गाँव के बाहर पश्चिम में एक पुरानी बावडी के पास दूसरा शिखरबद्ध मन्दिर है, जो नया बना है, इसमें मूलनायक श्री वासुपूज्यस्वामी को सफेदवर्ण १ हाथ बडी प्रतिमा स्थापित है, जो सं० १९८२ में यहाँ प्रतिष्ठित हुई है। इस मन्दिर के दहिने भाग पर एक छत्री में भगवान् श्री ऋषभदेवजी के चरण स्थापित हैं। इस में पाषाण की १, गौतमस्वामी आदि की ९ एवं १० प्रतिमाएँ है, जो सभी नवीन हैं और गाडी, वाडी, लाडी के प्रेमी यति-श्रीपूज्यों की प्रतिष्ठित हैं।

३४ लुणावा—

यह फालना स्टेशन से ४ माइल पूर्व में आबाद है। यहाँ पोरवाड जैनों के २०० और ओसवाल जैनों के १२ घर हैं,

जो अच्छे भावुक और साधुओं के भक्त हैं। गाँव में एक धर्मशाला, दो उपासरे और सौधशिखरी दो जिन मन्दिर हैं। गाँव के वीच वाले प्राचीन मंदिर में मूलनायक श्री पद्मप्रभ-स्वामी की सफेदवर्ण प्राचीन मूर्त्ति स्थापित है, जो अत्यन्त रमणीय है। दूसरा मंदिर गाँव के समीप पूर्व तरफ है, जो चोमुख दो खंड वाला और नया है। इसमें चारों दिशाओं में भगवान् श्री आदिनाथ की एक एक प्रतिमा विराजमान है। इसके पिछले भाग में भी दो छत्रियों में एक एक प्रतिमा स्थापित हैं। ये सभी प्रतिमाएँ सं० १८८१ की प्रतिष्ठित हैं, परन्तु इस में सं० १९६८ में में स्थापन हुई हैं।

३५ लाठारा—

यह गाँव वाली से ४ कोश पूर्वोत्तर कोण में वसा हुआ है। यहाँ पोरवाड जैनों के ४ और ओसवाल जैनों के २५ घर हैं। गाँव में एक छोटा उपासरा और एक शिखरवाला जिनमन्दिर है। मन्दिर में मूलनायक श्री आदिनाथजी की एक हाथ वडी सफेदरंग की प्रतिमा विराजमान है, जो सं० १९७० वैशाख सुदि ६ के दिन यहाँ स्थापन की गई है। इस मन्दिर में पाषाणमय ११, और धातुमय ६, एवं १५ मूर्त्तियाँ है, जो सभी संवत् १८८१ की प्रतिष्ठित हैं।

३६ श्री राणकपुर तीर्थ—

जोधपुर (मारवाड) राज्य के वाली (गोडवाड) परगने के देसूरी जिले में सादडी से ६ माइल पूर्व—दक्षिण कोण में

आडवाला (अरवली) पहाड़ की पश्चिम खीण में यह स्थान आया है। प्राचीन काल में यहाँ राणकपुर या राणपुर नाम का नगर आबाद था, जो अच्छी जाहोजलाली वाला शहर था। इस समय इसके कतिपय खंडेहर इतस्ततः दिखाई देते हैं। इसका इतिहास इस प्रकार है—

नांदिया गांव में पोरवाड धन्ना और रत्ना नामक दो सगे भाई रहते थे। किसी मुसलमान बादशाह का पुत्र अपने पिता के साथ द्वेष करके निकल गया, वह नांदिया गांव हो कर जाता था कि उसे रोक कर धन्ना और रत्ना पोरवाडने उसको समझा के शान्त किया, और उसे साथ में लेकर बादशाह के पास आये, जिससे बादशाह धन्ना और रत्ना के ऊपर बड़ा खुश हुआ। बादशाहने सन्मान पूर्वक दोनों भाइयों को अपने पास रक्खे। कुछ समय के बाद किसी कारण से दोनों भाइयों को बादशाहने कैद में डालने का हुक्म दिया और बहुत प्रयत्न करने से वे ८४ जातके सिक्के का दंड देने पर छूटे। बस, अब धन्ना रत्नाने नांदिया में रहना योग्य नहीं समझा, इससे वे नांदिया गाँव को छोड़ कर, पालगढ़ आ कर बस गये। इन्होंने कुंभाराणा से मादडी स्थान पर जगह खरीद कर एक जिनालय बनवाया। यह जगह इस सर्त्त पर ली गई थी कि यहाँ राणा के नाम से एक नया नगर बसाना। अतएव धन्ना रत्नाने अपनी सर्त्त के अनुसार राणपुर, या राणकपुर नामका नगर आबाद किया और खुद भी वहाँ रहने लगे।

एकदा रात्रि के समय सोते हुए धन्नाने स्वप्न में एक अद्भुत विमान देखा और सुबह सोमपुराओं को एकत्रित करके धन्नाने उस विमान का वर्णन किया। जुदे जुदे सोमपुराओंने उस का प्लान (नक्सा) तैयार किया, लेकिन उन सब में मुंडारा गाँव निवासी दीपा नामक सोमपुरा का बनाया हुआ प्लान पसंद किया गया। बाद में तदनुसार अच्छे सोमपुरा सिलावटों को रख कर, धन्ना (धरणा) शाहने त्रैलोक्य-दीपक नामका अतिविशाल चतुर्मुख जिनमन्दिर बनवाया[1]। कहा जाता है कि इसके बनवाने में धन्नाशाह के करीबन एक क्रोड़ रुपये उपरान्त खर्चा हुआ है।

सोमसौभाग्यकाव्य-कारने लिखा है कि—धरणा संघपति के अत्याग्रह से विचरते हुए सोमसुन्दरसूरि राणपुर नगर में पधारे। वहाँ धरणाशाह की बनवाई पौषधशाला में मुकाम किया। इस पौषधशाला में ८४ तो उत्तम काष्ट के स्तंभ लगे हुए थे और वह व्याख्यानशाला चोक तथा ओरियों से सुशोभित थी। एकदा सोमसुन्दराचार्यने व्याख्यान में जिनमन्दिर

---

१ एक दन्तकथा में यह भी कहा जाता है कि धन्नाशाह की अन्तिम अवस्था तक यह मन्दिर तैयार न हो सका, तब उसके भाई रत्नाशाहने वचन दिया कि मैं आपके अभिलाष को यथाशक्ति पूर्ण करूंगा और अपूर्ण भागों में आप से भी अधिक काम करवाऊंगा। इसी वचन के अनुसार पीछे से रत्नाशाहने उक्त मन्दिर के अधूरे अंशो को पूर्ण कराये और सामने के मंडप में धन्नाशाह से भी अधिक कोतर काम करवाया, जो अब तक प्राचीन शिल्पकारी का भान करा रहा है।

और जिनप्रतिमा के बनवाने से मिलते हुए लाभ का वर्णन किया। उसे सुन कर धन्नाशाहने कैलाशगिरि के समान उन्नत और उज्ज्वल मन्दिर बनवाया। एक उत्तम पीठबंध के ऊपर तीन माल चणाये, मध्य भाग में मंडप तैयार कराये, अनेक पूतलियों के सहित सुन्दर खोद काम और दर्शकों के चित्त को खींचने वाला चारों तरफ एक एक प्रासाद बनवाया। इस प्रकार नन्दीश्वरतीर्थ के साथ स्पर्धा करनेवाला 'त्रिभुवनदीपक' नामक चतुर्मुख जिनालय तैयार करवाया, जिसमें सूर्य के समान तेजस्वी आदिनाथ के ४ बिम्ब सोमसुन्दरसूरि से प्रतिष्ठा कराके विराजमान किये। दीनजनों के उद्धारक धन्नाशाहने प्रतिष्ठा के समय आश्चर्य को उत्पन्न करनेवाला बडा भारी उत्सव किया और अपरिमित द्रव्य खर्च के सोमदेव के आचार्य पद का भी महोत्सव किया।

मेहकविने सं० १४९९ में बनाये राणकपुर-स्तवन में लिखा है कि-सेठ धरणाकने मुख्य ५० सलावटों को बुलाये, उन्होंने सिद्धपुर के चतुर्मुख मन्दिर का वर्णन किया और देपाकने कहा मैं शाश्वत मन्दिर के समान अनुपम मन्दिर तैयार कर सकूंगा। सेठने भी उसी की देखरेख नीचे इस विशाल मन्दिर को तैयार करवाया। इस चतुर्मुख मुख्य मन्दिर के पश्चिम द्वार पर हमेशा नाटक होते थे, उत्तर द्वार पर संघ जन बैठते थे, पूर्वद्वार पर विंध्याचल पर्वत की भींत का दृश्य था और दक्षिण द्वार के पास मोटी पौषधशाला थी, जिसमें तपागच्छ नायक सोमसुन्दरसूरि रहा करते थे। धरणाशाहने चार

कार्य एक मुहूर्त में ही आरंभ किये थे। एक कार्य उक्त मन्दिर बनवाने का, दूसरा दानशाला खुल्ली रखने का, तीसरा पौषधशाला बंधवाने का और चौथा खुद के रहने के लिये महालय बंधाने का। इन चारों कार्यों में धरणाशाह सफल मनोरथ हुआ था।

पाश्चात्य युरोपियन विद्वान् जेम्सफरग्युस साहब लिखते हैं कि—इस देवालय के स्तंभवन की हारमाला इतनी सुन्दर और प्रकाशमान है कि जिसके देखने से अनहद आश्चर्य पैदा होता है और उसका चितार उतार लेना अशक्य है। इसका भूमितल ऊंचा, और मुख्य घूमट उस से भी अधिक ऊँचा होने के वजह से यह एक महान् देवालय के समान देख पडता है। इसमें छोटे वडे अनेक भाग पाडे गये हैं, इस लिये इस का हरएक स्तंभ अपनी उत्तमता के लिये जुदाई रखता है। इसकी अद्भुत गोठवणी और स्तंभो की हारमाला हिन्दुस्तान के किसी देवालय में नहीं पाई जाती। इस देवालयने ४८००० चोरस फुट् जमीन घेरी है जो मध्यकालीन युरोपियन देवालयों के समान है, लेकिन रचना और सुन्दरता में उन से भी बहुत अधिक है। इस देवालय में दो जात के पत्थर काम में लाये गये हैं—भूमितल के लिये सेवाडी जात का, और भींतों के लिये सोनाणा जात का। अन्दर के भाग में जिनप्रतिमाओं के सिवाय सर्वत्र सोनाणा जात का ही पत्थर लगाया गया है। इस में सम्मेतशिखर का, अष्टापद, सिद्धगिरि, गिरनार और नन्दीश्वर का कोतर का काम आज अच्छे शिल्पज्ञ युरोपियन विद्वानों की बुद्धि को भी स्तब्ध करता है।” अस्तु.

यह अतिसमृद्ध राणकपुर नगर तो ऊजड़ हो गया है, और धरणाशाह का वंश भी लुप्त हो गया है, परन्तु उस का बनवाया हुआ यह त्रिभुवनदीपक देवालय तो उस की सुरम्य कीर्त्ति को अब तक जीवित ही रख रहा है। इसीसे कहा जाता है कि ' जे जस लही आयम्या, ते रवि पहेला ऊगंत। '

मुसलमानी हमलों और ऊपरा ऊपरी दुष्काल पड़ने के कारण राणपुर बरबाद (ऊजड) हो गया। तब धन्ना और रत्ना के वंशज सादड़ी और घाणेराव में आ कर बस गये। घाणेराव में बारह जैनपोरवाड़ कुटुम्ब हैं जो अब तक भी रत्नाशाह के वंशज होने का दावा रखते हैं, और राणकपुर के त्रिभुवनदीपक देवालय के ऊपर प्रतिवर्ष ध्वजा उन्हीं के तरफ से चढ़ती है। त्रिभुवनदीपक देवालय के बनवानेवाले धरणाशाह का वंशवृक्ष यहाँ के उपलब्ध लेख में इस प्रकार है—

संघपति मांगण
|
संघवी कुरपाल
(स्त्री कामलदे)
|
सं० रत्ना (स्त्री रत्नादे) — सं० धरणाक (स्त्री धारलदे)

सं० रत्ना के पुत्र: लाखा, मना, सोना, सालिग,

सं० धरणाक के पुत्र: जाज्ञा, जावड.

धन्नाशाह पोरवाडने उक्त देवालय के सिवाय भी अजारी, पिंडवाड़ा और सालेर आदि गाँवों में भी सौधशिखरी जिन मंदिर बनवाये थे। यह राजमान्य था और पोरवाड़वंश में भूषण के समान माना जाता था। चुस्त जैनधर्मी होने से इसको श्रीसंघ के तरफ से परमार्हत् का खिताब मिला था। इसके बनवाये त्रिभुवनदीपक देवालय में मूलनायकजी के दहिने द्वार की भींत के स्तंभे पर इसी के समय का एक शिलालेख लगा है, जो ४७ पंक्तियों का गद्यसंस्कृत में है। वह नीचे मुताबिक है—

२०—श्रीचतुर्मुखजिनयुगादीश्वराय नमः । विक्रमतः १४९६ संख्यवर्षे श्रीमेदपाटराजाधिराज श्रीवप्प १, श्रीगुहिल २, भोज ३, शील ४, कालभोज ५, भर्तृभट ६, सिंह ७, महायक ८, राज्ञीसुतयुतस्वसुवर्णतुलातोलक श्रीखुम्माण ९, श्रीमदल्लट १०, नरवाहन ११, शक्तिकुमार १२, शुचिवर्म १३. कीर्त्तिवर्म १४, योगराज १५, वैरट १६, वंशपाल १७, वैरीसिंह १८, वीरसिंह १९, श्रीअरिसिंह २०, चीडसिंह २१, विक्रमसिंह २२, रणसिंह २३, क्षेमसिंह २४, सामंतसिंह २५, कुमारसिंह २६, मथनसिंह २७, पद्मसिंह २८, जैत्रसिंह २९, तेजस्विसिंह ३०, समरसिंह ३१, चाहुमानश्रीकीतूकनृपश्री-अल्लावदीनसुरत्राणजैत्रवप्पवंश्यश्रीभुवनसिंह ३२, सुतश्रीजयसिंह ३३, मालवेशगोगादेवजैत्रश्रीलक्ष्मीसिंह ३४, पुत्रश्रीअजयसिंह ३५, भ्रातृश्रीअरिसिंह ३६, श्रीहम्मीर ३७, श्रीखेतसिंह ३८, श्रीलक्षाह्वयनरेन्द्र ३९, नंदनसुवर्णतुलादिदानपुण्यपरोपकारादि-

सारगुणसुरद्रुमविश्रामनंदनश्रीमोकलमहीपति ४०, कुलकानन-पंचाननस्य, विषमतमाभंगसारंगपुर–नागपुर–गागरण–नराण-काऽजयमेरु–मंडोर–मंडलकर–बूंदि–खाटूचाटमूजानादि नाना-महादुर्गलीलामात्रग्रहणप्रमाणितजितकाशित्वाभिमानस्य, निज-भुजोर्जितसमुपार्जितानेकभद्रगजेंद्रस्य, म्लेच्छमहीपालव्यालचक्र-वालविदलनविहंगमेंद्रस्य, प्रचंडदोर्दंडखंडिताभिनिवेशनानादेश-नरेशमालमालालितपादारविंदस्य, अस्खलितलालितलक्ष्मीवि-लासगोविंदस्य, कुनयगहनदहनदवानलायमानप्रतापव्यापपलाय-मानसकलवलूलप्रतिकूलक्ष्मापश्वापदवृंदस्य, प्रवलपराक्रमाक्रांत-दिल्लीमंडलगूर्जरत्रासुरत्राणदत्तातपत्रप्रथितहिंदुसुरत्राणविरुदस्य, सुवर्णसत्रागारस्य, षड्दर्शनधर्माधारस्य, चतुरंगवाहिनीवाहिनी पारावारस्य, कीर्त्तिधर्मप्रजापालनसत्त्वादिगुणक्रियमाणश्रीराम-युधिष्ठिरादिनरेश्वरानुकारस्य, राणाश्रीकुंभकर्णसर्वोर्वीपतिसार्व-भौमस्य, ४१ विजयमानराज्ये तस्य प्रसादपात्रेण विनयविवेक-धैर्योदार्यशुभकर्मनिर्मलशीलाद्यद्भुतगुणमणिमयाभरणभासु-रगात्रेण श्रीमदहम्मदसुरत्राणदत्तफुरमाणसाधुश्रीगुणराजसंघ-पतिसाहचर्यकृताश्चर्यकारिदेवालयाडंवर–पुरस्सरश्रीशत्रुंजयादि-तीर्थयात्रेण, अजाहरी–पिंडरवाटक–सालेरादिवहुस्थाननवीन-जैनविहारजीर्णोद्धारपदस्थापनाविषमसमयसत्रागारनानाप्रकार-परोपकारश्रीसंघसत्काराद्यगण्यपुण्यमहार्थक्रयाणकपूर्यमाणभवा-र्णवतारणक्षमंमनुष्यजन्मयानपात्रेण, प्राग्वाटवंशावतंस सं० मां-गणसुत सं० कुरपाल भा० कामलदे पुत्र परमार्हत सं० धरणा-केन ज्येष्ठभ्रातृ सं० रत्ना भा० रत्नादे पुत्र सं० लाखा मना

सोना सालिग स्व भा० सं० धारलदे पुत्र जाज्ञा जावडादि प्रवर्द्धमानसंतानयुतेन राणकपुरनगरे राणा श्रीकुंभकर्णनरेंद्रेण स्वनाम्ना निवेशिते तदीयसुप्रसादादिशतस्त्रैलोक्यदीपकाभिधानः श्रीचतुर्मुखयुगादीश्वरविहारः कारितः, प्रतिष्ठितः श्रीवृहत्तपागच्छे श्रीजगच्चंद्रसूरि श्रीदेवेन्द्रसूरिसंताने श्रीमच्छ्रीदेवसुंदरसूरिपट्टप्रभाकरपरमगुरुसुविहितपुरंदरगच्छाधिराज श्रीसोमसुंदरसूरिभिः । कृतमिदं च सूत्रधार देपाकस्य, अयं च श्री चतुर्मुखप्रासाद आचंद्रार्कं नंदतात्, शुभं भवतु (१)

इसके अलावा इस देवालय के पूर्वदिशा के मंडपगत एक स्तंभ पर सं. १६५१ का, और तीसरे खंड के पूर्वदिशा के एक पाट पर सं०१६७४ का, एवं दो लेख लगे हुए हैं जो नीचे लिखे अनुसार हैं—

२१—संवत् १६५१ वर्षे वैशाखसुदि १३ दिने पातसाहि श्रीअकब्बरप्रदत्तजगद्गुरुविरुदधारकपरमगुरुतपागच्छाधिराजभट्टारक श्री ६ हीरविजयसूरीणामुपदेशेन श्रीराणपुरनगरे चतुर्मुखश्रीधरणविहारे श्रीमदहमदावादनगरनिकटवर्त्त्युसमापुरवास्तव्यप्राग्वाटज्ञातीय सा० रायमल भार्या वरजू, भार्या सुरूपदे तत्पुत्र सा० खेता सा० नायकाभ्यां भावरथादिकुटुंबयुताभ्यां पूर्वदिक्प्रतोल्यां मेघनादाभिधो मंडपः कारितः स्वश्रेयोर्थे, सूत्रधार समल मांडप शिवदत्त–विरचितः (२)

२२—संवत् १६७४ वर्षे फाल्गुनमासे शुक्लपक्षे पंचम्यां तिथौ गुरुवासरे श्रीतपागच्छाधिराज पातसाहश्रीअकब्बरदत्त

जगद्गुरुविरुदधारकभट्टारकश्रीश्रीश्री ६ हीरविजयसूरीणामुपदेशेन चतुर्मुखश्रीधरणविहारे प्राग्वाटज्ञातीयसुश्रावक सा० खेतानायकेन वृद्धपुत्रयशवंतादिकुटुंबयुतेन अष्टचत्वारिंशत् ४८ प्रमाणानि सुवर्णनाणकानि मुक्तानि पूर्वदिक्सत्कप्रतोलीनिमित्तमिति, श्रीमदहिमदावादपार्श्वे उसमापुरतः श्रीरस्तु (३)

इसके प्रथम खंड में ऋषभदेव भगवान की चारों दिशा में एक एक प्रतिमा विराजमान है, जो सर्वाङ्ग सुन्दर और अन्दाजन २॥ हाथ बड़ी सफेदवर्ण की हैं। उनमें पूर्व, दक्षिण और पश्चिम में विराजमान प्रतिमाओं पर एक ही किस्म का लेख खुदा है जो इस प्रकार है—

२३—सं० १४९८ फा० व० ५ धरणाकेन भ्रातृज सं० लाखादिकुटुंबयुतेन श्रीयुगादिदेवः का० प्र० तपागच्छनायकश्रीसोमसुंदरसूरिभिः। (४)

प्रथमखंड में उत्तर की प्रतिमा पर—

२४—सं० १६७९ वर्षे वैशाखसुदि ११ वारबुधे मेदपाटराजाधिपतिराणाश्रीकर्णसिंहविजयराज्ये तत्समये तपागच्छाधिपति भट्टारकश्रीविजयदेवसूरिउपदेशेन पं० केला पं० जयविजय पं० तेजहंसेन प्रतिष्ठितं तच्छ्रावकप्राग्वाटज्ञातीय सा० वरधा, तत्पुत्र सा० हेमराजनवजी कारितः। श्रीरस्तु श्रीयुगादीश्वरबिंबं (५)

२–३—दूसरे खंड में श्रीआदिनाथजी की सवा सवा हाथ

वडी सफेदवर्ण की चार प्रतिमाएँ स्थापित हैं जिनकी प्रतिष्ठा क्रमसे सं० १५०६, १५०७, १५०८ और १५५१ में हुई है और तीसरे खंड में मूलनायक तरीके संभवनाथ, आदिनाथ आदि चार मूर्त्तियाँ जो सं० १५११ की प्रतिष्ठित विराजमान हैं। इस धरणविहार देवालय में देवकुलिकाओं सहित छोटी वडी कुल जिनमूर्त्तियाँ १८० हैं। इनके अलावा शत्रुंजय-गिरनार पट १, सम्मेतशिखर पट १, सहस्रकूट पट १, सहस्र-फणा-पार्श्वनाथ पट १, नन्दीश्वरद्वीप पट १, चोमुख छोटा १, आचार्यमूर्त्ति १ और धरणाशाह तथा उसकी पत्नी की मूर्त्ति स्थापित हैं, जो अतिसुन्दर और सफेद पाषाणमय हैं। कहा जाता है कि इसमें ८४ भूमिघर हैं, जिनमें चार का पता है उनमें सैंकडों जिनमूर्त्तियाँ रक्खी हुई हैं। यात्रियों को चार भोंयरे नकरे के ५१) रुपये लेकर वताये जाते हैं।

इस विशाल देवालय की देवकुलिकाएँ जुदे जुदे सद्-गृहस्थों के तरफ से वनी हुई हैं ऐसा देवकुलिकाओं के ऊपर खुदे लेखों से जान पड़ता है। तीन देवकुलिकाओं के लेख नीचे मुताविक हैं, जो सं० १५३५ से १५५६ तक के हैं।

२५—संवत् १५३५ वर्षे फाल्गुनसुदि ५ दिने श्रीउस-वंशे मंडोरागोत्रे सा० लाधा पुत्र सा० वीरपाल भार्या नेमलदे पुत्र सा० गयणाकेन भा० मेतादे प्रमुखयुतेन माता विमलादे पुण्यार्थं श्रीचतुर्मुखदेवकुलिका कारिता (६)

२६—संवत् १५५६ वर्षे वै० सु० ६ शनौ श्रीस्तंभतीर्थ-

वास्तव्यश्रीउशवंशे सा० गणपति भा० गंगादे सु० सा० हरराज भा० धरमाइ सु० सा० रत्नसीकेन भा० कपूरा प्रमुख कुटुंबयुतेन राणपुरमंडनश्रीचतुर्मुखप्रासादे देवकुलिका का०, श्रीउसवालगच्छे श्रीदेवनाथसूरिभिः (७)

२७—सं०१५५६वर्षे वै०सु०६शनौ श्रीस्तंभतीर्थवास्तव्यश्रीउसवंश सा०आसदेव भा०सपाउं सुत सा० सांजा भार्या राजीसुत सा० श्रीजोगराजेन भ्रातृ सा० मगा स्वभार्या प्रथ० सोवती द्विती० संखा, सोहना, भाकर प्रमुख–कुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीराणपुरमंडन श्री चतुर्मुखप्रासादे देवकुलिका कारिता श्रीउदयसागरसूरिभिः प्रतिष्ठिता (८)

इस देवालय के दहिने भाग में लगते ही एक वडी धर्मशाला है जिसमें ४१ कोठरियां, भोजनालय, और एक उपासरा है। उपासरा सं० १९८१ में बना है और इसको सादड़ी निवासी वाफना सरदारमल बनाजी के स्मरणार्थ उनके पुत्र हरखचंद कालुराम अगरचंदने बनवाया है। धर्मशाला और देवालय के बीच में एक अच्छा मजबूत कमरा है जिसमें पहरेदार और सोमपुरा सलावट रहते हैं, जो हमेशां देवालय की सुरक्षा करते हैं। देवालय के सामने नगारखाना और एक छोटा बगीचा है। बगीचे में गुलाब, मोगरा आदि के वृक्ष लगे हुए हैं, जो प्रभु पर चढ़ाने के काम आते हैं।

इस विशाल देवालय से पश्चिम में थोडी दूरी पर एक छोटा रमणीय शिखरवाला मन्दिर है जिसमें स्यामवर्ण १ हाथ

वडी श्रीपार्श्वनाथ भगवान् की प्रतिमा विराजमान है, जो अति-सुन्दर और प्रभावशालिनी है। इसके चारों ओर परिकर और तोरण लगा हुआ है जिसमें छोटी छोटी तेइस जिनमूर्त्तियाँ उकेरी हुई हैं। इसमें छोटी वडी कुल २८ जिनप्रतिमा स्थापित हैं, जो सं० १४४४ की प्रतिष्टित हैं। इसको पूर्नमियागच्छ के जैनसंघने वनवाया है परन्तु इसके चारो तरफ युगलिक मनुष्य स्त्रियों के नग्न प्रतिविंव कोरे हुए अधिक होने के वजह से लोग इसको किसी वेश्या का वनवाया मानते हैं।

इससे थोडी दूरी पर तीसरा मन्दिर है, जो सुन्दर और शिखरवद्ध है। इसमें मूलनायक श्रीनेमनाथस्वामी की १ हाथ वडी स्यामवर्ण की प्रतिमा विराजमान है। इसमें कुल ११ मूर्त्तियाँ हैं, जो अंदाजन विक्रम की १९ वीं सीकी की प्रतिष्टित हैं। यह मन्दिर खरतरगच्छीय संघने वनवाया है परन्तु लोग इसको सलावटों का मन्दिर कहते हैं।

सलावटों के मन्दिर से दक्षिणमें ४ फर्लांग के फासले पर एक देवी का देवल है, जो शिखरवद्ध और अच्छी कारी-गिरी वाला है। मालूम होता है कि यह इस तीर्थ के नायक श्री आदिनाथ भगवान की अधिष्टायिका चक्रेश्वरीदेवी का है, इसमें इस समय चक्रेश्वरी माता की मूर्त्ति भी वैठी है। इसकी वरा-वर सारसंभाल न होने के कारण यह जीर्ण हो गया है. शिर्फ शिखर अवशिष्ट है, दूसरा सारा भाग भूमिशायी हो चुका है। इसीके पास एक नदी है, जो हमेशां वहती रहती है और इसका जल यहाँ के उत्तर तरफ के तालाव में जाता है। तालाव

का पश्चिम किनारा मजबूत बाँधा हुआ है जिसकी चौडाई अन्दाजन ४२ हाथ है। इस तालाब में बांध के पास ४० हाथ गहरा जल है, जो वारिश में ७५ हाथ ऊंचा चढ़ जाता है और इसके जलकी नहरों से सीयालु और उन्हालु धान्य साखें पकती हैं।

३७ सादड़ी—

जोधपुर के गोड़वाड़ परगने में फालना स्टेशन से ९ माइल पूर्व में यह कसबा आबाद है। इसमें श्वेताम्बर ओसवाल जैनों के ८००, और पोरवाड जैनों के १०० घर हैं। यहाँ छोटे बड़े २० उपासरे, दो बड़ी धर्मशाला, जैन पाठशाला, लायब्रेरी, सरकारी स्कूल और पोस्ट आफिस है। यहाँ अंदाजन २९० घर स्थानकवासी जैनों के भी हैं जो बडे विघ्नसंतोषी, निंदक और कलहप्रिय हैं।

गाँव में तीन जिनमन्दिर हैं। जिनमें सबसे प्राचीन और बड़ा चोवीस जिनालय पार्श्वनाथ का मंदिर है, जो विक्रम की १२ वीं सदी का बना माना जाता है। इस में मूलनायक श्रीपार्श्वप्रभु की १ हाथ बड़ी बादामी रंग की प्रतिमा स्थापित है। इसमें कुल प्रतिमा १३६ पाषाण की, और धातु की ९७ है। दूसरा मंदिर इसीके बांये तरफ है, जो गृह मंदिर है और उसमें मूलनायक श्रीचन्द्रप्रभु आदि की ४ प्रतिमा हैं। तीसरा मन्दिर गांव से वीस कदम दूर राणकपुर जानेवाले रास्ते के बांये भाग के मैदान में है। इसमें मूलनायक चन्द्रप्रभु की २० अंगुल बडी, सफेद वर्ण प्रतिमा स्थापित है और इसके बगल में एक धर्मशाला भी है।

३८ घाणेराव—

अरवली से पश्चिम उसकी ढालू जमीन पर यह कसवा वसा हुआ है। यहाँ ओसवाल जैनो के ३५० और पोरवाड जैनों के ५० घर हैं, जो अच्छे भावुक हैं। गाँव में चार उपासरे और तीन वड़ी धर्मशाला हैं। पोस्ट ओफिस तथा सरकारी स्कूल भी है और एक जैनपाठशाला है जिसमें व्यावहारिक शिक्षण दिया जाता है। गाँव में दश जिनमन्दिर हैं, जो दर्शनीय और भव्य हैं। उनमें कुन्थुनाथ, गोड़ीपार्श्वनाथ, अभिनन्दन और आदिनाथ ये चार शिखरवद्ध हैं, शेप छः गृह मन्दिर हैं। इन दशों मन्दिरों में मूलनायक समेत जिनप्रतिमा आदि की संख्या और स्थान की तालिका इस प्रकार है—

१ कुन्थुनाथजी	१२	१	नयी पाटी के नाके	शिखरवद्ध
२ जीरावलापार्श्वनाथ	१४	१।	माहेली वावका चोक	गुम्वजदार
३ गोड़ी पार्श्वनाथ	१८	॥	मांहेली वाक के पास	शिखरवद्ध
४ शान्तिनाथजी	९	१	पोरवाडों के वास में	गुम्वजदार
५ आदिनाथजी	४२	१॥	महिला वास में	शिखरवद्ध
६ ऋषभदेवजी	६	१	मांहेला वास में	घूमटदार
७ अभिनन्दनजी	१३	१	पटनी वास में	शिखरवद्ध
८ चिन्तामणि पार्श्व०	१६	१	राजोतावास में	गुम्वजदार
९ श्रीपार्श्वनाथजी	५	॥	साधांरी पट्टी में	छत्री में
१० श्रीधर्मनाथजी	९	॥।	वाजार के वीच	घूमटदार

कुन्थुनाथ के मंदिर का शिलालेख—

२८-संवत् १८७२ वर्षे शाके १७३७ प्रवर्त्तमाने मासोत्तमफाल्गुनमासे शुक्लपक्षे तृतीयायां तिथौ शनिवासरे श्री कुन्थुनाथ प्रासादप्रतिष्ठितं श्रीमत्तपागच्छे भ० श्रीजिनेन्द्रसूरीश्वरजी उपदेशात् राठोडवंश मेडताराज ठा० श्रीदुर्जनसिंघजी पुत्र पट्टप्रभाकर ठाकुरां श्री अजितसिंघजी विजयराज्ये श्री पाणपुरवास्तव्यउपकेशज्ञातीयवृद्धशाखायां हतुंडियाराठोडगोत्रे सा० लुंबा भार्या वच्छु तत्पुत्र सा० नाथा भार्या जसु तत्पुत्र सा० अमीचंदेन प्रासाद करापितं, भार्या धनादे तत्पुत्र सपूत सा० तिलोकचंदेन श्रीजिनभक्ति कारिता। लि० पं० शिवसागरगणि, गजधर चत्रभुज दमा सोमपुरा श्रीरस्तु श्रीकल्याणमस्तु भद्रं भूयात् श्रीमंगलमालिका (१)

गोडीपार्श्वनाथ के मंदिर का शिलालेख—

२६-स्वस्ति श्रीमन्नृपति विक्रमार्क समयातीत सं० १८ चै० १४ वर्षे शाके १६८० प्रवर्त्तमाने मासोत्तम ज्येष्ठ मासे शुभे शुक्लपक्षे तृतीयायां तिथौ गुरुवासरे मेदपाटाधिपति महाराणाधिराज महाराणा श्री राजसिंघजी विजयराज्ये तस्य सामंतशिरोमणि राठोड वंशे महाराजा श्रीठाकुरां श्रीवीरमदेवजी तस्य मंत्री घाणोरा नगर वास्तव्य उपकेश ज्ञातीय वृद्धिशाखायां लोढागोत्रे सा० वीजा भार्या जेमादे पुत्र सा० रूपा भार्या रूपादे तत्पुत्र सा० विहारीदासेन महत्पुण्योपार्जनार्थे श्रीऋषभाद्यनेकबिंबसहितः श्रीगोडीपार्श्वस्य प्रासादो कारापितं महोत्सवेन

प्रतिष्ठितं श्रीमत्तपागच्छाधिराज भट्टारक श्री विजयदयासूरि तत्पट्टे भट्टारक श्री विजयधर्मसूरिभिरिति प्रशस्तिः, श्रियेऽस्तु लिखितं पं० मनोहरसागरेण (२)

वाणेराव से ४ माइल पूर्व में महावीर प्रभु का चोवीस जिनालय भव्य शिखरवाला प्राचीन मन्दिर है, जो सघन झाडी और अरवली (अडावला) पहाड की लगो लग खीण में है। इसमें मूलनायक श्री महावीरस्वामी की २॥ हाथ बड़ी सफेद वर्णवाली परिकर सहित प्रतिमा स्थापित है, जो महावीर–मुछाला

१ इस विषय में एक दन्तकथा प्रचलित है कि किसी समय उदयपुर महाराणा यहाँ आये, उनके आतिथ्यर्थ पूजारीने घिसे हुए केशर की कटोरी हाजिर की। उसमें एक केश पड़ा हुआ देख, महाराणा के कर्मचारीने हास्य करते हुए कहा कि–क्या आपके भगवान् के दाढी–मूंछ हैं, नहीं तो केशर में वाल कहाँ से आया ?, पूजारीने विश्वास के साथ कहा कि दाढीमूंछ क्या ? हमारे भगवान् अनेक रूप करने में समर्थ हैं। महाराणाने कहा यदि ऐसा है तो हमको भगवान् के दाढीमूंछ सहित दर्शन करा। पूजारीने इस वात को मंजूर करके अन्न जल को छोड़ कर भगवान् के सामने वैठक जमाई। पूजारी की असीम दृढता से तीसरे दिन रात्रि में अधिष्ठायक देवने प्रत्यक्ष होकर कहा कि—'तेरे महाराणा को कह देना कि कल सुवह भगवान् दाढ़ीमूंछ सहित दर्शन देंगे। पूजारी उत्साह पूर्वक प्रातःकाल होते ही महाराणा को प्रभुमन्दिर में ले गया। प्रभुमन्दिर के मुख्य द्वार खुलते ही दाढीमूंछ सहित प्रभुप्रतिमा के दर्शन हुए। महाराणा और उसका अधिकारीवर्ग आश्चर्यान्वित हुआ और सभीने अभिवर्द्धित–भाव से अपने मस्तक प्रभु–चरणारविन्द में नमाये। लेकिन हास्य करनेवाले कर्मचारी को शङ्का हुई कि 'तीन रोज से पूजारी देख नहीं पड़ता, अतएव उसीने तो कहीं यह जाल नहीं रचा ? भला ! पत्थर

के नाम से पहचानी जाती है। इसके मंडप और भमती में छोटी बडी ५४ जिनमूर्त्तियाँ विराजमान हैं, जो प्राचीन हैं। यहाँ चैत्र सुदि १३ का मेला भराता है, जिसमें ६००० यात्री तक भेले हो जाते हैं। गोडवाड परगने की बडी पंचतीर्थी में का यह दोयम नंबर का तीर्थस्थान है, जो किसी समय अच्छा आबाद शहर था। इसका वहींवट घाणेराव की श्री महावीर स्वामी जैन पेढ़ी करती है, जो घाणेराव संघ के द्वारा स्थापित है।

३६ देसूरी—

जोधपुर रियासत में यह इस हकुमत का सदर स्थान है, जो बी. बी. एन्ड सी. आई. रेल्वे के रानी स्टेशन से १६ माइल दूर है। इसके चारो तर्फ शहरपनाह (कोट) और एक छोटी पहाडी पर मजबूत किला है। यह परगना पहले चौहान व सोलंकीयों के अधिकार में रहा। फिर उदयपुर महाराणा के

की मूर्त्ति के भी कभी दाढीमूंछ आ सकती है ? बस, ऐसा विचार करके प्रभुप्रतिमा की दाढी का एक केश खींचा। उसके उखडते ही दूध की धारा निकलने लगी। इसे देख कर महाराणा आदि साश्चर्य थर थर कांपने लगे। पूजारी से यह आशातना सहन न हुई, इससे उसने उस व्यक्ति को श्राप दिया कि 'जा तेरे वंश में आज से दाढीमूंछ रहित पुरुष होंगे' यह बात बनी भी इसी प्रकार। वह कर्मचारी उदयपुर में ही रहता था, उसके वंश में कई पीढी तक दाढी-मूंछ रहित ही पुरुष पैदा हुए। बस इसी चमत्कार के कारण यह प्रतिमा 'महावीर-मुछाला' क नाम स सर्वत्र प्रसिद्ध हुई।

हाथ में आया और बाद में सं० १८२६ में विजयसिंहजी को मिला। इसके पूर्व में उदयपुर, दक्षिण में बाली, पश्चिम में जालोर, उत्तर में पाली और सोजत है। क्षेत्रफल ७१.० वर्ग मील और वस्ती १८ हजार २०० है। इसके पूर्व में अडावला पहाड के जंगलों में चीते, तंदुर, काले रींछ आदि बहुत हैं। यहाँ श्वेताम्बर जैनों के अन्दाजन २०० घर हैं जिनमें ओसवाल पोरवाड दोनों शामिल हैं। गाँव में दो उपासरे, दो धर्मशाला और चार जैनमन्दिर हैं, जो प्राचीन और अर्वाचीन दोनों हैं।

४० सोमेश्वरतीर्थ—

यह देसूरी हकुमत से ४ माइल पूर्वोत्तर कोण में स्थित है। इसके चारों तरफ विकट पहाडियाँ है जिस कारण इसका रास्ता भयंकर है और विना सहायक के कोई यात्री इसकी यात्रा का लाभ नहीं ले सकता। इसका वहीवट देसूरी जैनसंघ करता है। यहाँ प्राचीन समय का बना एक सौधशिखरी जिनमन्दिर और एक छोटी धर्मशाला है। मन्दिर में मूलनायक श्रीशान्तिनाथ भगवान् की सफेद वर्ण सुन्दर प्रतिमा विराजमान हैं, जो प्राचीन और चमत्कार–कारिणी है। कहा जाता है कि ६—७ वर्ष पहले यहाँ के अधिष्ठायकने इस तीर्थ का जीर्णोद्धार कराने के लिये पृथ्वीराज नवलखा को स्वप्न में प्रेरित किया था। इससे उसने गाँवों गाँव के संघ की मदत लेकर इस तीर्थ का जीर्णोद्धार करवाया। यात्रियों को यहाँ किसी तरह की तकलीफ नहीं पडती, जीर्णोद्धार कमेटी के तरफ से वर्त्तन विछोना

आदि सर-सामान पूरा पाडा जाता है। गोड़वाड की छोटी पंचतीर्थी में यह पांचवें नम्बर का तीर्थस्थान है, जो किसी समय अच्छा आवाद कसवा था। गोडवाड़ में नाणा १, बेड़ा २, रातामहावीर ३, सेवाडीमहावीर ४, और सोमेश्वर-शान्तिनाथ ५; ये पांच छोटी पंचतीर्थियाँ मानी जाती हैं।

४१ नाडलाई—

सोमेश्वर से ४ माइल पश्चिम और रानी स्टेशन से १४ माइल पूर्व में यह कसवा वसा हुआ है, जो पुराना है। यहाँ के उपलब्ध प्राचीन लेखों में इसके नडूलडागिका, नंदकुलवती, नडुलाई, वल्लभपुर और नाडलाई, ये प्राचीन नाम लिखे मिलते हैं। गोडवाड की मोटी पंचतीर्थी में यह तीसरे नम्बर का तीर्थ माना जाता है। समयसुन्दरजीने अपनी तीर्थमाला में 'श्रीनाडलाई जादवो' इस वाक्य से इसको नेमनाथस्वामी का तीर्थ लिखा है। शीलविजयजीने स्वरचित तीर्थमाला में लिखा है कि—

'नाडुलाइ नवमंदिर सार, श्री सुपास प्रभु नेमकुमार'

परन्तु गाँव बाहर की दोनों पहाड़ियों के नेमनाथ (गीरनार) और आदिनाथ (शत्रुंजय) मन्दिरों के सहित गाँव में कुल ११ जैनमन्दिर हैं, जो सभी सौधशिखरी और विशाल हैं। इनमें का कोई कोई मन्दिर तो तारंगातीर्थ के अत्युन्नत मन्दिर का स्मरण कराने वाला है। सभी जिनमन्दिर अपनी कोरणी धोरणी से सुसज्जित हैं। इन मन्दिरों की प्रतिमाओं के सहित तालिका नीचे मुताबिक है—

नंबर	मूलनायक नाम	वर्ण	हाथ	प्रतिमा	प्रतिष्ठा सं०
१	शत्रुंजय टोंक	सफेद	१॥	३	१६८६
२	गिरनार टोंक	श्याम	१॥	१	१११९
३	आदिनाथजी	सफेद	१।	३३	१६७४
४	अजितनाथजी	पीला	१।	३	०
५	सुपार्श्वनाथजी	सफेद	२	१३	१६९९
६	ऋषभदेवजी	"	०॥	१३	०
७	शान्तिनाथजी	"	१	३	"
८	नेमनाथजी	"	१।	३	"
९	सुपार्श्वनाथजी	"	१॥	३	१७६८
१०	गोडीपार्श्वनाथजी	"	१।	३	०
११	वासुपूज्यजी	"	१	३	"

तीसरे नम्बरवाले आदिनाथ–देवालय के लिये कहा जाता है कि आचार्य यशोभद्रसूरि और शैवयोगी तपेसरजी के परस्पर मंत्र प्रयोगों के विषय में वाद–विवाद हुआ। उन्होंने अपनी मंत्र–शक्ति दिखलाने के लिये वल्लभीपुर से अपने अपने मत के विशाल मन्दिर आकाश में उड़ायें और प्रतिज्ञा की कि सूर्योदय के पहले नाडलाइ की टेकरी पर जो प्रथम मन्दिर को रक्खेगा वह जीत गया माना जायगा। प्रतिज्ञा के अनुसार दोनों मंदिरों को उड़ाये चले जा रहे थे, लेकिन तपेसर योगी से आचार्य आगे निकल

गये उनके देवी के साथ आते हुए देव सोमीने मुजरे का का करके संघर्ष शुरू किया, इतने आचार्य आगे हुए यह गये और इधर से सोमी का मन्दिर भी मसजीद का पहुंचा। सूर्योदय हो जाने से सोमीने सोचके, और आचार्यने सोचके यहाँ बेठे सोही हुई पर मन्दिर स्थापन का किये गये। यहाँ यह कहावत भी है कि

संवत दश दहोत्तरे, वदिया चोरासी वाद।
खेडनगरथी लाविया, नाडलाई प्रासाद ॥ १ ॥

इस दोहरे के उत्तरार्ध के स्थान पर सोहमकुल पट्टावली वालेने लिखा है कि 'नारदपुरथी लाविया, शासनदेव प्रासाद' कुछ भी हो परन्तु यह मन्दिर लाया हुआ प्रसाद है ऐसा दन्तकथाओं से सिद्ध है और यह दन्तकथा शासनपतिसमय के समय में भी प्रचलित थी।

यहाँ के मन्दिर उत्तमता लेखों से इसको महावीर चैत्य लिखा है। अतएव पहले इसमें महावीरप्रभु की प्रतिमा विराजमान होगी, परन्तु जीर्णोद्धार के समय पीछे से आदिनाथ-प्रतिमा स्थापित हुई हो। इसका पहला जीर्णोद्धार विक्रम सं० १५९७ में मंत्री सायरने, दूसरा उद्धार जुदे जुदे गांवों के संघने मिलकर, और तीसरा उद्धार सायरजी के वंशजोंने कराया था। इस देवालय के लाने वाले आचार्य यशोभद्रसूरि संडेरगच्छ के थे और वे इसको सं० ९६४ में यहाँ मंत्रबल से लाये हैं ऐसा यहाँ के एक शिलालेख में लिखा है। यहाँ के जैनमंदिरों के नाम क्रम नीचे मुताबिक हैं—

१ शत्रुंजयटेकरी की आदिनाथ प्रतिमा पर—

३०—संवत् १६८६ वर्षे वैशाखमासे शुक्लपक्षे शनि पुष्पयोगे अष्टमी दिवसे महाराणा श्रीजगत्सिंहजी विजयीराज्ये जहांगिरी महातपाविरुदधारक भट्टारक श्रीविजयदेवसूरीश्वरोपदेश कारित प्राक्प्रशस्तिपट्टिकाज्ञातराजश्रीसंप्रति निर्मापित श्रीजेखलपर्वतस्य जीर्णप्रासादोद्धारेण श्रीनड्डुलाई वास्तव्यसमस्त संघेन स्वश्रेयसे श्रीआदिनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं च पादशाह प्रदत्तजगद्गुरुविरुदधारक तपागच्छाधिराज भट्टारक श्री ५ हीरविजयसूरीश्वरपट्टप्रभाकर भ० श्रीविजयसेनसूरीश्वरपट्टालंकार भट्टारक श्रीविजयदेवसूरिभिः स्वपदप्रतिष्ठिताचार्य श्री विजयसिंहसूरिप्रमुखपरिवारपरिवृतैः श्रीनड्डुलाईमंडनश्रीजेखलपर्वतस्य प्रासाद मूलनायक श्री आदिनाथबिंबं श्रीः (१)

२ गिरनारटोंक—मंदिर के एक स्तंभ पर—

३१ ॐ नमः सर्वज्ञाय, संवत् ११९५ आसउज वदि १५ दिने कुजे अद्येह श्रीनड्डलडागिकायां महाराजाधिराज श्री रायपालदेवे विजयीराज्यं कुर्वतीत्येतस्मिन् काले श्रीमदुज्जिततीर्थे श्रीनेमिनाथदेवस्य दीपधूपनैवेद्यपुष्पपूजाद्यर्थे गूहिलान्वयः राउ० ऊधरणसूनुना भोक्तरिठ० राजदेवेन स्वपुण्यार्थे स्वीयादानमध्यात् मार्गे गच्छतानामागतानां वृषभानां शेकेषु यदाभाव्यं भवति तन्मध्याद्विंशतिमो भागः चंद्रार्कं यावद्देवस्य प्रदत्तः। अस्मद्वंशीयेनान्येन वा केनापि परिपंथना न करणीया, अस्मद्दत्तं न केनापि लोपनीयं।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ा)

ी
मे
ा
०

चक्रवर्त्तिचक्रचूडामणिः भ०प्रभुश्रीयशोभद्रसूरिः तत्पट्टे श्रीचाहु-मानवंशश्रृंगारः, लब्धसमस्तनिरवद्यविद्याजलधिपारः श्रीवदरादेवीदत्तगुरुपदप्रसादः, स्वविमलकुलप्रबोधनैकप्राप्तपरमयशोवादः भ० श्रीशालिसूरिः । त० श्रीसुमतिसूरिः, त० श्री शांतिसूरिः त० ईश्वरसूरिः, एवं यथाक्रममनेकगुणमणिगणरोहणगिरीणां महासूरीणां वंशे पुनः श्रीशालिसूरिः त० श्रीसुमतिसूरिः, तत्पट्टालंकारहार भ० श्रीशांतिसूरिवराणां सपरिकराणां विजयराज्ये ।

अथेह श्रीमेदपाटदेशे श्रीसूर्यवंशीय महाराणाधिराज श्री शिलादित्यवंशे श्रीगुहिदत्तराउल श्रीवप्पाक श्रीखुमाणादि महाराजान्वये राणा हमीर श्रीखेतसिंह श्रीलखमसिंह पुत्र श्री मोकलभृगांकवंशोद्योतकारक प्रतापमार्त्तंडावतार आ समुद्र महिमंडलाखंडल–अतुलवल–महावल राणा श्रीकुंभकर्ण पुत्र राणा श्री रायमल्ल–विजयमान–प्राज्यराज्ये तत्पुत्र महाकुमारश्री पृथ्वीराजानुशासनात् श्री ऊकेशवंशे रायभंडारी गोत्रे राउलश्रीलाखणपुत्र श्री० मं० दूदवंशे मं० मयूरसुत मं० साह(दु)लः, तत्पुत्राभ्यां मं० सीहासमदाभ्यां सद्बांधव मं० कर्मसी, धारा, लाखादि सुकुटुम्बयुताभ्यां श्रीनंदकुलवत्यां पुर्यां सं. ९६४ श्रीयशोभद्रसूरि मंत्रशक्तिसमानीतायां त० सायरकारितदेवकुलिकाद्युद्धारतः सायरनाम श्रीजिनवसत्यां श्रीआदीश्वरस्य स्थापना कारिता कृता शांतिसूरिपट्टे देवसुंदर इत्यपर शिष्य नामभिः आ० ईश्वरसूरिभिः । इति लघुप्रशस्तिरियं लि० आचार्य श्रीईश्वरसूरिणा, उत्कीर्णा सूत्रधार सोभाकेन, शुभं (४)

मूलनायक प्रतिमा पर—

३४-संवत् १६७४ वर्षे माघवदि १ दिने गुरुपुष्ययोगे उसवालज्ञातीय भंडारीगोत्रे सायर पुत्र साइल, तत्पु० समदा-लखा, धर्मा, कर्मा, सीहा, समदापुत्र पहराज पद्मा नामा तत्पु. भीमा, भं० पहराज पुत्र कला, भं० नगापुत्र काला, भं० पद्मापुत्र जयचंद, भं० भीमापुत्र राजसी, भं० काला पुत्र शंकर, उसवाल जेचंद पुत्र जासचंद जादव, भं० शिवा-पुत्र पुंजा, जेठा संयुतेन श्री आदिनाथबिंबं कारितं प्रति-ष्ठितं तपागच्छाधिराज भ० श्रीहीरविजयसूरि तत्पट्टालंकार श्री विजयसेनसूरि तत्पट्टालंकार भट्टारक श्रीविजयदेवसूरिभिः (५)

रंगमंडप की बांई भींत पर—

३५—संवत ११८७ फाल्गुन सुदि १४ गुरुवारे श्री पंडेरकान्वयदेशीचैत्ये देवश्री महावीराय दत्तः मोरकराग्रामे याणक तैलपलमध्यात् चतुर्थभाग चाहुमाण पापयरासुतविशरा केन कलशो दत्तः रा० वीच्छा, रा० सामंत, सा. खीम, रा० नागसिंह ऊतिय, रा० वीघा, रा० मोसरि लखमण,

बहुभिर्वसुधा भुक्ता, राजभिः सगरादिभिः।
यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलं ॥ (६)

३६—संवत् १२०० कार्तिकवदि ७ रवौ महाराजाधिराज श्रीरायपाल देवराज्ये श्रीनड्डलडागिकायां रा० राजदेवठकुरायां श्रीनड्डलाईय महाजनैः सर्वैर्मिलित्वा श्रीमहावीरचैत्ये दानं दत्तं

घृत–तैल–चोपड–पाइय प्रति रू० ३/८ धानलवनमपि। तद्‌द्रोणं प्रति मा०१/२ कपास लोह गुड खांड हींगु मांजीठां तोल्ये घडी प्रति मु० १/२ पूगहरीतकी प्रमुखगणितैः सहस्र प्रति पूगु १ एतत्तु महाजनेन वेतरेण धर्माय प्रदत्तं लोपकस्य यत्पापं गोहत्या सहस्रेण ब्रह्महत्याशतेन च, तेन पापेन लिप्यते। (७)

जिनमंदिरों के अलावा जादवाजी (नेमनाथ–गिरनार) टेकरी के आधे चढाव पर एक छत्री में नेमनाथ के चरण और टेकरी की झील में उत्तर तरफ सहसावन नामक स्थान पर श्रीनेमनाथ भगवान के चरण स्थापित हैं। गाँव से दक्षिण ३० कदम पर महाजनों का स्मशान है, उसीके पास संडेरकीयगच्छ के आचार्य श्रीयशोभद्रसूरि का उनकी प्रतिकृति सहित स्तूप है और उसीके पास तपेसरयोगी का स्तूप है। कहा जाता है कि प्रतिवर्ष यशोभद्राचार्य का स्तूप एक जौका शतांश बढ़ता है और तपेसरयोगी का स्तूप उतना ही घटता है।

यहा जैनेतर (विष्णु) स्थानों में उल्लेख के योग्य महादेव का देवल जो तपेश्वरमहादेव के नाम से पहचाना जाता है और इसको तपेसर योगी मंत्रशक्ति से वल्लभीपुर, या खेडनगर से उडा के लाया है। यह अच्छा विशाल वड़ा शिखरवाला है, जो पूर्वाभिमुख है। मध्यभाग में मुख्य देवल और आस पास फिरता प्रदक्षिणा मार्ग है। इसमें मंडप और कमाने लगी हुई। इसके चारों दिसा में एक एक देवकुलिका जिनमें उत्तर–दक्षिण देहरियों में सूर्य और गणपति की मूर्त्तियों स्थापित हैं।

४२-नाडोल—

बी. बी. एन्ड सी. आई रेल्वे के रानीस्टेशन से ७ माइल पूर्वोत्तर कोण में यह कसबा आबाद है जो, पुराना और चौहान सरदारों का पाटनगर है। प्राचीन लेखों में इसके नडुल, नड्डुल, नन्दपुर और नर्दूलपुर आदि नाम पाये जाते हैं। यहाँ के चौहान राजा इतिहास प्रसिद्ध और बडे समरविजयी हुए हैं। जालोर के सोनगरा चौहान इसी नगर से गये थे और जालोर के सोनागिर का राज्य करने के कारण वे सोनगरा कहलाये। इस समय यह कसबा घाणेराव ठाकुर के अधिकार में और जोधपुरराज्य के नीचे है। यहाँ श्वेताम्बर ओसवाल जैनों के २५० घर, तीन उपासरे, दो धर्मशाला, एक पोसाल और एक जैनपाठशाला है। पोस्ट ऑफिस और सरकारी स्कूल भी है। गाँव में सौधशिखरी पांच जैनमन्दिर हैं जिन में पद्मप्रभु और नेमनाथ के मन्दिर सब से पुराने माने जाते हैं, जो अविधिशाल और दर्शनीय हैं।

पद्मप्रभु का मन्दिर राजा संप्रति का बनवाया माना जाता है जो अपनी ऊंचाई और कोरणी धोरणी में अद्वितीय है। इस मन्दिर का नाम यहाँ के लेखों में ' रायविहार ' लिखा है। इसमें मूलनायक श्री पद्मप्रभस्वामी की २ हाथ बड़ी बादामी रंग की सुन्दर प्रतिमा स्थापित है। इसके आसन पर नीचे मुताबिक लेख है—

३७—संवत् १६८६ वर्षे प्रथमाषाड व० ५ शुक्रे राजाधिराजश्री गजसिंह प्रदत्तसकलराज्य व्यापाराधिकारेण मं० जेसासुत मं० जयमल्लनाम्ना श्रीपद्मप्रभबिंबं कारितं, प्रतिष्ठितं स्वप्रति-

छायां श्रीजालोरनगरे प्रतिष्ठितं च तपागच्छाधिराज भ० श्री हीरविजयसूरिपट्टालंकार भ० श्रीविजयसेनसूरिपट्टालंकार पातशाहि श्रीजहांगीर प्रदत्त महातपाविरुदधारक भ० श्री ५ श्री विजयदेवसूरिभिः स्वपदप्रतिष्ठिताचार्य श्रीविजयसिंहसूरि प्रमुख परिवारपरिकरितैः । राणा श्रीजगत्सिंहराज्ये नाडुलनगरराय विहारे श्रीपद्मप्रभबिंब स्थापित (१)

मूलनायक के दोनों बगल में आदिनाथ भगवान् की दो प्रतिमा पौने दो दो हाथ बड़ी स्थापित हैं, जो उक्त संवत् की ही प्रतिष्ठित हैं। इसके बाह्यद्वार के दोनों तरफ श्रीशान्तिनाथ नेमनाथ भगवान् की खडे आकार में सफेदवर्ण दो प्रतिमा स्थापित हैं। उन पर एक ही किस्म के इस प्रकार लेख हैं--

३८--संवत् १२१५ वैशाख सुदि १० सोमे वीसाडा स्थाने श्रीमहावीर चैत्ये समुदायसहितैः देवणाग नागड जोगड सुतैः देम्हाजधरण जसचंद्र जसदेव जसधवल जसपालैः श्री शांतिनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं बृहद्गच्छीय श्रीमन्मुनिचंद्र सूरिशिष्य श्रीमद्देवसूरिविनेयेन पाणिनीय पं० पद्मचंद्रगणिना यावद्दिवि चंद्ररवी स्यातां धर्मो जिनप्रतीतोस्ति तावज्जीयादेतज्जिनयुगलं वीरजिनभुवने (२)

इस लेख से जान पडता है कि ये दोनों जिन प्रतिमाएँ वीसाडास्थान के महावीर मन्दिर में थीं, परन्तु किसी कारण उसके नष्ट होने बाद लाकर यहाँ स्थापन कर दी गई हैं। इसी देवालय के कंपाउंड में एक छोटे शिखरवाले मन्दिर में मूलना-

यक श्री अनन्तनाथजी की सवा हाथ बडी सफेद प्रतिमा विराजमान हैं। उसके आसन पर नीम्नोक्त लेख है—

३६—संवत् १८९३ माघ शुक्ल १० बुधवासरे राजनगरे ओसवाल वीसा शा० निहालचंद तत्पुत्र सा० खुशालचंद तत्पुत्र सा० केसरीसिंघ तत्पुत्र सा० हरिसंघ तेन स्वश्रेयोर्थं श्रीअनंतनाथबिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं च तपाश्रीसागरगच्छे भ० शांतिसागरसूरिभिः लिखितं मुनि खेमविजयेन (२)

मुख्य मन्दिर से बांये तरफ के मन्दिर में गोडीपार्श्वनाथ आदि १९ प्रतिमा और सिद्धचक्र पट्ट स्थापित हैं, जो सं० १६६१ की प्रतिष्ठित हैं। मंदिर के पिछले भाग की बगीची में आदिनाथजी के चरण विराजमान हैं, जो सं० १९५१ के प्रतिष्ठित हैं।

द्वितिय मन्दिर नेमनाथ का है जो अच्छे शिखरवाला है और वीरविक्रमादित्य के पिता गन्धर्वसेन (गर्दभिल) भूपति का बनवाया कहा जाता है। इसमें बाइसवें तीर्थंकर श्रीनेमनाथजी की एक हाथ बडी श्यामवर्ण मूर्त्ति विराजमान है, जो विक्रम की १८ वीं शताब्दी की प्रतिष्ठित है और पीछे से बैठाई गई है। इसके दहिने तरफ एक मजबूत बंधा हुआ प्राचीन और गहरा भूमिगृह—तलघर है। कहा जाता है कि श्रीमानदेवसूरिजीने साकंभरी के जैनसंघ का उपद्रव दूर करने के वास्ते लघु शान्तिस्तोत्र की रचना इसीमें बैठ कर की थी। तीसरा मन्दिर छोटा शिखरबंध और चौथा गुम्बजदार है। जिनमें मूलनायक

शान्तिनाथ और जीरावला–पार्श्वनाथ विराजमान हैं। गाँव में और गाँव के बाहर कई जैनेतर स्थान और बावड़ियाँ है जो प्राचीन इतिहास को जानने के लिये अति उपयोगी हैं।

४३–वरकाणा तीर्थ—

गोडवाड परगने में राणकपुर १, महावीर मूछाला २ नाड लाई ३, नाडोल ४ और वरकाणा ५; ये पांच मोटी पंचतीर्थी कहाती हैं। प्रस्तुत तीर्थ उसीमें का एक है और इसके तीर्थ नायक भगवान् श्रीपार्श्वनाथजी हैं। राणीस्टेशन से उतर कर पंचतीर्थी की यात्रा के लिये जानेवाले यात्रियों को प्रथम यही तीर्थ भेटना पड़ता है और फालना स्टेशन से उतरनेवाले यात्रियों को प्रथम राणकपुरतीर्थ भेटना पड़ता है। सभी तीर्थों में यात्रियों के सुभीते के लिये बड़ी बड़ी धर्मशालाएँ बनी हुई हैं और उनमें गोदडा वर्त्तन आदि सरसामान का अच्छा प्रबन्ध है

४४ धणी—

यह छोटा गाँव है, इस में पोरवाड जैनों के २० घर एक उपासरा और एक छोटा शिखरवाला प्राचीन जिनमन्दिर है। मंदिर में मूलनायक श्रीशान्तिनाथजी की सुंदर प्रतिमा विराजमान है जो अर्वाचीन है। यहाँ के जैन निर्विवेकी, धर्मभाव नाशून्य और अन्य देवी देवलाओं के उपासक हैं।

४५ खुडाला—

फालना स्टेशन से पूर्व में पांच फर्लांग के फासले पर यह

गाँव बसा हुवा है। इसमें जैनवीसा ओसवालों के २९० घर हैं। यहाँ के २०–३० जैन नवयुवकों के प्रयास से जैन मित्रमंडल, जैनधर्मसभा और जैनलायब्रेरी कायम है—जिनका संचालन सौभाग्य विशेष करके फोजमलजी के सुपुत्र निहालचंद मास्टर को ही दिया जा सकता है, या यों समझिये कि ये संस्थायें उसी की देखरेख में चालु नजर पडती हैं।

यहाँ तीन उपासरे, दो धर्मशाला और एक आत्मवल्लभ जैनपाठशाला भी है। गाँव में एक प्राचीन सौधशिखरी जिन मंदिर है जिसमें मेनागिरी का, चीनी और मकरानी पंचरंगी लादियों का सुन्दर काम बना होने से दर्शकों को असीमानन्द पैदा होता है। इसकी नवचोकी के एक स्तंभ पर लिखा है कि

४०–संवत् १२४३ माघवदि ५ सोमवासरे रामदेव पुत्र प्राग्वाट वंशे मूराशाहेन लेखो लिखितः (१)

इससे पता चलता है कि यह मन्दिर पोरवाड रामदेव के पुत्र मूराशाहने सं० १२४३ माघवदि ५ सोमवार के दिन प्रतिष्ठित किया। इसमें मूलनायक श्रीधर्मनाथजी की एक हाथ बड़ी सफेदवर्ण प्रतिमा स्थापित है, जो सं० १२४३ माघवदि ५ सोमवार के दिन यहाँ बैठाई गई है ऐसा उसके लेख से

---

१ संवत् १२४३ माघवदि ५ सोमे श्रे० रामदेव पुत्र श्रे० नलधरेण ... ...श्रेयार्थम्।

मालूम होता है। इसके अलावा इस मन्दिर में धातुमय तीन चोवीसियाँ हैं, उन पर नीचे लिखे अनुसार लेख हैं--

४१-संवत् १५२३ वर्षे वैशाखशुदी ११ बुधे श्रीप्राग्वाटवंशे सा० गांगदेव भार्या कपूराई पुत्र सा० वछराज सुश्रावकेण भा० पांची पुत्र वसुपालयुतेन स्वश्रेयोर्थे श्रीअंचलगच्छेश श्री जयकेसरिसूरीणामुपदेशेन श्रीविमलनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं संघेन (२)

४२-संवत् १५४३ ज्येष्ठसुदि ११ शनौ प्राग्वाटज्ञातीय व्य० धर्मा भा० जानीसुत जीवा जोगाकेन भार्या गोमतिसुत हर्षा हीरा व्य० कमलासुत काढा तागोजी निमित्तं पुत्री राजू-नामा धरणा श्रीसंघसमस्त कुटुंबयुतेन व्य० कमलाश्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथबिंबं कारितं प्र० श्रीज्ञानसागरसूरिपट्टे श्री उदयसागर सूरिभिः श्रीवीसलनगरवास्तव्यः (३)

४३-संवत् १९५५ फाल्गुनवदि ५ गुरौ आहोरनगरे श्री आदीश्वरबिंबं का० प्रतिष्ठितं श्रीराजेन्द्रसुरिभिः (४)

फालना स्टेशन पर भी एक धर्मशाला और उसीके पास एक शिखरवाला जैनमन्दिर है जिसमें मूलनायक श्रीपार्श्वनाथजी की एक हाथ बडी अर्वाचीन मूर्त्ति स्थापित है।

४६-वाली—

यह इस जागीर की हकुमत का मुख्य स्थान है, जो जोध-पुर से ८४ माइल दक्षिण में और फालना स्टेशन से ९ माइल

पूर्व में आबाद है। यहाँ प्रथम चौहानों का अधिकार था। बाद में जालोर के सोनगरा सरदारों का और उनके बाद मेवाड के राणाओं का अधिकार रहा। वि० संवत् १८२६ में गोडवाड प्रान्त के सहित यह जागीर मारवाड के अधिकार में आई। वि० सं० १८२६ से १८३३ के लगभग में यहाँ एक छोटा किल्ला बना जो कसबे से पश्चिम लगते ही है।

यहाँ श्वेताम्बरजैनों में ओसवालों के ३८५ और पोरवाडों के ९० घर हैं, जो गुणानुरागी और गुणी साधु साध्वियों की कदर करनेवाले हैं। गाँव में चार उपाश्रय, चार धर्मशाला, एक पोसाल, एक जैनपाठशाला, एक लायब्रेरी, सरकारी स्कूल और पोस्ट ऑफिस है। जैनपाठशाला और लायब्रेरी की स्थिति ढिसमिस है।

यहाँ दो जैन मन्दिर हैं जिनमें पोरवाडों का मन्दिर प्राचीन और राजा गंधर्वसेन (गर्धभिल्ल) का बनवाया माना जाता है। इसमें मूलनायक श्रीऋषभदेवप्रभु की एक हाथ बडी सफेदवर्ण प्रतिमा विराजमान है, जो जगद्गुरु श्रीविजयहीर सूरिजी के हाथ से प्रतिष्ठित है। इसमें पहले श्रीशान्तिनाथ भगवान् की प्रतिमा स्थापित थी; परन्तु उसके विलोप हो जाने से, उसीके स्थान पर ऋषभदेवजी की मूर्त्ति बैठाई गई है। अन्दाजन बीस वर्ष पहले इस मन्दिर की जमीन खोदते हुए सोने के सिक्के [coin symbol] इस आकृति के, आठ आनी, चार

आनी और दो आनी चांदी की निकली थीं, जिनके ऊपर अक्षर भी हैं, पर वे वरावर वांचे नहीं जाते ।

दूसरा मन्दिर कसवे के सदर वाजार में है, जो ऊंची कुर्सी पर भव्य शिखरवाला है । इसको वि० सं० १८२० में ओसवाल गोभाजी और ओटाजीने वनवाया है। किसी किसी का यह भी कहना है कि वाली का किल्ला और यह मन्दिर समकालीन (साथ ही) वने हैं । इसमें मूलनायक श्री पार्श्वनाथस्वामी की १॥ हाथ वडी सफेद वर्ण की सुन्दर मूर्त्ति परिकर सहित स्थापित है, जो वाली से २ माइल की दूरी पर रहे हुए सेला नामक गांव से लाकर इस मन्दिर में वैठाई गई है । कहा जाता है कि यह प्रतिमा सेलागाँव के एक तालाव से अपने आप प्रगट हुई थी । कुछ भी हो प्रतिमा चमत्कारिणी और दर्शनीय है । इसके प्रतिष्ठाकार संडेरकगच्छीय आचार्य श्रीयशोभद्रसूरि मालूम पडते हैं । इसमें प्राचीन अर्वाचीन मिल कर के कुल जिन प्रतिमा १९ हैं ।

४७ सेसली तीर्थ—

वाली से २ माइल पूर्व में यह छोटा गाँव है, जो किसी समय अच्छा आवाद तीर्थ-स्थान था । यहाँ जैनों का एक भी घर नहीं है; लेकिन एक जैनधर्मशाला और एक प्राचीन सौधशिखरी जैन मन्दिर वना हुआ है । इसका जीर्णोद्धार वाली जैनसंघने थोडे वर्ष पहले कराया है । इसमें मूलनायक श्रीपार्श्वनाथ भगवान् की सफेदवर्ण वाली सवा हाथ वडी प्रतिमा

विराजमान है, जो विक्रम सं० १२५२ की प्रतिष्ठित है और लारलाई गाँव से ला कर यहाँ बैठाई गई है।

यहाँ प्रतिवर्ष भाद्रवा सुदि और कार्त्तिक सुदि १० के दो मेले भराते हैं, जिनमें पांच छः हजार यात्रा तक एकत्रित होते हैं और भाता तथा कभी कभी नवकारसियाँ भी होती हैं। इस तीर्थ का वहीवट खिमेलसंघ और वालीसंघ करता है, और यहाँ यात्रियों को किसी बात की तकलीफ नहीं पड़ती।

४८ पेरवा—

सांडेरा स्टेशन से ३ माइल पूर्व में यह गाँव वसा हुआ है। इसमें पोरवाड जैनों के १५ घर और एक छोटी दो मंजिली धर्मशाला है। गांव में एक छोटी पहाड़ी की ढालु जमीन पर प्राचीन समय का बना हुआ छोटे शिखरवाला सुन्दर जैन मन्दिर है, जिसमें मूलनायक श्रीचन्द्रप्रभु की प्रतिमा स्थापित है जो प्राचीन और दर्शनीय है।

इस मन्दिर की मरमत (सुधारा) कराते वक्त किसी एकलविहारी अज्ञानी साधु के कहने से इसकी मूलनायक प्रतिमा को उत्थापन कर दी थी। जब मंदिर का सुधार काम पूरा हुआ कि उस मूर्ति को विना मुहूर्त्त ही पीछी स्थापन कर दी। बस उसी दिन से यह गाँव तीन तेरह की नोबत में आ गया और यहाँ के जैनों

---

१ गोसाजी के वंशज गोमावत कहलाये और सांडेराव, वाली और शिवगंज आदि गांवों में गोमावतों के घर मौजूद हैं, जो अपने को गोसाजी के वंशज जाहिर करते हैं।

में नाश-भाग मच गई। यहाँ के कई घर वाली, बीसलपुर और शिवगंज जाकर वस गये हैं। विना मुहूर्त्त के जिनमूर्त्तियों के थाप-उत्थाप करने से कितनी विपत में उतरना पड़ता है? इसका यह भी एक दृष्टान्त समझना चाहिये।

४६ कोलीवाड़ा—

इस गाँव का जैसा नाम है वैसी ही यहाँ की जनता है। यहाँ ओसवाल जैनों के १२ घर हैं, जो कोलियों के समान ही हैं। इनमें न जैनत्व है और न सभ्यता। यहाँ साधु साध्वियों के लिये पूरे आहार वगैरह का प्रवन्ध करनेवाला भी कोई नहीं है। गाँव में इक उपासरा और एक छोटा मंदिर है, जिसमें जिन-प्रतिमा स्थापित हैं परन्तु यहाँ उनकी पूजा और दर्शन करने की किसी को परवा नहीं है।

५० सुमेरपुर—

यह कसवा मारवाड में सं० १९६८ में नया वसा है। यहाँ जैनों की २५ दुकाने हैं, जो मारवाड के जुदे जुदे गाँवों से व्यापार के निमित्त आकर वसी हैं। यहाँ के जैन वडे भावुक और श्रद्धालु हैं। गाँव में एक धर्मशाला और उसीके पास एक गृहमंदिर है जिसमें धातुमय एक छः अंगुल की प्रतिमा और दो पंचतीर्थियाँ हैं। जिन पर नीचे मुताविक लेख हैं—

४४-संवत् १५१२ वर्षे फागुणसुदि ८ शनौ श्रीहुंवड-ज्ञातीय ऊतरगोत्रे मं० वनसिंह भार्या धारु तयोः सुत सं०

देवराजेन स्वकुटुंबसहितेन मातृपितृश्रेयोर्थं श्रीविमलनाथबिंबं कारितं, श्रीबृहत्तपापक्षे श्रीविजयधर्मसूरिभिः प्रतिष्ठितं, श्रीरस्तु।

४५–संवत् १५५५ वर्षे चै० सु० ३ श्रामलेसरवासि लाड्वा श्रीमाली ज्ञा० श्रे० जगा भा० वकू सुत श्रे० चांपाकेन भा० श्रकू सु० अचितराजादि कुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीनमिनाथबिंबं का०, प्र० तपागच्छनायक श्रीहेमविमलसूरिभिः।

४६–संवत् १५१६ वर्षे वैशाखवदि ५ शनौ प्राग्वाटज्ञातीय ठक्कुर कमलसी भार्या कमलादे सुत ठक्कुर हरराजेन भार्या रंगाई प्रमुख कुटुंबयुतेन मातृपितृश्रेयसे स च श्रीआगमगच्छे श्रीदेवरत्नसूरीणामुपदेशेन श्रीकुंथुनाथचतुर्विंशतिपट्टः कारितः। प्रतिष्ठितं भृगुकच्छवास्तव्येन शुभं भवतु।

५१ उन्दरी—

सिरोही से पाली जानेवाली सड़क के बांये किनारे पर यह गाँव आबाद है, जो छोटा और शिवगंज से आधा माइल उत्तर में है। इसमें ओसवाल जैनों के १५ घर हैं। यहाँ एक छोटी धर्मशाला और उसीके पास एक गृहमंदिर है, जिसमें मूलनायक श्रीपार्श्वनाथजी की पाषाणमय २० अंगुल प्रमाण श्वेतवर्ण की तीन प्रतिमा स्थापित हैं, जो सं० १९५९ में फागुण वदि ५ के दिन जैनाचार्य श्रीविजयराजेन्द्रसूरिजी महाराज के हाथ से आहोर (मारवाड) में प्रतिष्ठित हुई हैं।

५२ वड़गाम—

सुमेरपुर से २ माइल दक्षिण में जवांई नदीके वांये किनारे पर यह गाँव वसा हुआ है, जो सिरोही हकुमत के नीचे है। यहाँ एक धर्मशाला, एक उपासरा, एक श्रीचन्द्रप्रभ—जैनसेवा-मंडल और ओसवाल जैनों के अन्दाजन १०० घर हैं। यहाँ के जैननवयुवक बड़े उत्साही हैं। इस गाँव में एक शिखरवाला जैनमंदिर है, जिसमें मूलनायक श्रीचंद्रप्रभु भगवान् की १ हाथ बड़ी सफेद वर्णी प्रतिमा विराजमान है, जो अर्वाचीन (नवीन) है। मंदिर की सफाई पूजा आदिका प्रबन्ध प्रशंसनीय है।

५३ शिवगंज—

यह सिरोही स्टेट में अच्छा आवाद शहर है, जो नया वसा है। यहाँ जैनों के अन्दाजन ६०० घर हैं, जो मारवाड़ देश के जुदे जुदे गाँवों से आकर वसे हुए हैं।

५४ पोमावा—

यह कोरटा (मारवाड़) जागीर का छोटा गाँव है, जो सुमेरपुर से २॥ माइल पश्चिम में है। यहाँ एक उपासरा, एक धर्मशाला और ओसवाल जैनों के अंदाजन ४० घर हैं। गाँव में एक शिखरवद्ध जिनमंदिर है, जिसमें मूलनायक श्रीऋषभ-देवजी की आठ अंगुल बड़ी सफेद वर्ण प्रतिमा विराजमान है। इसके सिवाय भी छोटी बड़ी १६ प्रतिमा और भी हैं, जो सभी विक्रमकी १८ वीं सीकी की प्रतिष्ठित हैं और उनमें कितनी

एक विकलांग भी हैं। अफसोस है कि यहाँ मंदिरखाते की २०,०००) की रकम मौजूदा होते हुए भी पूजा वगैरह का प्रबंध अच्छा नहीं है।

५५ खिंमाणदी—

एरनपुरारोड से ६ माइल पश्चिमोत्तर यह कसवा वसा हुआ है, जो छोटी त्रिकोण पहाडियों से घिरा है। यहाँ पर ओसवाल जैनों के १५० और पोरवाड़ जैनों के ४० घर हैं, जिनमें दस पांच घरों के सिवाय सभी धार्मिक लागणी से रहित और विघ्नसन्तोषी हैं। प्रायः यहाँ के जैन खाने, पीने, एस आराम करने और भंग के गुलाम रहने में मस्त हैं। यहाँ दो उपासरे, पांच धर्मशाला, एक लायब्रेरी और एक जैनपाठशाला है। पाठशाला में सांसारिक अभ्यास कराया जाता है, धार्मिक नहीं।

गाँव में एक सौधशिखरी सुन्दर जिनमंदिर है, जो अच्छा दर्शनीय और वि० सं० १८५४ के आसपास का बना हुआ है। इसमें मूलनायक श्रीमहावीरप्रभु की एक हाथ बडी सफेदवर्ण प्रतिमा स्थापित है और इसके अलावा भी १२ प्रतिमा दूसरी विराजमान हैं। ये सभी जिनप्रतिमा प्राचीन हैं और वि० सं० १८५२ में मोटी धर्मशाला की रांग खोदते जमीन से प्रगट हुई हैं। दूसरा मन्दिर गाँव से दक्षिण लगते ही है, जो शिखरबद्ध और शत्रुंजय के नाम से पहचाना जाता है। इसकी प्रतिष्ठा होना है और इसमें विराजमान होनेवाली प्रतिमाएँ इसके प्रवेशद्वार की एक कोठरी में रक्खी हुई हैं।

५६ घांकली—

यह कसबा एरनपुरारोड से ८ माइल पश्चिम में है। यहाँ पोरवाड जैनों के १२० और ओसवाल का १ घर है। यहाँ के जैन कलहप्रिय और धार्मिक भावना से रहित हैं। कोई अपरिचित जैन साधु साध्वी आवे तो उसको आहार पानी के लिये भी कोई घर बतानेवाला नहीं है। यहाँ आडम्बरी, शिथिलाचारी और एकलविहारी धूर्त्त साधु साध्वियों की प्रायः पूछ परछ है।

गाँव के बीच में एक शिखरबद्ध सुन्दर जिन मन्दिर है, जो विक्रम सं० १३६३ का बना हुआ है। इस में मूलनायक श्री मुनिसुव्रतस्वामी की एक हाथ बडी बादामी रंग की प्रतिमा विराजमान है, जो राजा कुमारपाल की भराई मानी जाती है। यह प्रतिमा हडादपोसीना से लाकर संवत् १९६४ जेठ सुदि ५ के दिन इस मन्दिर में बैठाई गई है।

५७ गुड़ाबालोतरा—

इस कसबे के जैन घर संख्या और जैनमन्दिरों के हालात इस पुस्तक के प्रथम भाग में दर्ज हैं, अतएव यहाँ उन का उल्लेख नहीं किया जाता। यहाँ जैनों में अनेक अच्छी अच्छी आसामियाँ हैं, पर उन में मुम्बई में लखाजी दोलाजी की पेढ़ी के मालिक शा० जीवाजी लखाजी अच्छे श्रीमान् साहूकार हैं, इन्हों के तरफ से एक 'श्वेताम्बर जैन पाठशाला' और एक 'दवाखाना' चालु है। दोनों संस्थाओं का कुल वार्षिक खर्चा २५००) अन्दाजन होता है। पाठशाला में धार्मिक और

व्यावहारिक दोनों किस्म का अभ्यास कराया जाता है और विद्यार्थियों को अभ्यास के योग्य सारा सामान पाठशाला से पूरा पाड़ा जाता है।

वि० सं० १९८४ में इस कसबे में हमारा चोमासा हुआ था उस समय में भी चातुर्मास संबन्धी सारा खर्चा अकेले जीवाजी सेठने ही किया था और चातुर्मास दरमियान गुरुवन्दनार्थ आये हुए आहोर, सियाणा, वागरा, जालोर, आकोली, साथू, चूडतरा, दयालपुरा, हरजी, सेदरिया, तखतगढ़, भूति, कोशिलाव, बीजापुर और शिवगंज आदि गाँव नगरों के सैंकडों भावुक श्रावक श्राविका रूप द्विविध संघ को छः छः टंक रोक कर, सेठ जीवाजीने भिन्न भिन्न प्रीतिभोजनों से उनकी भक्ति करने का लाभ लिया था।

५८ भारूंदा—

यहाँ के जैन भावुक और भक्तिशील हैं। गाँव में एक सौधशिखरी जिनमन्दिर है, जो नया बनाया गया है। इसमें मूलनायक श्री शान्तिनाथजी की १॥ हाथ बड़ी सफेदवर्ण प्रतिमा स्थापित है। इस के आसन पर लिखा हैं कि—

४७—संवत् १९५५ फा० कृ० ५ गुरौ श्री शान्तिनाथ जिनबिंबं प्र० श्री वृ० ख० श्रीजिनमुक्तिसूरिभिः। श्रीसंघ प्र० आहोरनगर करापितं, प्रतिमा भारूंदा नगरे।

५९ आलपा—

भारोली के पहाड़ से २ माइल पूर्व में और एरनपुरा रोड से

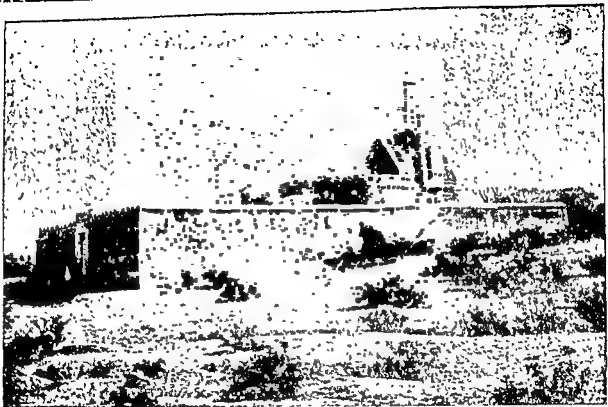
१४ माइल पश्चिम में सिरोही रियासत का यह छोटा गाँव है। यहाँ ओसवाल जैनों के ३५ घर हैं, जो अच्छे भावुक हैं। गाँव में एक सौधशिखरी जैनमन्दिर है, जो नया है। इस में मूलनायक श्रीपार्श्वनाथजी की सफेदवर्ण एक हाथ बड़ी प्रतिमा स्थापन करने के लिये छोटे जुदे उपाश्रय में विराजमान हैं।

६० कोरटाजी तीर्थ—

यह कसबा बहुत प्राचीन है, प्राचीन लेखों में इस के कणयापुर, कनकापुर, कोलापुर, कोरंटनगर, कोरंटपुर और कोरंटी ये प्राचीन नाम मिलते हैं। वि० संवत् १६०१ में जब माटुंगा निवासी इंगलिया मरेठा मारवाड को लूटने आया, तब वह यहाँ से एक कालिका की मूर्त्ति और एक तांबा-पत्र ले गया था। यहीं के निवासी प्रतापजी महाजन के चोपडों में इस क़सबे विषयक नीचे मुताबिक १४ ककार लिखे मिलते हैं—

१ कणयापुर, २ कनकधर राजा, ३ कनकावती राणी, ४ कनैयाकुंवर, ५ कनकेश्वर मूता, ६ कालिका माता, ७ कांबी-वाव, ८ केदारनाथ, ९ ककुआ तालाव, १० कलर वाव, ११ केदारिया वांभण, १२ क्रनकावली वेश्या, केशरियानाथ, १४ कृष्णमंदिर।

इन चौदह ककारों में से वर्त्तमान कोरटाजी तीर्थ में कालिकामाता, कांबीवाव, केदारनाथ, ककुआ तालाव, कलर वाव, कृष्णमंदिर और केशरियानाथ; ये सात स्थान मौजूद हैं। यहाँ



२४०० वर्ष का पुराना, पार्श्वनाथसन्तानीय–रत्नप्रभाचार्य–प्रतिष्ठित–श्री महावीर जिनमन्दिर, कोरटातीर्थ (मारवाड़)

यह भी किंवदंती प्रचलित है कि जिस समय कोरटाजी में आनंद चोकला का राज्य था। उस समय उसके महामात्य नाहडने कालिका देवल, खेतला देवल, महादेव देवल, केदारनाथ का मन्दिर और कांवीवाव; ये पांच स्थान महावीर प्रभु की सेवा में अर्पण कर दिये थे। इस समय कांवीवाव के सिवाय दूसरा कोई स्थान महावीर प्रभु के अधिकार में नहीं है।

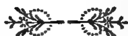
किसी समय यह शहर बडा समृद्ध था और यहाँ अच्छे अच्छे विद्वान् जैनाचार्यों के चातुर्मास होते थे। जैनग्रन्थ और पट्टावलियों से पता चलता है कि श्रीवृद्धदेवसूरिजी महाराजने कोरंटनगर में तीस हजार पांचसौ जैनेतर कुटुम्बों को प्रतिबोध देकर जैनधर्मी बनाया था। शिर्फ इसी दृष्टान्त (प्रमाण) से इसकी पूर्व जाहोजलाली का पता लग सकता है। पूर्व समय में इस समृद्धनगर के नाम पर से कोरंटक नामका गच्छ भी प्रसिद्धि में आया था, जिसमें अनेक शासनप्रभावक विद्वान् जैनाचार्य हुए हैं। इस गच्छ के उत्पादक कनकप्रभाचार्य थे, जो पार्श्वनाथ सन्तानीय रत्नप्रभाचार्य के छोटे गुरु भाई होते थे। वि० सं० १९२५ के लगभग कोरंटतपा नामक एक शाखा भी इस गच्छ में से जुदी प्रगट हुई थी, जो प्रायः विक्रम की १७ वीं सीकी तक मौजूद रही मालूम पड़ती है। अस्तु.

इस समय यह कसबा छोटे गामडे के रूप में दिखाई देता है। इस की कुल आबादी ४१८ घरों की है, जिनकी जन-संख्या १७५० है। इनमें ओसवाल जैनों के ६७ घर हैं जिनमें

१२२ पुरुष, और ११३ स्त्रियाँ हैं। जहाँ किसी समय जैनों की हजारों कुटुम्बों की संख्या कूती जाती थी, वहाँ आज इतनी अत्यल्प संख्या किसको खटके विना रहेगी। बस इसीका नाम 'समय के फेरन ते सुमेरु होत माटी को' है।

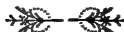
यहाँ चार जैनमन्दिर हैं, जो शिखरवद्ध हैं। उनमें श्री महावीरस्वामी का मन्दिर जो गाँव से आध कोश दक्षिण में है, सब से प्राचीन है। इस मन्दिर और इस के नायक श्री महावीर प्रभु की प्रतिष्ठा श्रीवीरनिर्वाण से ७० वर्ष वाद पार्श्वनाथसन्तानीय उएस वंश स्थापक रत्नप्रभाचार्य के कर-कमलों से हुई है। उस के वाद रत्नप्रभाचार्य प्रतिष्ठित प्रतिमा के विलोप हो जाने पर वि० सं० १७२८ में विजयप्रभसूरिजी की आज्ञा से जयविजयगणिने दूसरी प्रतिमा स्थापन की थी। वह भी उत्तमांग विकल हो जाने से वि० सं० १९५९ में जैनाचार्य श्रीविजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराजने उस को उठा कर, उसके स्थान पर प्रतिष्ठाञ्जनशलाका करके नयी महावीरप्रतिमा स्थापन की, जो इस समय विद्यमान है।

दूसरा और तीसरा मन्दिर गाँव में हैं, उनमें एक नाहडमंत्री के पुत्र ढाहलजी का, और दूसरा उस के किसी कुटुम्बी का बनवाया हुआ है। इनमें से एक में श्रीऋषभदेव और दूसरे में पार्श्वनाथ की मूर्त्तियाँ स्थापित हैं, जिनमें एक की वि० सं० १९०३, और दूसरे की सं० १९५९ में प्रतिष्ठा हुई है। "श्रीऊकेशवंशे श्रीशंखवालगोत्रे सं० आंबा पुत्र सं०





पं० जयविजयगणि-प्रतिष्ठित—
२ उत्तमाङ्गविकल श्री महावीर
स्वामी की प्रतिमा।



आनंद प्री. प्रेस—भावनगर.



श्रीमद् विजयराजेन्द्रसूरीश्वर-प्रतिष्ठित-
२ नूतन श्री महावीरप्रभु-प्रतिमा।

आनंद प्री. प्रेस—भावनगर.

कोचर हुया जिणइं कोरंटई नगरि अने संखवाली गामइ उत्तंग तोरण जैनप्रासाद कराव्या × × × जिणइं आपणइ उदारगुणइ आपणा घरनउ सर्वधन लोकने देइ कोरंटइ कर्णनामनां लीधी " ऐसा जैसलमेर के किले के शान्तिनाथ भगवान के मन्दिर के सं० १५८३ में देवतिलक उपाध्याय रचित प्रशस्ति-लेख में लिखा मिलता है। यह प्रशस्ति पीले पाषाणपर खुदी हुई है, जो २ फुट् ४ इंच लम्बी और १ फुट् ४ इंच चोड़ी है। वर्तमान में यहाँ संघवी कोचर को बनवाया कोई जैनमन्दिर दृष्टिगत नहीं होता। संभव है वह किसी कारण से भूमिशायी हो गया हो, जिससे उसका नामोनिशान भी नहीं रहा। ऐसे यहाँ अनेक जिनमन्दिर नाश हो चूके हैं, ऐसी किम्वदन्ती प्रचलित है। चौथा मन्दिर गाँव के पूर्व किनारे पर है, जो विशाल, रमणीय और नवीन है। इसके मूलनायक श्रीऋषभदेवजी हैं, जो प्राचीन अति सुन्दर हैं। इनके दोनों बगल में संभवनाथ और शान्तिनाथजी के दो कायोत्सर्गस्थ बिम्ब हैं, जो वि० सं० ११४३ के प्रतिष्ठित हैं और इनके प्रतिष्ठाकार बृहद्गच्छीय श्रीविजयसिंहसूरिजी हैं। ये तीनों प्रतिमाएँ भगवान् महावीरप्रभु के प्राचीनतम मन्दिरका कोट सुधराते हुए एक मिट्टी के धोरे के नीचे से वि० सं० १९११ में प्रगट हुई थीं। इस मंदिर में इनकी स्थापना वि० सं० १९५९ वैशाख सुदि १५ गुरुवार के दिन हुई है। इनके अलावा इसमें छोटी बड़ी ५० प्रतिमा जो कोरटाजी के आसपास की जमीन से प्राप्त हुई स्थापित हैं।

यहाँ जैनेतर स्थानों की की भी बहुतायत है, उनमें

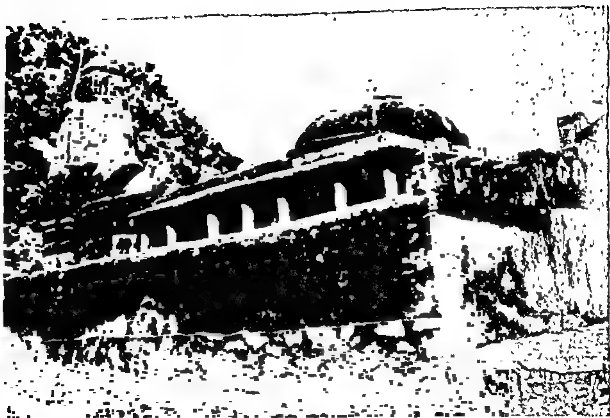
केदारनाथ, लक्ष्मीनारायण, सूर्यमंदिर, रणछोड़जी, वागेसर, खेतला और महादेव; ये स्थान प्रायः विक्रम की १३ वीं सदी से १८ वीं सदी तक के बने हुए हैं। कालिकादेवल जो गाँव से दक्षिण–पश्चिम कोण में है, राजा गंधर्वसेन का बनवाया माना जाता है। इसमें कालिका और चामुंडा की खड़े आकर की मूर्त्तियाँ स्थापित हैं।

कितनी एक जैन तीर्थमाला और जैनपट्टावलीकारोंने भारतवर्षीय पवित्र जैन तीर्थों के साथ साथ इसको भी स्मरण करके नमस्कार किया है। अतएव जैनों के इतर पवित्र तीर्थों के समान यह भी पवित्र और पूजनीय तीर्थ समझना चाहिये। ऐसे पवित्र तीर्थ की यात्रा और सुरक्षा से महान् पुन्यानुबंधी पुन्य बंध होता है। शास्त्रकार महर्षियोंने लिखा भी है कि—

पूआ करणे पुन्नं, एगगुणं सयगुणं च पडिमाए।
जिणभवणेणं सहस्सं, णंतगुणं पालणे होई ॥ १ ॥

—तीर्थों की पूजा करने से एक गुणा, तीर्थों में जिन प्रतिमा बैठाने से सौगुणा, जिनमन्दिर कराने से हजारगुणा और तीर्थ की रक्षा करने से अनन्तगुणा पुन्य होता है।

दर असल में जिस जगह सुरक्षा करने की आवश्यकता हो, वहा अपनी लक्ष्मी को खर्च करने से लाभ मिलता है। जहाँ हजारों, या लाखों की आवक है और मन्दिरखाते या तीर्थखाते के भंडारों में हजारों तथा लाखों रुपये जमा हैं, वहाँ खर्च करने, या देने से कुछ भी लाभ नहीं है। अतएव शास्त्रकारोंने



मंत्री नाहडपुत्र ढाहलमंत्रिकारित श्री ऋषभदेव-मन्दिर, कोरटातीर्थ (मारवाड)

उसी शुभ क्षेत्र की सुरक्षा करने का आदेश दिया है, जहाँ सुधारा (जीर्णोद्धार) कराने की पूर्ण आवश्यकता हो।

यहाँ प्राचीन श्रीऋषभदेव और श्रीमहावीरप्रभु के नाम से कार्त्तिकी और चैत्री पूर्णिमा के प्रतिवर्ष दो मेले भराते हैं, जिसमें जुदे जुदे गाँवों के अन्दाजन ८ से ९००० हजार तक यात्री एकत्रित होते हैं। उनको किसी वक्त भाता, और किसी वक्त प्रीतिभोजन रजा प्राप्त करने वाले जुदे जुदे गाँवों के धनकुबेर जैन कटिबद्ध हो कर देते हैं। अब तक इन मेलों को नेतरने (आमंत्रण देने) वालों की शुभ नामावली और कोरटाजी तीर्थ का प्राचीन अर्वाचीन हाल जानने के लिये अस्मल्लिखित ' श्री-कोरटाजी तीर्थ का इतिहास ' नामक पुस्तक आद्योपान्त मनन पूर्वक वांचना चाहिये।

इस तीर्थ को समुन्नत बनाने और यहाँ के जिनमन्दिरों का उद्धार कराने का सौभाग्य सब से पहले सौधर्मबृहत्तपागच्छीय जैनाचार्य गुरुदेव श्रीमद्विजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराज को ही दिया जा सकता है। क्यों कि उन्होंने इस पट्टी के जैनों के अनेक विषम संयोगों को मिटा और उनका परस्पर स्नेह संप करा के बड़े परिश्रम से इस पवित्र तीर्थ की आशातना मिटाई और इसको समुन्नत बनाया।

मारवाड देश में महाराज राजेन्द्रसूरीश्वरजीने जालोर के सोनगिर[1] तीर्थ का, दियावटपट्टी में भांडवा–महावीर तीर्थ का

---

१ इस का प्राचीन नाम ' स्वर्णगिरि ' है, वर्त्तमान में यह ' सोवनगढ ' ' जालोरगढ ' ' जालोर का किला ' और ' सोनागिर ' इन नामों

और कुणीपट्टी में कोरटाजी तीर्थ का अपने सदुपदेशों से उद्धार कराया और उनकी होती हुई महान् आशातनाओं को मिटाई, अतएव उनको हम ही क्या ? सारी दुनिया धन्यवाद की नजर से देखें इस में कोई आश्चर्य की बात नहीं है। जो आदर्श पुरुष निःस्वार्थवृत्ति से अपने कर्त्तव्य के अनुसार धार्मिक सेवा, शासन प्रभावना, और लोकोपकार करता है, वह सभ्य संसार में शोभा पाता ही है।

से पहचाना जाता है। यह पूर्व पश्चिम में लम्बा है। जालोर शहर इस की ढालू जमीन पर उत्तर के तरफ लगते ही आबाद है। इस के आसपास का प्रदेश प्राचीन काल में 'पिल्वाहि का मंडल' के नाम से ओलखा जाता था। शहर के नैऋत तरफ के छेडे से इस पर चढ़ने का रास्ता आरंभ होता है, जो अन्दाजन १॥ माइल है। रास्ते में चार दरवाजे आते हैं और चौथे दरवाजे में सरकारी पहेरेदार मनुष्य रहते हैं। इस के ऊपर गगनगामी–शिखरवाला महावीर मन्दिर, सिंहनिषद्या के आकारवाला अष्टापदावतार (चोमुख) मन्दिर और कवरविहार (पार्श्वनाथ मन्दिर) एवं तीन जिनालय विद्यमान हैं, जो दर्शकों के नेत्रों के आकर्षक हैं। यावनों की अमलदारी के समय से लेकर वि० सं० १९३२ तक इन में सरकारी तोपें आदि सामान भरा हुआ था, परन्तु प्रभुश्रीमद्विजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराजने जालोर में वि० सं० १९३३ का चातुर्मास करके अपने उपदेश बल से जापते की कारखाई करा कर, मन्दिरों में से तोपें आदि सामान निकलवा और जैन संघ के सुप्रत करा कर, इस तीर्थ का अन्तिम उद्धार कराया। जैनपत्र के वि० सं० १९८६ के 'जैन रौप्यमहोत्सव–स्मरणांक' में '**जैन तीर्थ सुवर्णगिरि**' के लेखक महाशयने इस तीर्थ का ऐतिहासिक परिचय कराते हुए अन्तिम उद्धार की प्रसिद्ध हकीकत को जान बूझ कर छोड़ दी है, इस को हार्दिक ईर्ष्या, या द्वेष ही समझना चाहिये।



मंत्रि नाहड कौटुंबिककारित श्री शान्तिनाथ-मंदिर, कोरटाजी तीर्थ (मारवाड)

कोरटाजी तीर्थ, मारवाड देश की कूणीपट्टी में है और कूणीपट्टी में जैन वसतिवाले २७ गाँव है। जब कभी संसार संबन्धी, या धर्मसबन्धी महान् कार्य होता है, तब सत्ताईस गाँवों के जैन यहीं भेले होते है और घटमंजन करके पड़े हुए झगडों का निर्णय करते हैं। इसी प्रकार कोरटाजी के नियमित मेलाओं में भी सत्ताईस गाँव के जैन प्रायः मुख्य भाग लेते हैं। अतएव यहाँ उन्हीं सत्ताईस गाँवों का संक्षिप्त हाल दिया जाता है, जो अस्थान नहीं है।

१ फतापुरा—

जोधपुर रियासत में बी. बी. एन्ड, सी. आई. रेल्वे के

---

१ इस गाँव में विक्रम सं० १९८६ (सन् १९२९) का हमारा चातुर्मास हुआ था। व्याख्यान में चारों महिना तक **श्रीउपासकदशाङ्गसूत्रसटीक,** और भावनाधिकार में **श्रीविक्रमचरित्र (पद्यबद्ध)** वांचा गया था, उन्हें सुनने के लिये इस पट्टी के भावुक अच्छी संख्या में उपस्थित होते थे। चातुर्मास दरमियान कूणीपट्टी के २७ गावों के अलावा आहोर, जालोर, गुडाबालोतरा, तखतगढ, खिमेल, कोशीलाव, राणी, आदि गाँवों के जैनसंघ भी गुरुवन्दनार्थ हाजिर हुए थे। उन्हों को तीन तीन दिन तक रोक कर फतापुरा-जैन-संघने उन की भोजनादि भक्ति करने का अच्छा दृष्टान्त-स्वरूप उत्साह दिखलाया और लाभ हांसिल किया था। बहार गाँवों के जैन संघों के तरफ से भी यहाँ अनेक नवकारसियाँ, भिन्न भिन्न पूजाएँ और प्रभावनाएँ हुई थी। यहाँ जैनों के थोडे घर होने पर भी इन्होंने जो संघ-भक्ति करने की बहादुरी दिखलाई वह इतर गाँवों के जैन-संघो के लिये अनुकरणीय है।

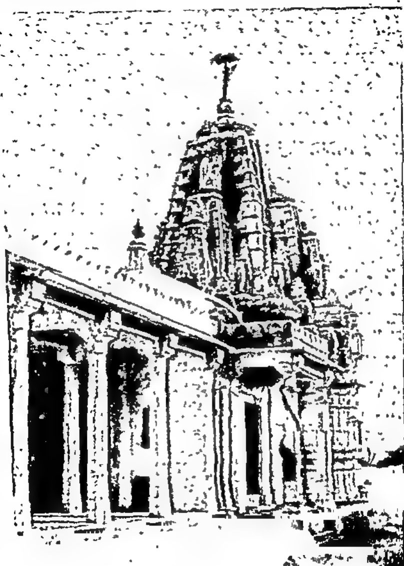
एरनपुरा स्टेशन से ७ माइल पश्चिम में जवाँई नदी के बांये तटपर यह गाँव बसा हुआ है। यह छोटा गाँव है और इसको संवत् १९०५ में राणावत अचलसिंह राजपूतने बसाया है। इसकी कुल आबादी अन्दाजन १२१ घरों की है, जिन में बीसा ओसवाल जैनों के ३८ घर हैं। उनमें पुरुष ८९ और स्त्रियाँ ६७ हैं। गाँव में एक सौधशिखरी जिनमंदिर है, जिसमें मूलनायक श्री पार्श्वनाथजी की सफेद वर्ण १ हाथ बड़ी प्रतिमा और उनके दोनों तरफ श्रीविमलनाथ और मुनिसुव्रतस्वामीजी की एक एक हाथ बड़ी प्रतिमा विराजमान हैं। मूलनायकजी के आसन पर नीचे प्रमाणे लेख है—

४८—संवत् १९४८ माघसित ५ तिथौ प्रतिष्ठा कृता भ० श्रीविजयराजेन्द्रसूरिभिः। प्राग्वाटज्ञातीयवृद्धशाखायां शा० मेघा पुत्र वना हरचंदजीदूभ्यां प्रतिष्ठा कारापिता शिवगंजनगरे श्रीसुधर्मतपगच्छे।

२ सलोदरिया—

इस छोटे गाँव में ओसवाल जैनों के १२ घर हैं। यहाँ एक गृहमन्दिर है जिसमें श्रीसुपार्श्वनाथादि दो प्रतिमा स्थापित हैं, जो नवीन और सफेद पाषाणमय पौन हाथ बडी हैं। यहाँ पहले जैनों के ३० घर थे, परन्तु वे नवीन बसे हुए फतापुरा गाँव में जाकर बस गये। फतापुरा और इस गाँव के बीच में आध माइल का फासला है, इससे ये दोनों गाँव समान ही गिने जाते हैं और हरएक काम में शामिल ही रहते हैं।

श्रीमद् विजयराजेन्द्रसूरीश्वर-प्रतिष्ठित—



नूतन श्री ऋषभदेवजिनमन्दिर ।
कोरटा तीर्थ (मारवाड)

आनंद प्री. प्रेस—भावनगर.

३ ऊथमण—

शिवगंज से सिरोही जानेवाली सड़क के बांये तरफ सिरोही स्टेट का यह गाँव है, जो पुराना है। यहाँ जैनों के २२ घर हैं, गाँव में एक शिखरबद्ध जैनमंदिर है, जो विक्रम की १३ वीं सदी के आसपास का बना हुआ है। इसके रंगमंडप के एक भींति स्तंभ पर नीचे मुताबिक लेख है—

४९–संवत् १२५१ आषाढ वदि ५ गुरौ श्रीनाणकीयगच्छे उथमणसदधिष्ठाने श्रीपार्श्वनाथचैत्ये—

धनेश्वरस्य पुत्रेण, देवधरेण धीमता।
संयुक्तेन यशोभद्र–आल्हापाल्हासहोदरैः ॥ १ ॥
यशोभद्रस्य पुत्रेण, सार्धं यशधरेण च।
पुत्रपुत्रादियुक्तेन, धर्महेतु महात्मना ॥ २ ॥
भगिनी धरमत्याख्या, भर्तृश्चैव यशोधरः।
कारितं श्रेयसे ताभ्यां, रम्येदं तुंगमंडपम् ॥ ३ ॥

इसमें श्री पार्श्वनाथजी की प्राचीन सुन्दर प्रतिमा स्थापित है। इसके अलावा एक छोटी देहरी में भी जैनाचार्य श्रीविजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी की प्रतिष्ठित दो प्रतिमा हैं, जो यहाँ सं० १९७४ में विराजमान हुई हैं।

४ धनापुरा—

यह जोधपुर रियासत का छोटा गाँव है जिसमें एक शिखरबद्ध नया मन्दिर है और उसके मूलनायक श्रीऋषभदेवजी

हैं, जिनकी प्रतिष्ठा सं० १९५५ फागुण वदि ५ के दिन आहोर में श्रीपूज जिनमूक्तिसूरिजी के हाथ से हुई है। यहाँ जैनों के अन्दाजन ३५ घर हैं।

५ थानावाली पालड़ी—

एरनपुरा छावनी से २ माइल पश्चिम में यह कसवा आवाद है, जो जोधपुर स्टेट का है। यहाँ ओसवाल-पोरवाड जैनों के ७० घर हैं। यहाँ एक छोटा शिखरवाला जिनमन्दिर और दो धर्मशाला है। यह मन्दिर राजा संप्रति का वनवाया माना जाता है। मन्दिर में मूलनायक श्रीसंभवनाथजी और उसके दोनों वगल में श्रीपार्श्वनाथजी की भव्य मूर्त्तियाँ विराजमान हैं, जो प्राचीन हैं।

६ जोयला—

यह सिरोही स्टेट का गाँव है, इसमें ओसवाल जैनों के ७० घर, और एक उपाश्रय है। यहाँ एक छोटा शिखरवाला जिनमंदिर है, जिसमें मूलनायक श्री आदिनाथजी की सुन्दर प्रतिमा विराजमान है, जो नवीन प्रतिष्ठित है।

७ चूल(ली)—

सिरोही स्टेट का यह गाँव है, इसमें ओसवाल जैनों के ४५ घर, और एक उपासरा है। गाँव में एक शिखरवाला [illegible] है जिसमें मूलनायक श्रीशान्तिनाथजी की अर्वाचीन [illegible] स्थापित है। यहाँ के जैन भावुक, और श्रद्धालु हैं। इन्हें साधु उपदेशों की पूरी आवश्यकता है।

८ अटवाड़ा—

यह सिरोही इलाके का गाँव है, इसमें ओसवाल जैनों के अन्दाजन ७० घर हैं, जो भावुक होने पर भी धर्मसंज्ञा से रहित हैं। यहाँ एक उपासरा, एक धर्मशाला और शिखरबद्ध एक जिनमन्दिर है। मन्दिरमें मूलनायक श्रीपार्श्वनाथजी की पाषाणमय सफेद वर्ण प्रतिमा विराजमान है, जो अर्वाचीन, दर्शनीय और सुन्दर है।

९ वागीण—

यह प्राचीन स्थान है, विक्रम की चौदहवीं शताब्दी के मध्यभाग के लगभग यहाँ चौहान राजा सामन्तसिंह का राज्य था। परन्तु वर्त्तमान में यह गाँव सिरोही के ताबे में है। प्राचीन काल में सैकड़ों जैन यहाँ वसते थे, इस समय यहाँ एक भी जैन घर नहीं पाया जाता। गाँव में दो सौधशिखरी जिनमन्दिर हैं, जो वडे ही रमणीय और प्राचीन शिल्पविद्या के स्मारक हैं। ये मन्दिर किस धनकुबेर जैन के बनाये हैं ? इस बात को बतानेवाला इनमें कोई लेख नहीं है। लेकिन इनकी रचना से अनुमान किया जा सकता है कि ये राजा कुमारपाल, या उसके समकालीन किसी राजवर्गी मंत्री के बनवाये होंगे ?। एकमें मूलनायक श्री ऋषभदेवजी और दूसरे में शान्तिनाथजी की प्राचीन सुन्दर प्रतिमा स्थापित हैं, जो विक्रम की १४ वीं सदी की प्रतिष्ठित हैं।

हैं, जिनकी प्रतिष्ठा सं० १९५५ फागुण वदि ५ के दिन आहोर में श्रीपूज जिनमुक्तिसूरिजी के हाथ से हुई है। यहाँ जैनों के अन्दाजन ३५ घर हैं।

५ थानावाली पालड़ी—

एरनपुरा छावनी से २ माइल पश्चिम में यह कसवा आबाद है, जो जोधपुर स्टेट का है। यहाँ ओसवाल-पोरवाड जैनों के ७० घर हैं। यहाँ एक छोटा शिखरवाला जिनमन्दिर और दो धर्मशाला है। यह मन्दिर राजा संप्रति का बनवाया माना जाता है। मन्दिर में मूलनायक श्रीसंभवनाथजी और उसके दोनों बगल में श्रीपार्श्वनाथजी की भव्य मूर्त्तियाँ विराजमान हैं, जो प्राचीन हैं।

६ जोयला—

यह सिरोही स्टेट का गाँव है, इसमें ओसवाल जैनों के ७० घर, और एक उपाश्रय है। यहाँ एक छोटा शिखरवाला जिनमंदिर है, जिसमें मूलनायक श्री आदिनाथजी की सुन्दर प्रतिमा विराजमान है, जो नवीन प्रतिष्ठित है।

७ चूल(ली)—

सिरोही स्टेट का यह गाँव है, इसमें ओसवाल जैनों के ४५ घर, और एक उपासरा है। गाँव में एक शिखरवाला जिनमन्दिर है जिसमें मूलनायक श्रीशान्तिनाथजी की अर्वाचीन प्रतिमा स्थापित है। यहाँ के जैन भावुक, और श्रद्धालु हैं। इन्हें योग्य साधु उपदेशों की पूरी आवश्यकता है।

८ अटवाड़ा—

यह सिरोही इलाके का गाँव है, इसमें ओसवाल जैनों के अन्दाजन ७० घर हैं, जो भावुक होने पर भी धर्मसंज्ञा से रहित हैं। यहाँ एक उपासरा, एक धर्मशाला और शिखरबद्ध एक जिनमन्दिर है। मन्दिरमें मूलनायक श्रीपार्श्वनाथजी की पाषाणमय सफेद वर्ण प्रतिमा विराजमान है, जो अर्वाचीन, दर्शनीय और सुन्दर है।

९ वागीण—

यह प्राचीन स्थान है, विक्रम की चौदहवीं शताब्दी के मध्यभाग के लगभग यहाँ चौहान राजा सामन्तसिंह का राज्य था। परन्तु वर्तमान में यह गाँव सिरोही के तावे में है। प्राचीन काल में सैकडों जैन यहाँ वसते थे, इस समय यहाँ एक भी जैन घर नहीं पाया जाता। गाँव में दो सौधशिखरी जिनमन्दिर हैं, जो बडे ही रमणीय और प्राचीन शिल्पविद्या के स्मारक हैं। ये मन्दिर किस धनकुबेर जैन के बनाये हैं ? इस बात को बतानेवाला इनमें कोई लेख नहीं है। लेकिन इनकी रचना से अनुमान किया जा सकता है कि ये राजा कुमारपाल, या उसके समकालीन किसी राजवर्गी मंत्री के बनवाये होंगे ? । एकमें मूलनायक श्री ऋषभदेवजी और दूसरे में शान्तिनाथजी की प्राचीन सुन्दर प्रतिमा स्थापित हैं, जो विक्रम की १४ वीं सदी की प्रतिष्ठित हैं।

१० पोषालिया—

सिरोही स्टेट में यह अच्छा आबाद कसबा है। यहाँ ओसवाल जैनों के अन्दाजन १२० घर, दो उपासरे और एक धर्मशाला है। गाँव में एक भव्य शिखरवाला अच्छा जिन-मंदिर है, जो प्राचीन है। इसमें मूलनायक श्रीपार्श्वनाथजी की सफेद वर्ण प्रतिमा और उनके दोनों बगल में श्रीशान्तिनाथ तथा श्रीशीतलनाथ की प्रतिमा विराजमान हैं, जो सर्वाङ्ग सुन्दर और अर्वाचीन (नवीन) हैं।

११ केलार—

यह छोटा गाँव है और सिरोही इलाके में है। यहाँ ओ-सवाल जैनों के अन्दाजन ३५ घर हैं, जो धर्मलागणी से बहि-ष्कृत हैं। गाँव में एक जैनमन्दिर है जो छोटे शिखरवाला है। इसमें मूलनायक श्रीनमिनाथजी की सफेदवर्ण प्रतिमा स्थापित है, जो नवीन प्रतिष्ठित है।

१२ कलापुर—

जब शिवगंज कसबा नहीं बसा था, तब यह गाँव जुदा था परन्तु इस समय शिवगंज के शामिल ही उस के मुहल्ले तरीके माना जाता है। तथापि कुणीपट्टी के जैन महाजनी हि-साब में इसकी जुदी चिट्ठी दी जाती है, इसीसे यह जुदा गाँव गिना जाता है। इसमें ओसवाल जैनों के २५ घर हैं और एक उपासरा तथा एक दो मंजिला गृहमन्दिर है। नीचे के मंजिल

में मूलनायक श्रीऋषभदेवजी और ऊपर के मंजिल में श्रीपार्श्वनाथजी हैं। शिवगंज में सब से पहले का यही मन्दिर है, इससे इसको लोग जूने मन्दिर के नाम से संबोधित करते हैं।

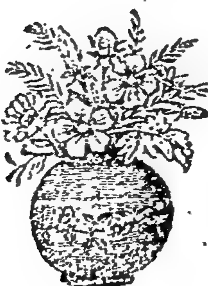
१३ नोवी, १४ लखमावा, १५ पेलालखमावा, १६ ऊंदरी, १७ मारूंदा, १८ जोगापुरा, १९ रोवाड़ा, २० कानपुरा और २१ शिवगंज इन ९ गाँवों का संक्षिप्त हाल इसी पुस्तक के प्रथम भाग में, और सुमेरपुर २२, वडगाँव. २३, तथा आलपा २४ इन तीन गाँवो का हाल इसी द्वितीय भाग में प्रथम लिखा जा चुका है। इनके अलावा पोइणा २५, मोसाल २६ और चूड़ेरी २७ इन तीन गाँवों में पहले जैनों के घर थे। परन्तु इस समय इनमें न जैनों के घर हैं और न जैनमन्दिर हैं, अतएव इनका हाल यहाँ दर्ज नहीं किया गया।

जोगापुरा से पूर्व-दक्षिण में आधा माइल 'नया जोगापुरा' है जो नया वसा है और इसको जूना जोगापुरा के कतिपय जैनोंने बसाया है। इसमें ओसवाल जैनों के १२ घर हैं, जो सनातन त्रिस्तुतिक संप्रदाय के हैं। यहाँ एक गृहमन्दिर है जिसमें धातुमय चोवीसी विराजमान है जो जूना जोगापुरा के मन्दिर से दर्शनार्थ लाकर यहाँ पधराई गई हैं।

उक्त कूणी पट्टी के गाँवों के जैनों में पारस्परिक कुसम्प-कलह और तडबंधी इतनी जोरावर है कि जिनके खर्च में यहाँ के जैन दिनों दिन सोचनीय स्थिति पर पहोंचते जा रहे हैं। ये लोग तडबंधी के इतने प्रेमी हैं कि उसके आगे देव गुरु धर्म

के प्रेम को भी तुच्छ समझते हैं। एक दूसरे को बरबाद करना, निरर्थक बातों के लिये लड मरना और समाज–धर्म का नाश करना इन्हीं बातों को ये लोग अपना खास कर्त्तव्य समझते हैं। इस पट्टी में जैन बसतिवाला ऐसा कोई गाँव नहीं जो उपरोक्त दोषों से बचा हो। देश का सर्वस्व लुटा जा रहा है, सांसारिक स्थिति प्रतिदिन सोचनीय होती जा रही है, और जैनजाति प्रति वर्ष रसातल में प्रवेश करती जा रही है। तौ भी कतिपय सड़े हुए मगजवाले विघ्नसन्तोषी जैननामधारी जैनाभास सचेत नहीं होते। यह एक प्रकार की आश्चर्यकारक घटना ही समझना चाहिये। अस्तु, परमात्मा और गुरुदेव इन्हों को सद्बुद्धि देवें।

संवत् १९८६ भाद्रव वदि ११ — मुनि यतीन्द्रविजय। मु० फतापुरा (मारवाड)



परिशिष्ट नम्बर १

इस दिग्दर्शन के द्वितीय भाग में दर्ज किये गये प्रतिमा और संस्कृत-प्रशस्ति लेखों का सरल हिन्दी अनुवाद—

१ डुआ का जैनमन्दिर—

१ श्रीगौतमस्वामी को नमस्कार हो, सं० १८०८ कार्त्तिक वदि ८ सोमवार के दिन इस मन्दिर का पाया डाला गया और यह सं० १८४१ वैशाख सुदि ७ बुधवार के दिन बनके तैयार हुआ। पं० विनयविजयजी यति, और समस्त संघने मिलकर वड-नगर निवासी उदेराम खुशालजी सोमपुरा के पास वाघेला ठाकुर रंगजी कुमरजी जेठाजी वगताजी के समय में इसको बनवाया।

१ साथण के मंदिर की मूर्त्ति पर--

२ महाराव श्रीअखयराज के शासन काल में संवत् १६२१ जेठशुदि ३ रविवार के दिन सिरोही नगर निवासी थीसा पोर-रवाड़................ने श्रीशान्तिनाथ का बिम्ब भराया और उसकी प्रतिष्ठा तपागच्छीय भ० श्रीहीरसूरिजीने की।

इस लेख के अखयराज सिरोही के महाराव जगमाल के बड़े पुत्र जो ऊडणाअग्वा, या ऊडणा अखेराज कहे जाते थे, नहीं समझना चाहिये। क्योंकि उनका परलोक वास वि० सं०

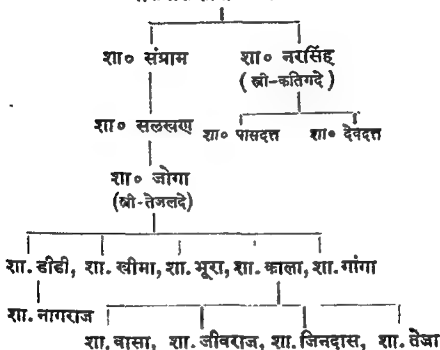
१५९० में हुआ है। अतएव यह कोई उस समय का सायण (सायसेण) का ठाकुर होगा जो महाराव कहलाता हो।

४ जीरावला का जैनमंदिर—

३ कल्याणकारी सं० १४८१ वैशाखसुदि ३ गुरुवार के दिन बृहत्तपापक्षीय भ० श्रीरत्नाकरसूरि के अनुक्रम से अभयदेवसूरिजी की गादी पर श्रीजयतिलकसूरि, उनके पाट पर मुकुट के समान श्रीरत्नसूरिजी के उपदेश से वीसलनगर के रहनेवाले पोरवाड कुलमंडन सेठ खेतसिंह के पुत्र सेठ देहल, तत्पुत्र सेठ सांगलू, सेठ खोखल की स्त्री विमलादेवी उनके पुत्र हादा के लडके संघपति सा० लाखाने ये देवकुलिकाएँ निज कल्याण और दर्शन के वास्ते बनवाई, कल्याणकारक हो, गुणचन्द्रसूरि पार्श्वनाथ प्रभु को नमस्कार करते हैं। (१)

४ सं० १४८३ प्रथम वैशाख सुदि १३ गुरुवार के दिन अंचलगच्छीय श्रीमेरुतुंगसूरिजी के पटोधर श्रीविजयकीर्त्ति-सूरीश्वरजी के उपदेश से पाटण के निवासी मीठडियागोत्रीय ओसवाल शा० संग्राम, पुत्र शा० सलखण, तत्पुत्र शा० जोगा भार्या तेजलदे उनके पुत्र शा० डीडी, शा० खीमा, शा० भूरा शा० काला, शा० गांगा, डीडी सुत शा० नागराज, कालासुत शा० वासा, शा० जीवराज, शा० जिनदास, शा० तेजा. द्वितीय भाई शा० नरसिंह भार्या कतिगदे, उनके पुत्र पासदत्त और देवदत्तने श्रीजीरावला—पार्श्वनाथ के मंदिर में तीन देवकुलिकाएँ बनवाई। श्री देवगुरु के प्रसाद से प्रतिदिन अधिक कल्याणकारी और मंगलीक हो। (२)

पासदत्त देवदत्त का वंश वृक्ष—



५ सं० १४११ ज्येष्ठ सुदि १० रविवार के दिन मूल नक्षत्र में और सिद्धि नामक योग में उपकेश (ओसवाल) ज्ञातीय विशिष्ट गोत्र में शाह सलखण पुत्र श्रीजडा की कूंख से उत्पन्न शाह केवल, तत्पुत्र देसल, भार्या सराली पुत्र शा० साहख शा० सहज, शा० समर, साहण भार्या साध्वी वलदे पुत्र धना शा०, कडुआ शा०, जीवा, की बहिन उत्तमकुलोत्पन्न साध्वी मावलदेवीने श्रीपार्श्वनाथ के मन्दिर में आत्मकल्याण के लिये देवकुलिका कराई और ये उपकेशगच्छीय श्रीककुदा-

चार्य के शिष्य श्री कक्कसूरिजी महाराज के उपदेश से बनी, शुभकारक हो। (३)

६ सं० १४९२ पोष वदि १० बुधवार के दिन श्रीचन्द्र-गच्छ में तपाभट्टारक श्री विजयशेखरसूरि, त० श्रीवयरसेणसूरि त० श्री हेमतिलकसूरि, त० श्री रत्नशेखरसूरि, त० श्रीपूर्णचंद्र-सूरि, तत्पट्टे उत्तममुकुट के समान श्री हेमहंससूरि प्रमूख परि-वार सहित, नमस्कार करते हैं और पुण्यप्रभगणि, वज्रमेरुगणि, लक्ष्मीसागर, मुनिपति प्रमुख तथा रत्नसुन्दरगणि आदि परिवार से पुन्यविलासी ठाकुरसिंह के संघ में यात्रा करने को आये (४)

१ कायद्रा के मन्दिर की देहरी—

७ भीनमाल से निकले हुए पोरवाड वणिकों में श्रेष्ठ और राजा से पूजित (सन्मान पाया हुआ) गोलच्छी नामक साहुकार था, उसके जज्जुक, नम्म और राम ये तीन पुत्र थे। उनमें से जज्जुक के पुत्र वाम ने संसार से भयभीत होकर मुक्तिप्राप्ति के लिये सं० १०९१ में विश्वमोहन नामक सौध-शिखरी जिन मन्दिर बनवाया। (१)

झाड़ोली के मन्दिर के आगे की शिलापर—

८ दोषों से रहित, सौभाग्यशाली, और विशद (शुभ) कलाओं से आढ्य (भरे हुए) श्री वर्द्धमानप्रभु पूर्णचन्द्र के समान सन्ताप को नाश करें और संसार में आनन्द का वि-स्तार करें १.

परमार कुल को आनन्दित करनेवाला, अठारह सौ देश का अधिपति, महापराक्रमी और चन्द्रावती में सूर्य के समान श्रीमान् राजा धारावर्ष हुआ। उसकी पटराणी शृंगारदेवी थी, जो नीतिज्ञ और राजा केल्हण की पुत्री थी। इस गाँव की श्रावक का अधिकारी, सकल कलाओं में चतुर, सद्गृहस्थ और धारावर्ष भूपति से मंत्रि पद को पानेवाला उसके 'नागड' नामका महामात्य था। २–४

उत्तम शस्य-संपत्ति से शोभित विक्रम सं० १२९९ में वृक्षों के समान पल्लवित धर्मबुद्धिवाले लोगों के धामभूत दुन्दुमी (झाड़ोली) नगर में छःचोकी रचित श्रीमंडप का उद्धार वीर-प्रभु के श्रावकोंने कराया, जिससे कि अपरिमित पुण्यरूप पण्य को प्राप्त किया। मन्दिर के सामने चतुष्किका द्वय को क्या कराया ? मानो ! कलि और मोहराज को जीत करके विजयपत्र द्वयी को स्थापन किया; ५–६.

चन्द्र जब तक अपनी किरणों से आकाशवल्ली को विकसित करे और सूर्य जब तक दश दिशाओं को अपने प्रकाश से उज्ज्वल करे। तब तक उत्साह पूर्वक धार्मिकजनों से किये गये कल्याणिक स्तोत्रादि उत्सव और विविध गीत वाजिंत्रों के साथ यह त्रिक जयवन्त (स्थिर) रहे. ७

इस मन्दिर में श्रीमहावीरस्वामी की पूजा के लिये और शाश्वत श्री की प्राप्ति के लिये राणी शृंगारदेवीने वाटिका समर्पण की, इसमें देखने की चतुराई में सुरगुरु के समान सायरदार

(दाणी) और शिल्पी कलाओं में निपुण सूत्रधार नीरढ साक्षीदार हुए; ८–९

आराधनीय पूज्य श्रीतिलकसूरिजीने यह प्रशस्ति रची। सं० १२९५ आसोजसुदि ७ बुधवार के दिन मन्दिर के समस्त गोठियों (श्रावकों) ने स्वकल्याण के लिये छ:चोकी, श्रीमंडप, और चोकीद्वय इन तीनों का उद्धार कराया। (१)

नाणा के मंदिर के मूलनायक—

९ संवत् १५०५ माघवदि ९ शनिवार के दिन श्रीनाणकीयगच्छ में श्री महावीर बिम्ब भराया और उस की प्रतिष्ठा (अंजनशलाका) शान्तिसूरिने की (१)

१० सं० १५०६ माघवदि १० गुरुवार के दिन वेलहरा गोत्रीय ओसवाला शा. रतन, भार्या रतनादे पुत्र दूदा, वीरम, महपा, देवा, लूणा, देवराज आदि कुटुम्ब सहित श्रीमहावीरप्रभु का परिकर कराया और उस की प्रतिष्ठा नाणकगच्छीय श्रीशान्तिसूरिजीने की. (२)

४ रातामहावीर मन्दिर—

११ ॐ सं० १२९९ चैत्रसुदि ११ शुक्रवार के दिन श्री रत्नप्रभ उपाध्याय के शिष्य श्री पूर्णचन्द्रोपाध्यायने दो ताक और शिखर कराये. (१)

१२ ॐ वीतराग के लिये नमस्कार हो। सं० १३४९ प्रथम भा० व० ९ शुक्रवार के दिन नाडोल के चौहान महा-

राजकुल श्रीसामन्तसिंह के राज्य में हाकिम श्रीकरण और महं०ललनादि पंचकुल (पंचों) ने ठहराव किया कि—शमीपाटी की मंडपिका में साहूकार हेमाकने हथुंडी गाँव के श्रीमहावीर-स्वामी की पूजा के वास्ते प्रतिवर्ष २४ द्रम्म देना। कल्याण कारक हो. 'सगरादि राजाओं से भोगी गई यह पृथ्वी जब जब जिस राजा के अधिकार में होती है, तब उस पृथ्वी का फल उस उस राजा को मिलता है। कृष्णविजयने यह शिला लेख लिखा. (२)

१३ ॐ सं० १३३५ श्रावणवदि १ सोमवार के दिन शमीपाटी की मंडपिका में झांपा, हद्रा, भांबा, कचरा, महं० सज्जन, महं० धीणा, ठ० धरणसिंह, ठ० देवसिंह वगैरह पंचोंने मिलके श्रीरातामहावीर की पूजा के निमित्त प्रतिवर्ष २४ द्रम्म देना ऐसा शमीपाटी के पंचोंने ठहराव किया सो सब को पालन करना चाहिये। 'सगरादि नरेशों से भुक्त यह वसुधा जिस जिस समय जिसके आधीन होती है तब उसका फल उसको मिलता है।' कल्याणकारक हो (३)

इस लेख में दो नामों के पीछे 'महं०' लिखा गया है। इसके निस्बत 'सिरोही के इतिहास' कारने लिखा है कि— यह 'महत्तम' के प्राकृत रूप 'महंत' का संक्षिप्त रूप होना चाहिये। 'महत्तम (महंत) एक खिताब होना अनुमान होता है, जो प्राचीन काल में मंत्रियों (प्रधानों) आदि को दिया जाता हो। राजपूताने में अब तक कइ महाजन 'मूंता' और 'महता' कहलाते हैं। जिनके पूर्वजों को यह खिताब मिला

होगा जो पीछे से वंश परंपरागत होकर वंश के नामका सूचक बन गया हो। मूंता और महंता ये दोनों 'महत्तम (महंत)' के अपभ्रंस होने चाहिये।

१४ सं० १३३६ में सेठ नाग के श्रेयोऽर्थ अरासिंहने भट्टारक पद्म में प्रतिवर्ष १२ द्रम्म दोनों मिला कर ३६ द्रम्म शमीपाटी की मंडपिका में खर्च करना ऐसा पंचोंने ठहराव किया इस को चन्द्रसूर्य की स्थिति पर्यन्त देते रहना चाहिये। शुभकारक हो. (५)

यह ठहराव ऊपर के लेख के एक वर्ष वाद ही किया गया है, अतएव ऊपर के लेख में ठहराये हुए चोवीस द्रम्म में १२ द्रम्म का वधारा एक वर्ष के वाद अधिक करके प्रतिवर्ष ३६ द्रम्म देने का ठहराव समीपाटी (सेवाडी) के पंचोंने किया ऐसा समझना चाहिये, यही इस लेख को करने का मतलव है।

५ सेवाडी के महावीर मन्दिर में—

१५ निजजन्म समय में जिसकी शान्ति जनता को परम सन्तोष करनेवाली हुई और जिसके चरण इन्द्रों से वन्दित हैं। वह शान्ति नामक जिन (तीर्थंकर) जयवन्त रहे ?

श्रीमान् अणहिल्ल नामक राजा हुआ, जो उग्र प्रतापवाला था और जिसने अपने भुजवल से पृथ्वी को जीती थी। उसका पुत्र जिन्दराज हुआ, जो चाहमानों के कुल में अच्छी नीति का धारण करनेवाला, सत्य और शौर्य का आश्रय करनेवाला था। उसका पुत्र अश्वराज हुआ, जो लक्ष्मी का आधार, राजाओं में

श्रेष्ठ और जिसने स्वप्रताप से भूतल को दबाया था। उसका पुत्र कटुकराज हुआ, जो पृथ्वी मंडल में दान सौभाग्य से प्रसिद्ध और पुण्य से आश्चर्य पैदा करनेवाला था। कटुकराजा की भुक्ति (जागीरदारी=अमलदारी) में रमणीय समीपाटी-पत्तन (सेवाडी) गाँव था। उसमें स्वर्ण की उपमावाला भगवान् श्रीमहावीरस्वामी का मन्दिर है. २—६

यशोदेव नामका सेनापति, जो पवित्र आशयवाला, और राजा तथा महाजन की सभा में मुख्य भाग लेनेवाला था। शान्तस्वभावी यशोदेव अपने बन्धुओं, सज्जनों, मित्रों और संडेरकगच्छीय सद्गुणी अनुयायियों पर उपकार करने में कटि-बद्ध रहता था। उसका पुत्र बाहड हुआ, जो विश्वकर्मा के समान राजा और विद्वज्जनों में प्रसिद्धि पाया था। उसका पुत्र थल्लक हुआ, जो राजा का प्रेमपात्र, जैनधर्म का अनुरागी और लोक प्रसिद्ध था। थल्लक दया, दाक्षिण्य, गांभीर्य, बुद्धि, और परमात्म ध्यान गुणवाला था और उसको कटुकराज भूपतिने सुन्दर दान दिया था. ७—११

प्रतिवर्ष माघ महिने की शिवरात्रि के दिन ८ द्रम्म कटु-कराज प्रसन्नता पूर्वक थल्लक को इस इच्छा से देता था कि—इन ८ द्रम्म से यशोदेवकारित खत्तक में विराजमान शान्तिनाथ की पूजा कराई जाय और यह दान यावचन्द्रदिवाकरौ पर्यन्त चलता रहे. १२—१३

थल्लक के पितामह (यशोदेव) ने शमीपाटी के चैत्य में लोगों के मन को हरनेवाला शान्तिनाथ का विम्ब कराया। 'जो राजा नीति से पृथ्वी का पालन करता है, उसे धर्म होता है और जो अनीति से पृथ्वी का भोग करता है वह हजारों ब्रह्महत्या के पाप से लेपित होता है १४–१५. (?)

१६ ॐ संवत् १२१३ चैत्रवदि ८ सोमवार के दिन नाडोल में दंडनायक वंइंजा और महं० जशदेव आदि पंचकुल के समक्ष, वलाधिप चांडदेव तथा जसणागने लिख दिया कि–सेवाडी गाँव के महाजन महणा के पुत्र जिणढाकने श्रीमहावीर–मन्दिर की भमती में स्थापन किये श्रीपार्श्वनाथ की पूजा के वास्ते शमीपाटी की मंडपिका में धर्म से सोगन पूर्वक प्रति मास एक, इसी तरह वार्षिक रु० १२ देते रहूंगा। इसमें साक्षिदार पो० पाल्हा, गां० मालाविणि, कुमारपाल, राजजोयण, आंबण, हरिचन्द्र, मध्यक, कोहल आदि बने। 'सगरादि भूपों से भोगी गई यह भूमी जब जब जिसके अधिकार में होती है, तब तब उसका फल उसको मिलता है।' इसलिये इस को अभी, या कालान्तर में कोई राजा, या वलाधिप लोपेगा वह सजा के योग्य जानना चाहिये। (२)

१७ ॐ संवत् ११६७ चैत्रसुदि १ के दिन महाराजाधिराज अश्वराज और युवराज कटुकराज के समय में शमीपाटी के मन्दिर की भमती में श्रीधर्मनाथ की पूजा के वास्ते महासाहणीय–वपूअवि का पोतरा और उत्तिमराज के पुत्र उत्पलराकने

मांगट, आम्बल, वि० सलखण, जोगरा आदि कुटुम्ब सहित पद्राडा, मेद्रंचा, छेछड़िया, और मदडी गाँव में प्रति अरहट एक जवाहरक दिया। इसको जो कोई लोपेगा वह गो, स्त्री, ब्रह्महत्या के पाप से आत्मा को लिप्त करेगा और जो पालन करेंगे वे अस्मदीय धर्म के भागीदार होंगे ऐसा मान कर इसका पालन करना चाहिये। सगरादि भूपतियों से भुक्त पृथ्वी जब जिसके अधिकार में रहती है, तब उसका फल उसको मिलता है। (३)

१८ ॐ वि० सं० १२५१ कार्त्तिक सुदि १ रविवार के दिन यहाँ के रहनेवाले लोकोंने श्रीफल, ध्वजा, खासटी का मूल्य अपने गुरु श्रीशालिभद्राचार्य की मूर्त्ति की पूजा के निमित्त सुमतिसूरिजी को दिया। उसमें से बलाधिप के पाटक में पूजा के लिये ५ खर्चना चाहिये। (४)

१९ संवत् ११९८ आसोज सुदि १३ रविवार के दिन भगवान् अरिष्टनेमि की पूर्वदिशा में कोठरी के आगे भींत और किवार किसी को नहीं कराना ऐसा सब गोठियोंने मिलके ठह-राव किया, इसको पं० अभयदेवने लिखा। (५)

८ राणकपुरजी तीर्थ का त्रैलोक्यदीपक मन्दिर—

२० युगादीश्वर श्रीचतुर्मुखजिन को नमस्कार हो। संवत् १४९६ में श्रीमेदपाट (मेवाड़ देश) के राजाधिराज—

१ श्रीबप्प	१२ शक्तिकुमार	२६ कुमारसिंह
२ श्रीगुहिल	१३ शुचिवर्म्मन्	२७ मथनसिंह
३ भोज	१४ कीर्त्तिवर्म्मन्	२८ पद्मसिंह
४ शील	१५ योगराज	२९ जैत्रसिंह
५ कालभोज	१६ वरट	३० तेजस्विसिंह
६ भर्तृभट	१७ वंशपाल	३१ समरसिंह
७ सिंह	१८ वैरसिंह	३२ श्रीभुवनसिंह- बप्प का वंशज अला-वदीन और कितुक चौहानको जीतनेवाला
८ महायक	१९ वीरसिंह	
९ श्रीखुम्माण— पुत्र और स्त्री सहित स्वर्ण से तौल कराने वाला	२० श्रीअरिसिंह	
	२१ चोडसिंह	
	२२ विक्रमसिंह	३३ श्रीजयसिंह
	२३ रणसिंह	३४ लक्ष्मसिंह- मालवपति गोगा देव को जीतने वाला।
१० अल्लट	२४ खेमसिंह	
११ नरवाहन	२५ सामंतसिंह	

३५ पुत्र श्री अजयसिंह, ३६ भ्रातृ श्री अरिसिंह, ३७ श्री हम्मीर, ३८ श्री खेतसिंह, ३९ राजाश्रीलक्ष, ४० सुवर्ण-तुलादि दान पुण्य, परोपकारादि गुणरूप कल्पवृक्षों को आश्रय देनेवाले नन्दनवन के समान राजा श्रीमोकल, ४१ उसके कुल कानन में सिंह के समान राणा श्रीकुम्भकर्ण हुआ।

राणा कुंभकर्णने सारंगपुर, नागपुर, गागरण, नराणक, अजयमेरु, मंडोर, मंडलकर, बूंदी, खाटु, चाटसू, जाना और

दूसरे अनेक मजबूत किलों को लीला मात्र से जीत कर, अपना पराक्रम दिखलाया था। यह सिंह के समान निज भुजवल से उन्नत वना था और इसने गरुड के समान सर्प सदृश म्लेच्छ-राजाओं का नाश करके अनेक शुभ लक्षणवाले हाथीयों का संग्रह किया था। अनेक अभिमानी और शौर्यशाली राजाओं की मस्तकावली इसके चरण कमलों को वन्दन करती थी। यह राजाओं की विपक्षता को अपने हस्त—दंड से तोडने में बडा समर्थ और राज्यश्री—लक्ष्मीदेवी के साथ गोविंद के समान अ-स्खलित लीला—विलास करने वाला था। इसका प्रभाव—तेज दुर्नीति रूप झाड़ी को जलाने में अग्नि का काम देता था, उसके फैलने से पशुओं के टोलों के समान शत्रु राजा भग जाते थे। गुजरात और देहली के बादशाहोंने इसको राज्य छत्र और 'हिन्दु—सुलतान' का इलकाब दिया था। यह सुवर्णसत्र का आगार, षट्दर्शनियों का आधार और चतुरंग राज्यलक्ष्मी रूप नदी का सागर था। यह कीर्त्ति, धर्म, प्रजा—पालन और सत्त्वादि गुणों से श्रीराम, युधिष्ठिर आदि राजाओं का अनुकरण करने वाला था।

इसी सार्वभौम श्रीकुंभकर्ण राणा के विजयमान राज्य में पोरवाडज्ञाती में मुकुट के समान संघपति मांगण का पुत्र सं० कुरपाल, भार्या कामलदे का पुत्र सं० धरणाक जो राणा कुंभ कर्ण का प्रीतिपात्र, चुस्त जैनधर्मी, और शरीर पर विनय, वि-वेक, धैर्य, औदार्य, शुभकर्म, निर्मल—शील आदि अद्भुत गुण-रूप अलंकारों को धारण करने वाला था। महम्मद सुलतान

का फरमान प्राप्त करने वाले साधु गणराज संघपति के साथ जिसने अनेक देवालयों से शोभित शत्रुंजयादि महा तीर्थों की यात्रा की थी, और अजारी, पिंडवाड़ा, सालेर आदि गाँवो में नवीन जिनमन्दिर वनवाये थे, जीर्णमन्दिरों का उद्धार करवाया था, और पदस्थापना करवाई थी। तथा दुकाल पीडित लोगों के लिये अन्नत्तेत्र खोले थे और जैनसंघ का महान् सत्कार किया था। इस प्रकार अनेक सद्‌गुण रूपी वहुमूल्य वस्तुओं से भरा हुआ धरणाक का जीवन रूप वाहन संसार-समुद्र को तिरने के लिये शक्तिमान वना था।

धरणाकने अपनी स्त्री धारलदेवी उसके पुत्र सं० जाजा, सं० जावड; तथा अपने वडे भाई रत्ना, उसकी स्त्री रत्नादे, और उसके पुत्र लाखा, गजा, सोना, सालिग आदि कुटुंब के साथ राणा कुंभकर्ण के नाम से निवेशित श्रीराणकपुर में कुंभकर्ण के आदेश से त्रैलोक्यदीपक नामका श्रीयुगादीश्वर (ऋषभदेव) का चोमुख मन्दिर वनवाया और उसकी प्रतिष्ठा वृहत्तपागच्छीय श्रीजगच्चन्द्रसूरि-देवेन्द्रसूरिसन्ताने श्रीदेवसुन्दरसूरि के पाटपर सूर्य के समान सुविहितपुरन्दर गच्छाधिराज श्रीसोमसुन्दरसूरिने की। यह चतुर्मुख देवालय सूत्रधार देपाकने वनाया, यह चन्द्र-सूर्य की स्थिति पर्यन्त कायम रहे, शुभ कारक हो। (१)

२१ संवत् १६५१ वैशाख सुदि १३ के दिन अकवर बादशाह से मिले हुए 'जगद्‌गुरु' विरुद को धारण करनेवाले तपागच्छाधिपति भट्टारक श्री ६ श्रीहीरविजयसूरिजी के उपदेश

से राणकपुर के 'धरणविहार' नामक चतुर्मुख देवालय में अहमदाबाद के निकटवर्त्ती उसमापुर के रहनेवाले पोरवाड शा० रायमल की स्त्री वरजु तथा सुरूपदे, उसके पुत्र शा० खेता और शा० नायकने भावरथादि कुटुम्ब सहित अपने कल्याण के लिये पूर्वदिशा के दरवाजे में मेघनाद नामका मंडप कराया और उसको सूत्रधार समल, मांडप, शिवदत्तने बनाया। (२)

२२ संवत् १६७४, फाल्गुन सुदि ५ गुरुवार के दिन तपागच्छीय जगद्गुरु भ० श्री श्री ६ श्रीहीरविजयसूरिजी के उपदेश से अहमदावाद के पास उसमापुर के रहनेवाले सुश्रावक शा० खेता और नायकने बडे पुत्र यशवंत आदि कुटुम्ब के सहित धरणविहार नामक चोमुख मन्दिर में पूर्वदरवाजे का सम्भार काम के वास्ते ४८ सोना महोर दी. (३)

२३ संवत् १४९८ फा० व० ५ के दिन धरणाकने भतीजे सं० लाखादि कुटुम्ब सहित श्रीयुगादिदेव का बिम्ब कराया उसकी प्रतिष्ठा तपागच्छीय सोमसुन्दरसूरिजीने की. (४)

२४ संवत् १६७९ वैशाख सुदि ११ बुधवार के दिन मेवाड के राजाधिराज राणा कर्णसिंह के राज्य में तपागच्छीय भ० श्रीविजयदेवसूरिजी के उपदेश से पं० वेला, पं० जयविजय पं० तेजहंसने प्रतिष्ठा की और उनके श्रावक पोरवाड शा० वरधा, तत्पुत्र हेमराज नवजीने श्रीयुगादीश्वर का बिम्ब कराया, कल्याण कारक हो. (५)

२५ संवत् १५३५ फा० सु० ५ के दिन ओशवंश में

मंडोरा गोत्रीय शा० लाषा पुत्र शा० वीरपाल, भार्या नेमलदे पुत्र शा० गयणाकने अपनी स्त्री भेतादे प्रमुख के सहित माता विमलादे के पुण्यार्थ चतुर्मुख देवालय में देहरी कराई. (६)

२६ संवत् १५६६ वै० सु० ६ शनिवार के दिन स्तंभ-तीर्थनिवासी ओशवंशीय शा० गणपति, भा० गंगादे पुत्र शा० हरराज भा० धरमाई पुत्र शा रत्नसीने अपनी स्त्री कपूरां प्रमुख कुटुम्ब के सहित राणकपुर—मंडन श्रीचतुर्मुख देवालय में देव-कुलिका कराई, उसकी प्रतिष्ठा उसवालगच्छीय श्रीदेवनाथसूरि-जीने की. (७)

२७ संवत् १६५६ वै० सु० ६ शनिवार के दिन स्तंभ-तीर्थ वासी ओसवाल आसदेव, स्त्री सपाउं पुत्र सांजा, स्त्रीराजी पुत्र शा० जोगराजने अपने भाई भगा, और निज स्त्रियाँ सोवती तथा संखा, और सोहना, भाकर, प्रमुख कुटुम्ब सहित स्वहितार्थ राणपुरमंडन श्री चोमुख मन्दिर में देवकुलिका कराई और उसकी प्रतिष्ठा श्रीउदयसागरसूरिजीने की. (८)

२ घाणेराव के दो जैन मन्दिरों में—

२८—संवत् १८७२, शाके १७३७ फाल्गुन सुदि २ शनिवार के दिन कुंथुनाथ के मन्दिर की प्रतिष्ठा हुई। तपा-गच्छीय भ० जिनेन्द्रसूरिजी के उपदेश से राठोर वंशीय मेडता-राज ठा० दुर्ज्जनसिंहजी पुत्र पट्टप्रभाकर ठा० अजितसिंहजी के राज्य में घाणपुर निवासी वीसा ओसवाल हथुंडियागोत्रीय शा० लुंबा, स्त्री वच्छु, पुत्र शा० नाथा स्त्री जसु के पुत्र अमी-

चंदने यह मन्दिर बनवाया, और उसकी स्त्री धनादे के सपूतपुत्र तिलोकचंदने जिनभक्ति (ओच्छव) कराई । पं० शिवसगरगणिने यह लेख लिखा और सोमपुरा गजधर चतुरभुज दमाने मन्दिर बनाया । कल्याणकारी शुभ मंगलमालिका हो. (१)

२९ कल्याणकारी विक्रम संवत् १८१४ शाके १६८० ज्येष्ठ सुदि ३ गुरुवार के दिन मेवाड के राजा महाराणा श्री राजसिंहजी के राज्य में उसके सामंत राठौरवंशीय महाराजा ठा० वीरमदेवजी के मंत्री घाणेराव निवासी वीसा ओसवाल लोढागोत्रीय शा० वीजा स्त्री जेमादे पुत्र शा० रूपा, स्त्रीरूपादे के पुत्र शा० विहारीदासने महापुण्य प्राप्त करने के वास्ते श्री ऋषभदेवादि अनेक विम्ब सहित श्रीगोडीपार्श्वनाथ का मन्दिर कराया, महोत्सव से तपागच्छीय भ० विजयदयासूरि शिष्य भ० विजयधर्मसूरिजीने उसकी प्रतिष्ठा की । यह प्रशस्ति पं० मनोहरसागरने लिखी, शोभा के लिये हो. (२)

७ नाडलाई मन्दिरों के लेख—

३० संवत् १६८६ वै० सु० ८ शनिवार पुष्ययोग के दिन महाराणा जगतसिंहजी के राज्य में जहांगिरी महातपा विरुद के धारक भ० श्रीविजयदेवसूरीश्वरजी के उपदेश से नाडलाई के समस्त संघने जेखलपर्वत के ऊपर राजा संप्रति के बनवाये हुए जीर्ण मन्दिर का पुनरुद्धार कराया और अपने श्रेय के लिये उसमें श्रीआदिनाथ का विम्ब स्थापन किया और

उसकी प्रतिष्ठा तपागच्छीय भ० जगद्गुरु श्रीहीरविजयसूरीश्वरजी के पट्टप्रभाकर भ० श्रीविजयसेनसूरीश्वर पट्टालंकार भ० श्रीविजयदेवसूरिजीने स्वपदप्रतिष्ठाचार्य श्रीविजयसिंहसूरि प्रमुख परिवार के साथ की. (१)

३१ ॐ सर्वज्ञ के लिये नमस्कार हो। संवत् ११९५ आसोज वदि १५ मंगलवार के दिन नाडलाई के महाराजाधिराज रायपालदेव के शासन काल में जादवाजी की टेकरी के श्रीनेमनाथजी की धूप, दीप, नैवेद्य, पुष्प आदि पूजा के वास्ते गुहिलवंशीय राउत उधरण के पुत्र ठाकुर राजदेवने स्वपुण्यार्थ नाडलाई से जाने आने वाले बलदों के भार के कर की आय का वीसवां भाग भेट किया सो चन्द्र सूर्य की स्थिति पर्यन्त कायम रहे। इस भेट का लोप हमारे वंश को, या दूसरे किसी को नहीं करना चाहिये ' अपने हाथों, या दूसरों के जरिये जो कोई लोप करावेगा उसके मैं कर—संलग्न हूं, अतएव मेरे शासन (भेट) का किसीको लोप न करना चाहिये। लेखक पांसिल, सेलानी पूर्वक दसकत राउ० राजदेव, साक्षीदार जोतिष्क दादुराम पुत्र गूगी, तेली मांगुला, देपसा, रापसा, मंगलिक हो. (२)

३२ कल्याणकारी विक्रम सं० १४४३ कार्त्तिक वदि १४ शुक्रवार के दिन नाडुलाई नगर के चाहमानवंशीय महाराजाधिराज श्रीवणवीरदेव के राज्य में विशद बृहद्गच्छ रूप

आकाश में सूर्य के समान श्रीमानतुंगसूरिजी की वंशपरंपरा में हुए श्रीधर्मचन्द्रसूरिजी की पाट रूप लक्ष्मी को श्रवण मात्र से लेने वाले श्रीविनयचन्द्रसूरिजीने गुण रूप मणिरत्न के आकर और यदुवंशविभूषण श्रीनेमनाथ के इस मन्दिर का जगत् के विपाद को हरनेवाला जीर्णोद्धार कराया। चन्द्र सूर्य की स्थिति पर्यन्त वर्तमान (कायम) रहो. (२)

३३ श्रीयशोभद्रसूरिजी के चरण कमलों को नमस्कार हो। संवत् १५९७ वैशाख सुदि ६ शुक्रवार के दिन पुनर्वसु-नक्षत्र के साथ चन्द्रयोग में श्रीसंडेरकगच्छ में कलिकाल गौतमावतार, भविकजनों के मनरूप कमल को प्रफुल्लित करने के लिये सूर्य के समान, समस्त लब्धियों के विश्राम, युगप्रधान, अनेक वादिराजवृन्दों को जीतनेवाले, अनेक राजाओं से वंदित, मुकुटकोटि से पादस्पर्श करनेवाले, सूर्य के सदृश तेजस्वी, चौसठ इन्द्रों से संस्तुत, संडेरकगच्छीय विद्वानों के मुकुट, सुभद्रा की कूंखरूप सरोवर के राजहंस, यशोवीर के उत्तम कुलरूप आकाश के सूर्य और समस्त आचार्य समूह में चूडामणि सदृश भ० प्रभु श्रीयशोभद्रसूरिजी हुए।

उनके पाट पर चाहमान वंश के भूषण, समस्त शुद्ध विद्यारूप समुद्र का पार पाने वाले, बदरादेवी के प्रसाद से आचार्य पद पाने वाले, और अपने सुनिर्मल कुल को बोध देने से परम यशोवाद (प्रशंसा) को पाने वाले भट्टारक

श्रीशालिसूरि हुए। तत्पट्टे श्रीसुमतिसूरि, त० श्री शान्तिसूरि, त० ईश्वरसूरि इस प्रकार यथाक्रम से गुणरूप मणिरत्नों के रोहणाचल सदृश आचार्यों के वंश में पुनः शालिसूरि हुए, उनके पाट पर सुमतिसूरि और उनके पाट पर अलंकारहार भ० श्रीशान्तिसूरीश्वरजी के विजयी राज्य में—

इसके बाद मेवाडदेश में महाराणा शिलादित्य के वंश में गुहिदत्त, राउल, श्रीबप्पाक, श्रीखुमाण आदि बडे राजा हुए। उनके वंश में राणाहमीर, खेतसिंह, लखमासिंह और श्रीमोकल हुए। उसके वंश में चन्द्र के समान उद्योत करनेवाला, प्रताप से सूर्यावतार, और अपने अतुलनीय महाबल से समुद्र पर्यन्त पृथ्वी मंडल को दबानेवाला श्री कुंभकर्ण राणा हुआ, उसके पुत्र श्रीरायमल्ल राणा के विजयमान महाराज्य में—

उसके पुत्र महाकुमार श्रीपृथ्वीराज की आज्ञा से उकेश (ओसवाल) वंश में रायभंडारी गोत्रीय राउल श्रीलाखण पुत्र मंत्रीदूद के वंश में हुए मंत्री मयूर पुत्र साहल मंत्री, उसके पुत्र मं० सीहा और समदाने मं० कर्मसी, धारा, लाखादि बंधु

---

१ ईश्वरसूरिने स्वरचित 'सुमित्रचरित्र' की अन्त्य प्रशस्ति में लिखा है कि—

एवं चतुर्नामभिरेव भूयो, भूयो बभूवुर्बहुशोऽत्र गच्छे ।
सूरीश्वराः सूरिगुणैरुपेताः, पवित्रचारित्रधरा महान्तः ॥

—इस गच्छ के अन्दर वारंवार इस प्रकार सूरिगुणयुक्त और पवित्र चारित्रधारी क्रमशः चार नामवाले आचार्य होने लगे ।

कुटुम्ब के साथ, नाडलाई नगर में सं० ९६४ में मंत्रशक्ति से श्रीयशोभद्रसूरि द्वारा लाये हुए और तदनन्तर मंत्री सायर के कराये देवकुलिकादि उद्धार से 'सायर-वसति' नाम पाये हुए मन्दिर में श्रीआदिनाथ की स्थापना कराई। उसकी प्रतिष्ठा शांतिसूरि शिष्य ईश्वरसूरिने की, जिनका कि दूसरा नाम देवसुन्दर था। यह लघुप्रशस्ति आचार्य ईश्वरसूरिने लिखी और सलावट सोमाने खोदी-उकेरी. (४)

३४ संवत् १६७४ माघ वदि १ गुरुवार के दिन पुष्य-योग में भंडारी गोत्रवाले ओसवाल सायर पुत्र साहल, तत्पुत्र समदा, लखा, धर्मा, कर्मा, सीहा; समदा पुत्र पहराज, पदमा, नाना तत्पुत्र भीमा। भं० पहराज पुत्र कला, भं० नगा पुत्र काला, भं० पदमा पुत्र जयचंद, भं० भीमा पुत्र राजसी, भं० काला पुत्र शंकर, उसवाल, भं० जेचंद पुत्र जसचंद, जादव; भं० शिवा पुत्र पूंजा, जेठा आदिने मिलकर श्रीआदिनाथ का बिम्ब कराया और उसकी प्रतिष्ठा तपागच्छीय भ० श्री हीरविजयसूरि शिष्य विजयसेनसूरि के पट्टालंकार भ० श्रीविजयदेवसूरिजीने की. (५)

संडेरकगच्छीय श्रीयशोभद्रसूरि के लाये हुए आदिनाथ-मन्दिर का और उसमें विराजमान आदिनाथ प्रतिमा का दो मर्त्तवा उद्धार मंत्री सायर के वंशवालोंने ही कराया है। अतएव उपरोक्त नम्बर ३३-३४ के दो लेखों के अनुसार सायर का वंशवृक्ष इस प्रकार बनता है—

- राउल मंत्रीलाखण
  - मंत्री दूदा
    - मं. मयूर
    - मं. सायर
      - मं.साह(दू)ल
        - मं. सीहा (शिवा)
          - भं. पूजा
          - भं. जेठा
        - मं. समदा
          - भं. पहराज
            - भं. कला
          - भं. पदमा
            - भं. जेचंद
              - भं. जसचंद
              - जादव
          - भं. नगा
            - भं. भीमा
              - भं. राजसी
            - भं. काला
              - शंकर
              - उसवाल
        - लखा
        - धर्मा
        - कर्मा
        - धारा

३५ संवत् ११८७ फा० सु० १४ गुरुवार के दिन श्री संडेरकगच्छीय देशीचैत्य में महावीरप्रभु की पूजा के वास्ते मोरकरा गाँव के तेलियों की घाणी में से निकलते तेल का चौथा भाग $\frac{1}{4}$ चाहुमान (चौहाण) पापयरा पुत्र विंशराकने भेट दिया। साक्षीदार रा० वीछा, रा० सामंत, सा० खीम, रा० नागसिंह, ऊतिष, रा० बीधा, रा० मोसरी लखमण। ' सगरादि राजाओं से भुक्त भूमि जब जिसकी होती है, तब उसका फल उसको मिलता है. (६)

३६ संवत् १२०० कार्त्तिक वदि ७ रविवार के रोज महाराजा श्रीरायपालदेव के राज्य में नाडलाई के ठाकुर रा०

राजदेव के सामने नाडलाई के समस्त महाजनोंने मिल कर ठहराव किया कि—श्रीमहावीर (वर्तमान कालीन आदिनाथ) मन्दिर में घी, तेल वगैरह चोपड वस्तुओं पर प्रति पायला ", धान्य, लवन वगैरह पर प्रतिद्रोण मा० ३ कपास, लोह, गुड, खांड, हींग, मंजीठ पर प्रति घडी मु० ३ और सोपारी, हरडें, प्रमुख गणिम वस्तुओं पर प्रतिसहस्र पुगु १ धर्मार्थ देना। हजार गोहत्या और सौ ब्रह्महत्या से जो पाप लगता है, इस ठहराव का तोडनेवाला उस पाप से लिप्त होगा. (७)

३ नाडोल का पद्मप्रभ मन्दिर—

३७ संवत् १६८६ प्रथम आषाढ वदि ५ शुक्रवार के दिन महाराजाधिराज गजसिंह के राज्य का कार्यभार चलानेवाले मंत्री जेसा के पुत्र जयमलने यह पद्मप्रभु का बिम्ब कराया और तपागच्छाधिराज श्रीहीरविजयसूरि के पट्टालंकार भ० श्रीविजयसेनसूरिजी के शिष्य जहांगीर बादशाह के दिये हुए महातपा विरुद के धारण करनेवाले भ० श्रीविजयदेवसूरिजीने जालोर नगर में अपने पटधर आचार्य विजयसिंहसूरि आदि परिवार से प्रतिष्ठा की और नाडोल नगर के रायविहार नामक मन्दिर में राणा श्रीजगत्सिंहजी के शासन समय यह पद्मप्रभु भगवान् का बिम्ब स्थापन किया. (१)

३८ संवत् १२१५ वैशाख सुदि १० सोमवार के दिन वीसाडास्थान के महावीरप्रभु के मन्दिर में देवणाग, नागड और जोगड के पुत्र जसचन्द्र, देल्हाज, भरण, जमदेव, जस-

धवल, और जसपालने निज पुत्र समुदाय सहित श्रीशान्तिनाथ का विम्ब कराया और बृहद्गच्छीय श्रीमुनिचन्द्रसूरि शिष्य देवसूरि तथा पाणिनीय पं० पद्मचन्द्रगणिने उसकी प्रतिष्ठा की। जब तक आकाश में चन्द्र सूर्य हैं और जब तक जैनधर्म विद्यमान है तब तक श्रीवीरभवन में ये जिनयुगल वर्त्तमान (कायम) रहे. (२)

३९ संवत् १८९३ माघ सुदि १० बुधवार के दिन राजनगर में वीसा ओसवाल शा० निहालचंद पुत्र शा. खुशालचंद, उसका पुत्र केशरीसिंह, उसके पुत्र शा० हरिसिंहने अपने कल्याण के लिये श्रीअनन्तनाथ भगवान् का विम्ब कराया. उसकी प्रतिष्ठा तपासागरगच्छीय भ० शान्तिसागरसूरिजीने की, यह लेख मुनि सोमविजयने लिखा. (३)

४ खुडाला का जिन मन्दिर—

४० संवत् १२४३ माघ वदि ५ सोमवार के दिन पोरवाड रामदेव के पुत्र शूराशाहने लेख लिखा. (१)

४१ संवत् १५२३ वैशाख सुदि ११ बुधवार के दिन पोरवाड शा० गांगदेव की स्त्री कपूराइ के पुत्र शा० वछराज श्रावकने अपनी स्त्री पांची और पुत्र वसुपाल के सहित निज श्रेय के लिये अंचलगच्छीय जयकेशरीसूरि के उपदेश से श्रीविमलनाथ का विम्ब कराया, उसको संघने स्थापन किया. (२)

४२ संवत् १५४३ ज्येष्ठ सुदि ११ शनिवार के दिन वीशलनगर के निवासी पोरवाड शेठ धर्मा की भार्या जानी के

पुत्र जीवा और जोगाने अपनी स्त्री गोमती के पुत्र हर्षा, हीरा, व्य० कमला पुत्र काढा, वागोजी के श्रेयोर्थ पुत्री राजू, जाना, धरणा तथा समस्तसंघ कुटुम्ब सहित श्रीपार्श्वनाथ का बिम्ब कराया, उसकी प्रतिष्ठा श्रीज्ञानसागरसूरि शिष्य श्री उदयसागरसूरिने की. (३)

४३ संवत् १९५५ फाल्गुन वदि ५ गुरुवार के रोज आहोर नगर में श्रीआदीश्वर के बिम्ब की प्रतिष्ठा कराई, श्रीराजेन्द्रसूरिजीने प्रतिष्ठाञ्जनशलाका की. (४)

सुमेरपुर का जिनमंदिर—

४४ संवत् १५१२ फागुण सुदि ८ शनिवार के दिन हुंबडज्ञातीय ऊतरगोत्रवाले मंत्री वनसिंह की भार्या धारू के पुत्र संघवी देवराजने सकुटुम्ब माता पिता के कल्याण के लिये विमलनाथस्वामी का बिम्ब कराया, उसकी प्रतिष्ठा वृद्धतपापक्षीय विजयधर्मसूरिने की. (१)

४५ संवत् १५५९ वैशाख सुदि ३ के दिन आमलेसर के रहनेवाले लाडुवा श्रीमालीज्ञातीय सेठ जगा की स्त्री यकू के पुत्र सेठ चांपाकने अपनी स्त्री अकू और उसके पुत्र आंचित, राजा आदि कुटुम्ब सहित अपने हित के लिये श्रीनमिनाथ का बिम्ब कराया, उसकी प्रतिष्ठा तपागच्छनायक श्रीहेमविमलसूरिजीने की. (२)

४६ संवत् १५१९ वैशाख वदि ५ शनिवार के रोज भृगुकच्छ (भरोच) निवासी पोरवाड ठकुर करमसी की स्त्री

कमलादे के पुत्र ठ० हरराजने अपनी स्त्री रंगाइ प्रमुख कुटुम्ब के सहित माता पिता के हित के लिये आगमगच्छीय श्रीदेवरत्नसूरिजी के उपदेश से श्रीकुन्थुनाथ की चोवीसी का पट्ट कराया, और प्रतिष्ठा कराई, शुभकारी हो. (३)

१ भारूंदा का जिनमन्दिर—

४७ संवत् १९५५ फा० व० ५ गुरुवार के दिन श्रीशान्तिनाथ का बिम्ब भारूंदा गाँव के संघने कराया और उसकी अंजनशलाका आहोर नगर में वृहत्खरतरगच्छीय श्रीपूज जिनमुक्तिसूरिजीने की. (१)

१ फतापुरा का जिनमन्दिर—

४८ संवत् १९४८ माघ सुदि ९ के दिन शिवगंज नगर में वीसा पोरवाड शा० मेघा पुत्र वना हरचंदने सौधर्मबृहत्तपागच्छीय भट्टारक श्रीविजयराजेन्द्रसूरिजी के कर कमलों से प्रतिष्ठा (अंजनशलाका) कराई. (१)

१ ऊथमण का जिनमन्दिर—

४९ संवत् १२५१ आषाढ वदि ५ गुरुवार के दिन उथमण सुस्थान (नगर) में नाणकीयगच्छ के पार्श्वनाथ मन्दिर में धनेश्वर के पुत्र यशोभद्र और उसकी वहिन धरमतीने अपने भाई देवधर, आल्हा, पाल्हा, और यशोभद्रपुत्र यशाधर के सहित धर्म के निमित्त सुन्दर रंग मंडप बनवाया. (१)

मु० फतापुरा (मारवाड़)
सं० १९८६ भाद्रव सुदि ७
श्रीराजेन्द्रसूरि सं० २३

व्याख्यानवाचस्पत्युपाध्याय—
मुनि यतीन्द्रविजय।

परिशिष्ट नम्बर २

श्री यशोभद्रसूरिजी महाराज—

सण्डेरकगच्छीय पांचसौ (५००) मुनिवरों के अधिपति और छ वर्ष तक षट्विगय के त्यागी श्री ईश्वरसूरिजी महाराज ने एकदा समय मुंडारा गाँव में बदरीदेवी को आराधन करके अपने पास में उतारी थी। वह जब जाने लगी तब उसको धर्म की सोगन देकर कहा कि—हमारे गच्छ में आचार्यपद के योग्य कोई व्यक्ति नहीं देख पड़ता, इसलिये बता कि आचार्य पद योग्य कौन है? देवीने कहा—पलासी गाँव में पुण्यसार (यशोवीर) नामक एक व्यवहारी रहता है, उसकी गुणसुन्दरी (सुभद्रा) नामकी धर्मपत्नी है। उसकी कूंख से एक सुधर्मा नामक पुत्र हुआ है, जो रूप, लावण्य और उत्तम गुण लक्षणों से शोभित है।

पांच वर्ष की अवस्था होने पर सुधर्मा निशाल में बैठाया गया। वहाँ अनेक वणिक और ब्राह्मण बालकों के साथ सुधर्मा का भी अभ्यास शुरू हुआ। एक दिन किसी ब्राह्मण के बालक से मांग कर खडिया लिया, पर वह लेते ही सुधर्मा के हाथ से पड़कर फूट गया। ब्राह्मण बालकने जब सुधर्मा से खडिया

---

१ मारवाड में सादड़ी से १॥ कोश और फालना स्टेशन से ५ कोश दूर है। २ यह सिरोही स्टेट के पिंडवाड़ा स्टेशन से आध कोश है, जो इस समय में पलाई के नाम से पहचाना जाता है।

मांगा, तब उसने नये नये खडिये लाकर देना शुरू किये परन्तु ब्राह्मण बालकने उनको लेने से इनकार किया। और कहा कि–या तो मैं वही खड़िया लूंगा, नहीं तो तेरे शिर की खोपडी लूंगा, तभी मुझे ब्राह्मण पुत्र समझना। इसके उत्तर में सुधर्माने भी कहा कि–'मुओ न मारुं तुम्ह प्राणिऊ, नहींतरि नहीं सूधऊ बांणिऊ' बस यही बालक आपके पाट का अधिकारी होगा, अतः संघ सहित वहाँ जाकर उसे ले आना चाहिये। ऐसा कह कर देवी अदृष्ट हो गई।

ईश्वरसूरिजी संघ सहित पलासी आए, और पूण्यसार के घर गये, उसकी धर्मपत्नी गुणसुन्दरीने आचार्य का सन्मान पूर्वक अच्छा सत्कार किया। आचार्यने फरमाया–गुणसुन्दरी! देवी के वचन से मैं तेरे घर आया हूं, अतएव पुत्र रूप भिक्षा देकर हमको आनन्दित कर। गुणसुन्दरीने कहा–आपको जरा लज्जा नहीं आती, जो मेरे पास पुत्र–भिक्षा मांगते हो। इस समय संघने कहा कि–गुणसुन्दरि! जो तुं बालक को बहोरा देगा तो इससे तेरी महिमा खूब होगी और बालक भी समस्त जगज्जन्तुओं का आधारभूत होगा। संसार में लक्ष्मीदान से भी पुत्रदान बढ़ कर है। तेरे गुण सुमेरु के समान है और तेरा पुत्र संसार में सूर्य के समान तेजस्वी बनेगा। इसलिये मोहमाया को छोड कर, पुत्र–भिक्षा से अलभ्य लाभ ले लेना चाहिये।

सुधर्माने बीचही में कहा–मातः! आज सद्गुरुरूपी उत्तम जहाज मिला है, इसलिये मैं दीक्षा लेकर आत्म साधन करुंगा।

माताने कहा—तुं अभी छोटा है, दीक्षा पालना महाकठिन काम है। निरन्तर प्रतिघर भिक्षा मांगनी पड़ेगा, पांच आचारों का पालन, अप्रतिबद्ध विहार, नाना परिसह सहन और गुरु आज्ञा पालन करना पड़ेगा। इत्यादि अनेक तरह से समझाने पर भी सुधर्माने यही कहा कि संसार में दीक्षा के समान दूसरा कोई राज्य नहीं है और न कोई निर्भय स्थान है। इसलिये किसी प्रकार की आनाकानी किये विना मुझे दीक्षा दिला ही देना चाहिये।

आखिर माता पिता की अनुमति प्राप्त करके सुधर्माने लघु-वय में ही दीक्षा ली, सभी संघ बहुत प्रसन्न हुआ और गुरु-जीने सुधर्मा को अनेक विद्या पढ़ा कर विद्या का भण्डार बनाया। इसके बाद सुधर्माने मुडारा गाँव में बदरीदेवी की आराधना की, देवी सुधर्मा के शरीर में अवतरी और उसने सुधर्मा के ललाट में तिलक, तथा कंठ में कुसुममाला डाली और सुधर्मा का यशोभद्रसूरि नाम प्रसिद्ध करके विमानद्वारा विदा हुई।

यशोभद्रसूरिजीने विगयों को विषयोत्पादक समझ कर उनका त्याग किया और हमेशां आठ[1] कवल ही आहार करने का अभिग्रह धारण किया। इस कठिन तपस्या से यशोभद्रसूरि को अनेक अतिशय प्राप्त हुए। सूरिजी मुडारा से विहार करके पाली पधारे, यहाँ आप जिस दिशा तरफ नित्य स्थंडिल जाते

---

[1] उपदेशरत्नाकर और संस्कृतचरित्र में आठ कवल का आंबिल करने का अभिग्रह लिया लिखा है।

थे उस दिशा में एक सूर्यका मन्दिर था। आचार्य की तपस्या आदि देख कर सूर्य हमेशां सूरिगुण का जाप किया करता था। एक दिन आपकी परीक्षा के लिये स्थंडिल जाने के रास्ते में सूर्यने मणि—माणिक की माला डाल दी, आप उसकी अवगणना करके चले गये। इस निस्पृहता से आपके ऊपर सूर्यकी और भी अधिक श्रद्धा हुई और उसने विचारा कि यदि ये आचार्य मेरे मन्दिर में पगला कर दें तो मैं पाप रहित हो जाऊं। एक दिन सूर्यने आचार्य के आगमन समय वर्षा शुरू की, जिससे आचार्य समीपवर्त्ती सूर्य—मन्दिर में आये। मन्दिर में प्रवेश करते ही मन्दिर के द्वार—कपाट वन्द हो गये। सूर्यने कहा कि—आप कुछ भी वर मांगे, आचार्यने कहा—यद्यपि हमको किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं है, तथापि यही मांगता हूं कि सभी वस्तुओं का अवलोकन करानेवाला अंजन दो। सूर्यने दूसरे ही दिन सूवर्णाक्षर की एक पुस्तक और अंजनकुम्पिका; ये दो चीजें यशोभद्रसुरिजी को समर्पण कीं।

अंजनकुम्पिका के अंजन को नेत्रों में आँजने से यशोभद्र सूरि को त्रिलोकी पदार्थ वास्तविक स्थिति में देख पड़ने लगे। वाद में सूर्यदत्त पुस्तक के सभी मन्त्रों को यथावद् विधि से सिद्ध किये। मेरे पिछे जो शिष्य होंगे वे इन विद्याओं को पचा नहीं सकेंगे ऐसा विचार के उस पुस्तक को वापिस सूर्य-मन्दिर में रख आने को वलभद्रमुनि से कहा गया। वलभद्रने उसमें से तीन पत्रे निकाल के छिपा दिये और पुस्तक को सूर्य मन्दिर में रख दी। सूर्यने छिपाये हुए तीन पत्रे भी उठा लिये,

बलभद्रने उन पत्रों को न देख कर रोना शुरु किया, सूर्यने दया लाकर वे तीनों पत्रे वापिस बलभद्र को दे दिये ।

यशोभद्रसूरिजी को आठ महासिद्धि उत्पन्न हुई । सूरिजी हमेशां गगनगामिनी विद्या के प्रभाव से चम्पा, अष्टापद, सम्मेतशिखर, शत्रुञ्जय, और गिरनार इन पांच तीर्थों की यात्रा करके आहार लेते थे । पाली से विहार करके यशोभद्रसूरिजी संडेरके गाँव में पधारे । यहाँ के संघने प्रतिष्ठा महोत्सव प्रारंभ किया, जिसमें अधिक मनुष्यों के आ जाने से जीमन में घी खूट गया । यह बात जब आचार्य के कानों तक गई, तब उन्होंने विद्याबल से पाली के धनराजशाह के घर से घी मंगा कर घृतपात्रों को भर दिये । प्रतिष्ठा कार्य पूर्ण होने बाद प्रतिष्ठा करानेवाला गृहस्थ आचार्य की आज्ञा से पाली जाकर धनराज को घी के दाम देने लगा । उसने कहा—मैंने घी दिया ही नहीं है तो दाम किसके लूं । दाम देनेवाले गृहस्थने कहा—अरे भाई ! पहले घर में घी के बासन तपासो, यदि उनमें घी न हो तो दाम ले लेना चाहिये । धनराजने घर में जाकर सभी घृतपात्रों को देखे तो घृतशून्य पाये । शीघ्र ही बाहर आकर कहा कि—मुझे दाम से काम नहीं, आपने प्रतिष्ठा में जो घी खर्चा है वह मेरे तरफ से ही समझ लेना चाहिये । ये धन मेरे यहाँ नहीं रह सकता इत्यादि वाक्य कह कर धनराजशाहने दाम देने के लिये आनेवाले गृहस्थ को पीछा सांडेराव रवाने किया ।

---

१ एरनपुरास्टेशन से ५ कोश उत्तर में यह गाँव है और इसीके नाम से 'संडेरकगच्छ' नाम पड़ा है ।

यशोभद्रसूरि चितोड पधारे, इसी समय मेवाड के आघाट नगर में अल्लट राजा के मन्त्रीने राजा की आज्ञा से एक भव्य जिनालय बनवाया था, उस में भगवान् श्रीपार्श्वनाथ की प्रतिष्ठा भारी समारोह से आचार्य यशोभद्रसूरि को चितोड से बुला कर करवाई। यहाँ एक दिन आचार्य श्रीसंघ के साथ चैत्य-परिपाटी के लिये निकले, सामने किसी अवधूतने हाथ में चित्र, नाक को दीपशिखा, मुख को विकराल बना करके निज हाथ को ऊँचा किया। उसके आशय को ध्यान में लेकर आचार्यने अपने हाथों कों परस्पर घिस और काले करके अवधूत को दिखलाये जिससे वह आचार्य के चरणों में वन्दन करके चला गया।

अत्याग्रह से लोगों के पूछने पर आचार्य महाराजने फरमाया कि इस अवधूतने मुझे इसारे से जनाया कि उज्जयिनी के महाकाल देवल में दीपकज्योति से चंद्रवा जल रहा है। इसके उत्तर में मैंने हाथ घिस के उसको जनाया कि उस चन्द्रवे को शान्त कर दिया। अवधूत देव प्रभाव से इस बात को जान कर प्रसन्न हुआ। राजाने इसकी खातरी के लिये अपने मनुष्य को उज्जयनी भेजा। वह अमुक दिन और अमुक समय में चन्द्रवा सिलगा और ठंडा हुआ इत्यादि निगाह करके वापिस आया और राजा को सब हाल निवेदन किया। राजा इस चमत्कार जनक बात से प्रसन्न हो कर आचार्यश्री का अनुरागी बना।

एकदा समय आहड, करहेट (करेडा), कविलाण, संभरी (शाकम्भरी—सांभर) और भेसर; इन पांच गाँवो के संघने

मिलकर अपने अपने गाँव में प्रतिष्ठा कराने को यशोभद्रसूरि से विनती की। आचार्यने पाचों गाँवों की प्रतिष्ठा का एक ही मुहूर्त्त कायम करके कहा कि—अपने अपने गाँव में प्रतिष्ठा योग्य सामग्री तैयार कर रक्खो, मैं निश्चित मुहूर्त्त पर सभी जगह एक ही लग्न में प्रतिष्ठा कराने को आऊंगा। संघने जाकर अपने अपने गाँव में सब तैयारी की, और यशोभद्रसूरिजीने पांच रूप कर के पाचों गावों में जाकर एक ही लग्न में प्रतिष्ठा कर दी। इन पाचों गाँव में दूसरे गावों के बजाय कविलाण गाँव में अधिक जनसंख्या भेली हुई थी, इससे कुओं का जल खूट गया, भारे प्यास के सब लोग त्राहि त्राहि करने लगे। संघने यह हाल आचार्य को विदित किया। आचार्यने कुए में चन्दन अपने नख से डाला जिससे उसी समय अमृत समान मधुर जल से वह कुआ किनारे तक भरा गया। यह कुआ 'नखसूत' इस नाम से प्रसिद्ध हुआ। उस वक्त इस प्रकार के ६५ कुए जलमय किये गए थे।

एक वख्त आहड निवासी भद्र व्यवहारीने शत्रुंजय और गिरनार की यात्रा के लिये संघ निकाला। इसमें यशोभद्रसूरिजी भी साथ थे, संघ क्रमशः चलता हुआ अणहिल्लपुर (पाटण) के नजीक पहुंचा। इस समय पाटण का राजा मूलराज[1] जो

---

१ इसका समय कीर्त्ति कौमुदी के लेखानुसार वि० सं० ९९८ से १०५३, और गौरीशंकर हीराचंद ओझा संपादित टॉडराजस्थान के मुताबिक वि० सं० १०१७ से १०५२ (इस्वीसन् ९६१ से ९९६) तक समझना चाहिये।

यशोभद्रसूरि के दर्शन का पिपासु था, संघके सामने आया। आचार्य को वन्दना करके राजाने कहा कि–स्वामिन्! मेरी ऐसी मानसिक अभिलाषा है कि आप मेरे नगर में ही स्थिर-वास करें। आचार्यने कहा एक स्थान में रहना यह हमारा आचार नहीं है, ऐसा करने से गच्छ मर्यादा का लोप होता है। राजाने कहा–यदि ऐसा ही है तो आप कृपा करके अपनी चरणरज से मेरे आवास भवन को पवित्र करें। राजा का मान रखने के लिये आचार्य उसके भवन में गये कि पीछे से राजाने भवन के दरवाजे बन्द कर दिये। अन्दर से आचार्यने कहा–राजन्! बलात्कार से हमको कोई नहीं रख सकता, बस ऐसा कहते ही आचार्य विद्यावल से लघुरूप करके कपाट के छिद्र से बाहर निकल के आकाशमार्ग से संघ में जा मिले और किसी आदमी के द्वारा राजा को धर्मलाभ कहला भेजा।

'यह तो भक्ति नहीं किन्तु अवज्ञा हुई' ऐसा विचार के राजा मन्त्री सहित आचार्य के पास आया और पैरो में पड कर कृत अपराध की मांफी मांग कर बोला कि स्वामिन्! मेरा आयु कितना बाकी है?, आचार्यने फरमाया कि अब तेरा आयुष्य छः महिना बाकी है। अतएव अब केवल धर्मरूप औषध का ही सेवन करना चाहिये। राजा तथास्तु कहके वापिस लोट गया।

संघ शत्रुंजय के तरफ रवाने हुआ, परन्तु रास्ते में कहीं जल न मिलने से सारा संघ आकुल व्याकुल होने लगा। भद्र-

संघपतिने आचार्य से कहा–महाराज ! जल के विना सभी संघ दुःखी हो रहा है, अब क्या करना चाहिये। आचार्यने उसी समय विद्या वल से समीपवर्त्ती एक शुष्क सरोवर को जल से भर दिया। आनन्द पूर्वक सभी संघ उसका जल पान और जल से बर्त्तन भर करके आगे चला, परन्तु संघपति तालाव के किनारे पर अपना जोडा भूल गया, इससे वह एक आदमी को साथ लेकर वापिस तालाव पर आया, लेकिन तालाव में बिन्दुमात्र भी जल नहीं देख पडा; अतः संघपतिने उसका नाम 'साधुसरोवर' पाडा।

संघ क्रमशः शत्रुंजय की यात्रा करके गिरनार तरफ रवाने हुआ और मुकाम दर मुकाम करते हुए गिरनार पहुंचा। गिरनार पर संघ का पडाव आठ दिन तक रहा। संघपतिने श्रीनेमिनाथ भगवान् के गले में मणि माणिक से जडे हुए स्वर्णाभूषण पहिराये। जब संघ नीचे उतरने लगा, तब संघपतिने प्रभु के गले में आभूषण नहीं देखे। पूजारी, गंध्रप और संघ के मनुष्यों से पूछने पर भी जब कुछ पता नहीं लगा, तब यह हकीगत आचार्य महाराज को विदित की। आचार्यने कहा–भगवान् के आभूषणों को एक चोर चुरा कर आघाटपुर चला गया है, उसको जूँआ रमते हुए आज से बीसवें दिन तुम्हारे आदमी पकडेंगे, उसने सारे आभूषण एक बावडी में पत्थर के नीचे रक्खे हैं। संघपतिने उसी वक्त अपने आदमियों को आघट भेजे, उन्होंने जूआ खेलते हुए चोर को पकड के और

प्रभु के आभूषण लाके वापिस संघपति को सोंपे। संघपतिने गहने भगवान् को पहिराये और आचार्य के कहने से चोर को छोड दिया। बाद में संघ गिरनार से विदा होकर आहट आया और आचार्य को नमस्कार करके अपने अपने घर को गया।

आचार्य यशोभद्रसूरिजीने आहट से विहार कर क्रमशः आकर नाडलाई में संघ के आग्रह से चोमासा किया। एक दिन आचार्य व्याख्यान दे रहे थे और श्रोताओं से सारी सभा ठसो ठस भरी हुई थी। इसी अवसर में वही ब्राह्मणपुत्र जिसने बालकपन में खड़िया के एवज में सुधर्मा की खोपड़ी लेने की प्रतिज्ञा की थी, अनेक विद्या सीख कर योगी के वेश से कटि पर कन्था, शिरपर जटा और लंगोट धारण करके व्याख्याना-लय में आया और अपनी जटा से दो सांप निकाल के सभा में छोडे। आचार्यने उसी समय अपनी मुखवस्त्रिका के दो टुकडे कर, और उनको विद्याबल से नकुल बना कर उन सांपों पर छोड दिये, जिससे वे सांपों को पकड के ले भगे। योगी इस चमत्कार को देख कर भाग गया।

एक दिन योगीने किसी जैनसाध्वी को पागल बना दी, जिससे वह गली गली और जंगल में भटकने लगी। लोगोंने यह बात आचार्य महाराज को कही। आचार्यने एक दर्भ का पूतला देकर श्रावकों से कहा कि आप लोग इस को लेकर योगी के पास जाओ और सन्मान पूर्वक योगी को

समझाओ, यदि न माने तो इस पूतले की हाथ की एक अंगुली तोड़ देना। श्रावकोंने योगी के पास जाकर उसको खूब समझाया, परन्तु न मानने पर आचार्य की आज्ञानुसार पूतले की एक हस्ताङ्गुली तोड दी, जिससे योगी की हस्ताङ्गुली टूट गई। श्रावकोंने कहा जितनी टाइम इसके टूटने में लगी है उतनी ही टाइम तुम्हारा शिर तोड़ने में लगेगी। इससे घबरा कर उस योगीने १०८ निवाण के जल से स्नान करके साध्वी को अच्छी कर दी।

एक दिन योगीने मन्त्रित चूर्ण डाल कर जिन प्रतिमा को विमुख बना दी। यह खबर आचार्य के कानों तक पहुंची, इतने में योगी भी घूसता हुआ आचार्य के पास आया। आचार्यने उसको सन्मान पूर्वक अभिमन्त्रित पासवाले पाट पर बैठाया और उसके साथ सप्रेम तीन घंटे तक वार्तालाप किया। अन्त में गोचरी की टाइम पर आचार्य उठे, योगी भी उठा, परन्तु पाट उसके साथ ही लटकने लगा और उसकी चोट से योगी को अत्यन्त कष्ट होने लगा। योगी मन ही मन समझ गया कि यह सब बदला जिनप्रतिमा को विमुख करने का ही है। योगीने निरुपाय होकर आचार्य से मांफी मागी और बावनाचन्दन तथा केशर मिश्रित जल के १०८ घडा से अभिषेक कराके जिनप्रतिमा को सम्मुख बना दी। आचार्यने दया लाकर उस कष्ट से योगी को मुक्त किया।

योगीने सोचा कि मंत्रबल से तो मैं यशोभद्र को किसी

तरह नहीं जीत सकता। अतएव राजसभा में शास्त्रार्थ करके इसको परास्त करना चाहिये। ऐसा विचार करके योगी राजसभा में गया और राजा को समझा कर शास्त्रार्थ के लिये टाइम कायम करा, यशोभद्रसूरि को आह्वान कराया। यशोभद्रसूरिजीने राजसभा में विद्वानों के समक्ष चोराशी वाद करके योगी का मद उतारा और उसे मूर्ख बना के छोड़ा। फिर भी योगीने कहा कि मैं वल्लभी से शिवमन्दिर और यशोभद्र जिनमन्दिर उडाके लावें, उनमें से जो पहले गाँव (नाडलाई) में मन्दिर को ला रक्खेगा वह जीत गया माना जायगा। शर्त्त यह है कि तीसरी वार सुबह कूकडा बोले, उसका शब्द सुनते ही रुक जाना चाहिये, जो आगे पीछे रुकेगा उसीमें हार जीत का निर्णय होगा। आचार्यने यह बात भी मंजूर की और दोनोंने जाकर वल्लभीपुर से अभीष्ट मन्दिर मंत्रशक्ति से उडाये दोनों आकाशमार्ग से चलते हुए नाडलाई के समीप आये। योगीने सोचा कि यशोभद्र मन्दिर लेकर गाँव में चला जायगा, अतएव अब कपट का आश्रय लेना चाहिये। ऐसा विचार के योगी कूकडे का रूप करके गाँव में जाकर सूर्योदय पहले तीन मर्त्तबा बोला। आचार्यने कूकडे का शब्द सुनते ही मन्दिर को गाँव के बहार रख दिया और योगीने शर्त्तका भंग कर के आगे बढ़ कर मन्दिर को गाँव में रखा। राजसभाने तहकीकात करके कहा योगीने शर्त्त का भंग किया, इससे योगी हारा और यशोभद्रसूरिजी जीते। ये दोनों मन्दिर नाडलाई में अब तक विद्यमान

हैं। यशोभद्रसूरि के लाये मन्दिर की एक प्रशस्ति से मालूम होता है कि ये मन्दिर सं० ९६४ में लाये गये हैं।

योगी इस शक्ति में भी नहीं जीत सका, तब उसने छल-भेद से जीतने का उपाय हाथ में लिया। एक दिन जिनमन्दिर में श्रावक चलवाकुला की सामग्री इकट्ठी कर रहे थे, चलवाकुला उछालने की कुछ देरी होने से आचार्य उपाश्रय में सोए हुए थे। इस अरसे में अवसर पाकर वह ब्राह्मणयोगी हाथ में दण्ड और खप्पर लेकर गोरख गोरख बोलता हुवा आया और मेरे को भिक्षा दो ऐसा कहने लगा। परन्तु किसीने उसके सामने नहीं देखा, किसीने कहा—यह तो मन्दिर है यहाँ भिक्षा नहीं मिल सकती, घरों में जा तो भी वह वहाँ से नहीं हटा, बहुत देर तक खडा ही रहा। कतिपय श्रावकोंने दया लाकर उसको केरी अखरोट आदि फल देना शुरू किये, परन्तु उनको न लेते हुए योगीने कहा—मुझे अधूरी भिक्षा नहीं चाहिये, पूरी दो। श्रावकोंने उसको पूरी भिक्षा दे कर विदा किया।

आचार्य सो कर उठे तब यह हकीगत श्रावकोंने उनको निवेदन की। तब आचार्यने अपना आयुष्य छः महीना अव-शिष्ट जान कर संघ को कहा कि—'आज से छट्ठे महीने में मेरा निर्वाण (स्वर्गवास) हो जायगा, मेरे मस्तक में मणि है, उस-

---

१ सोहमकुलपट्टावलीरास में लिखा है कि—

संवत (१०१०) दसदहोत्तरे, किया चोरासी वाद।
वल्लभीपुरथी आणीयो, ऋषभदेव प्रासाद ॥११॥

को लेने के लिये योगी अनेक प्रयत्न करेगा। मेरा अग्निसंस्कार किया जायगा उस समय में यह योगी वर्षा वर्षावेगा और वायु का उपद्रव खडा करेगा। इसलिये आप लोग मेरा अग्निसंस्कार करते समय प्रथम मस्तक से मणि अलग करके फिर मेरे शरीर का अग्निसंस्कार करना।'

इस प्रकार एकान्त में संघ को सचेत किया और उपद्रवों के निवारण का उपाय भी बताया। किसी किसी प्रति में ऐसा भी लिखा पाया जाता है कि—' योगी जब शूर का रूप कर के मेरी मणि लेने को चिता पर झपट मारे तब आप लोग उस को मेरे शामिल ही जला डालना, लेकिन खोपडी नहीं लेने देना।

समय पूर्ण होने पर संवत् १०२९ में आचार्य श्रीयशोभद्रसूरिजी का पूर्ण समाधि के साथ निर्वाण हुआ। सारा संघ गुरुशरीर को वैकुण्ठी में बैठा कर जुलुश के साथ श्मशान भूमि पर ले गया। एक उत्तम चन्दन की चिता रच कर उस पर गुरुशरीर को सुलाया गया। उस विप्रयोगिने कृत उपद्रवों से हताश होकर आचार्य—चिता के ऊपर एक छत्र बना के उसमें आचार्यशिरोपरी झरता हुआ दुग्धपात्र बनाया और स्वयं उसके ऊपर आकाश में स्थिर रहा। श्रावकोने चिता को लगाने के पहले ही आचार्य महाराज की सूचना और आज्ञानुसार आचार्य के मस्तक को फोड दिया। उस का शब्द सुनते ही आकाश—स्थित विप्रयोगी का हृदय फूट कर टुकडा टुकडा हो

गया और वह तुरन्त ही मरण के शरण चला गया। आचार्यने बाल्यावस्था में 'मरा हुआ भी मैं तेरे को न मारुं तो सच्चा वणिक् मत समझना' यह प्रतिज्ञा की थी, वह अक्षरशः सत्य हुई।

अग्निसंस्कार के स्थान पर संघ के तरफ से आचार्य यशोभद्रसूरि का, और जैनेतरों के तरफ से विप्रयोगी का पास पास ही स्तूप बनाया गया था, जो आज भी नाडलाई के श्मशान में मौजूद है। कहा जाता है कि प्रतिवर्ष श्रीयशोभद्रसूरिजी का स्तूप यवाष्टमांश बढता है और विप्रयोगी का स्तूप प्रतिवर्ष उतना ही कम होता है। गोडवाड में और विशेष करके नाडलाई में ये जसिया और केशिया के नाम से प्रसिद्ध हैं। जसिया से यशोभद्रसूरि और केशिया से विप्रयोगी जिस का दूसरा नाम तपेसरयोगी भी था, समझना चाहिये।

इस प्रकार आचार्य श्रीयशोभद्रसूरिजी महाराज भी प्रभावशाली जैनाचार्यों में से एक हैं। आप का जन्म सं० ९९७ में पलासी गाँव में हुआ। आपके पिता का नाम पुण्यसार (यशोवीर) और माता का नाम गुणसुन्दरी (सुभद्रा) था। मारवाड के मुडारा गाँव में और उपदेशरत्नाकर के लेखानुसार पाली गाँव में आपको बदरीदेवीने सं० ९६८ में सूरिपद दिया। मुडारा और सांडेराव में आपने सं० ९७९ में प्रतिष्ठा की, और इसी साल में आहड, करहेट, कविलाण,

सांभरी, और भेसर इन पांच गाँवों के जिनालय की एक ही लग्न में पांच रूप करके प्रतिष्टा की थी। सं० १०१० में आपने राजसभा समक्ष चौराशी वाद किये और जैनशासन की महान् उन्नति की। इसी वर्ष में आप वल्लभीपुर से श्रीऋषभदेव प्रासाद उड़ा कर नाडलाइ में लाये, ईश्वरसूरिरचित प्रशस्तिलेख में मन्दिर उडा लाने का समय १६४ लिखा है। लावण्य समय रचितरास के अनुसार सं० १०२९, और संवत सोलहसौ तिरासी के बने संस्कृतचरित्र के लेखानुसार सं० १०३९ में नाडलाई गाँव में आपका निर्वाण (स्वर्गवास) हुआ। यशोभद्रसूरिजी के जीवन में ऐसी अनेक आश्चर्य जनक घटनाएँ हुई है वे आपके संस्कृतचरित्र और यशोभद्रसूरिरास से जान लेना चाहिये।

फतापुरा (मारवाड)
सं. १९८६ आ. सु. १५

व्याख्यानवाचस्पत्युपाध्याय
मुनियतीन्द्रविजय।



व्याख्यानवाचस्पत्युपाध्याय–मुनिराज श्री यतीन्द्रविजयजी महाराज.



संघवी जीवाजी आदि भावुक सहित जैसलमेर यात्रा के लिये गुढाबालोतरा (मारवाड) से विहार, सं० १९८७ फाल्गुन सुदि ३.

श्रेयःसन्ततिवामकामितमनः कामद्रुमाम्भोधरः,
पार्श्वः प्रीतिपयोजिनी दिनमणिश्चिन्तामणिः पातु वः।
ज्योतिः पङ्क्तिरिवाङ्गिनी प्रणयिनं पद्मोत्करोल्लासितं,
सम्प्राप्तं न जहाति यच्चरणयोः सेवां सृजन्तं जनम् १

परिशिष्ट—नम्बर ३.

श्री जैसलमेर—यात्रा—संघ ।

(विक्रम संवत् १९८६—८७)



श्रीमत्पार्श्वजिनः प्रमोदकरणः कल्याणकन्दाम्बुदो,
विघ्नव्याधिहरः सुरासुरनरैः संस्तूयमानक्रमः ।
सर्पाङ्को भविनां मनोरथतरुव्यूहे वसन्तोपमः,
कारुण्यावसथः कलाधरमुखो नीलच्छविः पातु वः २

जैसलमेरमंडनस्तवनम्—

माता मोरादेवीना नन्द, देखी ता० ए राह—

जैसलमेर जुहारेजी भयभंजनहार प्रभुजी—
जैसलमेर जुहारेजी ॥ टेर ॥

चिंतामणि प्रभुपार्श्व विराजे, संभवे शांतीनाथ ।
अष्टापदे श्रीकुंथुनाथजी, चोवीसे जिनवर साथ ॥ जै० ॥ १ ॥

चोमुखा जिनचंद्रप्रभुजी, शीतलनाथ महाराय ।
नाभीनंदन वंदन करतां, भवभय दूर पलाय ॥ जै० ॥ २ ॥

अंतिमजिन त्रिशलानंदन, शासनपति सुखकंद ।
मूलनायक ए आठों सोहे, जगदीपक जयवंत ॥ जै० ॥ ३ ॥

गगनालंबी मंदिर आठों, कोरणि धोरणि सिद्ध ।
छे हजार ने इक्यासी पडिमा, जोवो पुण्य गरिद्ध ॥ जै० ॥ ४ ॥

वन्दन पूजन एहनो करतां, मनमें आनंद लाय ।
ईति उपद्रव सहु दूरा जावे, सुकृत मंगल थाय ॥ जै० ॥ ५ ॥

शहर देरासर भावे भेटो, नव नव भाव सरूप ।
अमरसागरने लोद्रवपुर में, ऋषभ पार्श्व जिन भूप ॥ जै० ॥ ६ ॥

संवत् उगणी सत्यासी त्रीजे, चैत्रशुक्ल बुधवार ।
जीवालक्खाजी संघे यात्रा, कीनी यतीन्द्र सुखकार ॥ जै० ॥ ७ ॥



जैसलमेरयात्रासंघ वर्णन-स्तवनम् ।

दोहा—

प्रणमी पार्श्वजिनेन्द्रने, समरी भारती मात ।
संघयात्रा की भाव से, वेह कहूं अवदात ॥ १ ॥

पहिले मुहूर्त्त प्रयाणनो, फागुणसुदिनी तीज ।
उगणीसो छियासियो, विक्रमतणो कहीज ॥ २ ॥

मरुधरदेश में छाजतो, गाँव गुड़ो मनुहार ।
चांपावत राठोडनो, रावत राज्य जयकार ॥ ३ ॥

पोरवाडों में परगड़ो, सेठ जीवा जसवंत ।
वेहना सुत त्रण दीपता, रायचंद गुणवंत ॥ ४ ॥

रत्नचंद ने राजमल, ए तीनों पुण्यवान ।
लाभ लिये निज वित्तनो, ते कहिये धनवान ॥ ५ ॥

ढाल पहली ।

गईयी गईयी आज मंदरिये ए राह—

तिथि तृतीया प्रभातनी वेला, सहु संघ भेलो थावेजी ।
सौधर्मतप में प्रवर गीतारथ, यतीन्द्रविजय पय आवेजी ॥ १ ॥

कर वीनति यात्राने कारण, मनसूबो ठहरावेजी ।
त्यांथी विहार करी संघ साथे, नगर आहोरें आवेजी ति० ॥२॥

त्यां पण स्थिरता एक दिवसनी, भोजन भक्ति ठावेजी ।
चोथने दिवसे प्रयाण करीने. देवावस मुकाम ठहरावेजी ति० ३

शांतिनाथना दर्शन देखी, चितमें चैन उपावेजी ।
स्वामिवच्छल आमा सामा, दोनों टंक रचावेजी ति० ॥ ४ ॥

रायथल में पण इसी मुआफिक, वासुपूज्यने ध्यावेजी ।
उभय टंक संघ सेवा भक्ति, विविध पुण्य उपजावेजी ति० ॥५॥

मांकलेसर पहुंच्या आनंदे, सहसफणा चित लावेजी ।
शाकर ल्हाणी नगर में वांटी, शोभा सखरी पावेजी ति० ॥६॥

त्यांथी आगल नगर सवाणु, शाकर सहुने अपावेजी ।
पार्श्वप्रभुनी पूजा करीने, आसोतरा में आवेजी ति० ॥ ७ ॥

पार्श्वनाथना देखी दर्शन, नगर नाकोडा जावेजी ।
स्वामिवच्छल दोनों दिवसे, विविध पूजाओं भणावेजी ति० ८

रात्रिभावना ने परभावना, ओच्छव अधिक मंडावेजी ।
सादडीवासी पूनमचंद सुत, इन्दरमल उलसावेजी ति० ॥ ९ ॥

पहलो भोजन सकल संघने, करी दिल में सुख पावेजी ।
दूजो भोजन आहोरवालानो, गोडीदास कहेवावेजी ति० ॥१०॥

रूपचंद पोरवाड तणो करी, हर्ष घणो उपजावेजी ।
मगराज जयरूप चुन्नीलाल नथाजी, वालचंद वरदाजी कहावेजी
ति० ॥ ११ ॥

तीजो संघ भोजन एणें कीधो, सुकृत द्रव्य लगावेजी ।
इणिपरे धर्म उद्योत करीने, मनू जन्म सफल करावेजी ति० १२

दोहा—

करी विहार सहु संघ सह, स्टेशन तिलवाडा आय ।
रेलमार्ग रस्तो लीयो, वाएतु मुकाम कराय ॥ १ ॥

वली मुकाम वाणियासंघा, स्टेशन पर ठहराय ।
कवास वास एक रात्रिनो, आया उत्तरलाय ॥ २ ॥
वाहडमेरु पहोंचिया, संघ सामेलो कीध ।
चैत्य जुहार्या शहरना, वंछित कारज सीध ॥ ३ ॥

ढाल—दूसरी ।

वे वे मुनिवर वेहरण पांगुर्याजी ए राह—

मंदिर वाहडमेरु में दीपताजी, पहिला तो आदि प्रथम अवतारजो । दूजो तो एहीज प्रमाणे परगडोजी, पारस अंचलगच्छ शृंगार जो ॥ मं० ॥१॥ शांति ने पारस पारस पूजीयेजी, ऊपर पंचतीर्थोनो धामजो । दादानीवाडी तिहाँ रलियामणीजी, ते छे जे भविकजीव विश्राम जो ॥ मं० ॥ २ ॥ दर्शन कीधा सहु संघ ठाठथीजी, शुद्ध मन भावना बहु विलासजो । अंगियां चांगियां बहुली रचीजी, आनंद अंग माहें न समायजो ॥ मं० ॥ ३ ॥ त्यां छे एक भाग्यवंत जे सेटीयोजी, व्रजलाल मघुमलनो पुत्र जो । भक्ति तेणें कीधी सगले संघनीजी, साहमिवच्छल थयो छे तत्र जो ॥ मं० ॥ ४ ॥ केसा धन्नाजी ने मयाचंद दानाजीयेंजी, तेहनो छे सेदरिया में वास जो । जीमण दोनों दिन एकेकनोजी, कीनो थो अधिके चित उल्लास जो ॥ मं० ॥ ५ ॥ ताराचंद चन्द्रभाणनो पछे हुओजी, किसना जेवानो श्रीकार जो । हीराचंद जेताजीनो जाणीयेजी, जे छे वागराना सागार जो ॥ मं० ॥ ६ ॥ हीराचंद भूताजी आहोरनाजी, भेगा था भाना केशाशाह जो । अंतिम संघपतिनो वली थयोजी, जीमन वाहडमेरु में निरवाह जो ॥ मं० ॥ ७ ॥

दोहा—

करी प्रयाण सहु आविया, जालिपा ने तालाव ।
एक दिवस स्थिरता करी, भाडके कीयो पडाव ॥ १ ॥

तीजो मुकाम निम्बासरे, सांझे शिघ्र पहुंचाय ।
राजडाल आया सहु, रजनी त्यां वीताय ॥ २ ॥

वींझोराई ग्राम में, वास कीयो इक दिन्न ।
देवीकोटे पहुंचीया, सहु कहे धन्न धन्न ॥ ३ ॥

रह्या विचमें डाभले, त्यांथी जैसलमेर ।
राज्यकिले में पहुंच के, दर्शन किये सवेर ॥ ४ ॥

ढाल–तीसरी ।

सुमतिजिन सुमति सुमति दीजे, ए राह—

प्रभुपार्श्वजी आश पूरो मनकी ॥ टेर ॥

जैसलदुर्गे देव जुहारया, वर्णन आठे भुवन की प्र० ।
पहिले महावीर चैत्य वांदीने, सांची भक्ति तन मन की प्र० ॥१॥

दूजो मंदिर ऋषभप्रभुनो, शोभा कही न सके उनकी ।
चन्द्रप्रभु तीजो देवल दीपे, कमी न रही त्यां कोई धन की ॥२॥

मंदिर चोथो अष्टापदनो, शोभा शांतिना भुवन की ।
संभव शीतल नाथ सोहावे, पार्श्व भुवन ओपमा किनकी प्र० ॥३॥

आप तिहां मूलनायक छाजो, मुक्तावर्ण शोभा तनकी ।
अनेक बिंबों के परिकर मांहे, अद्भुत लीला दर्शन की प्र० ॥ ४ ॥

दोहा—

करी विचार सम्बल ग्रही, लोद्रव यात्रा हेत ।
आमंत्रण सहु संघमें, सर्व करी संकेत ॥ १ ॥
चैत्रसुदि तृतीया दिने, लोद्रवपुर में आय ।
भेटे पास चिंतामणि, जन्म जन्म सुखदाय प्र० ॥ २ ॥

ढाल—चौथी ।

धर्मनाय तुज सरिखो साहिब शिर थके रे, ए राह—

पासचिंतामणिनाथने ध्यावो,
इक मने रे के ध्यावो इक मने रे ॥ टेर ॥
जैसलमेरने पश्चिम दिशियें,
दीपता रे के दिशियें दीपता रे ।
कोश पांचने अन्तरे रिपुदल जीपता रे के रिपु० ॥१॥
पंचानुत्तर सदृश देवल—
तुम तणुं रे के देवल तुम तणुं रे ।
ऋषभ अजित ने संभव अरजी मम सुणो रे के अरजी० ॥२॥
अधिष्टायक अहिदेवनो स्थान—
त्यां शोभतो रे के स्थान शोभतो रे ।
अष्टापदनो भाव छे परमत क्षोभतो रे के परमत० ॥ ३ ॥
कल्पवृक्ष सुखकार छे अति—
रलीयामणो रे के अति रलीयामणो रे ,
सहसफणा प्रभुपास सदा सोहामणा रे के सदा सो० ॥ ४ ॥

तोरणनी तद्द्यारी सारी—
निरखीये रे के सारी निरखीये रे ।
शिखरबंध रथ देखी हइडे हरखीये रे के हइडे ह० ॥ ५ ॥

सांचा भैरव दादा दोनों—
राजता रे के दोनों राजता रे ।
इणपरे मंडण सगले करी जिन छाजता रे के करी जिन० ॥६॥

मूलमंडप में खास पासने—
वंदिये रे के पासने वंदिये रे ।
दो दिन पूजा भणाय के मनमें आनंदीये रे के मनमें० ॥ ७ ॥

कलश—हरिगीत—

तिहाँ संघवी तणो साहमिवच्छल करिने आगल आविया,
अमरसागर कीध पूजा स्वामीवच्छल ठावीया ।
किसनाजी सुत छोटमल्ले द्रव्य खर्च लगावीया,
वलि शहर आय भणाय पूजा ज्ञान गृह खोलावीपा ॥ १ ॥

सिद्धचक्र पूजा मालारोपण सर्व संघ बोलावीया,
वाजिंत्र नादे मधुर सादे हर्ष चित उलसावीया ।
अचलाजी सुत गुलाबचंदे नवकारसी कीधी तिहाँ,
हजारीमल गमनाजीये पण नवकारसी विरची तिहां ॥ २ ॥

अंतिम नवकारसी संघपतिनी थई सगले शहर में,
इम सर्व वर्णन नेमिचंदे कर्यो मननी लहर में ।
इम मुनियतीन्द्रा आदि साधु साध्वी मंडल संयुता,
विद्यादि सागरविजय संयुत श्राद्ध श्राद्धी परिवृता ॥ ३ ॥

दोहा—

जैसलमेर से चालीया, मोकलाई मुकाम ।
भोजकां चांदण आदि में, रुक रुक कीध आराम ॥ १ ॥

ओढाणीयो पण आवियो, पीछे पोकरण शहेर ।
वैशाखी वद पंचमी, पहुंचे फलवधि नेर ॥ २ ॥

स्वागत भक्ति उमंगसे, जुलुश बडाही विशाल ।
जिनमंदिर दर्शन किये, पाप गये पायाल ॥ ३ ॥

संघवीनी परभावना, मुनि व्याख्यान के बीच ।
श्रीफल वली मोदक भले, पूजा पुण्यने सींच ॥ ४ ॥

ढाल—छट्ठी ।

जिनजी अलबेला ए राह—

काचोलीनी श्राविका, साहमीवच्छल ठाय,
जिनजी अलबेला ।
श्रावक सादडीनो हतो, तेहना उल्लट भाव जि० ॥ १ ॥

चंदनमल पूनमचन्दे, कीधी भोजन भक्ति जि० ।
पूनमचंदजी गोलछा, तेणें पण कीधी शक्ति जि० ॥ २ ॥

सातमने दिन प्रभात में, संघभोजन बनवाय जि० ।
प्रीति युत पधरावीया, निज अंगन में लाय जि० ॥ ३ ॥

संध्यायें जे श्राविका, भेगी दोय कर चार जि० ।
पन्नी चूनी फूली एजी, भोजन कीध तईयार जि० ॥ ४ ॥

वली लोहावट पहुंचीया, दशमी वद वैशाख जि० ।
नवपदपूजा जिनघरे, श्रीफल भावना दाख जि० ॥ ५ ॥
गोला शाकर सहु गाँम में, संघवीनो वहेंचाय जि० ।
संघ लोहावट तरफसे, दो दिन जीमन थाय जि० ॥ ६ ॥

दोहा—

तीर्थ ओशियाजी आवीया, भेटे श्रीमहावीर ।
पंचकल्याणक तिहां भणे, पूजा प्रभावन सीर ॥ १ ॥
वर्द्धमानविद्यालय, तेहना सगला छात्र ।
प्रीतिभोज्य संघवी दिये, एहज दान सुपात्र ॥ २ ॥
आहोरनयरनी श्राविका, भीखी छे अभिधान ।
साहमीवच्छल तीर्थ में, कीधो कार्य प्रधान ॥ ३ ॥
निशा त्रयोदशीने समय, सर्व विद्यार्थी वृन्द ।
मुनि वंदन करीने पछी, परीक्षा लीध यतीन्द्र ॥ ४ ॥
वली मन्डोवर मांयने, पूजा प्रभावन थाय ।
वैशाखसुदिनी बीज को, जोधपुरे पहुंचाय ॥ ५ ॥
जिनमंदिर वंदन कीये, चितमें आनंद लाय ।
संघभक्ति जेणें करी, तेहना नाम गवाय ॥ ६ ॥

ढाल—सातवीं । राग—माढ—

जोधाणा जिनंदा जगदानंदा आनंद कंदा
अरजी उर अवधार ॥ जोधा० ॥ टेर ॥

मुणोतगोत्र में दीपतो रे, हस्तीमल्ल वकील ।
दोनों टंक भोजन दीयो रे, अद्भुत आनंद लील रे जो० १

मुंहता सुमेरचंदजी रे, वंदों में प्रख्यात ।
साहमीभोज्य दोनों समय रे, सुखसे बैठे पांत रे जो० ॥२॥

संघवी पण तिण शहरमें रे, नवकारसी विस्तार ।
मंदिर पूजा भणायने रे, मोदक कीध तईयार जो० ॥ ३ ॥

संघ हवे निज वासको रे, गमनको कीध विचार ।
कतिपय श्रावक साथमें रे, यतीन्द्र करे विहार रे जो० ॥४॥

पाली नवलख भेटके रे, डेंडा और चांखोद ।
भूति पादरली ग्राम में रे, जिनवर प्रणमी प्रमोद रे जो० ५

ज्येष्ट वदि शुभ पंचमी रे, कुशल क्षेम कल्याण ।
गुडा पधारे शुभ समय रे, यतीन्द्रविजय मुनिमाण रे जो० ६

मुनिवसुनवशाशि (१९८७) वर्षे में रे, संघवर्णन सुख दाय ।
लीलाल्हेर वली मोज में रे, नेमिचन्द्र गुण गाय रे जो० ।७।

लोद्रवपुरमंडन-स्तवनम् ।

चंदाप्रभुजी से ध्यान रे लागों ए राह—

चिंतामणि जिनराज रे, प्रभु पार्श्वने वंदो ।
पार्श्वने वंदो शिवसुखकंदो, चिंतामणी० ॥ टेर ॥

लोद्रवपुर के मंडन स्वामी, जगजीवन शिरताज रे प्र० ॥ १ ॥
ऋषभ अजित जिन संभव परिकर, अष्टापद गिरिराज रे प्र० २

सहस्रफणीधर छत्र विराजे, सेवा करे सुरराज रे प्र० ॥ ३ ॥
जिनपडिमा सह तोरण सोहे, भेटे भव दुख खाज रे प्र० ॥४॥
उगणी सत्यासी माधव त्रीजे, शुक्लपक्ष सिद्ध काज रे प्र० ॥५॥
जीवालखाजी संघ संघाते, यात्रा करी बहु साज रे प्र० ॥६॥
यतीन्द्र मुनि के चरण सरोजे, विद्या वधे गुण लाज रे प्र० ॥७॥

नाकोडाजी मंडन-स्तवनम् ।

घन घन पार्श्वनाथ भगवान,
भवाम्बुधि पार लगानेवाले ॥ टेर ॥

कृत अपराधी गुणकार, बोधि ज्ञान दान दातार ।
विद्यासागर भरे भंडार, विश्व के नाथ कहानेवाले घ० ॥ १ ॥

जगबंधव जगनाथ, तुमही सांचे शिवपुर साथ ।
मिटावो भ्रमण का भव पाथ, साथ दे मुक्ति बतानेवाले घ० ॥२॥

परचा पूरण वीर, अनंतबली छो तुम सब गुण धीर ।
शांति ऋषभ प्रभु वड्वीर, आतम भाव जगानेवाले घ० ॥३॥

नाकोडाधिप जिनराज, नसावे कर्मों की सौ खाज ।
मन मोहन गरीब निवाज, नित्यानंद करानेवाले घ० ॥ ४ ॥

साल उगणिस छेयासी, आशा सकल फली अविनाशी ।
मासोत्तम फाल्गुन मासी, एकादशी प्रेम बतानेवाले घ० ॥५॥

जैसलमेर यात्रा प्रसंगे, दर्शन फरस लिये मन चंगे ।
सेठ जीवाजी के संघे, भावट-भीड मिटानेवाले घ० ॥ ६ ॥

सूरिविजयराजेन्द्र, वंदित पदकज इन्द्र नरेन्द्र ।
यात्रा करी मुनियतीन्द्र, आतम राम रमानेवाले ध० ॥ ७ ॥

ओशियाजी मंडन स्तवनम् ।

ओशियाजी तीरथ, वीर विराजे पूजो भावसे ॥ टेर ॥

समणे भगवं नाथ निरंजन, अधम उधारण शूरा ।
शिवसुख कारण भवदुख वारण, निमित्त मिला भरपूरा जी ओ० १

जिनपडिमा जिनसरखी निरखी, दर्शन कर सुख पाया ।
भाव उमंगे भावना भावी, आनंद अधिक उपाया जी ओ० २

अचरिजकारी कोरणी भाली, चैत्यें मनोहर सोहे ।
तीर्थाधिपं प्रभु वीर निहारे, अवनीजन मन मोहे जी ओ० ३

जीवालक्खाजी संघ समाजे, तीरथ भेटन आया ।
विध विध पूजा अंगिया रचावी, सुकृत लाभ कमाया जी ओ० ४

संवत् उगणी सत्यासी केरी, वद बारस वैशाखो,
सूरिराजेन्द्र यतीन्द्रपतिजी, शरणागत ने राखो जी ओ० ५

सुवर्णगिरिमंडन स्तवने । कवाली—

स्वर्णगिरिराज के दर्शन, हैं अति आनंद के वर्षन ॥ टेर ॥

जगत्त्रयताप के हर्त्ता, विमलगुण ज्ञान के धर्त्ता ।
विविध सद्बोध के कर्षन, स्वर्णगिरिराज के दर्शन, हैं० ॥ १ ॥

विहारत्रय हार सम राजे, सदन शिव सौख्य सम्राजे ।
जालोर मरुदेश में हर्षन, स्वर्णगिरिराज के दर्शन, हैं० ॥ २ ॥

ऋषभ महावीर अवतारी, प्रभुश्री पार्श्व जयकारी ।
कर्ममलरोग के घर्षन, स्वर्णगिरिराज के दर्शन, हैं० ॥ ३ ॥

सूरिराजेन्द्र अविनाशी, यतीन्द्र आनंद की राशी ।
करी यात्रा सुखें फर्सन, स्वर्णगिरिराज के दर्शन, हैं० ॥ ४ ॥

राह कवाली—

अहो प्रभु शिवसौख्य की राशी, वतादोगे तो क्या होगा ॥टेर॥

स्वर्णगिरिराज के स्वामी, करुं मैं अर्ज शिरनामी ।
पडी है भवसमुद्र में नैया, तिरादोगे तो क्या होगा ॥ अ० ॥१॥

सिद्धारथराय कुल मंडन, करो सहु कर्म मुझ खंडन ।
माता त्रिशला के हो नंदन, उगारोगे तो क्या होगा ॥ अ० ॥२॥

देवनपति देव हो प्यारा, प्रभुश्री वीर हो सारा ।
चाहुं मैं तुम दर्शकी वूटी, चखादोगे तो क्या होगा ॥ अ० ॥३॥

अचल शुभ शांति के दाता, अखिलजन विश्व के भ्राता ।
मुझेभी आपके सदृश, वनालोगे तो क्या होगा ॥ अ० ॥ ४ ॥

ऋषभ प्रभु पार्श्व जयकारी, अवर दो चैत्य मनोहारी ।
अनुभवानंद को स्वामिन्, दिलादोगे तो क्या होगा ॥ अ० ॥५॥

सूरिराजेन्द्र गुरु राया, मुनियतीन्द्र पद पाया ।
शिष्य विद्या अमीधारा, पिलादोगे तो क्या होगा ॥ अ० ॥ ६ ॥



प्रभुश्रीमद् विजयराजेन्द्रसूरीश्वरेभ्यो नमः ।

श्री जैसलमेरयात्रा–संघ ।

श्रीसिद्धार्थनरेशवंशसरसी जन्माब्जीनी वल्लभः,
पायाद्वः परमप्रभावभवनं श्रीवर्द्धमानः प्रभुः ।
उत्पत्तिस्थितिसंहृतिप्रकृतिवाग् यद्गीर्जगत्पावनी,
स्वर्वापीव महाव्रतिप्रणयभूरासीद् रसोल्लासिनी ॥ १ ॥

मरुधर–देशीय पिल्वाहिका मंडल–मंडन श्रीसुवर्णगिरिराज की पवित्र छाया में उससे पूर्वोत्तर १६ माईल, और एरनपुरा-रोड से पश्चिम २५ माईल के फासले 'गुडा–बालोतरा' नामका कस्बा है, जिसमें श्वेताम्बरजैनोंके ३२५ घर हैं और तीन सौध-शिखरी जिन–मंदिर हैं जो दर्शकों के हृदय को असीम आनन्द पैदा करनेवाले हैं। इस कस्बे में बम्बई में लक्खाजी दोलाजी की पेढी के मालिक शेठ जीवाजी लक्खाजी अच्छे श्रीमन्त साहूकार निवास करते हैं। श्रीजैसलमेरयात्रा का यह संघ उन्हीं के तरफ से निकाला गया, जो सं० १९८६ फाल्गुन शुदि ३ सोमवार को गुडाबालोतरा से निकला था। इसमें आहोर, हरजी, सियाणा, बागरा, चरली, दयालपुरा, तखतगढ, सेदरिया, चांदराई, खिमेल, सादड़ी, गोल, सायला, भैंसवाड़ा-काचोली, भावरी, वेदाणा, केशाल, वाड़मेर, भाडका; आदि मारवाड और सिरोही रियासत के गाँवों के भावुक यात्री

सामिल हुए थे। उनके लिये गाड़ी, ऊंट का भाड़ा, चोकी-पहरा और जल, इंधन का कुल खर्चा संघपति जीवाजीने दिया। क्रमशः यह संघ सुप्रबन्ध के साथ गुड़ाबालोतरा से रवाने होकर आहोर, मीठडी, देवावस आदि रास्ते के गाँवों में ठहरता, पूजा-प्रभावना करता, कराता और स्वामिसेवा का लाभ लेता, लिवाता हुआ वि० सं० १९८७ चैत्रसुदि १ सोमवार को सुबह ९ बजे जैसलमेर पहुंचा। जैसलमेर के श्वेताम्बर जैनसंघने पूर्ण उत्साहसे इस संघ का सामेला आदि स्वागत किया।

चैत्रसुदि २ मंगलवार के दिन सुबह संघ और पुत्रादि कुटुम्ब के सहित जीवाजीने बेन्डबाजा आदि जुलुश के साथ किले के ८, और शहर के ९ एवं सतरह जिनालयों के अभि-वर्द्धित भाव से दर्शन-पूजन किये। विविध पूजाएँ और नव-कारसियाँ आदि धर्मकृत्य करके पुण्योपार्जन किया। चैत्रसुदि ३-४ को जैसलमेर के समीपवर्त्ती 'अमरसागर' और पुरातन तीर्थ लोध्रवपुर-पट्टन (लोद्रवाजी) जाकर जिनेन्द्रयात्रा, पूजन भक्ति और संघसेवा की। चैत्रसुदि ५ को वापिस जैसलमेर आकर जिनमन्दिरों में विविध पूजा, आंगी-रचना, प्राचीनज्ञान-भंडारों के दर्शन और विविध भक्ति भावों से अपनी लक्ष्मी और आत्मा को सार्थक की। इस अवसर पर संघ-गत श्रावक श्राविकाओंने भी भक्ति-लाभ लेने में किसी प्रकार की कमी नहीं रक्खी। चैत्रसुदि ८ रविवार के दिन जैसलमेर के मंडन श्री चिन्तामणि-पार्श्वनाथ के भव्य-मन्दिर में जैसलमेर के समस्त जैनसंघने एकत्रित होकर विविधगान-मान के साथ सेठ जीवाजी

के वड़े पुत्र रायचन्दजी को संघ-माल पहराके जय जयारव की ध्वनि की। इस प्रकार आनन्दसे जैसलमेर में दश दिन पर्यन्त जिनेन्द्रभक्ति किये बाद सन्मान पूर्वक चैत्रसुदि ११ बुधवार को सुवह संघने जैसलमेर से प्रयाण किया।

अनुक्रम से मोकलाई, भोजकां, चांदण, लाठी, ओढाणिया, पोहकरण आदि गाँवों में विश्राम लेता और जिनमन्दिरों में द्रव्य देता हुआ संघ वैशाखवदि ९ शुक्रवार को सुवह ९ बजे 'फलोधी' आया। फलोधी श्वेताम्बर-जैनसंघने अच्छा स्वागत किया और संघ को तीन रोज तक रोक कर विविध प्रीतिभोजनों से सन्तुष्ट किया। यहाँ जिनमन्दिरों में वड़ी पूजाएँ भणाकर संघवीने लाडू की और व्याख्यान में श्रीफल की प्रभावना वांटी। बाद वैशाखवदि ८ को सुवह संघ का डेरा उपड़ कर वै० वदि ९-१० को लोहावट में मुकाम हुआ और संघवी के तरफसे लोहावट के जिनमन्दिर में भारी समारोह के साथ सिद्धचक्र-पूजा भणाकर गाँव और पूजा में श्रीफल की लहाणी दी गई। यहाँ के श्रीसंघने दो दिन तक संघ का अच्छा स्वागत किया।

सन्मान के साथ लोहावट से संघ रवाने होकर वै० व० १२ को सुवह ९ बजे प्राचीन तीर्थ श्री ओशियाजी पहुंचा। कारखाने के मुनीम आदि और श्रीवर्द्धमानविद्यालय के सभी विद्यार्थी बालकोंने संघ का भारी समारोह से से स्वागत किया। यहाँ संघवीने श्रीमहावीरप्रभु के विशाल मन्दिर में पंचकल्याणक पूजा भणाकर नवकारसी की और विद्यालय में १०१) रुपया भेट किया। वैशाखवदि १३

को विद्यालयके उपस्थित ८५ विद्यार्थियों की परीक्षा ली गई। विद्यार्थी प्रायः परीक्षोत्तीर्ण पाये गये। परीक्षा होने बाद मास्तर और विद्यार्थियों को आहोरवाली श्राविका बाई भीखी के तरफ से प्रीतिभोजन और सेदरियावाली श्राविका लच्छी के तरफ से श्रीफल की प्रभावना दी गई।

ओशीयाजी तीर्थ की यात्रा करके संघ क्रमशः मथानिया, माणकलाव, दईजर और मन्डोर होकर वैशाखसुदि २ को 'जोधपुर' आया। जोधपुर जैनसंघने संघ का अवर्णनीय स्वागत किया। यहाँ मुता सुमेरचंदजी, वकील हस्तीमलजी मुणोत और वेदमूता रतनचंदजी इन सद्गृहस्थोंने संघ को तीन रोज तक रोक कर विविधभोजनों से संघभक्ति का अपूर्व लाभ प्राप्त किया। वैशाखसुदि ६ के दिन प्रभावनापूर्वक श्रीकेशरियानाथ के मन्दिर में नवाणुंप्रकारी पूजा भणा कर संघवी जीवाजी लक्खाजी के तरफ से पांचपकवान की विशाल नवकारसी की गई।

इस प्रकार गुडावालोतरा से संघ का प्रयाण होने बाद जीवाजी के तरफ से आहोर में साथवाले संघ को दोनों टाइम प्रीतिभोजन, और देवावस, नाकोडाजी, बाडमेर, लोद्रवाजी, जैसलमेर, ओशियाजी और जोधपुर में नोकारसियाँ हुई। तथा शेष गाँवों में कहीं शाकर की ल्हाणी, कहीं मोदक की ल्हाणी और कहीं श्रीफल की प्रभावनाएँ हुई। संघ के साथ में जुदे जुदे गाँवों के जो श्रावक श्राविका थे, उन्होंके तरफ से नोकारसियाँ इस प्रकार हुई—

देवावस में { जैनपंचमहाजनसमस्त, फा० सु० ५

मांकलेसर में — वाफणा प्रतापचंद किसनाजी की सुवह, और श्याम को हरिया मयाराम मगाजी के तरफ से फा० सु० ७

सवानागढ में — चोधरी नथुजी अचलाजी, फा० सु० ८
जिंदाणी पन्नाजी लखमीचंद, फा० सु० ९

नाकोडाजीमें —
१ सादडीवाले इन्द्रमलजी पूनमचंदजी तथा आहोरवाले रूपचंद गोडीदासजी की पांती में फाल्गुनसुदि १२
२ मगराज जेरूपजी, चुन्नीलाल नथाजी, वालाजी वरदाजी तीनों की पांती में फा० सु० १५

वाडमेर में —
१ मियाचंद दानाजी वगैरह की सुवह, और शामको वागरावाले किसनाजी जेताजी की चैत्र व० १
२ वागरावाला हीराचंद जेताजी, चैत्र वद २
३ आहोरवाला हीराचंद भूताजी आदि की चैत्र व० ४
४ आहोरवाला भानाजी केराजी की चैत्र व० ५
५ सेदरियावाला केसाजी धन्नाजी, चै० व० ६
६ वखतगढवाला ताराचंद चंद्रभाणजी की सुवह, और श्याम को धाडनेरवाले माधोमल व्रजलालजी, चैत्रवदि ७

अमरसागरमें { १ आहोरवाला छोटमल किसनाजी तलावत, चैत्रसुदि ५, संवत् १९८७

जैसलमेर में { १ गुड़ावालोतरावाला गुलाबचंद अचलाजी, तथा हजारीमल गमनाजी पांती में चै. सु. ७
२ हरजीवाला जवानमल किसनाजी, चै. सु. ९

फलोधी में { १ काचोलीवाली श्राविकाओं की, वैशा. व. ५
२ सादड़ीवाला चंदनमल पूनमचंदजी, वै. व. ६
३ फलोधीवाला फूलचंदजी नेमिचंदजी गुलेच्छा वैशाखवदि ७ सुबह,
४ गुड़ावालोतरावाली श्राविका पन्नी चुन्नी, एजी, फूली की पांती में वै० व० ७ शाम को

लोहावट में { लोहावट जैन श्वेताम्बर-संघ वैशाख वदि १०

ओशिया में { १ आहोरवाली श्राविका भीखी, वै० व० १३

जोधपुर में { १ वकील हस्तिमलजी मुणोत, वैशाखसुदि २
२ वेदभूता रतनचंदजी वैशाखसुदि ३
३ मूताजी श्रीसुमेरचंदजी, वै० सु० ४

इन नवकारासियों के अलावा छुट कर जुदे जुदे गाँवों के श्रावक श्राविकाओं के तरफ से श्रीफल, मोदक और बरफीयों की पचास प्रभावनाएँ हुई थीं। रास्ते के गाँवों में जहाँ जहाँ जिनमन्दिर आये, वहाँ वहाँ संघवी जीवाजीने केशर, धूप और

यथाशक्ति रोकड रुपया देने में भी किसी तरह की आनाकानी नहीं की। जीवाजी अपने भतीजे की वहु के तकलीफ के समाचार आ मिलने के कारण जैसलमेर से वापिस अपने घर की तरफ लौट गये और वडे पुत्र रायचंद जी तथा छोटे पुत्र राजमलजी को संघ–सेवा के लिये रख गये। लेकिन जोधपुर आने वाद संघ–गत सभी श्रावक श्राविका अधिक दिन व्यतीत हो जाने के कारण रेल्वे से अपने अपने वतन को चले गये। संघ के साथ में ग्यारह ठाणा साधु साध्वियों के थे, उनकी सेवा में गुड़ा तक योग्य श्रावक, श्राविका, नोकर और वाहनादि प्रवन्ध करके रायचंदजी तथा राजमलजी भी जोधपुरसे अपने वतन को चले गये।

संघवी कारित प्रवन्ध के साथ साधु साध्वियाँ जोधपुर से पाली, चाँणोद, भूति होकर गुडावालोतरा आये और. वाद यथेच्छा प्रमाणे विहार कर गये। इस प्रकार श्रीजैसलमेरयात्रा निराबाधपने पूर्ण हुई। संघने जिस रास्ते से यात्रा की और जिस रास्ते से वापिस लौटा, उसके दरमियान आये हुए गाँव, उनमें जैनों की घर संख्या, उन का परस्पर अन्तर और उनमें हुए संघ के मितिवार मुकाम दर्शक तालिका नीचे मुताविक समझना चाहिये।

गुडाबालोतरा से जेसलमेर तक के गाँवः—

नम्बर	गाँवों के नाम	कोश	जैनघर	जिनालय	संवत्, मास मिति
					संवत् १९८६
१	आहोर	३	५००	५	फाल्गुन सुदि ३
२	मीठडी	३	१	१	०
३	देवावस	२	२५	१	४—५
४	रायथल	४	३०	१	६
५	मांकलेसर	३	१६०	१	७
६	सवानागढ़	४	५००	१	८—९
७	कुड़प	२	१०	०	०
८	आउतरा	५	२५	१	१०
९	जसोल	३	५०	०	०
१०	नाकोड़ाजी	३	०	३	११—१५
११	तीलवाडा	४	०	०	चैत्र वदि १
१२	गोल	३॥	०	०	०
१३	भीमरलाई	४	०	०	२
१४	वाएतु	४	५०	०	३
१५	वाणियासंघाघोरा	४	०	०	४
१६	कवास	४	१	०	०

१७	उत्तरलाई	३	०	०	५
१८	वाडमेर	३	४००	७	६–८
१९	जालीपो	३	०	०	९
२०	कपूरड़ी	३	०	०	०
२१	माडको	३	२०	१	१०
२२	नीमला	२	०	०	०
२३	निम्बासर	३	०	०	०
२४	शिव	२	०	०	११
२५	गूंगा	२	०	०	०
२६	राजराड	३	०	०	१२
२७	खोडाल	१	०	०	०
२८	वींजोराई	४	०	०	१२
२९	मीलाणी	३	०	०	०
३०	देवीकोट	५	१५	१	१३
३१	छोड़	२	०	०	०
३२	पडिमाली	२	०	०	१४
३३	डामला	४	०	०	३०
३४	जैसलमेर	४	१००	१७	सं.१९८७चै.सु १
३५	अमरसागर	१	०	३	२
३६	लोद्रवाजी	४	०	१	३–४
३७	जैसलमेर	५	०	०	५–१०

जैसलमेर से गुडा बालोतरा तक के गाँव—

नम्बर	गाँवों के नाम	कोश	जैनघर	जिनालय	संवत्, मास, मिति
					सं० १९८७
१	मोकलाई	६	०	०	चैत्र सुदि ११
२	भोजकां	६	०	०	१२
३	चांदण	३	०	०	१३
४	लाठी	६	०	०	१४
५	ओढाणियो	६	०	०	१५
६	पोहकरण	६	६	३	वैशाखवदि १-२
७	सुथारांवेरी	३	०	०	०
८	ऊगरास	४	०	०	३
९	होपारडी	५	०	०	४
१०	फलोधी	४	७००	७	५—७
११	चील्हा	४॥	०	०	८
१२	लोहावट	४॥	१००	२	९—१०
१३	पली स्टेशन	३	०	०	०
१४	हरलायां	४	०	०	११
१५	भीकमकोर	३	०	०	०
१६	ओशियाजी	५	०	१	१२—१३

१७	मथानिया	७	०	०	१४
१८	माणकलाव	३	०	०	०
१९	दईजर	४	०	०	३०
२०	मन्डोर	३	१	३	वैशाख सुदि १
२१	जोधपुर	३	२२००	७	२—६
२२	मोगड़ा	६	८	०	७
२३	काकांणी	२	०	०	०
२४	रोहेट	९	१०	०	८
२५	खारड़ा	४	१०	१	१०
२६	पाली	३	७००	६	११
२७	डेंडा	९	३०	१	१२
२८	वालो	१	४	०	०
२९	कूरंणो	१	०	०	०
३०	चांणोद	२॥	२००	१	१३
३१	भूति	४	७०	२	१४-१५ जे.व. १-२
३२	पादरली	३॥	१२५	१	४
३३	गुडावालोतरा	४	३२५	३	५

इस रास्ते के तीलवाडा, गोल, मीमरलाई, वाण्तु, वणिया-संघाधोरा, कवास और उत्तरलाई ये गाँव और इन्हीं नाम के स्टेशन हैं। इन गाँवों के कुओंमें खारा जल और वह भी वहुत

गहरा है, यहाँ के निवासी इन कुओं का जल नहीं पीते किन्तु हर एक स्टेशन पर रेल्वे द्वारा मीठे जल की टांकिया भरी हुई आती हैं वही जल पीने में लिया जाता है। तीलवाडा से वाडमेर जाने के दो रास्ते हैं, उनमें ऊपर जो स्टेशन बताये गये हैं एक तो वही रेल्वे की सडक का रास्ता है, यह अच्छा है परन्तु इस मार्ग से बैलगाडियाँ नहीं जा सकती, ऊँट जा सकते हैं। विश्राम के लिये हरएक स्टेशन पर सराय बनी हुई हैं और कहीं कहीं छोटे क्वाटर भी बने हुए हैं। †

दूसरा रास्ता नाकोडाजी से पश्चिम दक्षिण कोण की तरफ होकर जाता है. इस मार्ग में रेत और भुरटों की बहुलता, तथा बड़े बड़े धौरे और दूर दूर गाँव आते हैं, उनमें कहीं जल मिलता है और कहीं नहीं। इस वजह से रास्ते में महान् तकलीफ उठाना पडती है। इस रास्ते में भी बेलगाडियाँ नहीं जा सकतीं, ऊँट ही जा सकते हैं। नंगे पैर चलनेवालों के लिये तो यह रास्ता किसी प्रकार अच्छा नहीं है। रास्ते में प्रायः बडा गाँव कोई नहीं आता, केवल जाटों और राजपूतों की ढाणियाँ आती हैं जो अपने पीने के लिये जल दश दश या बारह कोश से ऊँटी–पखालों में लाते हैं। इन्हों के गाय, भेंस, बकरी आदि पशुओं को भी एकान्तर से पानी पीने को मिलता है।

---

† इस मार्ग में भी वणियासंधाधोरा स्टेशन से कवास स्टेशन की हद तक रेल्वे सडक के किनारों पर भुरट अधिक है, शिर्फ रेल्वे सडक के मध्य गाले में नहीं है।

वाड़मेर से जैसलमेर जानेवाले मार्ग में हर एक गाँव में तालाव और मीठे जल की वेरियाँ हैं, तालाव का पानी कम होजाने पर लोग वेरियों का पानी पीते हैं। इधर के तालाव भी प्रायः दो दो वर्ष तक सूखते नहीं है और न इनका जल बिगड़ता है। यह मार्ग अच्छा है और इसमें चारा पानी की तंगी बिलकुल नहीं है। वाड़मेर से पोहकरण तक सड़क के समान मगरेली रास्ता है, लेकिन कहीं कहीं मुरट की अधिकता अवश्य है।

जैसलमेर से ओशिया तक जो गाँव आते हैं उनमें कहीं एक और कहीं दो कुंए रहते हैं, उनमें १५० हाथ से ३०० हाथ नीचे तक पानी रहता है, जो प्रायः कभी खुटता नहीं है लेकिन उन कुओं से खेती नहीं हो सकती। हरएक कुए के पास पीने का पानी भरने और ढोरों के पानी पीने के लिये पक्के जोधपुरी लाल पत्थर के होद बने हैं। उनमें चड़स से पानी भर दिया जाता है, वही पानी काम में लिया जाता है। इस पानी को काम लेनेवालों से एक मटकी पानी का कहीं एक आना, कहीं आधा आना और ढोर पानेवालों से प्रतिमास कहीं १ रुपया, कहीं आधा रुपया लिया जाता है। इन गाँवों पैकी होपारडी गाँव के कुओं में १९० हाथ, फलोधी में २००, और चौल्हा में २१०, हाथ गहरा पानी है, अतएव इस पानी को निकलवाने या निकालने के लिये अन्दाजन २२५ हाथ लम्बी रस्सी की जरूरत पड़ती है, और कहीं कहीं ३११ हाथ

लम्बी रस्सी की जरूरत पडती है। इन गहरे कुओं का जल पीने में सुस्वादु और पुष्टि कारक है। जैसलमेर से ओशियाजी तक के गाँव प्रायः ऊजड हैं लेकिन उनमें ठहरने के लिये स्थान मिल जाते हैं, मुसाफिरों को किसी तरह की तकलीफ नहीं पड़ती। सब से अच्छी सुविधा यह है कि वाडमेर से निकले वाद पोहकरण तक रास्ते में चाहे रात्रि हो, चाहे दिन कोई वोलाऊ (चोकीदार) लेने की जरूरत नहीं पडती और न कहीं चोकी देना पडती है। इतनी सुविधा मारवाड में किसी जगह नहीं है, केवल जैसलमेर प्रान्त और उसके लगती अन्य राज्य की सीमा में ही देख पड़ती है जो यात्रियों के लिये अति सुखावह है।

जैसलमेर की यात्रा करनेवाले यात्रियों को फी आदमी आठ आना मुड़का देना पड़ता है, उसको दे दिया फिर किसी वात का अन्देशा नहीं। मौजके साथ विना खतरे रात को या दिन को चले जाओ कोई पूछनेवाला नहीं। यह मूड़का प्रस्तुत (जीवाजीसेठ के) संघ को उसके मान के खातर जैसलमेर के वर्त्तमान भूपाल के तरफ से माफ किया गया था। इस प्रकार सन्मान मिलने के एवज में सेठ जीवाजीने राजा से मिलने के समय में चार स्वर्णमोहरें भेट की थीं। वस, प्रस्तुत संघ का आमूल संक्षिप्त इतिहास पूर्ण करते हुए रास्ते के गाँवों के निवासी जैन मुखियाओं के पोस्ट पते वार नाम लिख देना भी यहाँ अस्थान नहीं है।

वरदाजी उमाजी मोतीजी रुगनाथ	मु० देवावस, पो० आहोर (मारवाड) एरनपुरारोड.
पूनमचंद आइदानजी हजारीमल करताजी	मु० रायथल, पो० सवाणागढ (मारवाड)
भूता प्रतापजी वरदाजी जुहाराजी रामदानजी सहसमल हीराजी छोगाजी फोजमलजी	मु० पो० मांकलेसर, (मारवाड)
चोधरी वंसराज सवदानजी शा० मूलचंद दलाजी भंडारी रतनमलजी	मु० पो० सवाणागढ़ (मारवाड)
श्वेताम्बर जैन कारखाना	मु० नाकोडाजी पो० वालोतरा (मारवाड)
भोजा कोजाणी माधोलाल व्रजलालजी प्रतापमल जवाणी लछमनदास वकील	मु० पो० वाडमेर (मारवाड)
जेको नगाणी वस्तो लालाणी पोकर पूनमाणी	मु० भाडका, पो० वाडमेर (मारवाड)
हेमराज उत्तमचंदाणी वक्तावरमल रामसिंघाणी भगवानदास वाकीदास	मु० पो० देवीकोट (जैसलमेर) व्हाया वाडमेर

राजमलजी हजारीमलजी प्यारेलाल केशरीमल जिंदाणी राजमल पूनचंद वरांढिया चिंतामणदासजी पटवा	मु० पो० जैसलमेर (राजपुताना) वाया वाडमेर
निहालचंद पूनमचंद गुलेच्छा जोरावरमल भोलाराम कोचर	मु० पो० फलोधी जि० जोधपुर (मारवाड़)
रेखचंदजी हजारीमलजी पारख रावलमल जमनालाल पारख अग्यारामजी सतिरामजी लूणिया हीराचंदजी माणकलालजी चोपडा	मु० पो० लोहावट (मारवाड़)
सदासुख मगनीराम लूंकड सोनराज शिवराज कानुगा	मु० पो० पोहकरण, जि० जोधपुर (मारवाड़)
श्वेताम्बर जैन कारखाना	मु० पो० ओशिया (मारवाड़)
भूताजी सुमेरचंदजी वकील हस्तिमलजी मुणोत	मु० पो० जोधपुर ठे० खेरा- दियों का वास, (मारवाड)



ऐतिहासिक-वर्णन ।

इस हेडिंग के नीचे प्रस्तुत संघ के साथ हमारे विहार के दरमियान रास्ते में जो उल्लेखनीय गाँव आये उन्हींका वर्णन संक्षेप से दर्ज किया जाता है, जो जैसलमेर की यात्रार्थ जाने-वाले साधु साध्वियों और श्रावक श्राविकाओं को उपयोगी, तथा जानना जरूरी है ।

१ मीठडी —

यह छोटा गाँव है, इसमें पेश्तर जैनों के बहुत घर थे परन्तु वर्त्तमान में यहाँ जैनों का वासिन्दा घर एक भी नहीं है । शिर्फ एक घर जो जालोर से व्यापार के लिये आया है, यहाँ अस्थिर रूप से रहता है । प्राचीन समय का बना यहाँ एक छोटा जिनालय है, जिसका जीर्णोद्धार पांच सात वर्ष पहले आहोर श्रीगोड़ीपार्श्वनाथजी के मंदिर के तरफ से हुआ है और पूजा का प्रबन्ध भी उसीके तरफ से है । इसमें दो फुट् बडी सफेदवर्ण श्रीऋषभदेवस्वामी की मूर्त्ति विराजमान हैं जो दर्शनीय और प्राचीन है ।

२ देवाचस—

यहाँ वीसा ओसवालजैनों के २५ घर, नया एक शिखर-वाला जिनमन्दिर और एक उपाश्रय है । मंदिर में सफेदवर्ण आधे फुट की श्रीशान्तिनाथ आदि की तीन प्रतिमा स्थापित

हैं जिनकी प्रतिष्ठा सं० १९७१ में उपाध्याय श्रीमोहनविजयजी के करकमल से हुई है। इस गाँव के जैन भावुक और अच्छे श्रद्धालु हैं।

३ रायथल—

इस गाँव में वीसा ओसवाल जैनों के ३० घर हैं, जो स्थानकवासी संप्रदाय के हैं। परन्तु द्वेषी नहीं है, मंदिरमार्गी साधु साध्वियों की भक्ति, भाव से करते हैं। यहाँ एक कच्चे मकान के ताक में श्रीवासुपूज्य-स्वामी की ४ अंगुल और उतनी ही वडी धातुमय श्रीपार्श्वनाथ की प्रतिमा स्थापित है, जो तीन वर्ष पहले कहीं से लाकर यहाँ वैठा दी गई है, लेकिन यहाँ उनकी पूजा का प्रबन्ध अच्छा नहीं है।

४ मांकलेस्र—

यह अच्छा आवाद कसवा है और दिनों दिन तरक्की पर है। इसमें वीसा ओसवाल जैनों के १६० घर हैं, जो अच्छे भावुक, विवेकी और श्रद्धालु हैं। मन्दिरमार्गी साधुओं के विहाराऽभाव से अव इनमें कुछ कुछ स्थानकवासी साधुओं के उपदेशकी गंध फैलने लगी है। अन्दाजन ५० घर जो पांच वर्ष पहले मन्दिरमार्गी थे, अब स्थानकवासी साधुओं के श्रद्धालु होगये हैं। यदि मन्दिरमार्गी साधुओं का इस गाँव में आना न हुआ तो संभव है कि अधिक घर भी स्थानकवासी हो जाँय ? यहाँ योग्य साधु साध्वियों के विहार और उपदेश की पूरी आवश्यकता है। गाँव में एक धर्मशाला और एक शिखरवद्ध

भव्य मन्दिर है जिसमें सहस्रफणापार्श्वनाथ और उनके दोनों बगल में पार्श्वनाथ तथा नेमिनाथ की अति सुन्दर प्रतिमा विराजमान हैं। उनमें नेमनाथजी की मूर्त्ति सं० ९१० की प्रतिष्ठित है, और उसके प्रतिष्ठाकार हैं जिनपतिसूरिजी। शेप दो प्रतिमा सं० १५४५ वैशाखसुदि ३ की प्रतिष्ठित हैं, परन्तु इन पर प्रतिष्ठाकार का नाम नहीं है। गाँव में पोस्ट ऑफिस और सरकारी पाठशाला भी है।

५ सवानागढ़—

यह कसबा प्राचीन और जोधपुर हकुमत का सदर स्थान है। यहाँ श्वेताम्बर ओसवाल जैनों के ६०० घर हैं, जिनमें आधे उपरान्त स्थानकवासी संप्रदाय के हैं। गाँव में एक छोटा प्राचीन जिनालय है जिसमें मूलनायक श्रीपार्श्वनाथ की बिना फणवाली सवा दो फुट बड़ी श्वेतवर्ण प्रतिमा स्थापित है। इस के अलावा १७ जिनमूर्त्तियाँ और भी विराजमान हैं, जो सभी प्राचीन हैं, परन्तु यहाँ उनकी पूजा का प्रबंध अच्छा नहीं है। मन्दिरमार्गी योग्य साधु साध्वियों के आगमनाऽभाव से स्थानकवासी और तेरहपंथियों का जोर बढ़ता जा रहा है। गाँव में पोस्टऑफिस और सरकारी स्कूल भी है, तथा दो छोटी धर्मशाला और दो उपाश्रय भी हैं।

कसबे के समीपवर्ती पश्चिम एक छोटी पहाड़ी है, उसके ऊपर किला है, इसीके कारण इसका नाम 'सवानागढ़' कह-

लाता है। किले में पतितावशिष्ट दो–चार मकानों के सिवाय एक तालाव भी है, जिसमें प्रायः बारहों महिना पानी भरा रहता है। यह किला वीरनारायण पंवार का वनवाया हुआ है, इसमें नाई छीपा और दर्जी को रात नहीं रहने देते। क्योंकि इनके भेद से ही इस किले पर राजा उदयसिंहने अपना अधिकार जमाया था। यह कस्वा जोधपुर से ५६ मील दक्षिण पश्चिम में और समदड़ी स्टेशन से १० मील दूर है। इस पर क्रमशः अलाउद्दीन, जेतमाल, मालदेव, राठोड–कल्लारायमलोत, राजा उदयसिंह, सूजानसिंह–राठोर आदि का अधिकार रह चुका है। वाद में उनके पुत्रों से छीन कर महाराजा आजितसिंहजीने अपने अधिकार में ले लिया, तव से अव तक यह जोधपुर राज्य में ही शामिल है। इस परगने का क्षेत्रफल ७६० वर्ग मील और आवादी ३७,५४४ मनुष्यों की है जो वि० सं० १९७८ की गणनानुसार है।

६ कुईप—

यह सवाणा हकुमत के नीचे छोटा गाँव है, इसमें ओसवाल जैनों के १५ घर हैं जो नाममात्र के जैन हैं और तेरहपंथी संप्रदाय के हैं। यहाँ के एक किसान के खेत से पांच वर्ष पहले पार्श्वनाथजी की छोटी धातुमय प्रतिमा प्राप्त हुई थी, वह यहाँ के अज्ञ जैनोंने ठाकुरजी के मंदिर में रखदी है। इस गाँव के जैन जिनप्रतिमा और मंदिरमार्गी साधु साविध्यों के कट्टर द्वेषी और छिद्रान्वेषी हैं।

७ आसोतरा (आउतरा)—

यहाँ वीसा ओसवाल जैनों के २५ घर हैं जो जैनाभास और विवेकशून्य हैं। इस गांव के जैन भीखमपंथी होने से मंदिरमार्गी साधु साध्वियों को आहार पानी वोहराने और उनको उतरने के लिये स्थान देने में महापाप समझते हैं। गाँव में एक छोटा जिनालय है जिस में मूलनायक श्रीपार्श्वनाथजी की सवा फुट बड़ी सफेद तीन मूर्त्तियाँ विराजमान हैं। इन प्रतिमाओं की अंजनशलाका आहोर में सं० १९५५ फा० व० ९ गुरुवार के दिन महाराज श्रीविजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी के हाथ से हुई है और यहाँ ये सं० १९६४ में बैठाई गई हैं।

८ जसोल—

इस गाँव में ओसवाल जैनों के अंदाजन ५० घर हैं जो सभी तेरहपंथी–ढूंढक संप्रदाय के हैं। यहाँ के पतितावशिष्ट जिनमन्दिरों के अस्तित्व से पता लगता है कि पेश्तर यहाँ के जैन मंदिरमार्गी थे, परन्तु योग्य साधुओं का उपदेश न मिलने से वे पीछे से तेरहपंथी हो गये।

९ नाकोड़ाजी तीर्थ—

यह तीर्थ मारवाड़देश के मालानी परगने में बालोतरा रेल्वे स्टेशन से दक्षिण ३ कोश के फासले पर है। इसका प्राचीन नाम वीरमपुर नगर, या मेवानगर है। इसके चारों तरफ छोटी छोटी पहाड़ियाँ हैं, जो शहरपना के समान शोभित होती

हैं। किसी समय यह अच्छा आबाद और समृद्ध शहर था। कहा जाता है कि किसी राजा के वीरमसेन और नाकोरसेन नाम के दो राजकुमार थे। उन्होंने अपने अपने नाम से नगर आबाद करके उसका नाम वीरमपुर और नाकोरनगर[1] रक्खा। बाद दोनोंने निज निज नगर में बावनजिनालय एक एक विशाल मन्दिर बनवा के एक में चन्द्रप्रभ और द्वितीय में सुपार्श्वनाथ की भव्य प्रतिमा भगवान् स्थूलिभद्रस्वामी जी के हाथ से प्रतिष्ठा कराके विराजमान की।

नाकोडाजी तीर्थ के कारखाने की एक यादी में लिखा है कि विक्रम संवत् ९०९ में वीरमपुर में सत्ताइस सौ (२७००) घर जैनों के थे। उस वक्त में तातेरागोत्रयि हरखचंदजीने वीरमपुर के जिनालय का जीर्णोद्धार कराके, उसमें मूलनायक श्रीमहावीरस्वामी की प्रतिमा विराजमान की और पुरानी चन्द्रप्रभु की प्रतिमा भंडार दी। उसके भी जीर्ण (खंडित) हो जाने से उसे भंडार कर, सं० १२२३ में दूसरी महावीरप्रतिमा विराजमान की गई। सं० १२८० के करीब कोई आलमशाह नामक मुसलमान राजाने नाकोरनगर पर चढ़ाई की, सारे नगर को लूट के ऊजड बना दिया। उस समय संघने नाकोरा जिनालय की पार्श्वनाथ आदि १२० मूर्त्तियाँ चुपके से रात्रि में उठा कर नगर से दो कोश दूर कालीद्रह में छिपा दी। बादशाहने

---

१ यह नगर वीरमपुर से १० कोश के फासले पर है जो इस समय भूमिशायी है।

मंदिर को सूना पड़ा देख तुडवा डाला। बस, नाकोरा की आबादी उसी दिन से बरबाद हो गई। लोग नाकोरा को छोड़ कर आजीविका के निमित्त इतस्ततः बिखर गये। इधर वीरमपुर में वीरमसेन कारित जिनालय किसी अकस्मात् कारण से एकदम गिर पड़ा और कुछ भी अंश उसका बाकी नहीं रहने पाया। बाद में संघने अनेक विपत्तियों का सामना करके बड़ी मुश्किल से मंडप के सहित मध्य मूल मंदिर को फिर से तैयार कराया। उसमें प्रतिष्ठा पूर्वक प्रतिमा विराजमान करने के लिये चारों ओर गाँवों में प्रतिमाओं की निगाह करना शुरू की, परन्तु प्रतिमा हाथ नहीं लगी। इसी अरसे में नाकोरा के एक श्रावक को स्वप्न आया कि 'कालीद्रह में १२० जिनप्रतिमा सुरक्षित हैं, तुम वीरमपुर में जाकर संघ को कह देना कि वे प्रतिमा ले जा कर नव्य मन्दिर में विराजमान कर दें।'

बस, स्वप्न के अनुसार प्रातःकाल होते ही उस श्रावकने वीरमपुर जाकर संघ को सारा हाल कह सुनाया। संघने अत्यानन्दित होकर और कालीद्रह के पास जा कर, स्नात्रपूजन पूर्वक उन १२० प्रतिमाओं को बाहर निकालीं, और वीरपुर लाकर अष्टाह्निका महोत्सव के साथ संवत् १४२९ में मंदिर में विराजमान कीं। उनमें श्री पार्श्वनाथप्रतिमा को मूलनायक किये और शेष प्रतिमाओं को यथास्थान स्थापन कीं। उसी दिन से यह नगर 'नाकोरा' के नाम से सर्वत्र प्रसिद्ध हुआ, जो आज तक उसी नाम से पहचाना जाता है।

तीर्थाधिप श्रीनाकोडा—पार्श्वनाथ के मन्दिर से दक्षिण १० कदम दूर रणछोड़ का एक देवल है। उसकी भीतरी वारसाख पर विस्तृत शिलालेख[1] लगा है जो वि० सं० १६८६ चैत्रवदि ७ मंगलवार का उकेरा हुआ है। उसमें यहाँ के रावलराजाओं की वंशावली इस प्रकार दी हुई है—राजाश्रीधहड १ रायपाल २ कनकराय ३, लेणसिंह ४, छाहड ५, नींडा ६, सलखा ७,

---

१ ॐ नमः श्रीगणेशाय । सूरजवंशीय राठोड साहोसा नगपाल गोहलीपाल महाराज सिंहाजी पुत्र राजा आसथान पुत्र वाहडनिदे कानोजिया राज दीधुं. राजाश्री धहड पुत्र रायपाल, पुत्र रा० कनकराय पुत्र राजालेणसिंह, पुत्रराजा छाहड, पुत्ररा० नींडा, पुत्ररा० सलखा, द्वितीया चन्द्राराधितराउलश्रीमाल पुत्ररा० जगमालजी पुत्र रा० मंडलिक, पुत्रराज श्री भोजराज पुत्र रा० वीदा, पुत्ररा० नीसल, पुत्ररा० वरसिंघ, पुत्ररा० देवपाल पुत्रराजश्री मेघराज पुत्ररा० दुर्योधन पुत्ररा० दुर्जनसल्ल, राणी सोढी संतोषदे पुत्ररा० तेजसिंघ, द्वितीयभार्या सत्यवती राणी श्री सीसोदनी दाडिमदेवी कुक्षी पुत्ररत्नछत्रीसराजकुलीसिणगार गोत्रगोवाल प्रजापाल परमदयालु गोब्राह्मणप्रतिपालक कंठशोभित विद्युच्छ्रीवरमाल महाराउल श्री५ जुगमालजी विजयराज्ये नहुदेराणी, भटियाणी जीवंतदे, चहुआणी जमनादे, सोढी चतुरंगदे, देवडी अमोलखदे, भटियाणी सतपणादे, राणी पीपलदे, राणीदेवली कूक्षिरत्नप्रधानकुंवरश्रीभारमलजी उदयमान राउलजी स्वपुन्यार्थं स्वकुशलवृद्ध्यर्थं स्वश्रेयसपरमेश्वरभक्त्यर्थं सं० १६८६ वर्षे उत्तरगोलगते श्रीसूर्ये कुंभसंक्रांतौ वसंतर्त्तौ चैत्रवदि ७ भोमवासरेऽनुराधानक्षत्रे रवियोगे श्रीरणछोडदेवगृहं कारापितं चिरं स्थेयात् । राजाश्री आसथान पुत्र १३, त्यांरी साखो १३ राठोरांरी हुई—धहड १ धांधल २ उहड ३ वानर २ नाजा ५ गोइंदरा ६ अणंतरा ७ गूड़ाल ८ चाचिग ९ आसहोल १० जोपसा ११ वहुपसा १२ खीपसा १३ साखो तेरे, सूत्रधार गजधर कल्याण, सूत्र० सोभा, सूत्र० मेघा, सूत्र० तारा, सूत्र० गोवाल, सूत्र० हेमा

रणछोडदेवल. नाकोड़ा (वीरमपुर)

राउलश्रीमाल ८, जगमाल ९, मांडलिक १०, भोजराज ११, वीदा १२, नींसल १३, वरसिंह १४, देवपाल १५, मेघराज १६, दुर्योधन १७, दुर्जनसह्ल १८, तेजसिंह—रा० जुगमाल १९। यहाँ के राज कर्त्ताओं को राजाश्री और राउल का खिताब था ऐसा लेख से जाहिर होता है और रणछोड का देवल भी अन्तिम राउल जुममालजी का बनवाया हुआ है।

इस समय (वर्त्तमान में) नाकोड़ाजी में भव्यकोरणी, कारिगिरी और विशाल शिखरवाले ३ जिनमन्दिर हैं। उनमें नाकोड़ा पार्श्वनाथ का मदिन्र सब से अधिक सुन्दर है। इसमें मूलनायक श्रीपार्श्वनाथस्वामी की अतिप्रभावशालिनी २३ इंच बड़ी और उनके दोनों तरफ २० इंच बडी प्रतिमा विराजमान हैं जो राजा संप्रति की भराई (बनवाई) मानी जाती हैं। ये प्रतिमाँ यहाँ से १० कोश के फासले पर पश्चिम–दक्षिण कोन में स्थित ' सिणधरी ' के निकटवर्त्ती नाकोड़ा गाँव के कालीद्रह (नागह्रद) से लाकर यहाँ बैठाई गई हैं। यह तीर्थ इन्हीं भव्य मूर्त्तियों के कारण पवित्र और दर्शनीय माना जाता है। समयसुंदरजीने नाकोडा के छन्द में भी लिखा है कि " जागंतो तीर्थ पार्श्वपहु, जहां यात्रि आवे जगत सहु। मुझने भवदुख थकी छोड़ो, नित नाम जपो श्रीनाकोड़ो " इस मंदिर का सभा मंडप, नवचोकी, खेला मंडप, शृंगार चोकी और

१ किसी किसी का यह भी कहना है कि नाकोडा के पास जो नदी है उसके किनारे पर एक पुराना मकान था, उसके गिर जाने से उसके नीचे से यह प्रतिमा अपने आप प्रगट हुई थी।

झरोखा बड़ा ही सुन्दर बना हुआ है । विशेष प्रशंसा जनक तो यह है कि इसमें अंधारा विलकुल दिखाई नहीं देता। मन्दिर से दक्षिण भाग पर दो मजबूत जोड़ा जोड़ भूमिगृह (तलघर) हैं, जिनमें जिनप्रतिमा स्थापित हैं जो विक्रम की १२ वीं सीकी से १७ वीं सीकी तक की प्रतिष्टित हैं । इस मंदिर में नीचे मुताविक लेख मिलते हैं ।

१ स्वस्तिश्रीजयोमंगलाभ्युदयश्च संवत् १६७८ वर्षे शाके १५४४ प्रवर्त्तमाने द्वितीय आषाढसुदि २ दिने रविवारे राउल श्रीजुगमालजी विजयराज्ये श्रीपल्लिकीयगच्छे भट्टारक श्री यशोदेवसूरिजी विजयमाने श्रीमहावीरचैत्ये श्रीसंघेन चतुष्किका कारिता श्रीनाकोडापार्श्वनाथ प्रसादात्, शुभं भवतु उपाध्याय श्रीकनकशेखर शिष्य पं० सुमतिशेखरेण लिखितं श्रीछाजहक देवशेखरजी संघेन कारापिता, सूत्रधार फूजल भ्रातृ झांझा घटिता उत्रतकवरी ।

—कल्याण, लक्ष्मी, जय और मंगल का अभ्युदय हो । सं० १६७८ शाके १९४४ आषाढसुदि २ रविवार के दिन राउल जुगमालजी के शासन काल में पल्लकीयगच्छ में भट्टारक यशो-देवसूरिजी की विद्यमानता में श्रीनाकोडापार्श्वनाथ के प्रसाद से महावीरमन्दिर में छाजहक देवशेखरजी के संघने रंगमंडप की चोकी कराई। सूत्रधार फूजल के भाई झांझाने उत्रतकवरी (चोकी) को घड़ी । उपाध्याय कनकशेखर के शिष्य सुमतिशेखरने यह लेख लिखा ।

(रंगमंडप के एक पाट पर)

२ संवत् १६८२ वर्षे आषाढसुदि ६ सोमवारे राउलश्री जुगपालजी राज्ये श्रीपल्लिगच्छीय श्रीसंघेन श्रीपार्श्वनाथचैत्ये नंदीमंडप कारापिता। उपाध्याय श्रीसिंहलिखितं सूत्रधार मेवा, सूत्र० तारा, कारीगर करमा शुभं भवतु श्रीसंघस्य श्रियेऽस्तु।

—सं० १६८२ आषाढसुदि ६ सोमवार के दिन रावल-जुगपालजी के राज्य में पल्लिगच्छीय समस्त संघने श्रीपार्श्वनाथ के मन्दिर में नन्दिमंडप कराया। उपाध्याय श्रीसिंहने यह लेख लिखा। सिलावट मेवा, तारा, करमा ने इस मंडप को बनाया। श्रीसंघ के लिये कल्याण कारक हो।

(नन्दिमंडप के एक पाट पर)

३ आषाढादि संवत् १६८१ वर्षे चैत्रसुदि ३ दिने सोमवारे हस्तनक्षत्रे श्रीरमपुरवरे श्रीजुगपालजी विजयराज्ये श्रीपल्लिवालगच्छे भट्टारक श्री यशोदेवसूरिजी विजयराज्ये श्रीपार्श्वनाथचैत्ये श्रीपल्लिगच्छसंघेन सवासवपमहिता गुखोमना निर्गमनतुष्किका कारापिता, उपाध्याय श्रीहर्षकल्लोलगणीनां पट्ट-प्रभाकरोपाध्याय श्रीकनकशेखर नन्द्यालंकारोपाध्याय श्रीदेव-कल्लोलसूरिजी उपाध्याय श्रीकनकशेखरस्य शिष्येन उपाध्याय गुणविनेन्दरेण स्वहस्ते लिखितं. श्रीः श्रियेऽस्तु श्रीश्रावकसंघस्य शुभं भवतु. सूत्रधार धन्नापुत्र धनराज–मना–वखंत–सत्पुत्र गोमा, वच्छराज पुत्र कल्याण–भगवानदास, मनापुत्र सू० मेवा, सू० शिव-दत्त–हीरा–मनोहर–तारा, कारीगर करमादि शुभं भवतु।

—आषाढादि सं० १६८१ चैत्रसुदि ३ सोमवार हस्तनक्षत्र

के दिन रावल जुगमालजी के राज्य में वीरमपुर के श्रीपार्श्वनाथ-मन्दिर में भ० यशोदेवसूरिजी की विद्यमानता में पल्लीगच्छ संघने तीन झरोखों के सहित अतिसुन्दर निर्गमद्वार की चोकी कराई, उपाध्याय हर्षशेखर के पाटपर सूर्य के समान उ० कनकशेखर, उनके पाट को शोभानेवाले उ० देवशेखरसूरि, तथा हस्त दीक्षित शिष्य उ० सुमतिशेखरने यह लेख लिखा। श्रावकसंघ को कल्याण करनेवाली हो। सूत्रधार कला के पुत्र चतर, मना, वरजंग और तत्पुत्रोंने गजधर कर्मा की देख—रेख नीचे यह चोकी वनाई।

(झरोखे के एक पाट पर)

४ संवत् १६ आषाढादि ६७ वर्षे भाद्रपद शुक्लपक्षे श्रीनवमीदिने शुक्रवासरे श्रीवीरमपुरवरे श्रींपार्श्वनाथ—महावीरभूमिगृहे श्रीपल्लीवालगच्छे भट्टारिक श्रीयशोदेवसूरिविजयराज्ये राउलश्री तेजसीजी विजयराज्ये कारितं श्रीसंघेन पंडित सुमतिशेखरेण लिपिकृतं। सूत्रधार दाना तत्पुत्र मना धन्ना वरजंगेन कृतं भ्रातृज सोमा मेघा कला पुत्र कल्याण, भाणेज नासण श्रीपार्श्वनाथ महावीरजी रक्षा शुभं भवतु श्रीरस्तु उपाध्याय पद्मशेखरविजयराज्ये।

—आषाढादि सं० १६६७ भाद्रवा सुदि ९ शुक्रवार के दिन वीरमपुर के पार्श्व—महावीरचैत्य में भ०यशोदेवसूरि और राउल तेजसीजी के शासनकाल में संघने भूमिगृह कराया पं० सुमतिशेखरने यह लेख लिखा। उपाध्याय पद्मशेखर के समय में

सूत्रधार दाना के पुत्र मना, धन्ना, वरजंगने अपने भतीजे और भानेज के सहित इस भूमिगृह को बनाया। श्रीपार्श्व-महावीर रक्षा, शुभ और शोभा कारक हों

(भूमिगृह के एक पाट पर)

५ श्रीकीर्त्तिरत्नसूरिगुरुभ्यो नमः, संवत् १५५६ वर्षे सा० जेठा पुत्री रोहिणी प्रणमति।

—सं० १५५६ में शा० जेठा की पुत्री रोहिणी श्रीकीर्त्ति-रत्नसूरि गुरु को नमस्कार करती है—याने मूर्त्ति भराती है।

उक्त लेखों से विदित होता है कि वीरमपुर में सभी जैन पल्लीवालगच्छ के थे और नाकोड़ापार्श्वनाथ के मंदिर का काम समय समय पर पल्लीवाल गच्छ के आचार्यादिकों के उपदेश से कराया गया है।

दूसरा मन्दिर श्रीऋषभदेव भगवान् का है, जो नाकोडा-पार्श्वनाथ के मन्दिर से लगते ही पिछले भाग में है और यह 'लच्छीबाई का मन्दिर' इस नाम से पहचाना जाता है। इसकी बनावट और शिल्पकारी मनोमोहक है।

इस मंदिर के बनने के विषय में यह किंवदन्ती प्रचलित है कि—वीरमपुर-निवासी मालाशाह संकलेचा की बहिन लच्छीबाई जो विधवा और धनहीन थीं। वो एक रोज अपनी भोजाई के साथ पानी भरने को गई थी। लच्छी जल्दी जल्दी पानी भरने लगी, तब भोजाईने मस्करी में कहा कि 'क्या

तुझे मन्दिर बनवाने की ताकीदी है सो ताकीद से पानी भरती है ?' बस, लच्छीबाई से यह मश्करी सहन नहीं हुई। उसने उसी दिन से प्रतिज्ञा की कि एक मन्दिर न बनवा लूं, जब तक अन्नजल नहीं लूंगी। पूरे तीन रोज बीत जाने पर रात्रि में अधिष्टायक देवने स्वप्न में कहा—'तुं किसी बात की फिक्र न कर, तेरे घर कूलड़ी में आठ रुपये रक्खे हैं उनको कूलडी सहित सीधे मुख जमीन में गाड़ देना और जरूरत के मुताबिक निकाल कर खर्च करना। अब भूखे मरने की कोई आवश्यकता नहीं है। प्रातःकाल पारणा करके अपने अभिमत को सिद्ध कर लेना।' इस देववाक्य को विश्वास पूर्वक मंजूर करके और कूलड़ी को जमीन में गाड के प्रातःकाल में लच्छीबाईने पारणा किया। बाद में उत्तम सिलावटों को लगा कर थोडे ही वर्ष में सर्वाङ्ग सुन्दर मंदिर तैयार कराके, उसमें श्रीहेमविमलसूरि से प्रतिष्ठा करा कर मूलनायक श्रीऋषभदेवस्वामी की प्रतिमा विराजमान की।

किसी किसी का यह भी कहना है कि लच्छीबाई के कोई लडका, या लडकी नहीं थी और उसके पास चार लाख रुपयों की पूंजी थी। इससे उसने एक दिन विचार किया कि यह लक्ष्मी नश्वर है, इसकी स्थिति में कोई उत्तम कार्य कर लिया जाय तो उभयलोक में हितकर होगा। बस, ऐसा निश्चित विचार करके यह सौध—शिखरी भव्य मन्दिर बनवाया और उसमें वि० सं० १५६८ वैशाख सुदि ६ गुरुवार के दिन तपा-

गच्छीय श्रीहेमविमलसूरिजी के हाथ से प्रतिष्ठा कराके ऋषभदेवस्वामी की सुन्दर प्रतिमा विराजमान की। इसके मूलनायक श्रीऋषभदेवजी की प्रतिमा सवा पैंतीस इंच बड़ी, श्वेतवर्ण और सर्वाङ्गसुन्दर है, और इसके दोनों बगल में सवा चोवीस इंच बडी बादामी वर्ण की दो प्रतिमा स्थापित हैं। इसमें मन्दिर के बांये तरफ एक मजबूत भूमिगृह है जो संवत् १५९२ में बना है। इसमें चरणपादुका सहित ३५ जिनप्रतिमा स्थापित हैं जो सभी प्राचीन हैं। मूलमन्दिर के सिवाय इसके शेष भाग पीछे से बने हैं और उनको बनवानेवाला वीरमपुर का ही जैनसंघ है ऐसा यहाँ के उपलब्ध लेखों से पता लगता है। शिला-लेख इस प्रकार हैं—

१ संवत् १६६७ वर्षे शाके १५३३ वर्तमाने द्वितीय आषाढसुदि ६ दिने शुक्रवारे उत्तराफाल्गुनी-नक्षत्रे राउल श्रीविजयसिंहजी विजयराज्ये श्रीविमलनाथ-प्रासादे तपागच्छे भट्टारिक श्री५ श्रीविजयसेनसूरिविजयराज्ये आचार्य श्रीविजयदेवसूरिविजयराज्ये श्रीवीरमपुरवासि सकल श्रीसंघ कारापिता, शुभं भवतु, सूत्रधार कसना पत्राइणाकेन कृता, मुनि सामिदासेन लिखितं श्रेयोऽस्तु।

—सं० १६६७, शाके १५३३ द्वितीय आषाढ सुदि ६ शुक्रवार उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के दिन राउल विजयसिंहजी के शासनकाल में तपागच्छीय श्रीविजयसेनसूरिजी, तथा विजयदेवसूरिजी की विद्यमानता में वीरमपुर के संघने यह गोखडा

कराया, कसना सलावटने इसको वनाया और मुनि सामिद्रा-सने यह लेख लिखा, कल्याण के लिये हो।

(झरोखे के एक पाट पर)

२ संवत् १५६८ वर्षे आषाढसुदि ५ दिने गुरुपुष्यनक्षत्रे राउल श्रीउपकर्णविजयराज्ये श्रीविमलनाथप्रासादे श्रीतपागच्छे भट्टारिक प्रभुश्री श्रीहेमविमलसूरि शिष्यचारित्रगणीनामुपदेशेन श्रीवीरमपुरवासिसकलश्रीसंघेन कारापिता रंगमंडपः। सूत्र-धार दोलाकेन कृतं शुभं भवतु श्रीरस्तु।

—सं० १५६८ आषाढ सुदि ५ गुरुवार, पुष्यनक्षत्र के दिन राउल श्रीउपकर्ण के राज्य में तपागच्छीय प्रभुश्रीहेमविम-लसूरिजी के शिष्य चारित्रगणि के उपदेश से वीरमपुर के समस्त संघने श्रीविमलनाथ के मन्दिर में यह रंगमंडप कराया। सूत्रधार दोलाने इसको वनाया, कल्याण और शोभा कारक हो।

(रंगमंडप के एक पाट पर)

३ संवत् १६३२ वर्षे शाके १५३३ प्रचलिते वैशाखसुदि ३ दिने गुरुवारे राउलश्रीमेघराजजी विजयराज्ये श्रीविमल-नाथ प्रासादाग्रे श्रीतपागच्छाधिपति श्रीश्रीश्रीश्रीश्रीहीरविजय-सूरिविजयराज्ये श्रीश्रीश्रीखेमसागरसूरि ....श्रीवीरम-पुरसंघेन कारापिता श्रीरस्तु सूत्रधार मेदूरकेन कृता।

—सं० १६३२, शाके १५३३ वैशाखसुदि ३ गुरुवार के

रोज राउल मेघराजजी के राज्य में तपागच्छीय श्री५ हीरवि-जयसूरिजी के शासन में श्रीखेमसागरसूरिजीके उपदेश से श्रीसंघने श्रीविमलनाथ के मन्दिर के आगे त्रिचोकी कराई और सूत्रधार मेदुरकने उसको वनाई।

(बाहर की चोकी के एक पाट पर)

४ संवत् १५१२ वर्षे आषाढसुदि १५ दिने राउलश्रीवी-रमविजयराज्ये विमलनाथप्रासादे श्रीतपागच्छे विमलचन्द्रगणि उपदेशेन श्रीहेमविमलसूरिविजयराज्ये श्रीवीरमगिरि श्रीसंघेन नवचतुष्किका कारापिता, सूत्रधार धारसी पुत्र रावतकेन कृतं श्रीरस्तु शुभं।

—सं० १५१२ आ० सु० १५ के दिन राउल वीरमजी के राज्य समय तपागच्छीय विमलचन्द्रगणि के उपदेश से श्रीहेमविमलसूरिजी के शासन में वीरमपुर के संघने विमलनाथ मन्दिर की नवचोकी कराई और उसको सूत्रधार धारसी के पुत्र रावतकने वनाई, शोभा को वढाने वाली हो।

(नौचोकी के एक पाट पर)

५ संवत् १८६५ वर्षे फागुणवदि १३ रविवारे श्री बृहत्खरतरगच्छे जंगमयुगप्रधान सकलभट्टारिकशिरोमणि भट्टारिक श्री श्री १०८ श्रीश्रीजिनचंद्रसूरिजी सूरीश्वरेण सकलश्रीसंघसहितेन नालमंडप–नूतनं कारापितं चैत्यसर्वेपि जीर्णोद्धारकारापिता, लिखितं जेराज, सूत्रधार रायभद्रजी पुत्र ढोलजी कृतं वासजोधपुर श्रीरस्तु कल्याणमस्तु।

—सं. १८६५ फा० व० १३ रविवार के दिन वृहत्ख-रतरगच्छीय भट्टारक श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वरजीने समस्त संघ सहित इसका नालमंडप और जीर्णोद्धार कराया। जेराजने यह लेख लिखा और सलावट रायभद्र के पुत्र ढालजी जोधपुरवालेने बनाया। कल्याण और लक्ष्मीकारक हो।

(मुख्यमंडप के छवने के पाट पर)

प्रायः इन सभी शिला-लेखों में इसको श्रीविमलनाथ का मन्दिर लिखा है, इससे मालूम होता है कि लच्छीवाईने प्रतिष्ठा के समय किंवदन्ती के अनुसार ऋषभदेव की मूर्त्ति नहीं, किन्तु विमलनाथस्वामी की मूर्त्ति बैठाई थी। परन्तु पीछे से सं० १८६५ के जीर्णोद्धार के समय किसी कारण से उसको भंडार कर दूसरी ऋषभदेव की मूर्त्ति स्थापन की गई हो, जो इस समय इस मंदिर में विराजमान हैं।

तीसरा शान्तिनाथ का मन्दिर है, जो मालाशाह का मन्दिर कहाता है। यह दोनों मन्दिरों से बहुत ऊंची कुर्शी पर बना हुआ है, जो अपनी विशालता और कारीगिरी में अद्वितीय है। यह मन्दिर तीर्थाधिप नाकोडापार्श्वनाथ के दहिने तरफ सम्मुख बना हुआ है और बालोतरा से आते हुए एक कोश दूरी से देख पड़ता है। इसके बनने के विषय में कहा जाता है कि—

मालाशाह संकलेचा जो साधारण स्थितिवाला और वीर-मपुर में ही रहता था। एक रोज नाकोड़ा-पार्श्वनाथ के दर्शनार्थ

मंदिर में गया। मंदिर की सुन्दर छटा देख कर पासवाले श्रावक से कहने लगा कि मंदिर तो अच्छा बना है, परन्तु नीचा बहुत है। यदि ऊंची कुर्शी पर बनाया गया होता तो अच्छा रहता। श्रावकने जवाब दिया कि 'आप इससे ऊंचा मन्दिर बनवाना।' इसी प्रकार उसकी स्त्री भी दर्शन करने को आई और दर्शन करती हुई श्राविकाओं से बोली कि 'मार्ग दो मुझे चैत्यवंदन करके जल्दी घर जाना है। किसी श्राविकाने कहा– यदि उतावल हो तो नया मंदिर बनवा लो, उसमें पहले तुम दर्शन (चैत्यवंदन) करना।' बाद में दोनों घर आये और अपने अपने मेणें मारने की परस्पर बात करने लगे। अन्त में मालाशाहने अन्नजल छोड़ कर तेला किया, उसके प्रभाव से रात्रि में चक्रेश्वरीने आकर कहा कि 'अरे! क्यों चिन्ता करता है, सवेरे स्नान करने की टांकी पर जाना और रास्ते में तेरे को जो मिले उसको ले लेना, उससे तेरा अभिमत सिद्ध हो जायगा।' बस, प्रातःकाल होते ही मालाशाह जल की टांकी पर पहुंचा। वहाँ रास्ते में उसको पारस मिला और प्रसन्नता पूर्वक उसको लेकर अपने घर आया। पारणा किये बाद उस पारस से अपरिमित सुवर्ण तैयार करके, उत्तम कारीगरों को लगा कर प्रस्तुत मन्दिर को बनवाया और उसमें प्रतिष्ठोत्सव के साथ श्रीशान्तिनाथप्रभु का बिम्ब विराजमान किया।

किसी किसी का यह भी कहना है कि मालाशाह सेठ की माता नाकोड़ा–मंदिर में दर्शन करने को गई थी। उसने एक स्त्री से कहा कि यह मन्दिर नीचा बना होने से अच्छा दिखाई

नहीं देता। उस स्त्रीने जवाव में कहा—सासूजी! आप सर्व-दोष रहित मंदिर बनवाना। अफसोस, 'पुन्याशाली तो सौध-शिखरी जिनालय बनवा कर, निजोपार्जित लक्ष्मी का लाभ लेते हैं और आप उसमें दोष निकाल कर अपनी असलीयत को प्रगट करती हो।' यह वचन मालाशाह की माता के हृदय में कंटकसा चुभा और शीघ्र ही जाकर उसने मालाशाह को कह सुनाया। मालाशाहने अपनी माता के रंज को दूर करने के लिये यह अत्युच्च मन्दिर बनवा के, उसकी भारी समारोह से प्रतिष्ठा करवाई। प्रतिष्ठा के समय मेणा मारनेवालों को सुवर्ण जिह्वाएँ और याचकों को अगणित दान दिया। उसी समय का बना किसी सेवक का एक दोधक भी प्रचलित है कि—

गाय न जानुं बजाय न जानुं, मैं हूं सेवक काला।
दूर देश से याचन आयो, मोहर देवो शा माला ॥१॥

वर्त्तमान में मालाशाह स्थापित शान्तिनाथ इस मन्दिर में नहीं है। वह किसी कारण से लोप, या खंडित हो जाने से उसके स्थान पर सं० १९१० में दूसरी शान्तिनाथ–प्रतिमा विराजमान की गई है, जो ३० इंच बड़ी और सफेद वर्ण की है। इसके दोनों बगल में २४ इंच बड़ी श्वेतवर्णी दो जिन-प्रतिमा स्थापित हैं। मंदिर के दाहिने तरफ एक मजबूत बंधा हुआ भूमिगृह है, जो सं० १६६६ में बनाया गया है और इसमें २७ जिनप्रतिमा, तथा ८ चरणजोड विराजमान हैं। इस मन्दिर में नीचे मुताबिक शिलालेख उपलब्ध हैं—

१ मूलनायक प्रतिमा पर—

संवत् १९१० शाके १७७५ प्रवर्त्तमाने मासोत्तममासे माधवमासे धवलपक्षे ५ तिथौ गुरुवासरे महाराजाधिराज महाराज श्रीतखतसिंहजी जसवंतसिंहजी विजयराज्ये श्रीपालीनगरे सकलश्रीसंघगादीमहोच्छवेनांजनशलाका कृतं जोधपुरनगरवास्तव्य श्रीओशवंशे मुताजी अखयचंदजी तत्पुत्र मुता श्रीलखमीचंदजी त० मु० श्रीमुकुंदचंदजी धर्मानुरागेण महोच्छवकारापितं श्रीमहेवापरगने श्रीवीरमपुरनगरमध्ये शंखवालेचा मालाशाकारापित श्रीजिनालये श्रीशांतिनाथविंवं प्रतिष्ठितं जगद्गुरुविरुद्धारक श्रीखरतरभावहर्षगच्छेश भ० क्षमासूरिपट्टे भ० श्रीजिनपद्मसूरिभिः प्रतिष्ठितं सकलश्रेयोर्थं।

—महाराजाधिराज महाराज श्रीतखतसिंहजी और जसवंतसिंहजी के शासनकाल में सं० १९१० शाके १७७५ चैत्र सुदि ५ गुरुवार के दिन पालीनगर में सकलसंघ कारित गादी तथा अंजनशालाका महोत्सव के अन्दर जोधपुरवाले मुता अखयचंदजी, तत्पुत्र लखमीचंदजी, उनके पुत्र मुता मुकुंदचंदजीने प्रतिष्ठा कराके वीरमपुर के संकलेचा मालाशा कारित मन्दिर में श्रीशान्तिनाथ का बिम्ब स्थापन किया और खरतरभावहर्षगच्छीय क्षमासूरि के शिष्य श्रीजिनपद्मसूरिने इसकी प्रतिष्ठा की, सब को कल्याणकारी हो।

२ चरणपादुका के ऊपर—

संवत १५१५ वर्षे वैशाखवदि ५ दिने वीरमपुरे श्री

खरतरगच्छे श्रीकीर्त्तिरत्नसूरीणां स्तुगः, तत्पादुके श्रीशंख-वालेचागोत्रे सा० काजल पुत्र सा तिलोकसिंह—खेतसिंह—जिन-दास—श्रीदास—कुशलाख्येन भरापितं शाके १४३२ प्रवर्त्तमाने

—सं० १५१५ शाके १४३३ वै०व०५ के दिन खरतर-गच्छीय श्रीकीर्त्तिरत्नसूरिजी का यह स्थूभ और चरणपादुका संकलेचा काजल के पुत्र तिलोकासिंह, खेतासिंह, जिनदास, श्रीदास, तथा कुशलाने कराये ।

३ आचार्यप्रतिमा के आसन पर—

संवत् १५१८ वर्षे ज्येष्ठवदि ४ दिने उपकेशवंशे का० कुशलाकेन सपरिकरेण श्रेयोर्थं श्रीजिनभद्रसूरीश्वराणां मूर्त्तिः कारिता, प्रतिष्ठिता खरतरगच्छे श्रीजिनचंद्रसूरिभिः ।

—सं० १५१८ ज्येष्ठवदि ४ के दिन उपकेशवंशीय का० (कारभारी) कुशलाकने परिवारसहित स्वश्रेय के लिये श्रीजिन-प्रभसूरिजी की यह मूर्त्ति कराई, इस की प्रतिष्ठा खरतरगच्छीय श्रीजिनचन्द्रसूरिने की ।

४ भूमिगृह के एक छवने के पाट पर—

संवत् १६६६ वर्षे भाद्रपदशुक्लपक्षे श्रीद्वितीयादिने शुक्र-वारे श्रीवीरमपुरवरे श्रीशांतिनाथप्रासादे भूमिगृहे श्रीखरतरगच्छे युगप्रधान श्रीजिनचंद्रसूरिविजयराज्ये आचार्य श्रीजिनसिंहसूरि-यौवराज्ये श्रीराठोर श्रीतेजसिंहजी विजयीराज्ये कारितं श्री संघेन वा०श्रीगुणरत्नगणिना विनेयेन रत्नविशालगणिना, सूत्र-

धार मोरा पुत्रश्रीजोधादे, सुता पुत्र मंत्री धन्नो वीरजागेन कृतं सोभा किल्याण कला मेवा श्रीरस्तु ।

—सं० १६६६ भाद्रवासुदि २ शुक्रवार के दिन वीरमपुर के शांतिनाथ के मन्दिर में खरतरगच्छीय युगप्रधान जिनचन्द्रसूरिजी और युवराज आचार्य जिनसिंहसूरिजी के शासन में, तथा राठौर तेजसिंहजी के राज्य में श्रीसंघने यह भूमिगृह कराया । वाचक गुणरत्नगणि के शिष्य रत्नविशालगणिने यह लेख लिखा । सूत्रधार जोधा, धना वीरजाग, सोभा, कल्याण, कला, मेघाने इस भूमिगृह को बनाया, शोभा कारक हो ।

५ नाभिमंडप के बारसाख के पाट पर—

संवत् १६१४ वर्षे श्रीवीरमपुरे श्रीशांतिनाथचैत्ये मार्गशीर्षमासे प्रथम द्वितीयादिने श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनचंद्रसूरिविजयराज्ये—

सश्रीकवीरमपुरात्रधिचैत्यराजे,
श्रीतुंगरंगशिखरे नुतदेवराजे ।
सौवर्णवर्णवपुषं सुविशुद्धपक्षे,
श्रीशांतितीर्थपतिमाकृतशुद्धपक्षम् ॥ १ ॥

अर्हन्तमीशमनघं परया सुभक्त्या,
श्रीशांतिनाथममलं नमतातिभक्त्या ।
श्रीविश्वसेनतनुजन्मजुषं स्वशक्त्या,
सारंगलक्षणजिनं स्मरताभियुक्त्या ॥ २ ॥

यस्यातीतभवेप्यमुष्यमहती शक्रस्तवैर्गर्विणा,
श्येनाकारभृता कपोततनुभृद्रक्षा परीक्षा कृता ॥
भोक्ता यौगिकयोगचक्रिपदवीसाम्राज्यराज्यश्रियः,
सश्रीशांतिजिनः सुधार्मिकनृणां दातात्मसंपच्छ्रियः ॥ ३ ॥

श्रीशांतिदेवोऽवतु देवदेवो,
धर्मोपदेष्टा सुददायिसेवः ।
नतत्रिलोकीजनसेव्यमानः,
स पञ्चमश्चक्रिवरो महीयान् ४

श्रीधनराजोपाध्यायानामुपदेशेन पंडित मुनिमेरुलिखितं, सूत्रधार जोधा रंगा गदा नरसिंहकेन उत्कीरितानि काव्यानि चतुष्किका मूलपट्टके राउल श्री मेघराज–विजयराज्ये श्री शांतिनाथ–नाभिमण्डपो निष्पन्नः ।

—सं० १६१४ मगसिरमास की पहली २ के दिन खरतरगच्छीय श्रीजिनचंद्रसूरिके शासन में " लक्ष्मीयुक्त वीरमपुर की सीमा–गत प्रशंसित है देवराज जिसमें और गगनचुम्बी रंगमंडप सहित शिखरवाले चैत्यराज में विराजमान, सुवर्ण वर्ण शरीरवाले, अतिशय शुद्धपक्षवाले, शोभा, शान्ति और तीर्थ के स्वामी, कुलोद्धारक, अर्हन्त, ईश, अनघ, विश्वसेनराजा के पुत्र और हरिणलंछन वाले श्रीशान्तिनाथ को अति भक्ति तथा स्वशक्ति से नमो और कटिवद्ध होकर याद करो १–२ "

" जिस शान्तिनाथ की पूर्वभव में शक्रप्रशंसा को नहीं सहनेवाले किसी देवने श्येनाकार से कपोतपक्षीरूप रक्षा के व्याज से महान् परीक्षा की । वे तपोबल से चक्रिपद, साम्राज्य और राज्यश्री के भोगनेवाले श्रीशांतिनाथ धर्मिष्ट-जनों को आत्म-सम्पत्ति देवें ३ "

" देवाधिदेव, धर्मोपदेशक, विनम्र त्रिलोकी जन से सेवायमान, सेवा से आनन्ददायी, पांचवें चक्रवर्त्ति, श्रेष्ट श्रीशान्तिनाथ भगवान् हमारी रक्षा करें " श्रीधनराज उपाध्याय के उपदेश से पं० मुनिमेरुने ये शान्तिनाथस्तुति गर्भित काव्य लिखे-बनाये और सूत्रधार जोधा, रंगा, गदा, नरसिंहकने चोकी क पट्टपर खोदे तथा राउल मेघराजजी के राज्य समय शान्तिनाथ मन्दिर का नाभि-मंडप बनाया ।

इन सभी लेखों से साफ जाहिर होता है कि-विक्रम की १७ वीं शताब्दी तक यहाँ अच्छी आबादी थी, तभी यहाँ के संघ और धनकुबेरोंने ऐसे सुरम्य मन्दिर बनाने, या सुधराने का सौभाग्य प्राप्त किया । इसके बाद यह तीर्थस्थान (वीरमपुर) शनैः शनैः बरबादी के पींजरे में घिरने लगा । यहाँ तक की आज वह नःमशेष रह गया है । इस बरबादी का कारण इस प्रकार बना कि—

वीरमपुर में मालाशाह का एक भाई नानकजी संकलेचा रहता था, जो अगणित धन सम्पत्ति से धनकुबेर के समान माना जाता था । इसकी चोटी इतनी लम्बी और सुन्दर थी,

कि जिसे देख कर, अच्छे अच्छे भूपाल भी मोहित हो जाते थे। एक दिन वह अपने मित्रों समेत स्नान करने के लिये कुए पर गया। इसी अवसर में राजकुंवर भी कितने एक लोगों के साथ वहाँ आ पहुंचा और नानकजी की लम्बी सुन्दर चोटी को देखकर अपने साथियों से कहने लगा कि 'इस सेठ की चोटी कैसी ऊमदा और लम्बी है, इसका घोडे का ताजना बनाया जाय तो अच्छा रहेगा।' सेठ स्नान करता हुआ यह सब हाल सुन रहा था, उसने विचारा कि अब इस शहर में रहने से किसी दिन खतरे में उतरना पडेगा और इज्जत के टके हो जायंगे। अतएव इस शहर को भी बरबाद करके कहीं अन्यत्र जा बसना अच्छा है। बस, नानकजी संकलेचाने उसी दिन से अपना माल असबाब समेट कर, धीरे धीरे जैसलमेर पहुंचाना शुरु किया और दूसरे लोगों को भी उलट पलट समझा कर उनका माल भी जैसलमेर पहुंचा दिया। फिर अच्छे मुहूर्त्त में लोद्रवाजी का संघ निकालने के बहाने से २२०० जैन, और ४००० जैनेतरों को साथ लेकर नानकजीने वीरमपुर से प्रयाण किया। बन्दोबस्त के लिये वीरमपुर के रावलराजा तेजसिंहजी को भी सपरिवार साथ में लिये। संघ क्रमशः श्री लोद्रवा—पार्श्वनाथ की यात्रा करके जैसलमेर आया। नानकजीने दरबार से बात चीत करके ससंघ अपना मुकाम जैसलमेर में ही स्थिर किया। दश पन्दरा दिन बीत जाने पर रावलजीने वीरमपुर चलने को कहा। नानकजीने जबाब दिया कि—वीरमपुर से

हमारा अंजल उठ गया, अब वहाँ जाकर हमे अपनी चोटी का ताजना नहीं यनवाना।

रावलजीने निराश होकर तहकीकात की तो यह सब बनाव अपने राजकुंवर की जबान का पाया गया। रावलजीने वापिस वीरमपुर आकर राजकुमार को कहा कि तुमने मेरे शहर को बरबाद कर डाला, इसलिये आज ही तुम वीरमपुर की हद छोड कर चले जाओ। जब ससंघ नानकजी॰ सेठ यहाँ आवें तभी तुम मुंह दिखाना, वरना नहीं। इस प्रकार के राज हुकुम से राजकुमार को अपनी भूल विपयक भारी पश्चात्ताप हुआ। वह वीरमपुर से निकल कर जैसलमेर पहुँचा और उसने सेठ नानकजी से अपनी हुई भूल की माफी मांगी और वीरमपुर चलने के लिये अत्याग्रह किया। परन्तु नानकजीने वापिस चलने के विपय में साफ इन्कार कर दिया। राजकुमारने कहा—अब मुझे क्या करना चाहिये ? सेठने कहा—आप भी जैसलमेर में ही रहिये और दरबार की सेवा करिये। राजकुमारने सेठ के प्रसंग से जैसलमेर—दरवार की सेवा करना शुरु की। दरबारने योग्य समझ कर राजकुमार को अपनी लड़की परणा दी। इधर वीरमपुर की जनताने विचार किया कि शहर से ८००० घर और राजकुमार भी चले गये, अतएव अपने भी ठहर के क्या करें ? । बस, धीरे धीरे बाकी लोग थे वे भी वाड़मेर जैसलमेर आदि गाँवों में जा बसे, सारा शहर शून्य हो गया। तब से अब तक वह शून्य ही रहा, आबाद नहीं हुआ।

यहाँ मन्दिरों के चारों तरफ एक विशाल धर्मशाला है, जो समस्त जैनसंघ के तरफ से सं० १९६६ में वनी है, और इसमें अन्दाजन दो सौ (२००) कोठरियाँ हैं, जिनमें यात्री आनन्द से ठहरते हैं। इसका वहीवट प्रथम जसोल का जैन-संघ करता था, वाद में कुछ अरसे तक वालोतरावाले श्री पूज्य मदनसूरि और उ० जुहारमलजी यती के हस्तक रहा। सं० १९८२ के साल से वालोतरा संघ के हाथ नीचे मुता वछराजजी मिसरीमलजी इसका वहीवट करते हैं। यहाँ सं० १९४७ से पोपवदि १० का प्रतिवर्ष मेला भराता है, जिसमें अन्दाजन १०,००० यात्री तक एकत्रित होते हैं और जुदे जुदे सद्गृहस्थों के तरफ से नोकारसियाँ होती हैं। इस तीर्थ की रक्षा के लिये मालाणी, सवाणची, वाड़मेर और लिणथरी के जैन वस्तीवाले सभी गाँवों में हरएक विवाह में चवरी पर १) एक रुपया लागा लगा हुआ है, जो मेले के अवसरमें तीर्थकमेटी वसूल करती है और इसके उद्धार कार्य में उसको खर्च करती है।

१० तीलवाड़ा—

यहाँ ओसवाल जैनों के २५ घर हैं, जो मंदिरमार्गी साधु साध्वियों के द्वेषी और तेरहपंथी संप्रदाय के हैं। गाँव के वाहर लूनी नदी है, उसके कांठे पर मालानी के अधिष्ठायक राजा मल्लिनाथ का मन्दिर और धर्मशाला है। यहाँ प्रतिवर्ष चै० व० १३ से चै० सु० १३ तक भारी मेला भराता है। जिसमें दूर दूर देशों के पशु (घोड़े, ऊंट, बैल आदि) विकने के लिये

आते हैं और उनके व्यापारीयों व खरीददारों की ३० या ४० हजार तक की संख्या हो जाती है। इसके लिये तीलवाड़ा स्टेशन से खास रेल्वे सारे दिन चालु रक्खी जाती है। मल्लि-नाथ राव सलखाजी के वडे पुत्र थे और वे शाक्तमत (कूडापंथ) के उपासक थे। इनके मृत्यु के बाद इनका नाम कायम रखने के लिये मालानी परगने में यह मेला जारी किया गया था, जो अब तक बराबर जारी है।

११ वाएतु—

इस गाँव में ओसवाल जैनों के ३५ घर हैं, जो पंचपदरा, भाद्राजून आदि गाँवों से यहाँ व्यापार के लिये आकर वस गये हैं। गाँव में जिनालय, या उपाश्रय आदि नहीं है और न साधु साध्वियों के उतरने लायक कोई स्थान ही है। इस गाँव के जैन होली के दिनों में स्त्रियों का वेश पहन कर मध्य बाजार में हजारों जनता के बीच सारी रात हीजडों के समान नाचने, नचाने में पाप नहीं समझते। परन्तु जिनमन्दिर बनवाने, मंदिरमार्गी साधु-साध्वियों को वसति देने और आहार वोहराने में पाप समझते हैं। यहाँ गाँव से लगते ही जोधपुर रेल्वे का स्टेशन और पोस्टऑफिस भी है।

१२ वाडमेर—

यह प्राचीन और अच्छा आवाद कस्वा है। विक्रम की १३ वीं सीकी में राजा वाहड-परमारने इसको वसाया था। इसके पास एक छोटी पहाडी पर, उसी समय का छोटा किला

भी बना हुआ है। इस पर क्रमशः चौहानों और गोहिलों का भी अधिकार रह चुका है। राव सलखाजी के वडे पुत्र राव मल्लिनाथने खेडनगर के साथ इसको भी अपने अधिकार में ले लिया, जब से अब तक इस पर जोधपुर का अधिकार है। यहाँ जोधपुर—हकुमत का सदर स्थान है, इसमें आबादी ३ हजार घरों की और आबाद घर एक हजार हैं। गाँव से लगता ही जोधपुर रेल्वे का स्टेशन, पोष्टऑफिस, तारऑफिस और सरकारी हिन्दी अंग्रेजी स्कूल भी है। स्टेशन के पास एक सराय है, जो वि० सं० १९८४ में जैसलमेर के रहनेवाले महेसरी सेठ गिरधारीलाल नरसिंगदास छिंदवाडावाले की यादगार में बनाई गई है।

यहाँ वीसा ओसवाल जैनों के ४०० घर हैं, जिनमें स्थानकवासी २२ और तेरहपंथी के १३ घर हैं, शेष सभी मन्दिरमार्गी हैं, जो अच्छे श्रद्धालु और विवेकी हैं। शहर में दो धर्मशाला, चार उपाश्रय और छोटे वडे ७ जिनमन्दिर हैं। अंचलगच्छ की पोषाल में मूलनायक श्रीपार्श्वनाथ की १२ अंगुल वडी श्वेतवर्ण प्रतिमा विराजमान है, जो प्राचीन है। परन्तु यहाँ सं० १९७६ आषाढवदि ७ के दिन स्थापन हुई है। यति इन्द्रचंदजी के उपासरे में मूलनायक श्रीचन्द्रप्रभस्वामी की १२ अंगुल वड़ी श्वेतवर्ण मूर्त्ति है, जो विक्रम की १८ वीं सीकी में प्रतिष्ठित हुई है। अंचलगच्छीय शिखरवद्ध जिनालय में मूलनायक श्रीपार्श्वनाथ की प्रतिमा स्थापित है, जो सवादो फुट बडी, सफेदवर्ण और प्राचीन है। यतिनेमिचन्द्रजी के उपाश्रय

के एक कमरे में दो फुट बड़ी बादामी रंग की श्रीपार्श्वनाथप्रतिमा विराजमान है, जिसकी अंजनशलाका जैसलमेर के अमरसागर में श्रीपूज्य जिनमुक्तिसूरि के हाथ से सं० १९२९ में हुई है। खरतरगच्छीय-उपाश्रय में मूलनायक श्रीशान्तिनाथप्रभु की दो फुट बड़ी श्वेतवर्ण प्राचीन प्रतिमा स्थापित है। सब से प्राचीन बड़े मन्दिर में श्रीऋषभदेवस्वामी की श्वेतवर्ण एक हाथ बड़ी प्रतिमा विराजमान है, जो अति प्राचीन है। इस विशाल जिनालय के रंग-मंडप के एक पाट पर लिखा है कि—

संवत् १६७८ वर्षे माघसुदि १५ रविवासरे खरतर-गच्छभट्टारकीय पुष्पनक्षत्रे राउलश्रीउदैसिंघजी विजयराज्ये श्रीसुमतिनाथनउ नवचोकिउ श्रीसंघ करावउ, सूत्रधार पीमापुत्र हेमा नवउ कीधुं सूत्रधार नारायण सायइ।"

इस लेख में इस जिनालय को सुमतिनाथ का मन्दिर लिखा है, इससे जान पड़ता है कि—प्रथम इसमें सुमतिनाथ की मूर्त्ति स्थापित होगी, परन्तु वो खंडित हो जाने से उसके स्थान पर पीछे से यह श्रीऋषभदेवस्वामी की मूर्त्ति बैठाई गई है। इनके अलावा दादाजी टोंक पर खरतरगच्छीय दादाओं के चरण और उसके पिछले भाग में पाषाणमय छोटी छोटी पांच प्रतिमा स्थापित हैं, जो पंचतीर्थी के नाम से पहचानी जाती हैं।

यहाँ चारों उपाश्रयों में यति मौजूद हैं, जो मिलनशील हैं। परन्तु उनमें भी आचार्यभट्टारकशाखा के खरतरगच्छीय यति नेमिचन्द्रजी अच्छे योग्य और विद्याविलासी यति हैं। खरत-

रगच्छ के होने पर भी ये सब गच्छवाले योग्य साधुओं की सेवा करने का लाभ हार्दिक प्रेम से लेते और सब का उचित विनय सांचवते हैं। ये पुस्तक निर्माण और प्रकाशन के भी बड़े प्रेमी हैं। अब तक इन्होंने भजन, नाटक, और ज्योतिष आदि की कई पुस्तकें रच कर प्रकाशित की हैं।

१३ भाडको—

यह जोधपुरस्टेट के बाडमेर परगने का छोटा गाँव है। इसमें ओसवाल जैनों के २० घर, एक उपासरा और एक छोटा जिनमन्दिर है, मन्दिर में मूलनायक श्रीनेमनाथस्वामी की बादामी रंग की एक हाथ बड़ी सुन्दर प्रतिमा स्थापित है, जो सं० १९२९ में श्रीपूज्य जिनमुक्तिसूरिजी के हाथ से प्रतिष्ठित हुई है।

१४ शिव (शिवपुरी)—

यह जोधपुर रियासत की हकुमत का सदर स्थान है, जो जोधपुर से पश्चिम में जैसलमेर और सिन्ध की सरहद पर बसा हुआ है। यह बाडमेर रेल्वे स्टेशन से ३२ मील उत्तर में है। वि० सं० ९०० में इसको जोगी कोमनाथने महादेव के नाम से बसाया था। पहले इसका नाम शिवपुरी, या शिववाडा था, परन्तु वर्त्तमान में यह ‘ शिव ’ नाम से प्रसिद्ध है। इसमें कास्तकारों के ४० घरों के सिवाय किसी सभ्य जाति का निवास नहीं है। शिर्फ एक घर ओसवाल का है, जो यहाँ का वासी नहीं है। गाँव के बाहर एक अच्छा तालाव है,

जिसमें बारहों महिना पानी भरा रहता है और इसके चारों तरफ का प्रदेश पहाडी (मगरेली) भूमिका है।

१५ बींजोराई—

जैसलमेर रियासत की हुकुमत का यह सदर स्थान है, जो प्राचीन और ऊजड़प्राय है, सैंकडों, मकान यहाँ पतिता-वशिष्ट पड़े हैं, जो अच्छी नकसीवाले और बहुत लागत के हैं। गाँव के बाहर लगते ही बंधे हुए चार पांच तालाव है जिनमें दो दो वर्ष तक पानी भरा रहता है। विक्रम की तेरहवीं शताब्दी में पल्लीवाल ब्राह्मणों के यहाँ १०,००० घर वसते थे, जो धनसमृद्धि में धनकुबेर की समता रखते थे। परन्तु बार बार दुष्काल और चोरों की धाडें पड़ने के कारण वे सब दूर देशान्तरों में जा कर वस गये। इस समय यहाँ आवाद घर २० हैं, जो नीच कोम के हैं। यहींसे मारवाड की हद मिट कर जैसलमेर की हद शुरू होती है।

१६ देवीकोट—

जैसलमेर रियासत में यह पुराना कसवा है, जो किसी समय अच्छा आबाद शहर था। वर्त्तमान में यहाँ ओसवाल जैनों के अच्छे भावुक और श्रद्धालु १९ घर हैं। जो सभी खरतरगच्छ के हैं। गाँव में एक छोटे शिखरवाला सुन्दर जिनालय है जिसमें मूलनायक श्रीऋषभदेवस्वामी की श्वेतवर्ण एक वेंत बड़ी प्रतिमा विराजमान है। इस मन्दिर के दहिने तरफ लगते ही जोडा—जोड

दो उपाश्रय हैं, जिनमें एक अच्छा और दूसरा जीर्ण-शीर्ण है। यहाँ के उपलब्ध लेख—

१ संवत् १८६० मिति वैशाखमासे सुदिपक्षे ७ तिथौ गुरुवारे महाराजाधिराज महारावल श्रीपुंजराजजी विजयराज्ये श्रीदेवीकोटनगरे समस्त श्रीसंघेन श्रीऋषभजिनदेवगृहं कारितं, प्रतिष्ठितं च श्रीवृहत्खरतरगच्छाधीश भट्टारक श्रीजिनचंद्रसूरि पट्टप्रभाकर श्रीजिनहर्षसूरिभिः। श्रेयोस्तु सर्वेषां शुभं भवतु श्रीः श्रीः।

—सं० १८६० वै० सु. ७ गुरुवार के दिन महारावल पुंजराजजी के राज्य में देवीकोट में समस्त संघने श्रीऋषभदेवजी का मन्दिर बनवाया और उसकी प्रतिष्ठा खरतरगच्छीय भ० श्री जिनचन्द्रसूरि के शिष्य जिनहर्षसूरिजीने की। सब को कल्याण और शुभ कारक हो।

२ श्रीमद्विघ्नविच्छेदाय नमः। श्रीमन्नृपतिवीरविक्रमादित्य संवत्सरात् १८६० शालिवाहनकृतशाके १७७५ प्रवर्त्तमाने मासोत्तममासे वैशाखसुदि ७ दिने श्रीदेवीकोटमध्ये श्रीऋषभदेवस्य मंदिरबिम्बसहितं श्रीसंघेन कारापितं, प्रतिष्ठितं च श्रीवृहत्खरतरगच्छाधीशेन जं० यु० भ० श्रीजिनहर्षसूरिणा तत्पदप्रभाकर जं० यु० भ० श्रीमहेन्द्रसूरिभिः।

३ संवत् १८६७ वर्षे चैत्रवदि ८ दिने पधार्या महामहोत्सवेन तत्र मंदिरस्य पुनः गुरुस्थूभस्य जीर्णोद्धारः कारापितं

त्तठे श्रीसंघरे माहोंमांहि दोनांही वासरे घड़ा था, सु एकमेक किया, वडो जस हुओ, मास १ रह्या, धर्मरी महिमा घणी हुई, खमासणा प्रमुखरी भक्ति विशेष सांचवी तस्य प्रसादात् श्रीसंघरे सदा मंगलमाला भवतुतरां श्रीरस्तु कल्याणमस्तु ।

दूसरा और तीसरा लेख एक ही शिला में उकेरा हुआ है। दूसरे लेख का मतलब प्रथम शिलालेख में आ चुका है। तीसरे शिलालेख का भाव यह है कि 'सं० १८९७ चैत्रवदि ८ के दिन श्रीपूज महेन्द्रसूरि सामेला के साथ आये उन्होंने दोनों वास की जुदी तडों को एक करके देवीकोट में गुरुस्तूप का फिर से जीर्णोद्धार कराया। इससे भारी यश मिला, एक महिना मुकाम रहा, धर्म की महिमा खूब हुई, और संघने खमासमणा प्रमुख सेवा अच्छी की जिससे श्रीसंघ को हमेशा मांगलिक-माला हो।'

(मन्दिर की दहिने भाग की भींत पर)

४ श्रीविघ्नविच्छेदेभ्यो नमः। संवत् १८६३ वर्षे शाके १७२८ प्रवर्त्तमाने मार्गशीर्षमासे शुक्लपक्षे १० तिथौ गुरुवासरे श्रीबृहत्खरतरगच्छीय सुश्रावक वरढीयागोत्रीय सं० शोभाग-चंद रूपचंदाणी 'वेक्कीबाईरत्नलघुपौषधशाला' कारापितं श्रीदेवीकोटमध्ये जंगमयुगप्रधान भ० श्रीजिनहर्षसूरिजी जयतु, कारीगर देवजी रासाणी प्रकुर्वे।

—विघ्ननाश करने वाले को नमस्कार हो। सं० १८६३, शाके १७२८ मगसिर सुदि १० गुरुवार के रोज बृहत्खरतर-गच्छीय वरढीया गोत्रोत्पन्न संघवी सोभागचंद रूपचंदजीने देवी-

कोट में 'वेकीवाईरत्नलघुपौषधशाला' नामक बनवाई । जंगम-युगप्रधान भ० श्रीजिनहर्षसूरि जयवंत रहो, कारीगर देवजी रासाणीने इसको बनाई ।

५ संवत् १८६५ वर्षे शाके १७३१ प्रवर्त्तमाने मासोत्तमासे ज्येष्ठमासे, शुक्लपक्षे रसतिथौ शनिवासरे जंगमयु० भट्टारकपुरंदर भट्टारक श्री श्री श्रीजिनलाभसूरिजी, तच्छिष्य पं० प्र० श्री पुण्यराजजी गणि, तच्छिष्य पं. प्र. श्रीनेमिचंद्रजी मुनि, तच्छिष्य पं० प्र० सदानंद चिरं वखता सहितेन श्रीदेवीकोटमध्ये चतुर्मासी कृता ।

—सं० १८६९ शाके १७३१ ज्येष्टसुदि ९ शनिवार के रोज श्रीजिनलाभसूरिजी के प्रशिष्य के शिष्य पं० सदानंदने वखता के सहित देवीकोट में चातुर्मास ठाया ।

(जीर्ण उपाश्रय की भींत पर)

यहाँ पेस्तर जैनों के वहुत घर थे परन्तु चोरों की धाडों और दुष्कालों के अधिक पड़ने से वे सब इतस्ततः विखर गये । यहाँ खरतरगच्छीय जिनकुशलसूरिजी का स्तूप भी है, जो सं० १८७४ में प्रतिष्ठित हुआ है । यह गाँव जैसलमेर से १२ कोश दूर दक्षिण पूर्व की तरफ स्थित है ।

१७ जैसलमेर—

भारतवर्ष में मेवाड, मारवाड, वीकानेर और जयपुर के समान यह भी राजपुताने का प्रसिद्ध राज्य है, जो विस्तार में १६०३२ वर्गमील है । इसके उत्तर सीमान्त में पंजाब का भाव-

लपुर–स्टेट, पश्चिम में सिन्धप्रदेश, दक्षिण–पूर्व में मारवाड राज्य और उत्तर–पूर्व में बीकानेर का राज्य है। इस राज्य की जन-संख्या सन् १९२१ की गणनानुसार ७३३३० है। सं० १२१२ में रावल दूसाजी के बडे पुत्र जैसलने अपने भतीजे महारावल भोजदेव को शहाबुद्दीनगोरी की सहायता से मार कर, लोध्रवपुर पर अपना अधिकार जमाया। परन्तु उसमें रहना ठीक न समझ कर, लोध्रवा से १० माइल दूर एक टेकरी पर किला बंधा कर और अपने नाम से 'जैसलमेर कस्बा' नया बसा कर राज किया। तब से अब तक यहाँ उसीके वंशजों का राज्य है। जैसलभाटी से ले कर अब तक इस गादीपर ३८ राजा हो चुके हैं। वर्त्तमान नरेश महाराजाधिराज महारावल सर जवाहिरसिंहजी बहादुर के. सी. एस. आई हैं, जो वि० सं० १९७१ में राज्य गादी पर विराजमान हुए हैं। जैसलमेर में पहले २७०० घर श्वेताम्बर जैनों के आबाद थे और वे कई गच्छों में विभक्त थे। जैनों के प्राबल्य से शहर में कई उपाश्रय बने हुए थे और उनमें यति स्थायी रूपसे रहते थे। जैनों की कमी होने के समय, सार संभाल न होने के कारण कई उपाश्रयों का तो नामनिशान भी नहीं रहा। इस समय यहाँ पर १८ उपाश्रय हैं—

१ भट्टारकगच्छ का उपासरा	१० गुजराती लोंकागच्छ का
२ आचार्यगच्छ का बड़ा उ०	११ लालाणियों का उपासरा
३ आचार्यगच्छका छोटा उ०	१२ वर्द्धमानपाडा का उपासरा
४ तपागच्छ का बडा उ०	१३ काचवापाडा का उपासरा
५ तपागच्छ का छोटा उ०	१४ वेगडगच्छ का उपासरा

६ पद्मादे का उपासरा	१५ डूंगरसीजी का उपासरा
७ वरढीयों का उपासरा	१६ किले का उपासरा
८ समयसुंदरजी का उपा०	१७ थीरूशाह का उपासरा
९ नागोरीलोंकागच्छ का	१८ तिलाणियों का उपासरा

इनमें से भट्टारकगच्छ और तपागच्छ के उपाश्रय में दो तीन यति रहते हैं, शेष खाली पडे हैं। यहाँ भट्टारकखरतर-गच्छीय यति वृद्धिचंदजी वयोवृद्ध, मिलनशील और अच्छे सुशिक्षित हैं तथा उनके शिष्य लखमीचंद भी योग्य हैं। इन्होंने अपने यतित्व संवन्ध को अब तक वनाये रक्खा है। आचार्य-गच्छ के वडे उपाश्रय में श्रीविमलनाथ का, और भट्टारकगच्छ के उपाश्रय में श्रीगोडीपार्श्वनाथ का देहरासर भी है जिनमें धातु और पाषाणमय जिन प्रतिमाएँ स्थापित हैं, जो विक्रम की १५ वीं सीकी से १९ वीं सीकी तक की प्रतिष्ठित हैं। इन के अलावा सेठ थीरूशाह, सेठ केसरीमलजी, सेठ चांदमलजी,

---

१ श्रीगणेशायनमः, संवत् १७८१ रा, शाके १६८६ प्रवर्त्तमाने मासोत्तम-मासे मृगसिरमासे शुक्लपक्षे सप्तमितिथौ गुरुवासरे श्रीजैसलमेरनगरे महाराजा-धिराज महारावलजी अखैसिंघजी विजयराज्ये श्रीखरतर आचार्यगच्छे श्रीजिन-चंदसूरिविजयराज्ये श्रीजिनसागरसूरिशाखायां वाचक माधवदासजीगणि शिष्य पं० नेतसीगणि शिष्य उदयभाण; श्रीरावलजी नेतसीने उपासरो कराव दीधो। सं० १७८१ रे मिति मिगसिर सुदि ७ उपासरेरो काम झाल्यो। पोह वदि ४ वार-सोम पुष्यनक्षत्रादिने उपासरेरी रांग भराई। संवत् १७८४ रे वैशाख वदि ७ उपासरेरो काम प्रमाण चढयो, ऊपरठाई छडीदार अखो मोहनाणी, सिलावटो धीरो नथवाणी. यावज्जंबूद्वीपो यवन्नक्षत्रमंडितो मेरुः यावच्चंद्रादित्यौ तावदुपाश्रय स्थिरी भवतु, लिखितं पं० उदेभाणगणिभिः। शुभं भवेत् श्रीसंघस्य।

सेठ अखयसिंहजी, सेठ रामसिंहजी, सेठ धनराजजी, इन साहूकारों की हवेलियों में भी एक एक गृहमन्दिर है जिनमें धातुमय जिनमूर्त्तियाँ विराजमान हैं। इनके अलावा शहर में एक छोटा शिखर बद्ध जिनमन्दिर है, जो तपागच्छ का मंदिर कहलाता है। इसमें मूलनायक श्रीसुपार्श्वनाथजी हैं। जैसलमेर में पटवा बडे नामी धनकुबेर हो गये हैं, इस समय उनकी हवेलियाँ यहाँ मौजुद हैं, जो अपनी विशालता और शिल्पकारी में अद्वितीय हैं। इनकी ऊंचाई और नक्सी की बराबरी में अच्छे अच्छे राजाओं के महल भी नहीं पहोंच सकते।

जैनज्ञानभंडारों के लिये जैसलमेर सारे भारतवर्ष में अद्वितीय माना जाता है। यहाँ के ज्ञानभंडारों की प्रशंसा पाश्चात्य (यूरोपियन) विद्वान भी मुक्तकंठ से करते हैं। यहाँ के ज्ञानभंडारो में ताड़पत्र पर लिखे हुए प्राप्य और अप्राप्य हजारों ग्रन्थों का संग्रह है। तपागच्छ के उपासरे में तपागच्छीयभंडार १, आचार्यगच्छ के वडे उपासरे में आचार्यगच्छीयभंडार २, भट्टारकगच्छ के उपासरे में बृहत्खरतरगच्छीयभंडार ३, लोंकागच्छ के उपासरे में लोंकागच्छीयभंडार ४, डूंगरसीजी के उपासरे में डूगरसीज्ञानभंडार ५, थीरूशाहसेठ की हवेली में थीरूशाहज्ञानभंडार ६ और किले के संभवनाथजी के मंदिर के भूमिगृह में बृहदज्ञानभंडार ७ एवं सात ज्ञानभंडार मौजूद हैं जिन में किले के संभवनाथ–भूमिगृह का भंडार सब से वड़ा और उसमें सभी ग्रन्थ ताडपत्र पर ही लिखे हुए हैं। इन भंडारों पर जैसलमेर–संघ की देखरेख है, अतः संघ की

रजा सिवाय खोल कर किसीको नहीं बताये जावे। इनके दर्शनाभिलाषियों को संघ की रजा प्राप्त करना पडती है।

जैसलमेर का किला बडा मजबूत बंधा हुआ है और इस में प्रवेश -मार्ग से ऊपर तक थोडी थोडी दूरी पर चार पोले हैं जिनमें सरकारी पहरेदार रहते हैं। हाथीपोल और सुरजपोल के बीच पुरुष स्त्रियों का जैलखाना और उसके पास ही तोपखाना है। चौथी हवापोल की समतल भूमि पर राजमहल और हवा महल बने हुए हैं। तृतीय भूतापोल के पास हिन्दुदेवों के स्थान और एक पतितावशिष्ठ उपाश्रय है। यह किला दो वरते कोटवाला है और द्वितीय किले में जैनेतरों की अन्दाजन ६०० घरों की आबादी है जिनमें आबाद घर ४०० हैं। कहा जाता है कि भीतरी किले का कोट और राजमहल सांडेशाहसेठने बनवाये हैं। किले में जैनों के उत्तम कारीगिरी और उच्च शिखरवाले आठ जिन मन्दिर हैं। इन्हीं के कारण जैसलमेर पवित्र तीर्थ माना जाता है। इन मंदिरों का संक्षिप्त हाल इस प्रकार है कि—

१ श्रीचिन्तामणि पार्श्वनाथ का मन्दिर

यह बावनजिनालय है, इसका दूसरा नाम 'लक्ष्मण विहार' है। इसे रांका गोत्रीय ओसवाल जयसिंह नरसिंह आदिने बनवाया और वि० सं० १४७३ में जिनचन्दसूरि के हाथ से इस की प्रतिष्ठा करवाई। मूलनायक श्रीचिंतामणिपार्श्वनाथ की दो हाथ बडी मोती वर्णवाली वेलुमय सुन्दर प्रतिमा विराजमान है, जो वि० सं० २०० की प्रतिष्ठित है

और सं० १२१२ में लोध्रवपुर से जैसलमेर लाई गई है। जैसलमेर के तीर्थनायक यही माने जाते हैं।

२ संभवनाथजी का मन्दिर।

इसको चोपडागोत्रीय ओसवाल हेमराज पूना आदिने बनवाया है और इसकी प्रतिष्ठा सं० १४९७ में खरतरगच्छीय जिनभद्रसूरिजीने की है। इसके भूमिगृह में जैसलमेर का सब से बड़ा सुप्रसिद्ध ज्ञानभंडार सुरक्षित है। इस मंदिर की प्रतिष्ठा के साथ जिनभद्रसूरिजीने ३०० नूतन जिनप्रतिमाओं की भी अंजनशलाका की थी।

३–४ शान्तिनाथ और अष्टापद का मंदिर।

ये दोनों मंदिर एक ही अहाते में ऊपर नीचे हैं। नीचे अष्टापद और ऊपर शान्तिनाथ का है। इनको संखवालेचा गोत्रीय ओसवाल खेता और चोपडागोत्रीय ओसवाल पांचा ने बनवाये हैं। इनकी प्रतिष्ठा सं० १५३६ में हुइ है। अष्टापद के मंदिर में मूलनायक श्रीकुन्थुनाथ की प्रतिमा स्थापित है। इस जिनालय के प्रतिष्ठाकार खरतरगच्छीय श्रीजिनसमुद्रसूरि और जिनमाणिक्यसूरिजी हैं।

५ चन्द्रप्रभस्वामी का मन्दिर।

यह मन्दिर तीनखंडवाला, उत्तम कारीगिरी वाला और अति विशाल है। इसके तीनों खंड में प्रतिदिशा में श्रीचन्द्रप्रभस्वामी की एक एक प्रतिमा स्थापित है। इससे यह 'चतुर्मुख–

विहार' के नाम से पहचाना जाता है। इसे भणसालीगोत्रीय साहूकारोंने बनवाया है और इसकी प्रतिष्ठा सं० १५०९ में संघवी वीदा भणसालीने कराई थी और खरतरगच्छीय जिनभद्रसूरिजीने प्रतिष्ठा की थी। इसके द्वितल भूमि की एक कोठरी में धातुमय पंचतीर्थियों और प्रतिमाओं का खासा संग्रह है जो प्राचीन और अपूज रहती हैं।

६ शीतलनाथजी का मन्दिर।

इसके मूलनायक धातुमय श्रीशान्तिनाथप्रभु हैं, जो सं० १५६६ के प्रतिष्ठित हैं। इसको डागागोत्रीय ओसवाल सेठोंने बनवा के सं० १५८१ में प्रतिष्ठित किया है, ऐसा वृद्धिरत्नमाला में लिखा मिलता है। यह मन्दिर भी अपनी उच्चता और सज-धज में निराला ही है।

७ ऋषभदेवजी का मन्दिर।

इसको गणधर चोपडागोत्रीय सेठ धन्नाशाह ओसवालने बनवाया है, जो कोरणी-धोरणी में अत्युत्तम है। इसका दूसरा नाम 'गणधरवसही' है। समयसुन्दरोपाध्याय रचित 'श्री आदिनाथस्तवन' में लिखा है कि सच्चूगणधर और उसके भतीजे शा० जयन्तने इसको बनवाया और सच्चू के पुत्र धमसी, जिनदत्त, देवसी, तथा भीमसीने सं० १५३६ फागुणसुदि ५ के दिन श्रीजिनचन्द्रसूरिजी के हाथ से इसकी प्रतिष्ठा कराके लक्ष्मी का लाभ लिया।

यह छोटा, पर सुन्दर है और किले के जैन-मन्दिरों से

८ श्री महावीरजी का मन्दिर । अलग है। किले में जाते समय राजमहलों के दहिने तरफ की एक गली में स्थित है। जिनसुखसूरि कृत 'जैसलमेर-चैत्यपरिपाटी' के लेखानुसार इसको बरडीयागोत्रीय ओसवाल सेठ दीपाने बनवा के सं० १४७३ और वृद्धिरत्न-माला के लेखानुसार सं० १५८१ में प्रतिष्ठा कराई। इन आठों जिनालयों की प्रतिमा-संख्या इस प्रकार है—

श्रीजिनसुखसूरिकृत- 'जैसलमेरचैत्यपरिपाटी'		यतिवृद्धिचन्द्ररचित- 'वृद्धिरत्नमाला'	
मन्दिर	प्रतिमा	मन्दिर	प्रतिमा
(१)	६१०	(१)	१२९२
(२)	९५३	(२)	६०४
(३)	६४०	(३)	८०४
(४)	४२९	(४)	४४४
(५)	८०९	(५)	१६४९
(६)	३१४	(६)	४३०
(७)	६३१	(७)	६०७
(८)	२१२	(८)	२९५

ऊपर मुताबिक सं० १७७१ में बनी जैसलमेर-चैत्यपरिपाटी में ४५१४, और वर्त्तमान वृद्धिरत्नमाला-स्तवनावली में ६०८१ जिन प्रतिमाओं की संख्या बताई गई है। इसमें शहर के देहरासरों की छोटी बड़ी अन्दाजन १२०० जिन प्रतिमाओं

की भी संख्या शामिल कर दी जाय, तो जैसलमेर में ७२८१ जिन प्रतिमाओं के दर्शन होते हैं। इसलिये इस तीर्थ को भी एक प्रकार का सिद्धगिरि का धाम ही समझना चाहिये। यहाँ के सौधशिखरी जिनमन्दिर और उपाश्रयों के विस्तृत प्रशस्तिलेख तथा जिनप्रतिमाओं के अनेक लेख देखने और मनन करने के जिज्ञासुओं को पूरणचन्द्रनाहर संग्रहित 'जैनलेखसंग्रह' का तृतीयखंड मंगा कर देख लेना चाहिये।

१८ लोध्रवाजी तीर्थ—

यह स्थान किसी समय बडाभारी आवाद शहर था और यहाँ लोध्र, या लौद्र जाति के राजपूतों की मुख्य राजधानी थी। वि० सं० १०८२ में रावल देवराज भाटीने लोद्र सरदारों को निकाल कर, लोद्रवा में स्वयं राज्य गादी कायम की। देवराज-भाटी के समय में यह नगर अच्छा समृद्धिशाली था। इसके बारह प्रवेश द्वार थे, इसका ध्वंसावशिष्ट चिह्न आज भी जैसल-मेर के उत्तर पश्चिम तरफ दश माईल तक दिखाई देता है। भोजदेवरावल के गादी बैठने पर उसके काका जैसलभांटीने महम्मदगोरी की सहायता से लोध्रवा पर चढ़ाई की और रावल भोजदेव को मार कर, तथा स्वयं रावल का टाइटल धारण कर कुछ दिन राज्य किया। बाद में लोध्रवा को ठीक न समझ कर और अपने नामसे जैसलमेर कसवा नया वसा कर, उसमें

---

१ भावलपुर स्टेट के दैरावर (देवगढ) में प्रथम भाटी राजपूतों की राजधानी थी। पश्चात् इन्होंने लोध्रराजाओं से लोध्रवपुर को छीन कर अपनी राजधानी लोध्रवपुर में कायम की।

अपनी गादी कायम कर ली। इस युद्ध के समय लोध्रवा में जो पार्श्वनाथ का पुराना मन्दिर था, वह भी नष्ट हो गया था। परन्तु सं० १६७५ में भणसालीगोत्रीय थीरूशाह सेठने उस मन्दिर को फिर से नया बनवाया। यहाँ एक अहावे में पंचानुत्तरविमान की रचना के भाववाले पांच मन्दिर बने हुए हैं। मध्य में चिन्तामणि–पार्श्वनाथ का बड़ा मन्दिर है, उसके दक्षिण–पूर्व, दक्षिण–पश्चिम, उत्तर–पश्चिम और उत्तर–पूर्व में एक एक मन्दिर है। मुख्य मन्दिर से बायें तरफ एक समवसरण के ऊपर अष्टापद और उसके ऊपर सुरम्य कल्पवृक्ष बना हुआ है।

इस तीर्थ के मूलनायक श्रीपार्श्वनाथस्वामी की मूर्त्ति श्याम रंग की और हजार फणवाली है–जिसकी सुन्दरता अद्वितीय है। कहा जाता है कि–सेठ थीरूशाह सं० १६९३ में श्रीसिद्धाचलजी का बड़ा भारी संघ लेकर यात्रार्थ गये थे। वे वापिस लौटते हुए पाटण से बराबर का सुवर्ण देकर पार्श्वनाथ की दो मूर्त्तियाँ लाये थे। जिनमें से एक मूलनायक तरीके मुख्य मंदिर में और दूसरी उत्तर–पूर्व वाले छोटे मंदिर में विराजमान की, जो इस समय यहाँ मौजूद हैं। थीरूशाह जिस रथ को संघ में ले गये थे वह भी मुख्य मंदिर में अब तक यहाँ सुरक्षित है। मंदिर के बाहर यहाँ ३ उपाश्रय और एक छोटी धर्मशाला भी है। मन्दिर के पूजारी और गारी लोगों के पांच सात घर सिवाय यहाँ वस्ती नहीं है।

१६ अमरसागर—

यह एक रमणीय आरामस्थान है, यहाँ बागबगींचों और

धर्मशालाओं के अलावा तीन जिनमंदिर हैं। सब से बड़े और अद्वितीय कारिगिरीवाले सौधशिखरी जिनालय को सं० १९२८ में वाफणा हिम्मतरामजीने वनवाया है और इसके दोनों खंड में मूलनायक श्रीआदिनाथजी की भव्य मूर्त्तियाँ स्थापित हैं। इसके सामने छोटी धर्मशाला और दहिने तरफ वगीचा है। इसमें ६६ पंक्ति का पीले पाषाण पर खुदा हुआ शिलालेख भी लगा है, जिसमें हिम्मतमलजी वाफणा के तरफ से निकले सिद्धाचल की संघयात्रा का आमूल वृत्तान्त आलेखित है, जो जैसलमेरी भाषा में है। दूसरा मन्दिर सं० १८९७ में वाफणा सवाइरामजीने वनवाया है, जो छोटा और साधारण है, इसमें भी मूलनायक श्रीऋषभदेवस्वामी हैं। तीसरा मन्दिर संव० १९०३ में पंचों के तरफ से वना है, जो डूंगरसी का मंदिर कहाता है। इसमें मूलनायक श्रीऋषभदेवभगवान् की सर्वाङ्गसुन्दर वादामीरंग की दो हाथ वडी प्रतिमा विराजमान हैं, जो प्राचीन और सपरिकर है। जैसलमेर की यात्रा करनेवाले यात्रियों को अमरसागर और लोध्रवाजी की भी यात्रा अवश्य करना चाहिये। जैसलमेर से १ कोश अमरसागर और अमरसागर से ४ कोश लोध्रवाजी तीर्थ है।

अमरसागर में पीले पत्थर की खान भी है और पत्थर चीरने की मशीन भी है जिसमें पत्थर चिरकर पालीशदार वनाया जाता है। यहाँ का पत्थर मजवूत और वडा सुन्दर है। जैसलमेर शहर के मकानों और मन्दिरों में सर्वत्र यही पत्थर लगाया गया है। इसमें खोदाई का काम अच्छा मोहक वनता

है, इससे यह यहाँ से पालिश होकर दूर दूर देशों में जाता है। इस पत्थर की दूसरी खान वाडी और तीसरी खान वीछिया गाँव में है, जो जैसलमेर राज्य के ही है। दूसरी तीसरी खान का पत्थर कुदरती फूलों की भांतवाला निकलता है, जो पालिश होने बाद बडा ही सुन्दर दिखाई देता है। यहाँ के पत्थरों में विशेष गुण यह है कि वारिश से ज्यों ज्यों यह पत्थर भींजता जाता है, त्यों त्यों मजबूत होता जाता है।

२० पोहकरण (पुष्करण)—

जोधपुरस्टेट के फलोधि हुकुमत के नीचे यह अच्छा कस्वा है। यहाँ से एक कोश उत्तर में पहले सायणमेरु नामका नगर आवाद था, वही नाश होकर वि० सं० १५१५ में यह कस्वा वसा है। विक्रम की १७ वीं सीकी में इसमें पुष्करणा ब्राह्मणों के ३०००, महेश्वरी महाजनों के २१००, ओसवाल जैनों के ४०० और वीसा सेवकों के २०० घर आवाद थे। परन्तु ऊपरा ऊपरी दुष्काल पडने के कारण सब इस कस्वे को छोड कर देशावरों में जा वसे। वर्त्तमान में यहाँ पुष्करणाओं के २५०, महेश्वरियों के ६०, ओसवालजैनों के ८, और सेवकों के ७० घर रह गये हैं, उनमें भी कितने एक घरों वाले आजीविका के लिये विदेश आते जाते रहते हैं। शहर में कुल आवादी २००० घरों की है और उनमें आवाद घर ७०० हैं। यहाँ के जागीरदार चांपावत राजपूत हैं, जो अच्छे ठिकाने के माने जाते हैं। शहर के वाहर कई वाडियाँ, कुए और तालाव हैं। इस

शहर की जनता में भंगेडियों की संख्या अधिक है। यहाँ पोस्ट-ऑफिस और सरकारी हिन्दी अंग्रेजी स्कूल भी है।

शहर में श्वेताम्बरजैनों के दो उपाश्रय और तीन जिनमन्दिर हैं, जो शिखरवद्ध हैं। पहले जिनालय में मूलनायक श्रीऋषभदेवजी की दो फुट बड़ी श्वेतवर्ण प्रतिमा स्थापन की हुई है, जो प्रथम यहां के किले के मंदिर में विराजमान थी और इसमें सं० १८८३ में लाकर बैठाई गई है। इस मन्दिर की बायें तरफ की भींत पर इस प्रकार शिलालेख लगा है—

श्रीऋषभदेवाय नमः। सं० १८८३ वर्षे शाके १७४८ प्र० मासोत्तममासे.......शुक्लपक्षे ५ तिथौ गुरुवारे श्रीपोहकरणनगरे ठाकुरां श्री १०५ श्री श्रीबभूतसिंघजी विजयराज्ये श्रीऋषभदेवस्य प्रासादः श्रीखरतरआचारजसमस्तश्रीसंघेन कारापितं, प्रतिष्ठितं च पं० लालचंद पं० परमसुखेन श्रीजिनोदयसूरि आज्ञातः। यावज्जंबूद्वीपे यावन्नक्षत्रमंडितो मेरु यावच्चंद्रादित्यौ तावत्प्रासादस्थिरी भवतु।

—सं० १८८३ शाके १७४८ उत्तममास...........सुदि ५ गुरुवार के दिन ठाकुरबभूतसिंहजी के राज्य में खरतराचार्यगच्छीय श्रीसंघने पोहकरण नगर में ऋषभदेव—मंदिर कराया और जिनोदयसूरि की आज्ञा से पं० लालचंद पं० परमसुखने प्रतिष्ठा की। जब तक जम्बूद्वीप में मेरुपर्वत, चन्द्र और सूर्य रहें तब तक यह प्रासाद स्थिर रहो।

दूसरा मन्दिर शिखरबद्ध लाल पत्थर का है, जो संवत् १९४ में प्रतिष्ठित हुआ है। इसमें मूलनायक श्रीपार्श्वनाथ की श्वेतवर्ण ढाई फुट् बडी मूर्ति स्थापित है। तीसरा मंदिर छोटे शिखरवाला है, जो शान्तिनाथजी का कहा जाता है। लेकिन इसमें इस समय १॥ फुट् बड़ी बादामीरंग की श्री पार्श्वनाथ-प्रतिमा विराजमान है। तीनों मंदिरों में पाषाणमय १४ और धातुमय ४० जिनमूर्त्तियाँ हैं। यहाँ जिनमन्दिरों में पूजा और सफाई का प्रबन्ध अच्छा नहीं है।

पोहकरण से ३ कोश पश्चिमोत्तर कोण में रामाशाह पीर का स्थान है, जिसको हिन्दु और मुसल्मान दोनों मानते हैं। यहाँ हरसाल भाद्रवासुदि ११ और माहसुदि ११ का भारी मेला भराता है, जिसमें महाजन, ब्राह्मण आदि सभी जातियों के लोग २०,००० हजार तक एकत्रित हो जाते हैं। इस मेले की महिमा लोग कई प्रकार से वर्णन करते हैं, परन्तु हमे तो इसमें कुछ भी सत्यांश नजर नहीं आया। दर असल में 'अन्धस्येवान्धलग्नस्य, विनिपातः पदे पदे' इस मेले में यही लीला देख पडती है। अफसोस है—अन्धविश्वास के पीछे दुनिया कितनी बरवाद हो रही है।

२१ फलोधी—

जोधपुर की हुकूमतों में से यह एक है। इसके पुराने नाम फलवर्धिपुर, फलाधि और विजयपुर-पत्तन हैं। जिस समय

यह विजयपुर-पत्तन कहाता था, उस समय यह आंचन राजपूतों के अधिकार में था। राव मालदेव राठोडने उनसे जीता, फिर सम्राट अकबरने अपने अधिकार में लेकर जैसलमेर के रावल हरराज को दे दिया। फिर बीकानेर राज्यने इस पर कब्जा किया और उनसे महाराजा अजितसिंहजीने छीन कर इसको जोधपुर राज्य में मिला दिया, तब से अब तक यह जोधपुर के आधीन ही है। यहाँ एक अच्छा किला भी है, जिसकी दीवारें ४० फुट् ऊंची हैं। सं० १५४९ में इसको राव हम्मीर नरावत राठोडने पोहकरन से आकर बनवाया था। कहा जाता है कि इसके बनवाने में पुष्करणा ब्राह्मण फला की विधवा पुत्री का धन खर्च हुआ है। अतएव कल्लावंशीय फलाने राव हम्मीर से अर्ज करके इसका नाम फलाधि (फला की कन्या) रक्खा है, जो कालान्तर में विगड़ कर फलोधि हो गया। इसमें आवादी ५ हजार घरों की हैं और इसका क्षेत्रफल ९ वर्गमील है। इसके नीचे १६ गाँव हैं, जिनकी आवादी १३ हजार और आवाद घर ३ हजार हैं। यहाँ उत्तर-पश्चिम में जोधपुर रेल्वे का फलोधी ब्रांच स्टेशन है। शहर में पोस्टऑफिस, सरकारी स्कूल और दो तीन सरायें भी हैं।

यहाँ ओसवाल जैनों के ७०० घर हैं, जिनमें लोंकागच्छ के १००, तेरहपंथियों के ३० और शेष घर तपागच्छ, खरतरगच्छ और कवलागच्छ में विभक्त हैं, जो भावुक, श्रद्धालु और योग्य साधु-साध्वियों की अच्छी कदर करनेवाले हैं। शहर में सभी गच्छवालों के उपाश्रय, मन्दिर और पंचायती तीन धर्म-

शाला बनी हुई हैं। दो चार दादावाड़ी भी हैं, जिनमें उपकेश-वंशगच्छीय रत्नप्रभसूरि, खरतरगच्छीय जिनकुशलसूरि और जिनदत्तसूरिजी के चरण और मूर्त्तियाँ स्थापित हैं। यहाँ ६ मन्दिर गाँव और एक तालाब पर हैं, जो सभी उत्तम रंगाई और मीनागिरी के काम से सुसज्जित हैं। तपागच्छ के मन्दिर में चांदी सोने का रथ और समवसरण भी है जो दर्शकों के हृदय को आनन्दित करते हैं। मन्दिरों में गोडीपार्श्वनाथ, ऋषभदेव, शीतलनाथ, शान्तिनाथ, आदिनाथ, महावीर और चिन्तामणि-पार्श्वनाथ; ये मूलनायक हैं। शहर में सबसे प्रथम गोडीजी और केशरियाजी के चरण ही एक देवल में थे। शेष सभी मन्दिर बाद में बने हैं, जो सं० १९०४ तथा १९४८ के प्रतिष्ठित हैं।

शहर से दक्षिण तालाब के किनारे पर एक छोटा देवल है, जिसमें गोडीपार्श्वनाथ आदि के तीन जोडी चरण स्थापित हैं, जो संवत् १८६० ज्येष्टसुदि ६ बुधवार के दिन खरतरगच्छीय जिनहर्षसूरिजी के हाथ से प्रतिष्ठित हुए हैं। इन्हीं के पास यति सुमतिधर्मगणि के चरण हैं। इस देवल की दहिने तरफ की भींत पर नीचे प्रमाणे शिलालेख लगा हुआ है—

संवत १८६० वर्षे ज्येष्टसुदि ६ तिथौ बुधवारे महाराजाधिराज महाराज श्रीमानसिंहजी विजयराज्ये श्रीफलवर्धिपुर-मध्ये बृहत्खरतरभट्टारकगच्छे पातशाह अकबरप्रदत्तयुगप्रधानपद-धारक भट्टारक श्रीजिनचंद्रसूरि शिष्य महोपाध्याय पुण्यप्रधान-गणि, शिष्य महोपाध्याय श्रीसुमतिसागरगणि, शिष्य वाचना-

चार्य श्रीसाधुरंगगणि, शिष्य उपाध्याय श्रीविनयप्रमोदगणि, शिष्य वाचनाचार्य श्रीविनयलाभगणि, शिष्य श्रीसुमतिविमलगणि, शिष्य वाचनाचार्य श्रीसुमतिसुंदरगणि. शिष्य वाचनाचार्य सुमतिहेमगणि, शिष्य वाचनाचार्य सुमतिवल्लभ, शिष्य सर्वविद्याविशारद वाचनाचार्य श्री१०८ श्रीसुमतिधर्मगणि अपरनाम श्री१०८ श्रीश्रीचंद्रजीगणिसद्गुरूणां पृष्ठे धर्मशाला कारापिता शिष्य पं० भगवानदासेन श्रीसंघसानिध्यात्कृता सूत्रधार पूरणदास अरजनदास प्रमुख ७ जैनव्रजवास्तव्यैः। सं०१८५६ वर्षे ज्येष्टसुदि दशम्यां मंगलवारे भास्करोदये श्रीमद्गुरवः परलोके गता, श्रीरस्तु दिने दिने।

—सं० १८६० ज्येष्टसुदि ६ वुधवार के दिन महाराज मानसिंह के राज्य में फलोधि के अन्दर वृहत्खरतरभट्टारकगच्छीय युगप्रधान श्रीजिनचन्द्रसूरि, शिष्य महोपाध्याय पुण्यप्रधानगणि, शिष्य म० सुमतिसागरगणि, शिष्य वाचनाचार्य साधुरंगगणि, शिष्य उ० विनयप्रमोदगणि, शिष्य वा० विनयलाभ गणि, शि० उ० सुमतिविमलगणि, शि० वा० सुमतिसुन्दरगणि, शि० वा० सुमतिहेमगणि, शि० वा० सुमतिवल्लभ, शिष्य सर्वविद्याविशारद श्री१०८ सुमतिधर्म(चन्द्रजी) गणि के पीछे संघ के सहाय से पं० भगवानदासने धर्मशाला कराई। सूत्रधार पूरणदास अर्जुनदास आदि व्रजवासियोंने इसको बनाई। सं० १८५९ ज्येष्टसुदि १० मंगलवार के दिन सूर्योदय में गुरु (चन्द्रजी गणि) परलोक गये, प्रतिदिन श्री कारक हो।

२२ चीलहा—

इस गाँव में पुष्करणा ब्राह्मण, नाई और मेघवालों के अन्दाजन १५० घर हैं। जोधपुर रेल्वे का यहाँ छोटा स्टेशन भी है। गाँव में एक छोटी जैनधर्मशाला है, जो फलोधिवाली गुलेच्छा जैन श्राविकाने बनवाई है। फलोधि आने जाने वाले साधु साध्वी यहीं विश्राम लेते हैं, एतदर्थ ही यह जैनधर्मशाला बनाई गई है।

२३ लोहावट—

जोधपुर रियासत का यह अच्छा कसवा है। इस के पाव पाव मील के अन्तर में दो वास (मुहल्ले) हैं और वास के बीच में जोधपुर रेल्वे का स्टेशन है। स्टेशन से दहिने भाग पर एक सराय है जिसमें सरकारी स्कूल है और बांये भाग पर दादावाडी है, जिसमें दादाजी के चरण स्थापित हैं। गाँव के दोनों वास में उपाश्रय, धर्मशाला और पोस्टऑफिस भी है। यहाँ ओसवाल जैनों में १४५ घर मन्दिरमार्गी और ६९ घर स्थानकवासी संप्रदाय के हैं। जाटों के वास में श्रीपार्श्वनाथजी का और विसनोई वास में श्रीचन्द्रप्रभस्वामी का गृहमन्दिर है, जो दर्शनीय और अर्वाचीन है।

२४ श्रीओशियाजी तीर्थ—

यह प्राचीनतम तीर्थस्थान जो किसी समय अच्छा आवाद शहर और मारवाडदेश की मुख्य राजधानी था। कहा जाता है कि—

प्राचीन काल में यह १४ कोश के घेरे में बसा हुआ था। इसके वर्त्तमान लोहावट गाँव लुहारों का वास और तिवरीगाँव तेलियों का वास था। यहाँ चारों तरफ मकानों के भूमिशायी खंडेहर और पतितावशिष्ट देवलों के निरीक्षण से इसकी प्राचीनता और आबादी का सहज अनुमान हो सकता है। पट्टावलियों में इसको १२ योजन (४८ कोश) का घेरावाला लिखा मिलता है। इसको श्रीमालनगर (भीनमाल) के राजा श्रीपुंज के छोटे भाई (एक पट्टावलि के लेखानुसार श्रीपुंज के छोटे पुत्र) उपलदेवने और मंत्री ऊहडने बसाया था। ओशवाली जमीन पर बसाने से इसका नाम उएस (उपकेश) पट्टन रक्खा गया था। इस में २९००० गाडी, ११००० रथ, १८००० असवार, १८००० घोडे, ३० मयंगल हाथी, १०,००० दुकानदार, ५००० ब्राह्मण, १०,००००० व्यापारी और अगणित पायदल के साथ उपलदेव तथा १८००० कुटुम्बियों के साथ मंत्री ऊहड श्रीमाल से आकर बसे थे। श्रीवीरनिर्वाण सं० ७० (विक्रम से ४०० वर्ष पूर्व) में पार्श्वनाथसन्तानीय श्रीरत्नप्रभसूरिजी महाराजने राजा उपलदेवादि १२५०००, मतान्तर से ३८४००० राजपुतों को प्रतिबोध देकर इसी उएस नगर में जैन बनाये थे और उनका उपकेशवंश स्थापन किया था। इन उल्लेखों से इसकी विशालता और समृद्धि का सहज ही में अनुमान किया जा सकता है।

प्राप्त लेखों से पता लगता है कि—विक्रम की ११ वीं और

१२ वीं शताब्दी के विचले समय में इसका उपकेश नाम मिट कर ओशिया पड़ा, जो उएस, या उपकेश का ही अपभ्रंस है। ओशिया नाम होने के वाद शनैः शनैः इसकी जनसमृद्धि और धनसमृद्धि का भी ह्रास होते होते अब नामशेष रह गया है। पूर्वकाल में जहाँ इस नगर में ५५००० अर्बाधिप और १०,०००० क्रोडपति पाये जाते थे, वहाँ आज उतने पैसा वाले भी दिखाई नहीं देते। इसीका नाम तो कालचक्र की विचित्र गति है। किसी कविने ठीक ही लिखा है कि--

जे जे स्थले नृपतितणां नभस्पर्शी प्रासादो हता।
ते ते स्थले आजे ऊकरडा ने स्मशानो भासता।
नकशी करेलां मन्दिरो प्राचीनना कया हाल छे
रे रे! पथिकजन! जाण तुं आ विश्व क्षणभंगुर छे!

ओसवालजाति की उत्पत्ति का मूल केन्द्र (स्थान) यही नगर था, परन्तु आज इसमें ओसवालों का एक भी घर नहीं है। वर्त्तमान में यहाँ एक अतिविशाल और रमणीय सौधशिखरी श्रीमहावीरप्रभु का मन्दिर है, जो राजा उपलदेव के महामात्य ऊहड का बनवाया हुवा है और इसमें सुवर्णवर्णवाली २॥ फुट् बड़ी श्रीमहावीरस्वामी की प्रतिमा विराजमान है। इस मन्दिर और प्रतिमा की प्रतिष्ठा पार्श्वनाथसन्तानीय श्रुतकेवली श्रीरत्नप्रभसूरिजी के कर-कमल से वीरनिर्वाण सं०

१ सप्तत्यवत्सराणां चरमजिनपतेर्मुक्तजातस्य वर्षे,
पंचम्यां शुक्लपक्षे शुभगुरुदिवसे ब्रह्मणः सन्मुहूर्ते।

७० में हुई थी। बादशाही हमलों में भी यह प्रतिमा विरूपता को प्राप्त नहीं हुई, यही इसका आश्चर्यजनक चमत्कार समझना चाहिये। इस मंदिर का रंगमंडप वि० सं० १०१३ में बना है, और उसे जिनदास आदि श्रावकोंने बनवाया है ऐसा यहाँ के उपलब्ध शिलालेख से पता लगता है। संभव है पेश्तर का रंगमंडप जीर्ण होने से उसको फिर से जिनदास वगैरहोंने बनवाया हो। रंगमंडप में दोनों तरफ के ताक में श्री ऋषभ देवजी की परिकर सहित ३॥ फुट् बड़ी दो प्रतिमा स्थापित हैं, जो पीछे से बैठाई गई हैं। मुख्य मन्दिर के सामनेवाले झरोखे में श्रीगौतमस्वामी की श्वेतपाषाणमय मूर्त्ति विराजमान है, जो अर्वाचीन है। मुख्य मंदिर की बाहर की भमती में दोनों बगल में चार चार देहरियाँ है। उनमें से एक में आचार्य प्रतिमा,

---

रत्नाचार्यैः सकलगुणयुक्तैः सर्वसंघानुज्ञातैः,
श्रीमद्वीरस्य बिम्बे भवशतमथने निर्मितेयं प्रतिष्ठाः ॥ १ ॥

—प्रभुश्री महावीरस्वामी के निर्वाण से ७० वें वर्ष में सुदि ५ गुरुवार और ब्राह्ममुहूर्त्त के दिन सकलश्रीसंघ की विनति से समस्त गुण विराजित श्रीरत्नप्रभसूरिजी महाराजने सैंकडों भवों को नाश करनेवाली श्रीमहावीर प्रतिमा की प्रतिष्ठा (अंजनशलाका) की।

देखो वि० सं० १४०२ की बनी उपकेशगच्छ पट्टावली।

ओसियाजी और कोरटाजी के दोनों मन्दिर तथा महावीर प्रतिमा की प्रतिष्ठा एक ही दिन, एक ही लग्न में हुई थी और रत्नप्रभाचार्यने वैक्रियलब्धि से दो रूप करके मूलरूप से ओसिया में तथा वैक्रियरूप से कोरटा में एक ही लग्न में प्रतिष्ठा की थी; ऐसा नाभिनन्दनोद्धारप्रबंधकारने लिखा है।

एक में अधिष्ठायिका देवी, एक में नागदेव की मूर्त्ति और शेष में जिनमूर्त्तियाँ स्थापित हैं।

ओशियाजी के पूर्वोत्तर कोण में 'सचाइया' माता का मन्दिर है, जो किले के समान एक छोटी पहाडी पर बना हुआ है और इसके चारों दिशा में एक एक मन्दिर है। इसको उपकेशपत्तन वसने के समय राजा उपलदेवने बनवाया था और इसमें मूलनायक तरीके श्रीपार्श्वनाथस्वामी की प्रतिमा विराजमान की गई थी। परन्तु यहाँ जैनों की आबादी बरबाद होने पर जैनेतरोंने पार्श्वनाथप्रतिमा को उठा कर उसमें सचाइया (चंडिका) माता की मूर्त्ति स्थापन कर दी। इसके पिछले भाग में किसी श्राविका का बनवाया हुआ छोटा उपाश्रय भी है और अब भी पासवाले मन्दिर में जिनमूर्त्तियों के चिन्ह दिखाई देते हैं। कहा जाता है कि पेश्तर सचाइयादेवी की मूर्त्ति पार्श्ववर्त्ती छोटे मन्दिर में थी और यह राजा उपलदेव की कुलदेवी थी। पहले इस पर जैनों का अधिकार था, परन्तु अब उनके न रहने से जैनेतरों का अधिकार है।

ओशिया में ओसवालों का तो एक भी घर नहीं है, लेकिन महेश्वरी महाजन और पुष्करणा ब्राह्मणों के अन्दाजन १०० घर आबाद हैं, जो जैनों के और जिनमन्दिर के द्वेषी हैं। यहाँ एक माइल पश्चिमोत्तर जोधपुररेल्वे का स्टेशन भी है। तीर्थनायक महावीर–मन्दिर के बायें तरफ लगते ही बडी जैन-धर्मशाला है, जिसमें ओशिया–तीर्थ–जैनकारखाना, कक्कान्ति

जैनलायब्रेरी, रत्नाश्रम–ज्ञानभंडार और वर्द्धमान–जैनविद्यालय है। विद्यालय में ओसवाल जैनों के ११० बालक अभ्यास करते हैं और उनके खान पान आदि का सभी प्रबन्ध विद्यालय के तरफ से ही होता है। विद्यालय में धार्मिक शिक्षण दो कर्मग्रन्थ तक, अंग्रेजी मार्गोपदेशिका तक, हिन्दी मिडिल तक और महाजनी हिसाब कटमी व्याज तक दिया जाता है। सभी के अध्यापक जुदे जुदे क्लास वार नियत हैं। विद्यार्थियों की प्रवेश फीस प्रतिमास ११॥, ७॥, ६, और ५ रुपया योग्यता के अनुसार रक्खी गई है। जो लोग फीस देने के लिये असमर्थ हैं उनके बालक विद्यालय के नियमों के मुताबिक बिना फीस भी भरती किये जाते हैं। साढ़े ग्यारह रुपया प्रतिमास फीस भरनेवालों के बालकों के सिवाय पांच वर्ष की ग्यारंटी पर ही विद्यार्थी भरती हो सकते हैं। जो विद्याप्रेमी बालकों को प्रीतिभोजन देना चाहता हैं, उन्हें विद्यालय के नित्य नियमानुसार २५ रुपया देना पडता है। विद्यालय के सतत प्रयत्न से विद्यार्थियों के लिये प्रतिदिन भोजन कराने की वार्षिक मितियाँ जुदे जुदे गाँववाले सद्गृहस्थों के तरफ से नियत हैं। विद्यालय में विद्यार्थियों की दिनचर्या प्रशंसनीय है और विनय, धर्मप्रेम तथा विद्याभिलाष विद्यार्थियों में उत्पन्न करने का प्रयत्न हमेशा सावधानी से रक्खा जाता है।

२५ मथानिया—

यहाँ ओसवालजैनों के १२ और महेश्वरी महाजनों के

१०० घर हैं। ओसवाल स्थानकवासी (ढूंढ़िये) और महेश्वरी वैष्णव हैं। इसके निकट ही जोधपुर से फलोधि आनेवाली रेल्वे का स्टेशन और पोस्टऑफिस है।

२६ बेरी—

यह स्थान मन्डोर-पहाडी के नीचे है, यहाँ एक धर्मशाला और छोटा जिनालय है। जिनालय में मूलनायक श्रीपार्श्वनाथ की सुन्दर प्रतिमा विराजमान है, जो विक्रम की १६ वीं सीकी की प्रतिष्ठित है। इसकी पूजा आदि का प्रबन्ध जोधपुर जैन-मूर्त्तिपूजक-संघ के तरफ से है। इसके पास ही चार सरकारी बंगले और अरठ भी हैं।

२७ मन्डोर (मान्डव्यपुर)—

यह जोधपुर से उत्तर ९ माइल मारवाड की पुराना राजधानी है और यहाँ फलोधि आनेवाली रेल्वे का स्टेशन भी है। प्राचीन काल में एक मन्दोवर (मयदानव) नामक राजा हो गया है उसीने अपने नामसे इसको वसाया है। किसी किसी का यह भी कहना है कि यहाँ मांडूऋषी का आश्रम था जिस का नाम माण्डव्य था, उसीके नाम से यह नगर वसा इससे यह माण्डव्यपुर कहलाया। संभव है कि—पहले इसका नाम मन्दोवर और बाद में माण्डव्यपुर कहलाया हो, जो कालान्तर में विगड़ कर मन्डोर, या मन्डोवर हो गया है। पहले यहाँ नागवंशी क्षत्रियों का राज्य था, बाद में परमार और पडिहारों का राज्य

हुआ। नाहरराव परिहार की सातवीं पेढ़ी में इन्दा पड़िहार राजा हुआ, सं० १४५१ में उसको परास्त करके इस पर राठोड़ोंने अपना राज्य जमाया।

यहाँ नागादरी नदी के तट पर एक ही पंक्ति में दक्षिण से उत्तर तक राव मालदेव, मोटाराजा उदयसिंह, सवाईराजा सूरसिंह, राजा गजसिंह, महाराजा जसवंतसिंह और महाराजा अजितसिंह के बड़े आलिशान और शानदार समाधि–मन्दिर बने हुए हैं, जो सं० १६४७ से सं० १८५६ तक के हैं। इस प्रकार के समाधिमन्दिर हिन्दुस्तान में अन्यत्र कहीं नहीं है और कोई कोई तो तीन खंडवाला है। इन समाधिमन्दिरों से दक्षिण थोडी दूर पर एक वीरभवन है, जिसमें चामुंडा १, भैंसासुरी २, गुसांइजी ३, राव मल्लिनाथजी ४, पाबूजी राठोर ५, रामदेवजी ६, हडवूजी ७, जांभाजी ८, मेहाजी ९, गोगाजी १०, ब्रह्मा ११, सूर्य १२, रामचन्द्र १३, कृष्ण १४, महादेव १५, और जालंधरनाथ १६; इनकी पत्थर की रंगीन सवारी और शस्त्र सहित सोलह मूर्त्तियाँ बनी हुई हैं, जो देखने लायक हैं। वीरभवन के पास ही एकथम्भा महल है, जिसको महाराजा अजितसिंह राठोरने बनवाया था।

मंडोवर में जैनों का एक भी घर नहीं है, परन्तु एक जैन धर्मशाला और तीन जिनमन्दिर हैं। सबसे बड़े शिखरबद्ध मन्दिर में मूलनायक श्रीपार्श्वनाथजी की २ हाथ बड़ी पीले वर्ण

की सुन्दर प्रतिमा स्थापित है। इसकी प्रतिष्ठा सं० १७२२ माहवदि ८ सोमवार के दिन भंडारी ताराचंद ओसवालने लक्ष्मीकुशलसूरि के पास करवाई है। दूसरा मन्दिर इसीके पास है, जो गुंबजदार है और इसमें मूलनायक श्रीऋषभदेव हैं। तीसरा मन्दिर मंडोर से जोधपुर जानेवाली सड़क के बायें किनारे पर है। इसमें श्रीशान्तिनाथ की श्वेतवर्ण १ फुट् बड़ी प्रतिमा विराजमान है। इसके पिछाडी एक छत्री में दादाजी के चरण हैं, जो सं० १९०४ के प्रतिष्ठित हैं। इनकी पूजा आदि का प्रबन्ध जोधपुर जैनमूर्त्ति-पूजकसंघ करता है।

२८ बालसमंदर—

मन्डोर से जोधपुर जानेवाली सडक के दहिने तरफ सडक से १॥ माइल के फासले पर पश्चिमोत्तर कोण में छोटी पहाडी की समतल भूमि के मध्यमें यह बांध है, जो सं० १२१६ में बना है और इसको पडिहार बालकराववने बंधवाया था। इसको महाराजा सूरसिंह और जसवंतसिंह (प्रथम) ने पहले अधिक बढाके यहाँ महल और बगीचा बनवाया। इस बांध (झील) में आसपास के पहाड़ों का बरसाती जल इकठा होता है। इसका क्षेत्रफल ८ वर्गमील है। जब यह बारिश के जल से

१ श्रीजिनदेवसूरि-श्रीजिनसिंघसूरि-श्रीजिनचन्द्रसूरि पट्टे श्रीजिनहर्षसूरि आ॰श्रीलक्ष्मीकुशल सं०१७२२ वर्षे माहवदि ८ सोमे महाराजाधिराज श्री जसवंतसिंहजी कुंवर पृथ्वीसिंह-मेघराज विजयराज्ये ओसवाल ज्ञातीय भंडारी भानाजी पुत्र नारायण तत्पुत्र भं॰ ताराचंदेन पुत्रपौत्रादियुतेन श्रीपार्श्वनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीबृहत्खरतरगच्छ (मूलनायकमूर्ति पर).

भरा जाता है तब इसमें ५ करोड ६० लाख क्युविकफुट् जल समाता है और यह ४० फुट् गहरा है। इसका तलिया पहाडी चट्टानें का मजवूत है, इससे इसका जल जमीन नहीं सोषती। यहीं से जोधपुर के गुलावसागर, फतहसागर, और सरदारसागर नामक तालावों में नहर के द्वारा जल पहुंचाया जाता है। रेल्वे टाँकी आदि में भी नलों के द्वारा जल यहीं से जाता है। वाँध से दक्षिण में मेवाड के सेनापति अहाड़ाहींगोला की छत्री है, जो सं० १५११ की वनी है।

२६ जोधपुर—

यह मारवाड देश की वर्त्तमान राजधानी है और जोधपुर रेल्वे का सदर स्थान है। जोधपुर २६ अंश, १८ कला उत्तरांश और ७३ अंश, १ कला पूर्वरेखांश में स्थित है। इसका क्षेत्र-फल ३ वर्गमील है। शहर के भीतर आवादी ६२००० है, परंतु वाहर पांचमील तक की आसपास की वस्ती सहित ७३ हजार है, जिनमें ५५००० हिन्दु और १८००० मुसलमान हैं। इस को राठोरराव जोधाजीने सं०१५१६ (ता० १२ मई सन् १४५९ इस्वी) में ज्येष्ठ सुदि ११ शनिवार के दिन मैदान से ४०० फुट ऊंची एक जुदी पहाडी की तराई में वसाया था और इसी पहाडी पर निज के रहने के वास्ते किला तथा वासभवन भी बनवाया था। इसके जूने चार दरवाजे और पुरानी दीवारें, जो जोधाजीने बनवाई थीं, वे वर्त्तमान जोधपुर के नैऋत्य कोण में मौजूद हैं। वर्त्तमान जोधपुर ढालू पथरीली जमीन पर वसा हुआ है और इसके चारों तरफ २४,६०० फुट् लम्बी, ३से ८

फुट् चौडी और १५से ३० फुट ऊंची शहरपनाह (कोट) है जिसमें ६ वडे और २ छोटे दरवाजे हैं, जो चांदपोल, नागोरी, मेडतिया, सोजतिया, सीवानची और जालोरी पोल के नाम से प्रसिद्ध हैं। शहर के वाजार संकडे और वांके चूके (टेढे) हैं। नगर में सर्वत्र पत्थर की पक्की सड़कें वनी हुई और उन पर विजली की रोशनी लगी हुई हैं। शहर के पास ही एक जुदी पहाडी पर मयूरपुच्छ के आकार में सुन्दर, मजवूत और विशाल किला है। किले का कोट २० से १२० फुट् तक ऊंचा और १२ से २० फुट् तक मोटा (जाड़ा) है। किले का क्षेत्रफल लम्बाई में ५०० गज और चौडाई में २५० गज है। इसमें जाने के लिये दो द्वार हैं—एक तो जयपोल उत्तर—पूर्व में और दूसरा फतहपोल दक्षिण—पश्चिम में नगर के अन्दर से है। किले में राजमहल, सिपाहियों के रहने के स्थान, पुस्तकालय, चामुंडा माता, मुरलीधर और आनंदघनजी के देवल वने हुए हैं।

नागोरी दरवाजे के वाहर मूताजो का गुंवजदार मन्दिर है, जो विक्रम की १८ वीं सीकी में वना है और इसको जैनी-लोग महामन्दिर के नाम से जाहिर करते हैं। इसमें मूलनायक श्रीपार्श्वनाथस्वामी की नीलवर्ण १॥ हाथ वड़ी प्रतिमा स्थापित है। स्टेशन जाने की सडक से दहिने तरफ भेरुवाग है उसकी एक छत्री में श्रीपार्श्वनाथ की श्यामवर्ण वारह अंगुल वड़ी सुन्दर प्रतिमा विराजमान है। शहर से पश्चिम ३ माइल के फासले पर गुरांजी का शिखरवाला जिनालय है, जिसमें मूलनायक

श्रीपार्श्वनाथ स्वामी की प्राचीन और अतिमनोहर मूर्त्ति स्थापित है। ये तीनों जिनालय शहर के बाहर हैं और यात्रा के धाम माने जाते हैं। पर्वतिथियों में शहर से इनके दर्शन के लिये कई श्रावक श्राविका जाते हैं। शहर में भी सात जिन-मन्दिर हैं—जिनमें ३ शिखरबद्ध और ४ गुवजदार हैं। यहाँ के जिनालयों में केशरियानाथ, महावीरप्रभु और कोलरी के पार्श्व-नाथ के मन्दिर विशेष दर्शनीय हैं क्योंकि इनमें कांच का मीना-गिरी का काम बहुत बढिया बना हुआ है, जो दर्शकों के चित्त को खींचनेवाला है। ये सभी जिनालय प्रायः विक्रम की १८ वीं सौकी से १९ वीं सौकी तक के बने हुए हैं और उनके मूल-नायक १२ वीं सौकी से १९ वीं सौकी तक के प्रतिष्ठित हैं।

यहाँ ओसवाल जैनों के २००० घर हैं, जिनमें दादुपंथी, कबीरपंथी, रामानन्दी, थानकवासी और तेरहपंथी आदि कई फिरके हैं। जैन श्वेताम्बर मूर्त्तिपूजक संप्रदाय के अन्दाजन ४०० घर हैं, जो तपागच्छ और खरतरगच्छ इन दो विभागों में विभक्त हैं और इनमें परस्पर अजीब बातों के लिये आन्तरिक कुसम्प चलता रहता है। यहाँ के जैनों में हमदर्दी का दोष अधिक पाया जाता है, इसीसे ये साधु भक्ति के वास्तविक लाभ से पछात रहते हैं। मन्दिर मार्गी संप्रदाय में मूता सुमेरचंदजी, वकील हस्ती-मलजी मुणोत और हजारीमलजी पारख, लच्छीरामजी लूंकड आदि सद्गृहस्थ अच्छे भावुक और श्रद्धालु हैं परन्तु ये राजकीय कर्मचारी होने से साधुभक्ति का पूरा लाभ नहीं ले सकते, तो भी ये साधुओं की सेवा—भक्ति की खबर अवश्य

ले लिया करते हैं और दिन में एक, या दो वार साधु–सेवा में हाजिर हो जाते हैं। शहर में दो जैनधर्मशाला और कई बेकाम उपाश्रय, तथा कई जैनेतर सराये हैं। सरायों में तीन रात से अधिक ठहरने की सख्त मुमानियत है। अधिक ठहरने की इच्छावाले सरायों में भाडा दे कर ठहर सकते हैं। भाडा कमरे के योग्यतानुसार लिया जाता है और जसवंतसराय में सब से अधिक भाडा तथा आराम है।

३० मोगडा—

यह छोटा गाँव है, इसमें ओसवाल जैनों के ७ घर हैं, जो विवेक, श्रद्धा और साधुभक्ति से रहित हैं। ये स्थानकवासी संप्रदाय के कहलाते हैं, लेकिन तेरहपंथियों से भी गये गुजरे हैं। मंदिरमार्गी साधु साध्वियों को यहाँ उतरने के लिये स्थान और आहार–पानी नहीं मिलता।

३१ रोहेट—

पाली जानेवाली सडक के दहिने तरफ सडक से १ मील दूर यह गाँव बसा हुआ है। इसमें ओसवाल जैनों के १० घर हैं, जो तेरहपंथियों के भाईबंद हैं। यहाँ एक जीर्ण उपाश्रय है, जिसके एक कमरे में चार जिनप्रतिमा स्थापित हैं। जिनप्रतिमा ओं के दर्शन यहाँ कोई भी करता नहीं है और न इनकी पूजा बराबर होती है। कहा जाता है कि पेश्तर यहाँ के उपासरे में लोंकागच्छ के यति रहते थे उन्हीं की प्रेरणा से ये जिनमूर्त्तियाँ लाई गई हैं।

३२ खारडा—

यहाँ ओसवालजैनों के विवेक और धर्म विहीन १० घर हैं, जो मन्दिरमार्गी साधु साध्वियों के कट्टर द्वेषी हैं। गाँव में दो पतितावशिष्ट शिखरवाले जिन मन्दिर भी हैं, जिनकी मूर्तियाँ एक कच्चे मकान में रक्खी हुई हैं। इन मूर्त्तियों की यहाँ पूजा नहीं होती और न किसी प्रकार की सारसंभाल ही है। गाँव से वाहर एक वाँध है, जो ३ माइल लम्बा और ६ माइल चौडा है। इसमें एक सिरे से दूसरे सिरे तक अगाध जल भरा हुआ है और इसके दोनों तट की सघन वृक्षावलियों में थोक बंध सूर, हरण, रोझ, आदि जानवर रहते हैं। इन जानवरों को यहां मारने की सख्त मुमानियत है। इस वाँध के जल से खेत पकाये जाते हैं और हजारों मन गेहूं कपास पैदा होता है। जोधपुर से पाली जानेवाली सडक ही इसका मजवूत वाँध है।

३३ पाली—

यह जोधपुर रियासत में इस नाम की जागीर का सदर स्थान है, जो जोधपुर से दक्षिण ४४ माइल दूर है। इस जागीर का क्षेत्रफल ३०७ वर्गमील है और इसमें आवाद घर १३,२२९ हैं। पाली शहर की आवादी १२ हजार और आवाद घर ३००० हैं। पहले यह पंवारों के अधिकार में था, फिर मुसलमानों के अधिकार में रहा। उनसे मन्डोर के पड़िहारोंने छीन कर इसको पल्लीवाल ब्राह्मणों को दान में दे दिया। सं० १३०५ के लगभग पल्लि-वालों से राव सीहाजीने इसको छीन कर, अपने अधिकार में

ले लिया, तब से अब तक यह उन्हीं के वंशजों के अधिकार में है। मारवाड में जिस समय रेल्वे का अधिक प्रचार नहीं था, उस समय यह व्यापार का बडा भारी केन्द्र था और मारवाड भर में दूर दूर तक यहीं का माल जाता था। परन्तु जगह जगह रेल्वे लाईनें खुल जाने से अब इसका सारा व्यापार-धाम अस्तव्यस्त हो गया। यहाँ झालरबाव दरवाजे के बाहर बडोडा और लोड़िया नामके दो विशाल तालाब हैं। बडोडा कोई एक मील लम्बा और पक्के घाट से बंधा हुआ है, और इसीके पूर्व में लोडिया तालाब है। शहर से ६ मील पूर्व में पूनागिरी या पूर्णगिरि (पूनागढ) नामकी पहाडी है, जिसमें पहले सोना निकलता था ऐसी यहाँ किंवदन्ती प्रचलित है। लेखों में इस कसबे का प्राचीन नाम 'पल्लिका' मिलता है।

शहर में ओसवालजैनों के ७०० घर हैं—जिन में मन्दिरमार्गियों के ३००, स्थानकवासियों के ३०० और भीखमपंथियों के १०० घर हैं। तीनों संप्रदायों में कुसम्प का साम्राज्य है, इसीसे इनमें धार्मिक या जाति प्रेम बिलकुल दीखाई नहीं देता। मन्दिरमार्गियों के चार उपाश्रय और छोटी बड़ी पांच धर्मशालाएँ हैं। शहर में सब मिला कर छ जिनमन्दिर हैं। उनमें सब से बड़ा और विशाल नवलखा का जिनालय हैं, जो बावनजिनालय है। इसके पूर्व, उत्तर और दक्षिण देवकुलिकाओं के बीच में तीन बडे मन्दिर हैं। मूलमन्दिर इसका विक्रम की १२ वीं सीकी का बना है और उस समय के लेखों में इसको महावीर प्रभु का मन्दिर लिखा है। परन्तु वि० सं० १६८६ में

इसकी देहरियाँ बनने के साथ साथ मूलमन्दिर का भी जीर्णोद्धार हुआ, उस समय में मूलनायक श्रीपार्श्वनाथजी विराजमान किये गये ऐसा यहाँ के लोढारावास के जैनमन्दिर के एक शिलालेख से पता लगता है। बस, इसी दिन से यह 'नवलखा-पार्श्वनाथ' के मन्दिर के नाम से प्रसिद्धी में आया मालूम होता है। इसकी देवकुलिकाएँ भादा और मादा के श्रेयोऽर्थ बनाई गई हैं और उनको बनवाने वाला सा० लखमण सुत देसल नामक सद्गृहस्थ है। मूलमन्दिर सहित इसकी सभी देहरियों और मन्दिरों में जिन प्रतिमाओं के त्रिगड़े विराजमान हैं और पाली शहर विशेष करके इसी विशाल जिनालय के कारण तीर्थ रूप माना जाता है। शेष मंदिरों की तालिका इस प्रकार है—

मूलनायक	वर्ण	हाथ	प्रतिमासंख्या
१ गोडीपार्श्वनाथ	श्वेत	१॥	१६
२ शान्तिनाथजी	श्वेत	१।	१७
३ सुपार्श्वनाथजी	श्वेत	१।	३
४ केशरियानाथ	श्वेत	१।	६
५ शान्तिनाथजी	श्वेत	१	३

इनके अलावा शहर से १॥ माइल दूर पालीस्टेशन पर एक छोटा जिनालय है, जिसमें श्रीपार्श्वनाथजी की सुन्दर प्रतिमा स्थापित है। नौलखा-मन्दिर के बांये हाथ पर धर्मशाला और उसीमें एक पक्का उपाश्रय है। इसमें ठहरने का अच्छा सुभीता है, क्योंकि इसके पास ही जंगल तथा नदी आ गई है।

३४ ढेंडा—

यहाँ ओसवाल जैनों के ३० घर हैं, जो अच्छे भावुक हैं। गाँव में एक छोटी धर्मशाला और एक सुन्दर छोटा जिन-मन्दिर है। मन्दिर में मूलनायक श्रीअजितनाथ भगवान् की श्वेतवर्ण १। हाथ बडी प्रतिमा विराजमान है, जो प्राचीन और दर्शनीय है। इस गाँव में योग्य साधु साध्वियों के उपदेश की पूरी आवश्यकता है।

३५ चांणोद—

यह अच्छा आबाद कसबा है जो राणी से ७ कोश पश्चिमोत्तर है और यहाँ से हमेशां मोटर, रानी स्टेशन जाती आती है। गाँव में पोस्टऑफिस और सरकारी स्कूल भी है जिसमें सामान्य रूप से हिन्दी अंग्रेजी का अभ्यास कराया जाता है। यहाँ ओसवाल श्वेताम्बर जैनों में मन्दिरमार्गियों के १५० और भीखमपंथी (तेरहपंथी) संप्रदाय के ५० घर हैं। यहाँ के जैनों में तीन तडे हैं जिससे इनमें परस्पर कलह अधिक है। यह कलह योग्य साधु साध्वियों की सेवा और उनके उपदेश सुनने में भी बाधा पहुंचानेवाली है। गाँव में एक उपासरा, दो छोटी धर्मशाला और एक शिखरवद्ध जिनालय है। मन्दिर में मूलनायक श्रीशान्तिनाथस्वामी की श्वेतवर्ण सवा हाथ बडी प्रतिमा विराजमान है, जो विक्रम की १७ वीं शताब्दी की प्रतिष्ठित है। कँवरावास की धर्मशाला साधु साध्वियों को उतरने के लिये सुखकारी है।

३६ भूति—

यहाँ ओसवाल और पोरवाड़ जैनों के ७० घर और दो शिखरवद्ध जिनालय हैं। एक में मूलनायक श्रीमहावीरप्रभु और दूसरे में श्रीऋषभदेवजी (केशरियानाथ) हैं। इन मन्दिरों में ये प्रतिमा सं०१९८५ पोषवदि ५ के दिन सौधर्मबृहत्तपोगच्छीय आचार्य श्रीभूपेन्द्रसूरिजी महाराज के हाथ से महान् उत्सव के साथ प्रतिष्ठित (स्थापन) हुई हैं।

३७ पादरली—

यह छोटा पर अच्छा गाँव है जिसमें वीसा पोरवाड श्वेताम्बर जैनों के ११५ घर हैं, जो अच्छे भावुक गुणग्राही और चतुर्थ स्तुतिक संप्रदाय के हैं। गाँव में ऊंची कुर्शी पर वना हुआ एक अतिरमणीय शिखरवद्ध मन्दिर और उसीके पास एक वड़ी धर्मशाला है। मन्दिर में मूलनायक श्रीऋषभदेव स्वामी की वादामीरंग की ३ फुट वड़ी प्रतिमा स्थापित है, और इस में कांच का मीनागिरि का काम वड़ा ही सुन्दर वना हुआ है, जो देखनेवालों को असीमानन्द पैदा करता है। इसीके सामने थोडी दूरी पर दूसरी धर्मशाला है, जो एक ही भावुक (श्रावक) की वनवाई हुई है और यह गर्मी की मोसिम में वडी सुखकर है। मारवाड में आहोर, सियाणा, वागरा और चांवड़ेरी के समान यहाँ के मन्दिर की प्रतिष्ठा भी प्रशंसा के लायक हुई थी। प्रतिष्ठोत्सव पर हजारों

श्रावक श्राविका उपस्थित हुए थे और मन्दिर में अन्दाजन दो लाख रुपयों की आवक हुई थी। इत्यलमतिविस्तरेण।

ॐ शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

परवादि-दर्प्पमथनं, हेतुनयसहस्रभङ्गकाऽऽकीर्णम्।
भव्यजन-दुरितशमनं, जिनेन्द्रवरशासनं जयति ॥ १ ॥



श्रीसौधर्मबृहत्तपोगच्छमुखमंडन-सुविहितसूरि-कुलतिलक-साधु
क्रियोद्धारक-जैनशासनसम्राट्-परमयोगिराज-कलिकाल-
सर्वज्ञकल्प-जङ्गमयुगप्रधान-प्रातःस्मरणीय-जगत्पूज्य-
गुरुदेव श्री श्री १००८श्रीमद् विजयराजेन्द्रसूरीश्वर-
चरणारविन्दचतुरभृङ्गायमाण-व्याख्यानवाचस्प-
त्युपाध्यायमुनिराजश्रीयतीन्द्रविजयसङ्कलिते
'श्रीयतीन्द्रविहारदिग्दर्शनो' नाम
ऐतिहासिकग्रन्थे द्वितीयो
भागः समाप्तः।

नागाष्टनन्देन्दुमितेऽब्दे गुरुसप्तमीयुते।
श्रीयतीन्द्रविहारदिग्दर्शनं पूर्णतामगात् ॥ १ ॥

परिशिष्ट नम्बर ४

—✻✻✻—

श्रीसौधर्मबृहत्तपोगच्छीय-मालवदेशस्थ 'जावरान-
गर' निवासि-जैनश्वेताम्बरसकलसंघ और श्री
राजेन्द्रोदयजैनयुवकमंडल के समस्तमेम्बरों
का लिखा हुआ संवत् १६८६, सन् १९२९ का

प्रथम विज्ञप्ति-पत्र ।

ॐ

श्रीमद्विजयराजेन्द्रसूरीश्वरेभ्यो नमो नमः ।

श्रीमद्विजयधनचन्द्रसूरीश्वरेभ्यो नमः ।

यच्छायासु सुशीतलास्वप्यरयः संस्थाय शान्तिङ्गता-
स्ते भव्या इह शर्मभाज अभवन्नाश्रित्य यस्याश्रयम् ।
यस्यालौकिकशक्तिभारवशताश्चिन्तामणिः सत्रपाऽ-
भूत्तस्मै सततं नमो भवतु मे राजेन्द्रसूर्यङ्घ्रये ॥ १ ॥
यज्ज्ञानांशुसमूहदीप्तिवशतो नष्टं च मिथ्यातमो,
दीप्त्या यन्नखरस्य भानुरथ वै चन्द्रस्तथा शङ्कितः ।
यद्भीत्या गतवांस्तु भानुरथ खं वार्द्धिङ्गतश्चन्द्रमा-
स्तस्मै मे सततं नमो भवतु श्री राजेन्द्रसूर्यङ्घ्रये ॥ २ ॥

—✻✻✻—

दोहा—

सिद्धश्री पहिले लिखुं, सिद्ध होन के काज।
ऋषभ–पार्श्व प्रणमुं सदा, नित मंगल महाराज ॥ १ ॥

अजितजिनंदशुं प्रीतडी, ए राह—

गुरु मालवदेश पधारजो, गुरु जावरा हो जगजीवन हित-
ार के। करुणा कीजे साहीबा, श्रीसंघनी हो विनती चित
ार के ॥ टेर ॥ वाचक श्रीयतीन्द्रमुनीश्वरा, मुनिमंडल हो सेवे
ुम पाय के। चरणकमलने सेवता, वेने इहांथी हो वन्दु चित
ाय के ॥ गु० ॥ १ ॥ मुनिविद्याविजयजी सोहता, सागरवि-
जयजी हो हीरानी खाण के। चरण करण गुणे म्हालता, नित
ाले हो श्री गुरुवर आण के ॥ गु० ॥२॥ इहांथी वंदे भावसुं,
भागीरथ हो मन उछरंग के। जावरा संघ आनंद में, हस्तीमल
हो मन रंगतरंग के ॥ गु० ॥ ३ ॥

—: शेर :—

श्रेष्ठ वीर यतीन्द्रने, मदशत्रु का मर्दन किया।
अक्षय रक्षा धर्म को, तथा दृढतर अपना हिया ॥१॥

वृथा जनम गयो भजन बिन. ए राह—

शरण पडे की लाज, तुम्हे हैं गुरु शरण० ॥ टेर ॥

मैं गुणहीन मलीन सदा मति, कैसे बने अब काज ॥ तु० १
जप तप तीरथ दान न कीनो, नहिं कियो संत समाज ॥ तु० २

तुम समान नहीं पतित उधारन, मैं पापिन सिरताज ॥ तु० ३
नयर जावरा से लिखी वीनति, अवधारो गुरुराज ॥ तु० ४
सकलसंघ अब अर्ज करत है, आप पधारो महाराज ॥ तु० ५
यतीन्द्रमुनीजी से यही अरज है, सुनीये गरीब निवाज ॥ तु० ६
भागीरथ श्रीगुरु गुण गावे, हस्तिमल के हो सरताज ॥ तु० ७

—: शेर :—

राजेन्द्रसूरि गच्छ में, दिलेरों का काम है ।
नामर्द बुज दिले का, यहाँ नहीं मुकाम है ॥२॥

कपूर होय अति ऊजलो रे, ए राह—

पूरव पुण्य पसायथी जी, दीठो दरसण आज ।
दुख दोहग दूरे गयाजी, सीझ्या वंछित काज ॥ १ ॥
मुनीश्वर, यतीन्द्रविजयजी महाराज ॥ टेर ॥
दीनदयाल दिल ताहरो जी, समतारस भंडार ।
पर उपकारी जिम केवडो जी, मिथ्या तिमिर विडार ॥ मु०॥२॥
ज्ञानसुधारस तुमे भर्या जी, ध्यानालम्बी जेह ।
पंचमहाव्रत पालताजी, पंचम काले तेह ॥ मु०॥३॥
क्रोध मान माया नहीं जी, लोभ नहीं लवलेश ।
सर्प तजे ज्युं कांचली जी, करता नाहीं किलेश ॥ मु०॥४॥
कहनी रहनी तुम तणी जी, सरखी आंबा—दाख ।
निकट भविने छो तुमो जी, दिलना निरमल दाख ॥ मु०॥५॥

गुण अनंत गुरु तुम तणाजी, कर्त्ता केम कहेवाय।
भुजावले जिम समुद्रने जी, पंगु केम तिराय ॥मु०॥६॥

हुं छुं शरणे ताहरे जी, मुझ पापीने तार।
जो नवि तारो साहेवाजी, केम रेसे मुझ वार ॥मु०॥७॥

तुम दाता त्राता तुमे जी, तुम मुझ मन सिरधार।
तुम विना ध्याऊं को नहीं जी, अवर गुरु दिल धार ॥मु०॥८॥

संवच्छरी प्रतिक्रमण करी जी, सब जीवांने खमाय।
लाख चोरासी खमाविया जी, मुज आतम से राय ॥मु०॥ ९ ॥

हवे गुरू तमने खामस्युं जी, अंजलि मस्तक नाय।
आप क्षमा करो साहिवा जी, मोटो मन कराय ॥मु०॥१०॥

वारे मास चोवीस पक्ष में जी, दिवस तीनसौ साठ।
जे अविनय कीधो हुवे जी, ते खमजो दिल वाट ॥मु०॥११॥

शहर जावरा से लिखी जी, भागीरथ अरदास।
देसलहेरवंश माहिने जी, अरु हस्तीमल पास ॥मु०॥१२॥

—: शेर :—

अगर हम उठ नहिं सकते, तो उठ जावें जमाने से।
वचेंगे पूर्व पुरुषों पर, बुरा धब्बा लगाने से ॥३॥

कृपाकर दिजो कृपानिधान, ए राह—

दया मया हमें मिले शुभ ज्ञान, हमें० ॥ टेर ॥
सारे दुरगुण दूर भगावें, बने वलि गुणवान ॥द०॥ १ ॥

राग द्वेष तज मिलकर छेडे, ऐक्य भाव की तान ॥द०॥ २ ॥
जिससे फूट करे मुंह काला, हो कल्याण महान ॥द०॥ ३ ॥
सत्यमार्ग से सपने भी, टले न किंचिद् ध्यान ॥द०॥ ४ ॥
औरों के दुःख हरने में हम, बने प्रतिज्ञावान ॥द०॥ ५ ॥
घर घर ज्ञान ज्योति फैला कर, बने सभी विद्वान ॥द०॥ ६ ॥
प्राप्त करें पूर्व जनों का, फिर हम उच्चस्थान ॥द०॥ ७ ॥
कर्म वीर बन निज कष्टों का, हम करदें अवसान ॥द०॥ ८ ॥
जिस से प्यारी जैन जाति का, होवे पुनरुत्थान ॥द०॥ ९ ॥
जैनशर्मा मंडल में रहते, लगा चरण में ध्यान ॥द०॥१०॥
नयर जावरे गुरु पधारो, भविक सुनावो ज्ञान ॥द०॥११॥

—: शेर :—

स्वर्ग के मिलने का ढंग यह, और कुछ युक्ति नहीं।
देव गुरु सेवा करो, सेवा विना मुक्ति नहीं ॥४॥

माता त्रिशला झुलावे पुत्र पालने, ए राह—

मनहर मारवाड में नयर 'फतापुरा' मांयने,
धन धन वहाँ पर वैठा गुरु महाराज ।
अरजी करश्युं स्वामी गुरु चरणां के मांहिने,
सांची सांची मानो नित कीजो प्रतिपाल ॥ म० ॥१॥

प्रौढ अखंड गुरुजी तेजप्रतापें शोभता,
शीतल निर्मल जानुं जैसा शीतलचन्द्र ।
देखी मोहायो में यतीन्द्रविजयजी दीदारने,
पूरा देख्या साहिब राजेन्द्र आणा मांय ॥ म० ॥२॥

यतीन्द्रविजयजी देख्या दयाना भंडार छे,
थांरो मुखडो जोई मन माहरो हुलसाय ।
हौंस हिम्मत साहिब पूरी मन में राखता,
सांची सांची राखी वीर आण गुरु आप ॥ म० ॥३॥

मुखडो थांरो सोहे जैसा शीतल चन्द्रमा,
चारित्र पूरो पालो नहीं कोई दोष लगार ।
क्रोध रु मान की ज्वाला लागी मारे मन्न,
व्हेला आवीने गुरु शीतल करजो आप ॥ म० ॥४॥

इस कलियुग के मांही दीसो कल्पतरु तुमो,
मैं तो जानुं सांचा रत्नचिन्तामणि आप ।
जाणपणाहीसे इस कलियुग मांहीने,
तुम तो दीसो जाने पंडितना शिरताज ॥ म० ॥५॥

लिखी संघ सकल मिल शहर 'जावरा' से वीनवि,
स्वामी अवधारो वेगो करजो विहार ।
भागीरथने स्वामी आप चरणमां राखजो,
पूरो पूरो स्वामी हस्तीमल की आस ॥ म० ॥६॥

कुंडलिया—

धर्मतत्त्व रमते सदा, करते धर्म प्रचार ।
धन यतीन्द्रमुनीश्वरु, धन श्रावक सुखकार ॥
धन श्रावक सुखकार, दुःख दुखियनके हरते ।
दान शील तप भाव, नित्य आराध विचरते ॥

गुरु जाप जपते मिले, सुख संपति भरपूर।
मन चिंतित कारज बने, रोगिन का दुःख दूर ॥ १ ॥

गजल–रेखता.

सूरजसा तेज है जिनमें, वही गुरूजी हमारे हैं ॥ टेर ॥

सुकोमल पद्म है जैसे, शशी सौम्य सम वैसे हैं।
मधुरता है मनोहारी, वही गुरूजी हमारे हैं ॥ १ ॥

विजययतीन्द्र मुनीश्वर, पधारे फतापुरा सुअवसर।
किया सब संघ उद्धारी, वही गुरूजी हमारे हैं ॥ २ ॥

दरश को संघ आते हैं, हर्षसे दर्श पाते हैं।
कृपा गुरु की जो शिरधारी, वही गुरुजी हमारे हैं ॥ ३ ॥

दया के आप दरिये हैं, भवनिधि से ही तरिये हैं;
प्रबल गुणगण के हैं धारी, वही गुरुजी हमारे हैं ॥ ४ ॥

मुनिकी मंडली साथे, प्रभु की आण धरी माथे,
सुयश कीर्त्ति बधारी है, वही गुरुजी हमारे हैं ॥ ५ ॥

भागीरथ कहते कर जोरी, हस्तीमल मानते जोरी,
विनति यही गुरु उरधारी, वही गुरुजी हमारे हैं ॥ ६ ॥

—: शेर :—

आप मुनियतीन्द्र हैं, दयामय दया सागर।
बक्स दीजे खता मेरी, जरा मनमें दया लाकर ॥ ९ ॥

त्रिकाल स्तुति–लावणी—

छोटा कंत से लहर लगा कर लिखते २ भूल गई, ए राह—

वीतराग सर्वज्ञ हितंकर, भविजन की अब पूरो आस,
ज्ञान भानु का उदय करो अब, मिथ्यातम का हो प्रभु नाश ॥
जीवों की हम करुणा पालें, झूंठ वचन नहीं कहें कदा;
परधन कबहु नहीं हैं खावें, ब्रह्मचर्य व्रत रखें सदा ॥
तृष्णा लोभ न बढे हमारा, तोष सुधानिधि पिया करें;
श्रीजैनधर्म हमारा प्यारा, इनकी सेवा किया करें ॥
दूर भगावें बुरी रीतियां, सुखद रीति का करें प्रचार;
मेल मिलाप बढावें हम सब, धर्मोन्नती का करे विचार ॥
सुख दुख में हम समता धारें, रहें अचल जिमि सदा अटल;
न्यायमार्ग का लेश न त्यागें, वृद्धि करें निज आतम बल ॥
अष्टकर्म जो दुःख हेतु हैं, तिनके क्षय का करें उपाय;
नाम आपका जपें निरंतर, विघ्न शोक सबही टल; जाय ॥
आतम शुद्ध हमारा होवे, पाप–मेल नहीं चढे कदा;
विद्या की हो उन्नति हममें, धर्मज्ञान हु बढ़े सदा ॥
हाथ जोड कर शीस नमावें, भविजन तुमको खडे खडे;
यह सब पूरो आश हमारी, चरण शरण में आन पडे ॥

स्वस्तिश्री चौतीस अतिशय वाणी के पेंतीस गुण आठ प्रतिहार्य और अलौकिक विभूतियों के धारक जगद्गुरु भगवान् श्रीआदिनाथ (ऋषभदेव) स्वामी को त्रिविध योगों से वन्दन नमन करके, विशाला धर्मशाला विद्याशाला कन्याशाला न्याया-

मशाला पौपधशाला दानशाला आदिकों से शोभित, पुस्तकालय वाचनालय न्यायालय विचारालय धर्मकरणालय ध्यानालय चैत्यालय मंत्रालय आदियों से अलंकृत, गगनचुम्बी सौधशिखरी जिनमन्दिरों से परिमंडित, पंचमहाव्रतधारी अप्रतिबद्धविहारी महज्जनाचरित–मार्गानुसारी शुद्ध मुनिवरों के चरणकमलों से पवित्रित, वापी वप्र विहार वर्ण वनिता आदि सत्ताईस वकारों से सुसज्जित, श्रीफतापुरा नगरे विराजमान, न्यायसंपन्नविभव–शिष्टाचारप्रतिपालकादि मार्गानुसारि पेंतीस गुणों के, तथा उदारत्वसत्त्वसंपन्नत्वसुक्ताशयादि सलक्षणों और अक्षुद्र रूपसौम्य विनय नयादि श्राद्धगुणों के धारक, स्थूलप्राणातिपातादि बारह व्रतों, ग्यारह श्रावक प्रतिमाओं और श्रावकाचारों के पालक, चौदह पूर्व सारभूत पंचपरमेष्ठिमहामंत्र (नवकार)का निरंतर जाप करने वाले, हीन दीन दुःखी लोगों पर अनुकंपा रखनेवाले, जैनधर्म गुरुगच्छ और शासन की उन्नति करने में कटिबद्ध, नय निक्षेप प्रमाण सप्तभंगी षड्द्रव्य नवतत्त्व आदि के विचारों में दत्तलक्ष्य, जैनागमोक्त शुद्धक्रिया और जिनाज्ञा गुरु आज्ञा तथा संघ आज्ञा को शिरोधार्य करनेवाले, कदाग्रही कुलिंगी कदाशयी मिथ्या प्रलापियों के वढते हुए वेग को निर्मूल (नाश) करनेवाले, समकितरूप सरोवर के स्वच्छ जल से शरीर को पवित्र बनानेवाले, और शौर्य धैर्य सहनशीलता गुणानुरागिता आदि नाना सद्गुणरूप रत्नाकर के समान, सकल श्रीसंघ से पूजित, आबालब्रह्मचारी, महागुणानुरागी, शांत, दांत, महंत, धर्मधुरंधर, शशिसम सौम्य, सूर्यसम तेजस्वी,

सागरसमान गंभीर, धीर, वीर, यशस्वी, आदि गुणों से शोभित व्याख्यानवाचस्पत्युपाध्याय श्रीमान् श्री श्री १०८ मुनिराज श्रीयतीन्द्रविजयजी महाराज आदि ठाणाओं के चरणकमलों में दासानुदास जावरा समस्त संघ की विनयविधि पूर्वक अब्भुट्ठिया के पाठ सहित १००८ वार वन्दना अवधारसोजी।

तथा सकलसंघ स्वधर्मी भाइयों! यहाँ के संघ और मंडल मेम्बरान् का सविनय सप्रेम जयजिनेन्द्र बंचनाजी। हमारे यहाँ पर्युषणपर्व बहुत आनन्द पूर्वक आराधन किये हैं। आपके वहाँ भी घणा आनंद उत्सव सहित आराधन किया होसी। तथा निर्विघ्नता पूर्वक मिति भाद्रवा सुदि ४ शनिवार को सांवत्सरिक प्रतिक्रमण करके चोरासी लाख जीवायोनियों के साथ और आपश्री, तथा सर्व मुनिमंडल व स्वधर्मि भाईयों के साथ त्रियोग शुद्धिपूर्वक क्षमापना की है। एवं गत वर्ष में जो ज्ञात अज्ञात अविनयादिक अपराध हुवा हो उसे शुद्धातःकरण से वार वार खमाते हैं, आपश्री गुणी हैं अतएव हमारी क्षमापना स्वीकार करेंगे।

सवैया—

चन्द्र छिपे इह सूर्य प्रकाशतें, महानिशि में छिपे सूर्य दिवाकर,
मृगजाति छिपे मृगराज पाय के, सिंह छिपे देखो आग बताकर।
मीन छिपे इच्छा जल पाय के, चोर छिपे दृढ शासन पाकर,
शुक्र कहे मिथ्यात्वी छिपे देखि, राजराजेन्द्र यतीन्द्र गुणाकर॥

सांवत्सरिक माफी याचना। गजल—

किये अपराध मैंने हों, तुम्हारे वर्षभर में जो।
पुनीत संवत्सरी के दिन, उन्हीं की मांगता माफी ॥ १ ॥
कषायों से कलुषित हो, बसाकर वैर मैंने जो।
कटुक अपराध बोले हों, उन्हीं की मांगता माफी ॥ २ ॥
कदाचित्स्वार्थवश मैंने, तुम्हारी सत्प्रवृत्ति में।
किये उपसर्ग हों तो मैं, उन्हीं की मांगता माफी ॥ ३ ॥
प्रवृत्ति पूर्ण जीवन में, जगत् सर्व जीवों को।
दुभाये हों दुखाये हों, उन्हीं की मांगता माफी ॥ ४ ॥
प्रतिज्ञा भंग करने में, किये जो पाप जीवन में।
निजातम शुद्धि करने को, उन्हीं की मांगता माफी ॥ ५ ॥
दुराग्रह से ग्रसित हो जो, किया निग्रह गुणीजनका।
करद्वय जोड नत होकर, उन्हीं की मांगता माफी ॥ ६ ॥
प्रगट निज पाप को मैंने, छुपाने को तुम्हारे से।
प्रणय का तार तोडा हो, उन्हीं की मांगता माफी ॥ ७ ॥
गुरु गुण वीर भक्तों से, प्रभु श्री वीर शासन में।
सुमंगल श्रीमहोदय में, हृदय से मांगता माफी ॥ ८ ॥

श्री श्री १०८ श्रीमान् यतीन्द्रविजयजी महाराज साहेब आदि मुनिमंडल की सेवा में, प्रवृर्त्तिनीजी श्रीप्रेमश्रीजी रायश्रीजी आदि ठाणा १०; तथा यहाँ के संघ व मंडल मेम्बरान् का संवच्छरी संबंधि खमत खामणा वर्ण वर्ण मान से वंचावसी, १२ मास, २४ पक्ष, ३६० दिन में जो कोई अविनय हुवा हो, उसकी माफी चाहते हैं। आपकी कृपा से यहाँ धर्मध्यान की

अच्छी वृद्धि हो रही है। मिति आषाढ सुदि १ से भाद्रवा सुदि १५ तक तपस्यादि इस प्रकार हुई है–उपवास १०,०००, बेला ४००, तेला ३००, चोला ३१, पांचा २१, छक्काई २, सत्ताई २, अठाई १३, नव २, पूजन ११, स्वामिवात्सल्य ५, चैत्यप्रवाड़ी १५, प्रभावना ५००, इत्यादि।

द० दलाजी जड़ावचंद लोढा, द० प्रेमचंद चांदमल प्यारचंद

द० समंदरिया बहादुर केसरीमल, द० फकीरचंद सागरमल पन्नालाल धोका

द० जुहारमल छोटमल पारख, द० लूनावत चांदमल

द० वरदीचंद केसरीमल फकीरचंद, द० सरूपचंद खूबचंद लोढा

द० सामसुखा सूरजमलजी कुंदनमल, द० भीनमालवाला दोसी मूलचंद

द० पगारिया चुन्नीलाल केसरीमल, द० भीकचंद बुरड

द० मिसरीमल करनावट, द० संकलेचा पीरचंद

द० मूणत सेवारामजी, तथा सागरमल, द० भीनमालवाला वीरमल जुहारमल

द० गुलाबचंद संकरेचा वरडावदावाला, द० जडावचंद मिसरीमल पगारिया

द० पन्नालाल मुंजाखेडीवाला, द० हरकचंद व सरूपचंद वोतरा

द० मेवा गुलाबचंद वरडियावाला, द० केसरीमल धोका

इत्यादि सकल संघ की विधि सहित १००८ वार वंदना अवधारसी।

द्वितीय-विज्ञप्तिपत्र.

(वि० सं० १९८७ सन् १९३० इस्वी)

जगत्पूज्य प्रातःस्मरणीय गुरुदेव जैनाचार्य भट्टारक

महाराज श्री श्री श्री १००८

श्रीमद् विजयराजेन्द्रसूरीश्वरेभ्यो नमः ।

श्रीसंघक्षमापणा-पत्रिका, जावरा नगर

अनन्तविज्ञानविशुद्धरूपं, निरस्तमोहादिपरस्वरूपम् ।
नरामरेन्द्रैः कृतचारुभक्तिं, नमामि तीर्थेशमनन्तशक्तिम् ॥

दोहा—

मंगलमय मंगल करन, वीतराग विज्ञान ।
प्रणमुं सदा संशय हरन, अरिहंतादि महान् ॥१॥

मंगलमय मंगल करे, कर कर उत्तम काम ।
पहले गुरु गौतम नमुं, मंगल ही सब काम ॥२॥

कल्पवेली कविता तणी, सरस्वती भगवती जेह ।
अर्हन्मुखथी ऊपनी, हुं प्रणमुं धरि नेह ॥ ३ ॥

विद्यालङ्करणं सुधर्मशरणं मिथ्यात्विनां दूषणम् ;
विद्वन्मण्डलमण्डनं सुजनता सद्बोधबीजप्रदम् ।
सच्चारित्रनिधिं दयावरविधिं प्रज्ञावतां सन्निधिम्,
जैनानां नवजीवनं गुरुवरं राजेन्द्रसूरिं नुमः ॥ १ ॥

चारवेद—

प्रत्येक जनको चाहिये, यह तीन तत्त्व विदित करे,
देव गुरु फिर धर्म उनमें, देव का परिचय करे।
रागादि दूषण गण सभी, जिसने किये हों नष्ट ही,
मोहादि चिन्हित जो नहीं है, देव ईश्वर है वही ॥ १ ॥

जो नित्य पंचमहाव्रतों की पालना अच्छी करे,
जो धर्मदेशक भिक्षु हैं उन मुनिजनों को गुरु करे।
जो तैरते हैं और तैराते परों को इस महा—
संसारसागर में उन्हींका है समागम शुभ अहा ॥२॥

सब धर्मशास्त्रों में 'अहिंसा परमो धर्म' कहा गया,
उसके बिना अति घोर तप भी व्यर्थ बतलाया गया।
कोई क्रिया की जाय कितनी ही बडी भी धर्म की,
पर वह बनेगा प्राणिहिंसा से मलिन ही कर्म की ॥३॥

कुछ तो बडे व्याख्यान कारक इस तरह मशहूर है,
व्याख्यानवाचस्पति जिन्हें कहते सभी जनवर्ग हैं।
उत्कृष्ट लेखक हैं कई कुछ वादिगज मृगराज हैं,
कुछ अनुभवी तप विनय वैयावृत्य कारक शांत हैं ॥४॥

गजल—

जबां से तो अदा अहसां, तुम्हारा हो नहीं सकता।
करूं तन मनसे तो इनको भी, यारा हो नहीं सकता ॥टेर॥

जगाया आपने मुझको, पढाया ख्वाब गफलत में ।
हितु कोई तुम्हारासा, हमारा हो नहीं सकता ॥ज०॥१॥

स्वारथ के सभी साथी, जगत सब छान कर देखा ।
जगतमें आप विन कोई, सहारा हो नहीं सकता ॥ज०॥२॥

धरूं सर अपनी जिनवानी, तुम्हारे सार चरणों में ।
जुदा होना तुम्हारा पर, गवारा हो नहीं सकता ॥ज०॥२॥

शेर—

स्वर्गके मिलने का ढंग यह, और कुछ युक्ति नहीं ।
देव गुरू सेवा करो, सेवा विना मुक्ति नहीं ॥१॥

माता मोरादेवीना नंद. ए राह—

मैंतो राजगढ़ जास्यांजी श्रीविजयराजेन्द्रसूरीश्वर ।
गुरु का दरसन करस्यां जी, मैंतो राजगढ० ॥टेर॥

सूरिविजयराजेन्द्र गुरुजी, प्रगटे पंचमकाल ।
मनुष्य नहीं, अवतार भये हैं, जैनधर्म प्रतिपाल ॥मैं०॥१॥

पिता ऋषभजी मात केसर के, आप रत्नचंद सूत ।
भाई माणकलाल वहन पेमाबाई, जन्मे आप सपूत ॥मैं०॥१॥

भरतपुर में जन्म लियो है, जानत हैं नर नार ।
पिता ऋषभजी अतिहर्ष से, खर्चे द्रव्य अपार ॥मैं०॥४॥

संवत उगणीसे वर्ष चार में, वैशाख पंचमी गुरुवार ।
शुक्लपक्ष में दीक्षा लीनी, छोड दीया संसार ॥मैं०॥४॥

माया मोह का त्याग किया वली, पंच महाव्रत धार ।
सतरे प्रकारे संजम पाळी, लीया जन्म सुधार ॥मैं० ॥५॥

देश देश में विहार करीने, किया धर्म प्रचार ।
त्रिस्तुति को जारी करके, नाम किया श्रीकार ॥मैं०॥६॥

पुन्यवंतजी जहाँ जहाँ विचरे, तहाँ तहाँ मंगलाचार ।
मिथ्यात्वी तो वहाँ देखके, झुरते खूब अपार ॥मैं०॥७॥

संवत अठारासो तिरियासी, जन्म लिया गुरुराय ।
नाम रतनचंद है संसारी, जय जय जेह गवाय ॥मैं०॥८॥

गाँव गाँव प्रतिबोध दईने, आये राजगढ मांय ।
कालथिति जब पूरी जानी, समाधी चित्त लगाय ॥मैं०॥९॥

संवत उगणीसो तिरसठ साले, पोषसुदि गुरुवार ।
तिथि छठ को किया संथारा, पहुंचे स्वर्ग मझार ॥मैं०॥१०॥

बात सुणी जब मुल्क मुल्क में, श्री संघ हुआ उदास ।
जैनशर्मा के रह गई मनमें, दरसन की गुरु आस ॥मैं०॥११॥

दोहा—

आबादी सब जगत में, बरबादी रहे दूर ।
धन्य गुरु राजेन्द्र को, मुख पर बरसे नूर ॥ १ ॥

गजल—

ज्ञान दुर्लभ है दुनिया में, धरम सब से अमोलक है ।
यही भगवानने भाषा, धरम सब से अमोलक है ॥ टेर ॥

रखो तन अपना धन देकर, बचाओ लाज तन देकर ।
धरम पर वार दो सबको, धरम सब से अमोलक है ॥१॥

धरम के सामने सब हेय, राज और पाट दुनियाँ का ।
धरम ही सार है जगमें, धरम सब से अमोलक है ॥ २ ॥

धरम के वास्ते सीता, किया परवेश अगनी में ।
राम तज राज वन पहुंचे, धरम सब से अमोलक है ॥ ३ ॥

धरम के वास्ते गर जान भी, जाये तो दे दीजे ।
समझ लीजे यकी कीजे, धरम सब से अमोलक है ॥४॥

शेर—

ज्ञान दिनकर जब उदय, हमभी जगे सुप्रभात में ।
धर्म कर्मों की सुदृढ, शुभ यष्टिका ली हाथ में ॥ १ ॥

राह पूनमचांदनी की—

वहेनी उठो प्रभाते प्रेमथकी प्रभुने नमो रे,
ऊंचा उज्ज्वल धर्मे जन्म दीधे जिनराय—
तेनुं स्मरण शुद्ध हृदय तमे समो रे ॥ टेर ॥

शाखी—

" असत्य कदिय न बोलजो, थशे महा दुःख हाय ।
सेवन करजो सत्यनुं, सांचो महा सुखदाय ॥"
वहेनी मंगल इच्छो सर्वतणुं संसारमां रे,
परहित काजे धरजो दया सदा दिल मांय—
समता सत्य दया ने निशदिन शरणे भारमां रे ॥व०॥१॥

" अन्यतणो करस्यो भलो, शुभ तमारो थाय ।
वन्या हजारो दाखला, ए कुदरतनो न्याय ॥ "
वहेनी परहितमां सांचु हित थाये आपणुं रे,
वर्त्ती जैनतणा सिद्धान्तोना अनुसार—
शक्ति प्रमाणे अर्पी शुभ करजो बीजा तणुं रे ॥व०॥२॥
" वस्त्रधरो विध विध वली, करो घणा सिणगार ।
सांचु शुं शिणगार छे, समजी करो विचार "
सांची शोभा रही छे शुद्ध हृदय ने दानमां रे,
कानतणी शोभा छे सांभलवा सद्वाक्य—
हार नहीं पण शोभा सत्यवचन छे कंठमां रे ॥व०॥३॥
" ग्रहण करो सद्गुण सदा, दुरगुण तजो ततकाल ।
करो सार्थक आ जीवननुं, सफल करो अवतार ॥ "
वहेनी सुशील बनीने दीपावजो जैनधर्मने रे,
वीरप्रभु थाशे सहायक सदा तमोने बहेन—
सांचो सुख पामो परलोके करी सत्कर्मने रे ॥व०॥४॥

शेर—

अय गुरु कर महेरबानी, वक्स दो मेरी खता ।
मेरी गलती मुआफ कर, गुरु मैं हूं बंदा आपका ॥

उपदेशीपद—मसीहा -

चेतन चेत करो हुशियारी, तिरन योग लही हारे क्यारे ॥टेर॥
श्रीजिनधर्म सहाई जीवके, तिनको मूढ विसारे क्या रे ।
तन धन कुटुंब सभी स्वारथ के, चलते संग तुम्हारे क्या रे ॥चे०॥१॥

धर्म जहाज सुगुरु बिन जगमें, भव जल पार उतारे क्या रे,
तज प्रमाद चाल शिवमंदिर,इत उत चित विचारे क्या रे ॥चे० २

लही शुभ धर्मपंथ जिन भाषित, विषय व्यथा विचारे क्या रे;
अवसर कठीन लही नरभव का,रत्नचिंतामणि डारे क्या रे ॥चे० ३

हो हुशियार धार शिवमारग, उत्तम जन्म विगारे क्या रे;
जैनशर्मा है अतुलवली तुं, पडा कर्म के सारे क्या रे ॥चे०॥ ४

दोहा—

कर जोडके अर्जी करुं, गुरु आप वेगा आवजो;
यह नम्र विनती आपसे, सब मुनिमंडल लावजो ॥१॥

ऋषभजिनंद का देख दरस, ए राह—

श्रीसद्गुरु को देख, कुमति मेरी मिट गई रे आज० ॥टेर॥

सुन उपदेश रेश गई मनकी, मिटी ताप भ्रमना कई दिनकी;
उपशमरस चित प्रगट भयो, दुरगति मेरी खुट गई रे ॥श्री०॥१

कीधो आतमगुण अभिलाषी, सुमत गुपत दृढता चित राखी;
निरमल क्रिया संजम धार, भ्रमना सब छुट गई रे आ०॥श्री० २

विषय कषाय प्रबल दावानल, शुद्धज्ञान जलसे कर शीतल;
परम आह्लाद भयो गुरु चित,दुरमति सब लुट गई रे आ०श्री०३

पच्चीसगुण गुरु पूरण भरिया, चरण करण आतमगुण दरिया;
विषयपिपासा निवार दूर, अब भ्रांति मिट गई रे आ०॥श्री०४

मुनिश्रीयतीन्द्रविजय मुख निरखी, चंद चकोर सम नित हरखी;
जैनशर्मा गुरुदेव तूंही, रटना यही रट लई रे आ०॥श्री०॥५॥

दोहा—

परमारथ में दया बड़ी, जो उपजे मन आय;
परगट हो निरवैरता, कर्म गांठी सुलजाय ॥ १ ॥

दया नहीं तो कुछ नहीं, सब ही झूंठी बात;
बाहर कथनी सोहनी, भीतर लागी घात ॥ २ ॥

वही दया दया कही, जिसमें राग न रोप;
धर्मजैन वही खरा, और कहा सब दोप ॥ ३ ॥

लावणी, रंगत लंगड़ी—

शिवसुखदायक परम एक जिनधर्म हिये धरना चाहिये;
तज कर्म भर्म दया का नित उद्यम करना चाहिये ॥ टेर ॥

आर्यक्षेत्र उत्तमकुल पाके वृथा गुमाना ना चाहिये;
शिवमारग बिन पापमें चित लगाना ना चाहिये,
वार वार अवसर नहीं मिलता शीख भुलाना ना चाहिये;
परदुख देखी कभी चित्त में हरखाना ना चाहिये,
क्रोध कपट अभिमान लोभ चारुं परिहरना चाहिये ॥त०॥१॥

तप जप संयम नियम बिन वख्त गमाना ना चाहिये,
धर्मकाम में कभी कायर हो जाना ना चाहिये;
जैनतत्त्व का विचार पाया उसे छिपाना ना चाहिये,
शुभकारज में कभी मनसे सरमाना ना चाहिये;
समकित रत्न यत्न से राखो पातिकसे डरना चाहिये ॥त०२॥

सद्गुरु जैसा मित्र न जगमें यह दिलमें लाना चाहिये,
मिथ्यात्वी सम रिपु नहीं मन निश्चय ठाना चाहिये;
पाखंड के देख आडम्बर मन ललचाना ना चाहिये,
अमृत भोजन छोड कडवे फल खाना ना चाहिये;
मिथ्या मनकी झूठी बातें चित्तमें धरना ना चाहिये ॥ त० ३॥

गुणीजन का नित विनय करो यह शुभ शिक्षा मानना चाहिये,
धर्मीजन को देखके चित में हरखाना चाहिये;
धन्य धन्य श्रीजैनधर्म यों गुण हमेश गाना चाहिये,
परगुन पद को छोड नित आतमगुण गाना चाहिये,
जैनशर्मा कहे शीख हिये धर भवसागर तिरना चाहिये ॥त० ४

सवैया—

चकोर चहे जिमि पूरणचन्द्र को चातक स्वातिकी बूंदन को,
मीन चहे जलराशि समुद्रसी दीन चहे जु धन इच्छन को;
सर्प चहे मणिकी उस जातही को सूर्यप्रकाश करे दनको,
शुक्ल कहे यहाँ का संघ चहे गुरुराज यतीन्द्र के दर्शन को ॥१

स्वस्तिश्रीमदादिजिनं प्रणम्य श्रीमति तत्र विशालधर्मशालोपाश्रयपरिशोभिते, गगनचुम्बी सौधशिखरी जिनालयाद्यलङ्कृते, वापीवप्रविहारादिसप्तविंशतिवकारोपमंडिते श्रीहरजी नगरे विराजमान, न्यायसंपन्नविभवादिमार्गानुसारिसुदामशोभित, सदोदारगाम्भीर्यधैर्यादि—सल्लक्षणहारोपलक्षित, अक्षुद्रसुरूपतादिश्राद्धगुणसमन्वित, स्थूलप्राणातिपातादिद्वादशव्रतारामविहारी, रत्नाकरो-

पमोपमित, हीनदीनदुःखिजनवत्सलतादिसद्गुणगणराजिविराजित समस्त श्रीसंघ समवाय योग्य लिखी जावरानगर से सकल श्रीसंघ स्वधर्मी भाईयों का जयजिनेन्द्र वांचे। अपरं च यहाँ श्रीगुरुदेवकी कृपा से आनंद मंगल वर्त्त रहा है, आप श्रीसंघ के भी आनंद मंगल के समाचार सदा चाहते हैं। विशेष सविनय अर्ज यह है कि हमारे यहाँ वर्त्तमानाचार्य श्रीमद्विजयभूपेन्द्रसूरिजी महाराज की आज्ञा से साध्वीजी श्रीमति सोहनश्रीजी फूलश्रीजी, मगनश्रीजी, उत्तमश्रीजी, शांतिश्रीजी ठाणा ५ का चातुर्मास होने से पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व निर्विघ्नपणे सकल संघने आराधन किया है और सांवत्सरिक प्रतिक्रमणानन्तर ८४ लक्ष जीवायोनी के साथ त्रिविध योग से खमत खामणा किये हैं। आपश्री संघ के साथ भी किये हैं सो आप हमारे क्षमापन को स्वीकार करके जान अजान से हमारा कोई भी अपराध हुआ होय उसकी माफी देवें। यहाँ आषाढसुदि १४ से भाद्रवासुदि ४ पर्यन्त समय प्रमाणे धर्मध्यान की वृद्धि नीचे मुताबिक हुई है—आमल ५००, एकासणा १०००, बियासणा १५००, उपवास १०००, बेला ५००, तेला १००, चोला १९, पंचोला २०, सत्ताई २, अठाई ९, नव ४, प्रभावना १००, स्नात्रपूजा १०१, स्वामिवच्छल ११, पूजन ११, मासखमण १, पचरंगी १, चैत्यप्रवाड़ी ९, इत्यादि। संवत् १९८७ का श्रीवीरनिर्वाण सं० २४५७, श्रीराजेन्द्रसूरि सं० २४, सन् १९३० इस्वी, मिति भाद्रवासुदि १३

शेठ छोटमलजी जुहारमलजी पारख, मिश्रीमल पगारिया
लोढा दलाजी जडावचंद सेवारामकी वहु, हुकमीचंद ललवाणी
गंगाराम केसरीमल करनावट, भागीरथजैन
सामसुखा सूरजमलजी कुंदनमल, हस्तीमल शर्मा सेवक
मेता बरदीचंदजी धूलचंद लालचंद, महेता भेरुलाल
रखबाजी सरूपचंद लोढा, धूरजी डांगा
चपरोत सेवारामजी मांगुलाल, महेता नथुरामजी सोभागमल
नांदेचा राजमल, पन्नालाल वणवट
मेता करमचंद, पेमचंद महता
चुन्नीलाल मारवाडी जडावचंद कावडिया
मांगुलाल लोढा, प्यारचंद हस्तीमल सकलेचा
सोभागमल बरमेचा, धाडीवार सरूपचंद
समंदरिया खूबचंद केसरीमल सागरमल, बुरड भीकचंद
चांदमल सूराणा, रांका कस्तुरचंद

इत्यादि सकलसंघ की १००८ वार विधि पूर्वक अब्भुट्ठियों के पाठसे वंदना अवधारसी. संवच्छरी खमत खामणा घणे घणे मानसुं स्वीकारसी ।



गुरुगच्छ और शासनप्रेमी परमश्रद्धालु गुणानु-रागी कविवर मास्तर मन्नालालजी चोपडा का लिखा हुआ संवत् १९८६ सन् १९२९ का

विज्ञप्ति-पत्र.

ॐ

श्रीमद्विजयराजेन्द्रसूरीश्वरसद्गुरुभ्यो नमः ।

नवपदं किल कल्पतरूपमं, सुगुणयंत्रसुसार सदोत्तमम् ।
सघनतापसमावनसागरं, कुमतिमोहतमोहरभास्करम् ॥ १ ॥

श्रीगौतमगणधराय नमः ।

दोहा—

त्रिभुवनपति तेवीसमां, प्रणमुं पार्श्वजिणंद ।
वांछित पूरण दुःख हरण, सेवे सुर नर वृन्द ॥ १ ॥
शासन नायक समरिये, वर्द्धमान जिनचंद,
अलिय विघन दूरे हरे, आपे परमानंद ॥ २ ॥
सिद्धश्री पहेलां लिखुं, सिद्ध होन के काज ।
चोवीसी प्रणमुं सदा, नित मंगल महाराज ॥ ३ ॥
सर्व ओपमा योग्य हो, साधु सकल गुणखान;
भजुं चरण जिनराजना, तजुं सकल अभिमान ॥ ४ ॥

लेखक सुरगुरु वृंद, करे गुरुगुण लिखवे को;
तोही लिखा न जाय, यही तुम निश्चय देखो ॥
गुरुगुण अनंत अपार, एक जाणे केवलज्ञान ।
लिखत न आवे पार, करो सब तरुवर लेखन ॥ १ ॥

दोहा—

इत्यादिक सर्व ओपमा, फतापुर रह्या विराज ।
एक सहस्र अठ वंदना, अवधारो मुनिराज ॥ १ ॥

गुरुगुण गहन गंभीर है, मुझ मति तुच्छ लिगार ।
तो पिण गुण पणवीस को, वरणव कर्यो विचार ॥ २ ॥

इत्यादि अनेक ओपमा विराजमान सर्वोपमा लायक परम-पूज्य सकलगुणनिधान व्याख्यानवाचस्पत्युपाध्याय श्री श्री श्री १००८ श्रीयतीन्द्रविजयजी महाराज आदि मुनिमंडल. योग्य—

दोहा—

चिरंजीवो चिरकाल लग, करो भविक उपकार ।
देई ज्ञान दर्शन चरण, ऊतारो भव पार ॥ १ ॥

लिखितं रत्नपुरी थकी, मन्नालाल तुम दास ।
एक सहस्र अठ वंदना, अवधारी अरदास ॥ २ ॥

सुहराइ सुहदेवसी, सुख तप निराबाध ।
वरते नितप्रति पूज्यरे, संयम तणी समाध ॥ ३ ॥

कृपा धर्मज स्नेह की, राखो छो मुनिराज ।
तिणसुं अधिक रखावजो, बांह ग्रह्यानी लाज ॥ ४ ॥

सुख शातारा आपरा, समाचार सुप्रमाण ।
कृपापत्र दीजो सदा, सेवक हम को जाण ॥ ५ ॥

पीछो कागद देणरी, नहीं आपरे रीत ।
सेवक की यही भावना, लागी तुमसे प्रीत ॥ ६ ॥

पूज्य तिहारा दर्श की, लाग रही मन चाव ।
नयणे कदियक निरखसुं, दया ज्ञान दरियाव ॥ ७ ॥

धन्य फतापुर नगर को, जिहाँ विचरे गुरु आण ।
धन्य ते श्रावक श्राविका, गुरुमुख सुणे वखाण ॥ ८ ॥

धन्य दिवस ते मानसुं, जद भेटीस गुरुपाय ।
कर्म काठिया है कठिन, अटकावे मुझ आय ॥ ६ ॥

सुखशाता पूछुं वली, लळि लळि लागुं पाय ।
चाहुं चित मांही घणो, पूज्य तणो सुपसाय ॥ १० ॥

भक्तिपत्र भावे लिख्यो, गुरु वंदन के काज ।
न्यूनाधिक जो होय तो, तुम समजो मुनिराज ॥ ११ ॥

आप पुन्यशाली सकलगुणों की खान, पंच महाव्रतधारी, त्रण गुप्तिवाला, छःकायना रक्षक, आठ मदना टालणहार, दशविध यतिधर्मना पालनहार, सत्तरभेदे संजमना पालणहार, सूर्यना परे तेजस्वी, चन्द्रनी परे शीतल, रत्नाकरना परे गंभीर, कंचन कामिनीना त्यागी, महावैरागी, आत्मारंगी, समकितसंगी, विविधरंगी, व्रतधारक, शुद्धदयाधर्म प्रतिपालक, जिनशासन प्रभावक, विनयमूल धर्म आराधक, महा शान्त दान्त विशुद्ध

ज्ञान ध्यान चारित्रमय शुद्ध स्याद्वादमार्ग वहन करवामां धुरं-धर धोरी समान एवा अनेक शुभ गुणगणालंकृत मुनिराज श्री श्री श्री १००८ व्या० वा० उ० श्रीयतीन्द्रविजयजी महाराज आदि मुनिमंडल योग्य श्रीरतलामथी लि० चोपड़ा मन्नालाल मिश्रीमलनी वंदना १००८ वार अवधारसोजी. विशेष अत्रे पर्युषणपर्व रूडी रीते व्यतिक्रम्या छे, संवत्सरी प्रतिक्रमणाऽवसरे सर्व जीवोने खमाव्या छे. आपने पण अब्भुट्ठियोमि अब्भितरना पाठ पूर्वक त्रिविधे खमावुं छुं. आप साहेब म्हारा वार्षिक अवि-नयादि अपराधनी क्षमा करशो. आपना तरफना आनंद कारक समाचार जाणवा इच्छा करते छे. आप साहब को इस देश में पधारे बहुत वर्ष हुए, इसलिये मालवा देश के श्रावक श्राविका आपके दर्शन के बहुत अभिलाषी हैं। इसवास्ते आगु भी कई मर्त्तबा हुजुर साहब को इस विषय में अरजीयाँ भेजी, परन्तु कुछ गौर नहीं फर्माया। अब इस अरजी पर अवश्य ध्यान देंगे।

आषाढी पूनम पहेलांजी, ए राह—

यतीन्द्रमुनि मालव वेलाजी, पधारो तमे लेइ सब चेलाजी।
अरजी लिख पाठूं में हेलाजी, आओ मुनीश्वर अलबेलाजी टेर

झटके छोड बस्या मरुधर में, एसी क्या बात विचारी।
सपना में वांक कियो नहिं थांरो, क्यों मालव भूमि विसारी ॥य०॥ १

जीव दुखावो नहिं किसीको, या रीत तुम्हारी खास।
दया रखो जीव मात्र के ऊपर, क्यों किया हमने उदास ॥य०॥

मरुधरी जैन पर तूठा तुमतो, म्हांसु नेह निवार्यो ।
गाढी प्रीत करी मुनीसरजी, क्यों फिर छांडी पधार्या ।.य०॥३॥

अवलो न्याय यों क्यों मन भायो, कहेवावो आप प्रमाणी ।
शरणागतने छांडी अचानक, दया लिगार न आणी ॥य०॥४॥

देशको देश शूनो कर साहिब, पहोंच्या अलगे देश ।
निशि वासर तुम नामकी रटना, कर रह्या संघ हमेश ॥य०॥५

आपरा भक्त घणा दुनिया में, नाथ हमारा हो एक ।
महेर करी मत भूलजो हमने, देखी दास अनेक ॥ य० ॥ ६ ॥

सूरज सोनानो ऊगशे जिण दिन, दर्शन होगा तुम्हारो ।
विन दर्शन दिन वीते योंही, फोगट जाय जमारो ॥ य० ॥७॥

शास्त्र में मालवदेश वखाण्यो, जाणो छो आप प्रत्यक्ष ।
स्वर्गपुरी ने अलकापुरी लाजी, सोचो मुनीश्वर दक्ष ॥ य० ॥८॥

धन्य भाग जहां पूज्य विराजे, धन जिहां नर नारी ।
वाणी रसीली सुणे श्रीमुख की, लाभ लहे अणपारी ।।य०॥९॥

नजर महेर करी वेग पधारो, मुनीसर गुणमणि खाण ।
निश्चय जाणुं अरजी ऊपर, मरजी करशो सुजाण ॥य०॥१०॥

पट् अड नव शशि वरस मनोहर, भाद्रव पूरण मास ।
पूनम ने बुधवार लिखि, गाँव फतापुरे अरदास ॥ य० ॥११॥

सूरिराजेन्द्रनो नाम दीपावो, महीतल विश्वावीस ।
गंभीरनन्दन नित्य रटे, मन्नालाल तुमांने मुनीस ॥ य० ॥१२॥

अवधारसीजी. अत्र कुशलं तत्राप्यस्तु, अपरं च अत्रे श्रीपर्वाधिराज श्रीपर्युषण महापर्व सुखे समाधे तप जप अंगी अर्चना प्रभावना स्वामिवात्सल्य पौषधादि धर्मकृत्य निर्विघ्नता से आराधन कर्या, तेमां भादरवासुदि ४ संध्याकाले संवत्सरी प्रतिक्रमणावसरे ८४ लक्ष जीवायोनी साथे संघसमक्ष खमत खामणा नी वेलाए आप साहेबजीने पण हाथ जोडीने अब्भुट्ठिओरा पाठसुं त्रिविधे नम्रता पूर्वक खमाव्या छे. मास १२ पक्ष २४ दिन ३६० मां जाणतां अजाणतां आपनो अविनय अपराध थयो होय तथा कटुवचन आक्रोशवाक्य अप्रीतिकारक शब्द बोलवामां लखवामां आव्यो होय तेनो मिच्छामिदुक्कडं दीधो छे. सो स्वीकार क्षमा करशोजी, देवदर्शन धर्मकार्यमां निरंतर कृपा कर संभालसोजी. धर्मस्नेह राखो जिणसुं अधिक रखावशोजी । आप साहेबजीना दर्शनरी उत्कंठा घणी है पण अंजल आधीन है. जिण दिन वांदसुं वो दिन सोना रूपानो जाणशुं । आपका दर्शन होवासुं हमारा दुष्कृत पाप को निवारण होसी, महेरबानी करने चोमासा बाद भीनमाल तरफ विहार करसी तथा आपना आनंद मंगलना समाचार व धर्मकार्य लिखने की दास पर कृपा करसी, लिखवामें त्रुटि हुई हो तो क्षमा करसी. सुज्ञेषु किं बहुना । विक्रम सं० १९८७ भाद्रपदशुक्ल १५ चन्द्रे

प्रार्थी—शा हेमचंद भगवानजी, भीनमाल.



हरजी से चातुर्मास बाद आपका विहार होते समय भावुकों के निकले 'विरहप्रेमजनक' उद्गार—

राम दशरथ के घर जन्मे०, ए राह—

मुनीश्वर आपके दर्शन, हमे फिर कब करावोगे।
आपका रूप है सुन्दर, हमे फिर कब दिखावोगे ॥ टेर ॥
माया के जाल के मांही, फसे हम जीव संसारी।
करें क्या आपकी महिमा, वासना कब छुडावोगे ॥मु०॥१॥
नगर हरजी के हम वासी, आपके दर्शन के प्यासी।
धवलपुर ग्राम के वासी, दया कर कब पधारोगे ॥मु०॥२॥
आपकी प्रेमवाणीने, हमारे मन को हर लीन्हे।
लगा है ध्यान चरणों में, उसी को ना भुलावोगे ॥मु०॥३॥
बनी नहीं आपकी सेवा, आप हो ज्ञानी गुरुदेवा।
हमारी भूल होवे सो, उसे तो माफ करावोगे ॥मु०॥४॥
सभा में गौरीशंकरने, सुनाया आपका गायन।
हमारा ध्यान तन मन से, चरणकमले रखावोगे ॥मु०॥५॥

भेखरे उतारो राजा भरतरी, ए राह—

पूज्य पधारी अम शहरमां, करजो धर्म उद्योतजी।
यतीन्द्रमुनि दर्शन आपजो, प्रगटे ज्ञाननी जोतजी ॥ टेर ॥
स्वस्तिक कोना आगल पूरशुं, सूनी छे धर्मशालजी।
कोना पासे आदेश लेइने, बोलुं इरियावही तालजी ॥ य० ॥१॥
गुरुवांदणा कोने आपशुं, कोने नमावुं कायजी।
अब्भुट्ठिओ कोने खामिने, पूछुं स्वामी सुखसायजी ॥य० ॥२॥
धर्मलाभ देवा पधारजो, दासना घेर छे जोगजी।
कोने करवी एवी प्रार्थना, हिवे गुरुना वियोगजी ॥ य० ॥३॥

जल विना तडफे माछली, गुरु विना तडफे संघजी ।
विरह स्वामीजी आपनो, किणविध देखे संघजी ॥ य० ॥४॥
मेघनी वाट जोवे करसणी, एम संघ जोवे वाटजी ।
कृपा करीने पधारजो, नर नारी करशे ठाठजी ॥ य० ॥५॥
देश देशान्तर घणा आपरे, भवि जीव छे अपारजी ।
आसरो गुरु अम आपरो, और नहीं आधारजी ॥ य० ॥६॥
कृपानिधि अर्ज सांभली, पूरजो अमारी आशजी ।
वार वार शुं कहुं आपने, करां अर्जी तुम दासजी ॥ य० ॥७॥
कांइक दिवस थिरता करो, न जावो मूकी निरासजी ।
धर्म ध्यान वहुलो थशे, रहेतां आपने पासजी ॥ य० ॥८॥
पर उपगारना कारणे, करवो ज्यां त्यां वासजी ।
कार्य दूजो नहीं आपरे, पूरो भविजन की आसजी ॥ य० ॥९॥
आपरे तो भविजन घणां, अमारे एक आधारजी ।
वली पधारजो वेला तमे, करजो धर्म संभारजी ॥ य० ॥१०॥
समकित दान नित्य आपवो, भवि जीवां हितकारजी ।
मधुरध्वनी स्वामी आपनी, सुणतां आनंद अपारजी ॥य०॥११॥
शिष्य छो सूरि–राजेन्द्रना, सद्विद्याना भंडारजी ।
शुभ नाम यतीन्द्र शोभतुं, जपतां जय जय कारजी ॥य०॥१२॥
विद्या–सागर शिष्य साथ में, आवो लइ गुरुदेवजी ।
विद्याविजय शिष्य आपनो, मांगे पयकज सेवजी ॥ य० ॥१३॥



अशुद्धि-शुद्धिपत्रम् ।



अशुद्ध.	शुद्ध.	पृष्ठ.	पंक्ति
के यहाँ	यहाँ के	२०	२०
श्वरसुप	श्वरोप	२३	११
अनेकाड	अनेकाऽ	२४	१०
उतर	उत्तर	३२	६
बलभिद्र	बलिभद्र	३८	१०
सोभे	सोमे	४७	२
वाक के	वावके	६२	१४
नृपति	नृपति	६३	१४
भेदपाटा	मेदपाटा	६३	१६
कनामस	के नामसे	६९	२१
साधुपाद	साधुवादः	७१	२१
हुई	हुई है	७४	२०
शताद्दी	शताब्दी	७७	१७
सफाई	सफाई	८६	९
देह	देई	९३	३
कोचरको	कोचरका	९३	८
स्थानोंकीकी	स्थानों की	९३	२३
श्रीपभ	श्रीऋषभ	९९	३

पुत्र	पुत्र	१३२	१२
सूवर्णा	सुवर्णा	१३४	१४
वनराज	धनराज	१३५	१०
इत्याहि	इत्यादि	१३९	२०
भारे	मारे	१३७	१०
वशोभद्र	यशोभद्र	१३७	१७
उपद्रव	उपद्रव	१४४	३
हूआ	हुआ	१४४	१२
१६४	९६४	१४६	६
रिवाञ्जि	रिवान्जि	१४७	३
जन्माञ्जि	जन्मान्जि	१६१	३
केशल	केराल	१६१	१९
चैघ	चैत्र	१६२	१२
रोहसेसे	रोहसे	१६३	२१
वाडनेर	वाडमेर	१६९	२२
वीरपुर	वीरमपुर	१८२	१७
चडी	वडी	१९६	१८
लोड्र	लोढ्र	२२०	१०
यहा	यहाँ	२२४	६
कीणम्	कीर्णम्	२४७	४
सिरधार	सिरदार	२५१	९



[illegible] गुरु विना तडफे संघजी ।
[illegible] आपनो, किणविध देखे संघजी ॥ य० ॥४॥
[illegible] एम संघ जोवे वाटजी ।
[illegible] नर नारी करशे ठाठजी ॥ य० ॥५॥
[illegible] आपने, भवि जीव छे अपारजी ।
[illegible] आपने, और नहीं आधारजी ॥ य० ॥६॥
[illegible] पूरजो अमारी आशाजी ।
[illegible] आपने, करां अर्जी तुम दासजी ॥ य० ॥७॥
[illegible] न जावो मूकी निरासजी ।
[illegible] व्यान [illegible] आपने पासजी ॥ य० ॥८॥
[illegible] कारणे, करजो ज्यां त्यां वासजी ।
[illegible] नहीं आपने, पूरो भविजन की आसजी ॥ य० ॥९॥
आपने तो भविजन घणां, अमांरे एक आधारजी ।
[illegible] वेला तमे, करजो धर्म संभारजी ॥ य० ॥१०॥
[illegible] दान नित्य आपवो, भवि जीवां हितकारजी ।
[illegible]नो स्वामी आपनी, सुणतां आनंद अपारजी ॥य०॥११॥
[illegible] श्री सूरि-राजेन्द्रना, सद्विद्याना भंडारजी ।
[illegible] यतीन्द्र शोमतुं, जपतां जय जय कारजी ॥य०॥१२॥
[illegible] शिष्य साथ में, [illegible]
[illegible] आपनो,

राम दशरथ के घर जन्मे०, ए राह—

मुनीश्वर आपके दर्शन, हमे फिर कब करावोगे।
आपका रूप है सुन्दर, हमे फिर कब दिखावोगे ॥ टेर ॥
माया के जाल के मांही, फसे हम जीव संसारी।
करें क्या आपकी महिमा, वासना कब छुडावोगे ॥मु०॥१॥
नगर हरजी के हम वासी, आपके दर्शन के प्यासी।
धवलपुर ग्राम के वासी, दया कर कब पधारोगे ॥मु०॥२॥
आपकी प्रेमवाणीने, हमारे मन को हर लीन्हे।
लगा है ध्यान चरणों में, उसी को ना भुलावोगे ॥मु०॥३॥
बनी नहीं आपकी सेवा, आप हो ज्ञानी गुरुदेवा।
हमारी भूल होवे सो, उसे तो माफ करावोगे ॥मु०॥४॥
सभा में गौरीशंकरने, सुनाया आपका गायन।
हमारा ध्यान तन मन से, चरणकमले रखावोगे ॥मु०॥५॥

भेखरे उतारो राजा भरतरी, ए राह—

पूज्य पधारी अम शहरमां, करजो धर्म उद्योतजी।
यतीन्द्रमुनि दर्शन आपजो, प्रगटे ज्ञाननी जोतजी ॥ टेर ॥
स्वस्तिक कोना आगल पूरशुं, मूकी छे धर्मशालजी।
कोना पासे आदेश लेइने, बोलुं इरियावही तालजी ॥ य० ॥१॥
गुरुवांदणा कोने आपशुं, कोने नमावुं कायजी।
अब्भुट्ठिओ कोने खामिने, पूछुं स्वामी सुखसायजी ॥य० ॥२॥
धर्मलाभ देवा पधारजो, दासना घेर छे जोगजी।
कोने करवी एवी प्रार्थना, हिवे गुरुना वियोगजी ॥ य० ॥३॥